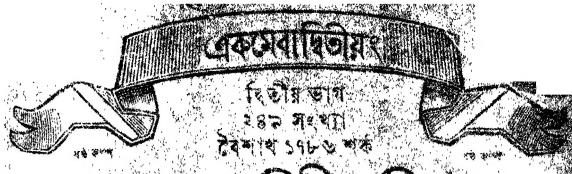
তত্ত্বোধিনী পত্তিকার ষষ্ঠ করের দিতীয় ভাগের নির্ঘণ্ট পত্ত।

বৈশাখ ২	৪৯ সংখ্যা।		পৃষ্ঠ				7
নববর্ষের স্থোত্ত			>	রাজ ভরঙ্গিণী	• •		200
মনোবিদ্ধান (উপক্ষ			9	ভ वानीश्रुत ज्ञन्नविमान	ग्रत छेशटमण		a *1
व्यक्तिश्व अणे। मन	সায়ৎস্বিক			১ সংখ্যা			· 4 " ·
মনাজের বক্তা				তা প্ৰাহাণৰ :	২৫৬ সংখ্যা	1	1,
অনুষ্ঠ নের অবেশাক্ত			>>	ঈথবের সহিত অগতের		•	330
भरदाण			55	গিংমাডের পারকরের		***	226
नेकार्य २	৫० मश्भा।		}	एडेड गर्न	*		338
্নশ্য সময়ে সাগ্রবং		हो <u>र</u>	39	का <i>ण च</i> त्रक्षिशे .			32.3
্রাধার্যা প্রচার		1	36	देश्याः			320
्रमानिकान 			715	ভवानीश्व त्रश्वविभाग		19+	
াক্ষাবিতাহ			ا دو، چ				5: a
্রাক্ষাদিগের সাধারণ স			34	समुद्रमान प्रक्रियादक केल		••	
্নুপ্তানের আবশাক্তা	(প্রাপ্ত)	. *	ာင	के दाक्षितक .			4,
तर्वाम			125				
	(१) मध्यो।		1	1	१२ मध्या ।		
आकायटमांत्र गांथानि			ල ්	সাক্ষন মক.			53.5
* .	·		12/3	থিয়ে ডি'র প্রিক্রন প্র			, इरे
প্রাথ-চিন্তা নাজ-ভর্মিণী -	•		82	্ভান্তে বস্বলার			
			53	ত সংখ্যা			รายก
बहस्विक्षंग	•		5 4	থায় বিষয়ে অবভারেন	না,ভারাণ স্থ	ৰ্∷ ⊊েছ	- 57
भर् त ्य .	तर मश्काम			माघ र	F 可可引 []		
		1 10	N.	ाठाद ।। व के लंदम्स			282
अभिप्रदर्भत सार्थत्व	• •		() `	াবনের প্রাম ক্রম	١	,	535
আলু চিন্ত।	*			াধেয়েলভার পার্করের গ	178		300
মনোবিজান		^	350	े शेक्षणीय मल	•		うえき
কোলগর ব্রাকাদনাবের			. 19, 5	্ভবানী প্র ক্রন্থারিদালে	যের উপরদক্ষ		
জনুষ্ঠানের আৰশাকভ	(21/3)	•	ر و.ود	। । । । । । ।	, 4 , 9 (द्रकट्ट
भर्तिम	e voetil	• •		্রাক্রপর্যাও ব্রাক্ষ্যনার		it.	
*	৫৩ সংখা।		2.15	३० व्यक्तिस्य	. ,		' 6 4
কলিকভো ব্ৰাহ্মসমাজে	র বজ, তঃ	• /		े स्टब्स्ट के स्टब्स्ट के किस्सा है। किस्सा	क महन्त्र	į	•
উপাদন।	• •	• •	& 9	ं शक्ष विश्व माध्य शिक्			235
1		• •		इंडिल् जैश यक			500
অনুষ্ঠানের আবশাকত		• •		স্ত্রীলোটেদর রচিত প্রার্থ			34-3
गरवीम		• •	, ,,	. সুভান প্ৰাক্ত আ'ব . সুভান প্ৰাক্তা 'ব			Stra
	१८८ मध्या	1					V · 7 / 1
বিপদ্কালে ব্রহ্ম স্তোত	,	2 h	F 3	•	X . 2115 14 1		
উপাসনা		• •		्राधिनीश्रुत्व द्याक्षिते			
কলিকাতা ব্ৰাহ্মদাজের		• •	b-4	विद्यासी ।			Street
मदनाविकान	• •	• •	2.	1		• •	३५ ७
রাজ-তরঞ্জিণী				शिद्यादक त भाकंद्रव थ			24.5
অনুষ্ঠানের আবশ্যক্তা		* 1		इंजिल झेंस गड			792
নূতন পুস্তক প্রাপ্তি		• •	24	পৃথিবী ও মর্যা			225
	२०० मध्या			जवानीश्रुत जनामिशन			4,
কলিকাভা ব্ৰাহ্মগমাজে		• •	29	৫ সংখ্যা		• •	\$38
নিবাধই চতুর্দশ বাৰং		पद्धान		দেদিনীপুর উনতিংশ			
বক্ত ডা		• • •	200	্রা ন্ সমান্ত	15.25	* *	392

৺ অকারাদি বর্ণক্রমে ষষ্ঠ কলের দিতীয় ভাগের নির্মণ্ট পতা।

সংখ্যা পু	गःथा। भृषे
অনুষ্ঠানের জাবশ্যকতা (প্রাপ্ত) ২৪৯ >	
অনুঠানের আবশাকত: (প্রাপ্ত) ২৫০ ৩	
অনুষ্ঠানের আবশ্যকতা (প্রাপ্ত) ২৫২ ৬	বান্ধর্যাও বান্ধসনাজের পোষ্কতা
অনুষ্ঠানের আবেশাক্ডা (প্রাপ্ত). ১৫৩ ৭	
অনুষ্ঠানের আবশ্যকতা (প্রাপ্ত) ২৫৪ ১	
व्याचारणात्र छेलरम्भ २.१५ ३८	निर्ध्य भुक्तद्व विशासम् २७० २०३
আছ-চিন্তা ৫	
আয় বায় বিবরণ ১.৫০ জ	
च्याच्च वाच्च विवद्भ २०५ ५৮	चवानी पूत जन्मविष्यानदत्तत छे अदम्य
জাগ্ন ৰায় বিধরণ ১, ২৫৩ ৮	> Ac 41 > CA > C
ष्ट्राय वाय विवत्न २६९ 🦠	
আয়ে ব্যয় বিষরণ 🧼 \cdots 🦠 👵 🕟 🕟	. 249. 309
আয়ে বায় কিবন্ধ , ১৯১১ - ১১	这个(两个智慧 正) 给(由我心理是 多对心情的
हिस्सिक्षिक के े दि . ५००	ध महस्रा १८४ . ३८%
জিলিক কি ১৮ ১৮ ১৮ ১৮ ১৮ ১৮ ১৮ ১৮ ১৮ ১৮ ১৮ ১৮ ১৮ ১৮	
इति वैश्वास	THE RESERVE OF THE PROPERTY OF
अभारतन भौरक्ष सम्मान्त्र स्थान	भरनाविकान (উशक्रमनिका) २३२ ७
The state of the s	भटनरिकालीय २००० २००
खिशागनः,	2 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
কলিকাভা এ.ধ: 🐇 💮 🔻	મ જ 'તે આફેન
	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
কলিক্ডা বাদ্ধমাজের বল্ডা 👢 🗀 🧎	
 (कामगढ ताचाममाद्यत वस्तृष्ठात २०१) । १० 	
	* * * * * * * * * * * * * * * * * * *
আবদের প্রাকৃত ব্যবহার 👝 🕟 🕬	(1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1)
ब्लीवरमञ्ज्ञ वावशात्र २६० ६६७	" · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
ডুইডমত ••• •• ২ ৫৩ ১১১	
	ा उद्भावस्था २५८ ५৮৫
থিয়োডোর পার্করের পত্র ২৫৭ ১৩২	,
থিয়োডোর পাকরের পক . ২৫৮ ১৫৪	्षित्रमाष्ट्र २७० ১৯৯
থিয়োডোর পার্করের পত্ত ২৬০ . ১৮৯	
	4 # mg/m ²
ইংরাজিতে ২৫৭ ১৪২	
देपर्वा २०७ ১२४	
নব্বর্ষের স্থোত্র ২৪১	
निनीथ नगरम नागतनरक दारकात	17 € 2 35
啰茵	
নিববাগ্ট চতুৰ্দশ সামৎস্বিক	***
	भरताम २०० १४
স্তনপুত্ৰ আগ্ৰি ২০৪ ২০	मार्क्मन् मक २६१ ১२৯
মুভন পুত্তক প্রাপ্তি ২৫৯ ১৮৪	अंतिहर्भद्र इंडिड व्यार्थना २६५ ১৮७
প্রকারিংশ সাধ্যমারিক ব্রোক্ষাসনাজ ২৫৯ ১৬২	1
श्विती ७ मनूषा २७० ১৯२	
आकार्यम् अन्तर २६०३৮	এই তত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত
ব্ৰাহ্ম বিবাহ	অতি মানে অকানিত হয়। ৯ ইচন, মক্ষমার, সম্পৎ ১৯২১,
आकामिरवद्गमाधावन मका २.० २१	ANTHONY BANK !



ज्ञाताश्रमधार

त्र के विकासिक महाकार में क्षित्र के कि सकते में क्षित्र के क्षित्र के कि सिंग के कि सिंग के कि सिंग के कि सिं देव रोग्निकीयर ने स्वत्र के कि सकतिया के किसी सिंग कि दिन सिंग कि सिंग कि सकतिया के सिंग के सिंग कि सिंग के सिंग के सिंग के सिंग कि सिंग कि सिंग कि सिंग कि सिंग कि

नवस्यत्तात्वात ।

्व (चन उर्जाको नहर्मण है देवनां व च्यापि हेन्साक व्याप्त स्वाप्त स्वाप्त देवनां व सार्व व्याप्त के विक विश्वित व्याप्त स्वाप्त स्वाप्त है। स्वाप्त है ज्याप्त स्वाप्त निवास स्वाप्त स्वाप्

स्वयं मन्त्रीयम् रहमार्थसः स्थलः अस्ति। स्वयं मन्त्रीयम् रहमार्थसः

कर क्या अवस्थानिक काम निवस् क्षरकाल्य बाह्यकेचा करिया रहाँगांस, रजन 'भारतरे ब्याप्त अप्रेश निष्यांत व्यव्हानन क বিচ্ছত সক্ষম কর ে ছিল-আলীভিজ (১৪ডিব भन्। कुल्लामान्। स्माननीटक स्मरका वाञ्चामदक रव इरख अस्मिष्ड करिस्टा, देव मेर के जो स्वी युष्टवारक विविधन निष् अ अबाद कान्याम, अवून कानाव क महम्बद्धाः कश्चिम् । भवतः अस्ति। यतः वे आक् काडरल , क्रीका लेकारणामः भूमप्यान ५% हुई। হলে তাহাত লেফিগ্য ৰুজি কৰিলে, ভাইট্ৰি क्षा करे करा प्राप्त समान्त्र स्थानका कर स ल अब मान्य अंदर्भा का तम् विकास भवाता कुनिक कि रका महाराज करियांक कमें दिन सम्बद्धी NUTTO ATTA CALLA STATES new winns wind frein sonelly whe FORCE APOST OF CONTRACTOR

বিচাৰিক আৰাৰ জন্মত কৰে বাৰ বাৰ নিৰ্দ্তি নিৰ্দ্তি কৰি নি

বিনাৰ। তুমি বেমন বৰ্ষার আহমনে লারীরিক উদ্ভাপ ও কঠালোর নিবারণ করিবার কনা এবং তোমার ক্ষান্তকে পদ ধানে।
পূর্ণ করিবার কনা শ্যামন্ত্রণ নীরদানালা
ইইতে নুমুব্রত বার্ত্তি পালা বর্ষণ করিবে
লাই ক্ষা আমাদিশার তৃষ্টি পালা রূপা
করেব বিলোহিত আলাকে তোমার ক্লা
করেব আভিবিক্তা করিও ক্রক আলকরেব বিলোহিত আলাকে তোমার কলা
করেব আনিকিত হইতে, জীন করেবে,
বিলোহি আনিকিত হইতে, জীন করেবে,
বিলোহি আনিকিত হইতে, জীন করিবে,
বিলোহি আনিকিত হইতে, জীন করিবে,
বিলোহি প্রাক্তি করিব করিবে,
বিলোহি করিবের করিব করিবে।

ভাত কৰি বাদাৰ নিবাৰ ভাৰ পুলিষ্টা কৰিবালনালতে লৈ কৰে নিপাতিত কইলে, কাৰ্ত্ত লাজীৰীয়ৰ নাজানতাৰ ভাৱতালাৰে প্ বিশাল ক্ষাৰে সূজাতে আলাক্ত ইলো, পাৰ কাৰ্ত্তৰ আলাক্ত ইলো, পাৰ কাৰ্ত্তৰ আলাক্ত ভাত কইলো, পাৰিপাত কাৰ্ত্তৰ আলাক্ত ভাত কইলো, পাৰিপাত কাৰ্ত্তৰ আলাক্ত ভাত কৰিবালেক কিলো কাৰ্ত্তৰ আলাক্ত কৰিবালেক কাৰ্ত্তৰ আলাক্ত ভাত কৰিবালেক কাৰ্ত্তত আলাক্ত ভাত কৰিবালেক কাৰ্ত্তত আলাক্ত ভাত কৰিবালেক কাৰ্ত্তত আলাক্ত ভাত কৰিবালেক কাৰ্ত্তত আলাক্ত ভাততা কৰিবালেক কাৰ্ত্ততা আলাক্ত ভাততা আলাক্ত ভাততা কৰিবালেক কাৰ্ত্ততা আলাক্ত ভাততা আলাক্ত ভাততা লাক্ত কৰিবালেক কাৰ্ত্ততা আলাক্ত ভাততা আলাক্ত কৰিবালেক কাৰ্ত্ততা আলাক্ত কৰিবালেক কাৰ্ত্ততা আলাক্ত কৰিবালেক কাৰ্ত্ততা আলাক্ত কৰিবালেক কাৰ্ত্ততা আলাক্ত কৰেবালেক কাৰ্ত্ততা আলাক কাৰ্ত্ততা আলাক্ত কৰেবালেক কাৰ্ত্ততা আলাক্ত কৰেবালেক কাৰ্ত্ততা আলাক কাৰ্ত্ততা আলাক কাৰ্ত্ততা আলাক কাৰ্ত্ততা আ নিয়ের কিন্তু প্রতিষ্ঠিত করে। বে নিয়ের বে কলা বাল প্রায়ে বেই নাল নিয়ের বে কলা বাল প্রায়ে বেই নাল নালকাতে ক্রান বা সম্পূল বলত সেবন করিলাপুল ক্রান্ত সুইব, করুন বা নাবল ফুলে উত্তাপে পাথ্যীরা হইতে ইইবে। বালু বালাব ও ইবালের লভিত করান না কা লী বলের বিশ্বর মাননর ইবালের করিব, কথাল বা বদ্ধ করিব,—মনার্ল্যর স্থল যে ভূমি ভৌমার প্রেম্মুল প্রায়ে নোল্যতে পাইব না। নহও্মর করে মধ্যে কত সম্পূর্ণ কর্

এই বাংপ হে নাগ অহোরাত্র পর্যা বিশিত হটকে, নাস তিথি অগীত হইকে, যড় খড় গ্রমনাগমন করিখে, জীবন মৃত্যুর ব্যব-বাল ফ্রমণা বিল্ট হইকে, এবং হিবিধ বংগ হথে ছংখ কালকে বিচিত্তিত করিখে। কিছ হে নাথ। তোমার প্রতি আমাধিখোর প্রজা ভক্তি কথন্ট যেল বিচলিত না হর। সমস্ত বংগর এবং সমস্ত লাবন বেল শরীর ওমনের সকল রুত্বি নিযুক্ত করিয়া তোমার আজ:

CONTRACTOR OF THE PROPERTY OF

বিনী জালারে মালবলে, কে জুনার্থ নাথ।
চোলার নিকট এই নিবেদন করিতেছি, যে
সালানী বছর এই তুর্জানা মাতৃতুনি বল্প দেশের প্রতি করণ। প্রদর্শন বরিও। ভোগার
প্রকাশে দেন ইহার রোণ শোক শালি হা,
ইহার পাণ অপবিত্রতা দূর হয়, এবং নীরি
হইতে নীমান্তর পর্যান্ত যেল ইহাতে মা
ভারে রাজ্য, ধর্শের রাজ্য, কুশলের রাজ্য
প্রতিষ্ঠিত হয়।

ওঁ শাহিঃ শাহিঃ শাহিঃ।

गतनादिण्डाम।

क्रमानक।

কগতে মানব জীবন এত প্রকার আ-কর্ষা ও মনোধর পদার্থে পরিবৃত যে, যে-পর্যান্ত না আমাদিগের জ্দিভিত সহজ্জান ৰিদেৰ ৰাজে সনালোচিত হয় সে প্ৰয়ান্ত আন্ত্ৰা পৃথিবীয় অভীত অনা কোন পদাহৰ मृक्षिभांक वो समध्यरदेशांश कविद्य धतु इ वृद् मा। यबन नार्वोदक रेनमवावडा जारह रमहे अल मानगिक रेमनवावकाछ नृष्टे इश्। गांगीहरू रेगलयां सात्र स्पन्न यांच्यन छीव-त्तव मह्हात सम्बाद साहक जनर कीचात्तव नकत सर्थ कार्याः अवस्ति। याकिसा अ-नर्यः अभिक्ष्यक त्रामा (क्रीकृत राज का प्रकार केरल केरल कर कर कर कर कर क्का श्रीवरीय रोक त्रांचात्र विश्वक हरेता जा-TIT MANES TENNED STREET GOOD ALPHON TICHING FOR SON, GRT ME

THE RISE WEST PRINCES IN mer wich i Fen colpale Seeles देशनयाय सांदर्क समुचा शक्का १६ अवस्टरहे भवन्मत महम्राटक है की बटनत **मास्त्रिक** दिवन करत । अश्माद है की बरना करना है। त्रक मिता कतियात सनाई मामग्रामी रुचि बरेबाट्ड रेडा के हामिटन के का निकास मधुटवाद खना मरगात, मरगादत बना भसूका महरू এই नकाष्ठी अक्काइन विशाप स्वेत ल्लारक अमन्न गगरत **পार्थित-स्वत्राम्यकि** কেই স্বাস্থ জ্ঞান করে। ভাহারি 🚁 বিদ্যার্জন, ভাষারি জনা ধন লাক, ভাষারি জন্য ধনতি অভিপত্তি; ভদ্যভীত আর যাস্থা কিছু দকলই স্থাবহ মূচ ন্যাকৈদিবোর ক পেনা মাত। ধর্মানুঠান, ধর্মা**চন্তা**, কি ধর্মের জনা ভাগে স্বীকার এই সক্ষ কেবল রহস্তজনক বাতুলভার নায়ে বেধি ক্ষ: সভা-মুদ্রান, আমোহাতি, পরকাল, কি মনের গতি বিধি নিক্রপণ, কি ডাহার সন্ধাশক্তি 😥 সশরেকানুবায়িক ভাষার প্রস্তুত লখা বি-होट अ गक्तके कर्य भूगा जामक्का व्यक्तिय মাত্র বোদহ্য। কিন্তু কাল সহকারে হে জ্বপ भातीदिक रेमनवांतका ऐखीन इवंचा स्मिति পর্যাবক্রনে বাল্য যৌবন ও প্রীচার্ভার সমাগত হয়, এবং ভাষাদিবের সারীর ক্র-নাগত পুট বৰ্ছিত ও বলীয়ান হৰতে থাকে: क्ट्रीन प्यांट्याहनांत्र, परेना श्रह्मश्रीत, ७ व বস্থা প্র্যানে সেই ক্ল ভাষ্টা পাথিব প্র দার্গের শত্নত ভাব ও জীবনের যথার্থ লক্ষ্য বুরিতে পারে, এবং তদহিনু ত অতীব্রির मत्मा-दादकातं भाषाम भाषा स्व । मगरत वाष्ट्र कपट उ अवक शरकह वार् चर्छक, सा १००५ । अस्ति ह

জানালোচনার **ধাবন বোপান চিঙা**র যে বাজি যে পরিমাত্তর ব্যক্তরাঞ্জ বিবাস মনেগ্রিবেশ ও একা মহার দাহত হিলা ক বিতে কমর্থ সংগ্রাহান তিনি তদমুবায়িক সকল বিমরেরই মর্থ এহনে সমর্থ হয়েন, তদমু-ঘারিক তাঁহার জ্ঞান উন্নতি পার।

जीवरमत आंतरअहे स्वमम लाहक शा-র্থিব বস্তু লাইরা বিব্রত হয়, জ্ঞানের প্রার-ন্ত্ৰেও ভাহারা সেই ৰূপ আক্রতিক পদার্থের उद्भानू मझारन रङ्गीन इत। এত विषयে क-তকদুর উন্নত হইলে পর তত্ত্বানুসন্ধায়ী মন স্বভাবভই আপনার দিকে দৃষ্টিপাত করে। শাপিচ বিবিধ বাত্তিক ঘটনা-কলাপে ভৌ-তিক ও মাংসারিক পদার্থের অনিভাতা জমশই হৃদরে প্রতিভাত হইতে থাকে, এবং मनुया कीतरमद अकुछ महर छेटमाना अस् कुछ হয়। মনুষা বিশেষে যে ৰূপ উলিপিড শারীরিক ও মান্সিক উভয়বিধ দৈশবাবছ। লকিত হইল, জাতি বিশেষে ও মাধারণত সমস্ত মানবপরিবার সম্বন্ধেই ভাষা সমান **ৰূপে লক্ষিত হইবে। বিশেষ বিশেষ মন্তু**ষোর দক্ষাত্তে এই ৰূপ বালকতা যে ৰূপে তিৱে। हिस इत, ममेख सांचि मद्दल ७ जोड़ा (महे ৰূপে তিরোহিত হয়, মানব জাতি মাত্র मग्राक्षरे जांश (नरे क्ष्म । अज्यद मर्ख अक्षरभाष्टे मनुषा वांश्र वश्चत अ कि पृष्टि करत, অভ্যুপর ভক্তিসায় ও ভলিতারে মনঃসংযোগ করে এবং পরিশেয়ে বাহ্ন বস্তু অতীভ যে মন অথবা জান পদার্থ তাহার অমুধানে ও पारिनांचनात्र शक्त इत।

হত দিন অধ্যক্ষেশীয়ের। কেবল বাছা জগাত লইয়া বাস্ত ছিলেন, সাংসারিক ক্ষতি অতিপত্তি, নাংসারিক আশা আনন্দ, সাং-গারিক বস্তু নিম্তই যত দিন তাঁছাদিগের সর্বার ছিল, তত দিন জ্বান গোচর ইন্দ্রিয়া-তীত কন্ট সাধ্য মনো-বিজ্ঞান আলোচনার প্রতি তাহাদিগের যত্ন বা প্রাকৃত্তি মাত্র ছিল না। বিশুদ্ধ জান উল্লেক্ত্রে মৃত্যে সংক্রেক্ত্র

ইছিল প্রাথানিত সংলাতিক করিয়াকিল লেল, এবং শেই লালোচনা ছইতে পরিবাদের কল বৰুল বিলিট উপলার লাভিও করিয়া-ছিলেন। অধুনা কেন্দ্রই ক্লানের উন্নতি, তত্ত্বানুসন্ধানের উৎকর্ম লাভ ছইতেছে। লোকের মন বাভ কগতের দেশীপানান অথচ কণভলুর অখানী পদার্থ ছইতে বিরত হইয়া "সভাান্ধ" লাভেই সমুহস্কুক হইয়াছে। আলালুসন্ধান্ধী বীর প্রকৃতি বীত পাপ স্থীগণ সত্ত্বা তত্ত্ব মনুষ্য মহন্ত্ব দর্শ-ক্রিই ব্যাকুল হইয়াছেন। মনো-বিজ্ঞান, অর্থাৎ মনের শক্তি প্রকৃতি প্রতি বিধি বিচার করিবার শাস্ত্র, একণে সাধা-রণের প্রিয় হইয়া উঠিভেছে।

কিপিণ্ড বিবেচনা করিলেই প্রতীত হ-हेटव एवं वांश्र कर्गंस मन्त्रवाहे मनुषा कीवत्मत क्षयाम छत्ममा। **ष्याना**क हे जा বগত আহেন যে জমতের মহিন। নহীয়ান कताहे आमानिरशत में विश्वकृषि समा। কিন্ত প্রথমতঃ স্বীয় স্বীয় প্রকৃতিকে মহীযান না করিলে যে লক্ষ্য কোন ক্রমেই সম্ভাবিত হইতে পারে না। স্ফ বস্তু দেখিয়াই জ-টার বিচার সম্ভবে। যে পরিমারে স্থাই পদার্থ মহৎ সেই পরিমাণে তাহার প্রফী মহৎ; আর ষেপারমাণে স্থান্তি অপক্রমী দেই পরিমাণে জ্র-উলে অপকৃষ্ট। ছুর্ত্ত অসদাচারী পাপী **ब्लाटकत वावहात दमिश्रा विमि शहरमध्यत्त** সত্ব। ও অৰূপ নিৰ্ণয় করিতে হইত ভাহা হইলে তিনি জ্ঞান থীতি মঞ্চল ভাব বিব-জিভি দৈতোর নায় অভীয়মান হইতেন। সাংসারিক লোক ভিন্ন শার্মিক লোক জ-नटक याम निवास मा कतिक, कोश श्रेतक-निভाटक रचात्र नारमात्रिक बनिजा स्वीयं हे हैं छ। नायनिक मनुवाशाहे मञ्जाम निकृति नि चरतात कुछ जानमां तीर कुछ भाग

বিশ্ব নির্দ্ধি কর্ম নির্দ্ধিক করিছে বিদ্ধানিক করিছিল করি

কিন্তু সেই আত্মার তাবং প্রকৃতি এবং গতিনিপি আলোচনার অভাবে যে বাজির নিকট অপরিচিত রহিল, তামিহিত তাবং মহত্বই যাহার বৃদ্ধির লগনা রহিল, বিশুক্ত বিচার অভাবে যাহার আত্মা আপদার "শ্রেষ্ঠ কোম মধ্যে" ঈশ্বরের প্রতিমূর্ত্তি না দেখিতে পাইল তবে দেই হান অনুমত পশ্বৎ মনুষা কি বুপে জীবনের লক্ষ্য সাধন করিবে, কি বুপে ঈশ্বকে প্রাপ্ত হইবে ? অভএব বিশিকী ধর্মোল্লির প্রক্ষে মনোবিজ্ঞান আলোচনা যে কত দূর আবিশাক ভাগা সহজ্ঞান হৈবে।

महमात मस्राह छेलनका, मस्रा मश्ना मश्ना विद्य लका। केचत मस्राह्यात लका, अवर मस्राह्या केचत किस आहा महत्वा केचत छेलनका। केचत किस आहा महत्वा केचल लगाई चाचा महत्वा। तम्ह तं किस सर्वा कर्षक (श्राह्य हरेगां अहे स्काल विद्य ता काच्या कर्षित हरेगां अहे स्काल विद्य ता काच्या क्ष्य क्

वरण भवितु करता भागत्य संचारण थाक स्टेटक स्ट्रेंक कार्रा केन्सका स्कर्त साथ व जैविक्तिवाद्यक्तिवादक क्रमान् कीरात पिटक लंदेशा गाउँटक करेटक, बबर তাহাদিগের তত্ত্ব নির্মণণ করিয়া তমধ্যে তাহার অস্তার চিহ্ন দেখিতে হইটো मत्मा-विकान है है हो के मत्नि है है উপায়। यक निम भःगादत आहि छई দিন ভতুপবোহী অনেক কর্ম इटेंद्रव वटिंग, किन्छ कीवंदसत गांव कन्छं है আব্রোমতি সাধন করা। ধাঁদার সাংস্রিক অভাৰ এত বে, তিনি তাহার জন্য আপন্র क्नटरा विक्त पूर्णि क्रिक्ट व्यवसङ्ग्रीम मा, তিনি আত ডুডাগা; আর ঈশর-এমাদে নাল্ড সক্ষ অবস্থাতে হীন পাৰ্গিব অভাব সকল বিশেব ৰূপে অনুভূত হল না,ছিনি গৌ খানা मन्त्रमः। दिन्द्र गक्टल्ड्डे न्यूड्न करा छ। চিত যে, আত্মহি আত্মার এক্যা,সংসাব নছে, मेथ्रहे ष्याचीत नक्ता, मःमात सरहः 🙄 रथंत विषय जाहे था, खोक्तरमा क व्यक्तरम অবতীৰ্ হওয়া অধ্যয় ইহার অমাক্ষার क्रमण अपनीत कडेटरहा हुउँ अधक्रु **छेटम**नः मृत क्हेश जन्दम कीवटनत यथार्थ লাৰ অনেকেৰ মনে **ৰভু**দিভ ভইচেছে, এবং উল্লিপিক-প্রকার জাতীয় টেশ্লবাহস্তা व्यक्तिकोत्त वृद्धेयः भाषादर्भत घरन थाकुन মরুষ্যভার সঞ্জার সহতেত্ত । এমত শুভ मसद्ध सदम्हिन स्थान भारत्वत भगावत कहेटव ভাহার আশর্য্য কি ? মত এব এই ছুর্ছ. विषय भर्या(त्यांक्रमा कृतिवात क्रमा यनि चा-মরা অগ্রসর হইতে সাহনী হ'ই, বোধ করি माधात त्वत वां यशानु श्रीन ८० की क्षेट्रेटन मा। ফলত এত্ত্তিবৰে স্বাহানের সৃষ্ট্র আ মরা আপনাদিগের অনুসাযুক্তঃ দীকার ক্রিতেছি। আমরা বিশেষ কলে অবগত भाकि यु नगटम नगटम अक्लांद्रमावनांस व्या-

প্রাচিনের ক্রিডানিত রুমে নিপ্রিছ চইবা কিন্তু প্রশান্তচারত ন্যালীক বি ছান পাঠক রুগের নিকট আমানিগের প্রটানিলের ও উচ্চার অনুগ্রহ করিয়া প্রামানিগের অন্তিজ্ঞভাসমূত লোল মা-জনা ক্রেন, কারণ থদিও আমানিগের নান ভাদল উন্নত না ভানি আমানিগের

ভদ্ধবোধনী পতিকা বিষ্ণানই ঈশ্ব-८३३ भीतिहादिका, डांकाप्रकांत महकातिनी। ¹⁹ এক মেব (৬ তীয়: ¹⁷ ঈশ্বর তাহার হাদবের গন ' একংমধানিতীয়ং ' উশার ভাষার राष्ट्रकत भूकरे । यथन य अन्य व केस्ट्रड একটিত হুইয়াছে ইশ্ব অনুসন্ধানই শাহার एका हित्सका जनभा समाज है जाहाँव जन प्राप्त स्वकार । एउं उस्र क्षिट्यं गांना वहेंगा। ত্রোত অলিবাহিত হঠ্তেছে, নানা বিপদ পাৰ আগ শক্ষা কথা চতে, কিন্তু অট্ডেড জাবে চিত্তকাল ভাত্ত্বাং ফিলী মেল আলোৱ-জড়ু প্রমেশ্বের মণিয়া ওীদ্দল ক্রিয়া-ছে। স্থিতখাল, বিচার বিক্ষা, প্রাক্ জ্ঞান প্রালুক, বকলের মধা স্থাতে জি व्यक्ति भारता एको शामान अकाम शक्ति-বাচে - প্রত্তে স্থান মনোবিজ্ঞান বিষয়ে আমেরা কালোকে কেলিচের অলাস্থ দুইলাম, ত্তপত্ন কে তাল্ল মহিমণ ছেগ্যাণ। করিব, প্রাক্ত নত বঢ়ার বাবে, ক্ষেক কে প্রকার সভা रुप्तक, संका का अन्ति अनुस्कार **महिना**। - মে'ল্ডা এবং বেশ্যালন্ম **প্রচার ৷ পাঠকরণের** ार्य अप भिरतनम् त्य सुक्रम सुक्रम केला-বিত মতা জ্যোভিতে যেন ভাষারা মেই मक्त चलात्मह नुभ क्लांहि मिवीकान करत्रन, अवर शास्त्रक गटक मरस्यांन दर्शायया स्यन লাখালা আন্তালার সহিত এই ছবাং বিব-বের সমারোচনায় প্রস্তু হন 🗀 🕒

নকিনা শুক্তর **অউলেন কাব**ং সারিক ব্যক্তরনীজের বক্তহা।

एक इसे साम ३३०क लोक । १ १०० १

नृधिवीत नुताकृत आदनांत्रम केतिरन প্রতীত হটাবে যে, বগমই ধর্মা পিরুতাবত। ধাষণ করিয়াভিল তথমই ভাষার পরিবর্তন क्रमा लाहिकत व्यवन देखां क्रमिशंकिन उ ভদ্যনা প্রায়স আনুদাবিক উপস্থিত কট্যা Conta ममाक निश्नमा क करेशां छता। पर्धा निः कुकारका राजन करिएस भरमान कीवन केम्प्रेस भी जि (भारकत अमरण व्यवस्थि करत मा, অলীক জিলা কলাপ্ৰসাৰ ৰাহ্য আলুটামেন श्रांत छोडात्मत मन्त्रान मदमादयाच । वृक्षे कर् ভাষাল কেবল মেই সক্স কাৰ্য অলুখ্ गरक है शुक्ति अक मोज है भाव यालिया छ,त ফারে ৷ ভাছাুদিলের স্মে সত্তার জেগতি-क्रमभः भाग भ्रेमा भागेत्मः । ७० अवसार्यः লোকে সক্ষাধাজকদিতের একান্ড সংগ্রিত ध्यु । छन्द्रांची भाग्य करत (य. ८मचे गरुण भन्द য়াজক, ঈশার ওমাণুমেরে মাধান্ত সাম্পার ও জাতা ওমার বিশ্বান করে যে, নেই নকা भन्न माक्रक क्रेयर एक गाँव विभाग विभिन्न कार अभू भारतम् । सम्बं भाकरकद्रां ७ व्यादकत् धक क्षित्र स्वार्क आश्रमात्मत स्था मान्द्रवत सेशात কারতে কটি করে না। ভালার অর্থ প্র ভাশান বাছ জিল্লা-কলাপের মংখ্যা বুজি कहिए एवं करन, सामाता विभक्ष कारन त्य, यड है किया क्लारिश्व मध्या विभिन्न क ইবে ভত্ত তাহাদিপেরই মুদ্রাখারের পূরণ কাৰ্য্যের প্রতি মহকাবিতা করিবে । তাহারা नर्भ-गोधन क्रमा लाकाक भीएम कतिए७७ महेक्की करत मां अ जोकांद्र निकामिर प्रश्न मन में भी के प्रतार को अरमार को नी के के कि एक वन

লিত্ত সালে মনোবোরী কা বিক্লান কালে কি বিক্লান হাতে লোকে মাজনা-লামক আমিন অকৃতিম অনুভাপরপ প্রকৃত থাযুক্তি ভাকে অব্যেলন করিছা কতকভুলি
বাকা উচ্চারণ, অথবা কল্পিত পানিত্র জলকালি, অথবা ধর্ম-যাজ দলিগকে দান, পাপ
মোলনের উপায় বালিয়া অবপায়ণ করে ও
এলন্টানে প্রকৃত হয়। পাপ মোচনের
গপ্রার সহজ উপায় অবপায়িত হত্তে
পাথ গুরুত বেশে কৃত্ত প্রবাহিত হয়
ভাহা নহতে ই বুলিতে পারা যায়।

अस्तित्व अक्षे भए भएन नहिंद् रय रथमहे प्रमू म गास चिति एत्, छनमहे छ (है। ানবারণের উপায় আপেনা পাপেনির ঘটিয়া BCX । अने छ तांग ह विकास विकास াগকে ডাঙার পারেশ্রম জন্য লোকের এব यदन एक। इत्या २ इन्ह्या, व्यक्ति वाः भ्यांका विवासित हरेगा । वाक महास विभागाण रहा। जेलद्वत चाह्यभागान अहे অস্থারত কালে হাহর উপযোগী বংশী-१ भागत्यस्थितः । अस्य स्थातः शहरतः कर्यनः ···+·· १९८१ हो। जीत भुक्तम भक्तल अवनी-सक्षाक त्यापिकृति रहत्य । केल्यानिद्या शास्त्र व्यक्ति । ज्यनः एतादक्ति सदस्य क्रिकेटि क्टे**ट्ड ऋ**उछ। धट्यिक छाट्योलक २ क न महाराजी किया अर्थ किया अवस्था जा াদিবেশার মধ্যের আভাবি আছে এক এল ১ बरेशा के द्वारा। अकल अमर्ग ७ मकः, ध ু**টনার উপর সংবক্ত পুরুবে**র একটা স্থাধারণ **্ৰিয়সূত্ৰ আছে কেবল ইছা** বিশাল করিয়' তাঁহারা সম্ভট হরেন না। প্রত্যেক স্কুত ঘট না প্ৰান্ত তাহার ইচ্ছা ৰশতঃ হট্যা থাকে, योगात व्यमीम गाँउन महत्क किछूरे त्रहर ं नदहः याद्यंत्र गर्नास्कृतकः मश्रदकः किङ् सूज नद्द अगड विश्वाम कहा डीशांकित्यद व अंतिकः स्रेक्षा पात्रः। जिल्लाहरू क्रीसी,

मेस्टार बाब्ध रहणांका, मेस्टार छेने छान कहा के कि मिट्राय की बटनत करूम लका। अना व्यमा अमीमन्त्र मातीता व्यापाशिक छेना-मनात ज्ञादन दन मकल भागांत्र । भागांत्र अनीक जिन्हा-কলাপ-ৰূপ বাংল অনুষ্ঠানের স্থাপন করে, म मकल क्षा असुक्रीकरण कीक्सी अकास कृष्ट् करतनः माथरकतः मेचतरक स्वयन বিভাচের নাায় একএক বাব দেখিটে পানি, डीहाता रमना अक अकरोत रमर्भन है। के। बार्य मकाबार (यह क्यांतिक क्यांति क पर्याचिकरण ८६८चर ७ मध्यु**धक रक्**त सर्य केरिया भारक सरनाम व ध्यंत्राप कर्यन । बर करा शरिया नकारना आहे केहिन বিবার্থা ভাত্তিল করেন ভাষার জনাস बाहो है। अस्य भागातमा अना पद्यान (एकू স্থাকার কথেনবার জীয়ার ক্রায়ণ লাভ ক্ষায় উচ্চার। পানিতপুদ ও জুণু মুকলায়ে कुछ वर्षामः माप राज्याः भाषात्रकाः লোগ ৰ বা,ৰাপ্ৰাণ এটেড আবিজ্ঞান খণ ্বান ভালেতে কি স্থাপুলিবেল প্রস্ন 《西南南河南河河 医对前的 斯柳西藏作鱼。 यम्। १८ । अञ्चलिकाति । स्थापः । १८४ । भटारा स्थापः म श्राम स्थादको ए कि. । क्रान्ति । , পামৰ মাপো পাটা ভিচ্ন । মণ্ডাল । লাভাজ । 化价值的 化甲甲甲二酚 医黄色的 经收益企业 姓氏部队 机自体分配 化自由 医三种间隔 电二次区 नक व का विश्वीत छन्। भ केंस्ट कार्यक ০০১। ইটোর তেন মক্সেন প্রিয়ক আট্রেন : कें कि लिखन कि इन्हें इन संयुक्त करता के आ भिष्यार नित्करम भदर् छं,क्शनिद्धन मुश्की वानम्बर मुकुछ, काच्या कर्य नाचा वार्योर বন্তা অথকা কুলানাদলেক আত ভাঁছে(দেন क्षक आपन गाँछ। डीवाडा भार्थित वर्त्त भनी मान्य, केंद्रिश भारत भारत क्यों। जाहार धनकात-भूर्व भषाष्ट्रकपुत्र वाका विभारम পर्टे नदहन,ग्राच्यालक्ष अकाहे केंग्स्निट्लंड

दक् प्रारं धक गांव वनसात । जीशीनद्शंह কুলীনত্ব কোন মতালোকের থাজা কর্তৃত্ব चमञ्च सदर, जारा (महे हाकात अन्त्र) कर्क्स श्रमक, योष्ट्रीत जिल्लाम हारणारक अ कुर्ला-ाक शां**ङ्कि**क इंश्लिट्स ষ্থন সেই स्कक्त भूरूष के शिक्तित्त आश्रात मभी भ-ए**डी** कात्रवात विभिन्त अर्थना वाल्य तक्षित्री-हम, कथम छीहोता कि श्रमान वास्ति नरहन? कालि भूगे प्रका विनेश इस. एथा पि गयन কেছোল বিদান্ন থাকিবেন তথ্ন ভাঁচাবা क सकलमा प्रवासिक नाहरू । के हि। मिटलेस हैं। শ্বদ সাসন ভাষা সম্বা কর্তি ভুক্ত কালের नहेंबा-मक्त्य विहिठ ५०शाहिल। छैकि। भ-ুগরাই জানা রাখ্যা সক্ল উচ্চিড, উল্লভ ে বি-্ৰ হইয়াছিল, ধৰ্মায়ে মহালুক্ত কলল ক্ষম অফল করিয়াছিলেন। ক্রিলিগেরই ংশেল জন বেশ এতের এচবিভা গ্রন্থ পর্যা अन्य अक्त बहरा कांत्रचा (चाल्टाहरू । किंदुान । भारतात्रक् सङ्गल कामा अस्य अस्य कर ५५। भारता वानम क्या ५ भिष्यक महा वास्त्रम भिरादिक्रम । भाग (मा भावरा अव्यक्षका) (महे रक्षा-व्यवहरू भिटाबंब व निकासिक एक्सवारा निविधान प्रदेशी ()分析 (唯)人们可以对策 英雄岛 斯尔) 美国化的 িজাননিংমারিক সোণিত ভ্রানে পরিভ रहाइकित। याज्यात शहादा जालगामिशस्य मधनके कीम है । केटबन ना । किसीना छ-भीनांच्या अवेषा भागांत बरका विवसन करत्र । গলম অৰম্পাকাত ধাৰ্মিক পুৰুষেরা **ঈশ্বনে**র हभामन अधिः करतन, ७४२ खाद्यान्यात्र प्रमान्त्रांक ।द्रांध-इसंव अवृत्ति क्रांकित वा-भागादिक तका । भक्त मुखे २३। हिर्दिश যদ্যপি বেংলবশভং কেনি একটি কুর কু-कक कटत्रण काका इंडरवाल जोड्राविन्द्रगत वास्त्रिक योजनांत व्यास्त्रीमा व्यक्ति सः, व्यन वसः वाकाहः मध्य मगुरुः कि व्यात्मानिक वस्य विश्विमित्ति सम् क्यास ध्रमान क्रियन,

इहेब किन्ने । किश्वाका अन्नेस विवास नाम शिक बहेश भरे चार्डनांव करवन से "श्रि-स्टम वसू के स्थात मुख स्थामात निक्छ हहें दे नुकांशिक त्रांशिशोद्यम् । यथम् काराज्ञ थन সাদ আমি হারাইখাছি ভগন আমার কি तिहिन ? र सांबादत कीयन नंबदन कीयदन ফি কাঞ্জ আমার 🗥 ভাঁহারা উপাসনার সময় মনের এপ্রকার উদ্বেলতা প্রকাশ ক্-রেন কিন্তু মাংমারিক কার্য্য সম্পাদন সমরে ভাঁগরা সম্পূর করেপ ভিরবী ধারেক। আন क्यां कियत अहे स, माश्मारिक कार्या मन्त्रान्य महत्य ज्ञानात् भत्तत् द्वित्र है। मिरुशाब बर्ग्यालगाच हाचेरफ टे डिल्पच इस्स भरमञ्जू दहें ज्यंदी भदकाशांत अदल इहेसा অনঃ ভাব সকলকে আস ক্রিয়া ফেলে ৷ कॅशिएमत राध (ध्य, क्लीन, क्ला, मकन है किकारमत् धरश्चाएम। दश्च अपनीम । सुङ्गः स्त्रा क्षानत निकार असमय सर्थ, आर मीन केहि रमत सिन्छे भरमान्त सरकः। 🕉 हिएए १५ । भागा काम्मूम हिलाम १ ८ ल्या ५ प्याटक वर है। কিছু আছা সংখ্যাবিক বস্তুর জন্ম নাত্র। भरमाध्याव छ।बारमव समस्य बाखद्वतंत्र क कांत्र करत, केंक्स**रम**त कामग्र हश्रह कारम প্রতি এবং পক্ষপাত দুরীরত করে এবং होहोत्मत विश्वत्य विश्वन् ७ व्यापा ७८ वर्ष পরাক্রমের অভীত করে। ভাগার। পূথি दौरक (लोक्नरखंद नाम्ब भगम करहम। मञ्जूरवात मदक कें। इंटिमत मध्यान व्यादह वटहे, किन्छ छ। हात्रा मानवीत्र काल आदवत छेलु इ स्थ पृथ्य जा। छ ७ कम गर्दक ठीरात्र মতব্ । ভাঁহার) অর খার। শাক্ষত হ্রেন না, বিশ্ব বিপত্তি ছারা প্রতিষ্ঠ ছয়েন নায় ভাঁহারা ক্ষভিকে লাভ বােধ করেন, লজ্জা-क श्रीवर भरन करतन, **क्वर मृ**ष्ट्रादक क्रम ক্তান করেন। তাঁহাদিলের চিত শান্তীয় क्लीनका विषय अञ्चलक करते। कि के अक

বিবরে ভাষা খতান্ত কৌনল। মহুবোর दानि बना जान कि भवाद वारिज रह ভাছবিনা করা ঘাইতে পারে মা। পাপী मसूटवात शतिलां। अना ठीहाता गर्यनाहे কাতর চিত্তে ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনা করেন। কোন বাজি বেনন ভাষার ভাতার ছ্রবস্থা খনা জন্দন করে তেমনি পতিত মনুধার জন্য তাঁহার। সর্বহাই ক্রন্সন করেন। মনু-যোর পাপ জনা বিহাপোক্তি তাঁলদিগের বজু ভাতে মর্কাদাই উপলক্ষিত হয়। তাঁহার। कुममदत्तवे कुटलाकभूर्व ममाटकवे लग धवन करतम। लाक ममास्वत य मकन लोग उ জন সাধারণ লোক দারা অনুভূত হয় না, (म मकन (माय ७ अम के इति। श्रीय अमा ধারণ বীশক্তি দার। অভুত্তব করেন। ভাঁহা-एक छोटका एकवन जानवान विन्ना ७ वि-গ্রহই ঘটিয়া থাকে। তুট লোকেরা জী-হাদিবের সম্পূর্ণ শক্তর করে এবং যে পর্যান্ত তাঁহারা না নিহত হয়েন সে পর্যাশ্ব ठै। हां जिल्ला का बीतिक अथवा माश्मातिक মন্ত্রণা দিতে কান্ত হয় না। কিন্তু হত চই-वाद मभटप्र छ। हाहा श्रीम निधक्षांकां नि भटक मदनत माङ्ङ जामीकीम कहिया जातः नामिट्यंत अनार्यंत अनार्यात्व अनाया अ **কাশ করেন।** এঞ্চকার বীরপুরুবেরা ভারি मस्यान्दिशत चक्टन्त शमसाशमन कमा निष्का কবঁক ধারা কভবিক্ষত শোণিতাক্তপান হইরাও মহ। কম্ফে তুর্গমন্থানে ল্ভন স্থাম পথ শক্ত করিতে যত্ন করেন। এই প্র कांत्र मसूया यांता है कार्य आत्मानिक इस । এতজ্ঞপ মহাত্রা-বিগের ধর্মোপ্রেলর এত বল বে তাহ। বর্ণনা করা হার ন।। भीष अधिवात। छीहाटनत जिल्ला अति-नम रुप्त, डीसंटम्ब मुख्या विश्वार ज्या नावि व्यक्ति वातम् कटतः, विभागनतानः महिक डीकारनव स्थ रहेर ज नका विकास सा

বরং বার্থীতা আসিয়া ভারাদের ওতো-शति आविष् उ हमी वर्ष विषदा वलि-বার সময় ভাঁহারী কোম ভয়রীয়া সক্ষতিত स्य मा । यना भिष्ठ स्मिनि की सीनिद्यात कथात्र কম্পিত হয় তথাপি যে আম তীহাদিবোয় मंडेटक चनित्डेटह छाङ। धर्कीन मा क तिया कथन है का है था किए भारति में। ভাঁহার। দকল সাংদারিক কার্থা পরি: कार्या ध्यव्र ভাগি করিয়া ধর্ম প্রচার হয়েন তাঁদারা যদি অনা কার্যো খায়ৰ इत्यम जोश करेत्य तक त्यम जैसितिय हर শাক্ষণ করিয়া ভালোবিখাকে প্রচাৰ কার্টেইট नियुक्त करता। है। शका समहे कारी। मान्यामन জন্য বিশ্রাম আগারের আর্নম ও প্রিয় ব জুদিতোর মনোরম সংসগ পরিভাগে করেম। नके क्षात्र कर्नु केन्। विश्वति विश्वति । প্রিয় ও নিজ্যে প্রতি মিষ্টুর করে। পেট শ্বন্তি ত্রীসাদিগতে নিজা স্টান্তে ব্যাহত करत ७ शातवाम विषय व्यक्ति चूना करत। তাঁহায়। বলি স্বভাবতং ভীয়ে ও কোমল মরুভি হবেন ভবালি উহোরা যেন দৈন-तल काला जगाधातम भाक्षी ७ करो-माहक क्रोगों छेटरेय। शृथिबीटल म्याप्य स्थानन-নের অভিসালে ভাষারা এগানে আগ্রমন करवम किन्छ कार्या एमि एसेन चेटन ना। উল্লিয়া চতুৰ্দিকে আনি প্ৰজালত করেন चात त्य भरी स्व अपने भी स अक्ति छ हम काँशिक्षिक भन अधिमास श्राम । मक्दल बरे मदक की हाएमब दिवाम विमान के लिक्स र्स। जाशास्त्रः को नाश त्नाव हम 🕏 🕒 हाता (धन दक्तन मःहात कांग्रेडिंहे शुक्ति-বীতে জন অহন করিয়াভেন কিন্তু বস্তুত रपमन डीहाता भूतांजन बाँग्रीलिका विमान करतम उन्होंने स्टन चड़ानिका व निकान করিয়া বান। বে পর্যান্ত না নেই মুখ্রন ছা-ক্তালিকা নিশিক হয় সে প্ৰবাস্থ ভাষায়া

ज्ञांचक रहका का वान भूतांचन आउँ नि-कात रसाम व्यक्त उडाम थाटक ଓ क्रीक्रांटक রক্ষা ভ্রিড়ে পারেন ভবে জাঁহারা ভাহা क्रकः क्राः जो जारभाव विषयः स्क्रांन कृत्वन, किछ ग्रमाणि कांन अश्महे छेख्य ना पांटक हरवं (म भूबांडन अर्जे निकारक ममाक्रार्थ चाकिशा किंगिट डीवांता किंडू मांव म-(छा**ड करा**स मा। सुख्वार गरान लांकहे ভাষাদিনের শত হয় এবং বিপদ্যাগর আসিয়া উ।হানিগকে বেকনৈ করে, কিন্তু জন্মর স্থাহাদিগতের কথানই পরিত্যাগ কবেন া। তিনি কথন উচ্চোন্ডের আত্মাকে अवस् १७ मिश्रमान् इकेटल (कन मा। लीहा াণ**ভার কারাগাতে**র প্রচিট্রে তিনি স্থলীর স্তবের ছবি চিত্রিত করেন। ভাঁহাদিগের अपने कृष्टित प्रत्यंत क्यां हिः मस्त्रं हे मीलि भाष्ठ कथनदे निकाण रत ना। केंगांता ने ध রের অনুচর জীফাদের ভবের কোন দারণ माई।

विद्युष्टमः। कृतिहास शकीष्ठ क्रेंद्रि थ्यः, পুৰুষ্বনিত ধাৰ্মের বিক্সাবস্থার লক্ষণ ম व्यक्तितित काग्रह्मि ভाরভবটে कुक इहेट ३८६ ७वर धर्मा शतिगर्सम जमा লোকের একটা প্রবল ইজ্বাত ক্রিয়াছে अन्द करे जमानात्व काराज्याती भगावा-इन सर्का भाषी, ७ सर्व मध्यात कार्या प्र-म्। धार्वे करण यक्ष्यान्, धकांख क्रेश्वर शहा-यन, कन्छे महिस्यु त्लाक मक्ल अध्यामित्न इ नद्या छिभिक इर्नाट्यन । त्मरे मकल जाति-श्रीकादकांद्री नाङ्गिनित्शत मत्था व्यक्तिकाश्म খাকি বিছান্ওধনবান্নহেন কিন্তু ভাঁহারা लरा विमाश विषान् ७ शहम धरम धनी, धन अक्षरा विभा शिक्षं क सा किया के शिविगदक कारम मं, प्रमश्न प्रश्वा विष्मम् मत्या कार्राप्तराव सार्गित अर्रातिक मार्रे क्षि जेनक हैं। हानिशदक छे छन्न करन कारने रचन मर्थनी मरमा जीहान्द्रपत स्थलानि भोत्र विकासिक स्रेटफर्ड के की स्नितिक हैं। ন্যায় শান্ত সমাহিত ন্যু স্বভাব ভিভিকু ब्लादकरे देखरतत थित यहाने । स्थान वाकि वार्यका डीशब्रिकाइह बाहा के শ্ব অধিক কার্য্য করিয়া লয়েন। যুধুন यमन मध्य वाक्तित अत्याखन इस क्षेत्र তগনই তেমনি সাধু ব্যক্তি থেরণ করেন। যথন এশকার ব্যক্তি সকল আমাদিলোর মধ্যে উनिত इरेग्नोट्डम ज्यम धर्म अतिवर्जन्म অবাহ আমাদিগের দেশে প্রবাহিত হইতে আর বড় অংপেক। নাই। যেমন বণার পুর্বের নদীর উপর কেবা দৃষ্ট হয় ও বলার শকার উত্তেক করে,তেমনি ধর্ম পরিবর্তনের ব্রানুর পূৰ্ব্য চিক্ত স্বৰূপ কোৰ কোন মহাত্মা বাক্তি দারা পৌড্লিক্ডা প্রিডাক্ত হইরাছে ও পরিবর্ত্তন পাতি গক্ষা দিখোর শঙ্কা উপস্থিত करें (७६५; व्ययम द्वारत शक्तम आद्वा न विद्धा भूक्तिगीत रूप्या मकल (महें बनाति काल मिनिनाइ क्या वाकित इस्टब्स्स यहम डाक-বর্ষের অনুষ্ঠান এচলিত হইতে থাকিবে ৬ গত্ম পরিবর্ত্তন ক্ষমিত আন্দোশন মহা প্রবল ক্ল পাৰণ করিবে, ভখন পৌত্তলিকতা ৰূপ প্ৰিণ ভড়াগেবছ ব্ৰাহ্মপ্ৰানুৱানী লো-क्ति । त्र हे श्रीतवहास योण पियोत कमा অন্তির হইবে। যেমন বণ্যার দ্বারা স্বাপা-**७७: मोबा धकात होनी हम्, किन्छ भेटत** ভূমি উঠের। হইয়া যেখানে বণার ফল তর্জিত হয় যেগানে শস্তা পূর্ণ উদ্যান স্থাক্ত করিতে থাকে ও শাস্তি ও সচ্চন্তা বিরাশ করে, তেমনি ধর্ম পরিবর্ত্তনের দার। স্পাপা ততঃ অনেক লোকে: ক্ষা হইবে কিছাত বিষ্যাহংশীয়েরা সক্ষমতা লাভ ক্ষরিবেন अरमरक धरे क्ष ररमम (क्ष्मकरमः क्यूक्र वर्ष मिका त्मछ ; अधिकाश्म द्वारिक वर्ष निर्याम मर्ग लाग नां कतिद्द अवश क्रिके छात्रहरू विमुक्त श्हेरव, कशन वन कतिश প্রাদ্ধার্থের অনুষ্ঠান অবর্ত্তিত করিলৈ তাহা महत्व अविनिष्ठ हहेत्व आत् कांन करो शाहिएक हहेरव ना। गाँहां वा अक्ष वरणन छै। होता वित्रहमा कदतम मा त्य, त्य मत्ल চিত্ত সহাদয় ব্যক্তি নির্মাণ জ্ঞান লাভ করি-য়াছেন তিনি দেই জ্ঞানামুগারে কার্যা না করিয়া কতক্ষণ ক্ষান্ত থাকিতে পারেন ? তিনি সেই সর্বাদৃক্ পুরুষের দৃষ্টিছে কত-ক্ষণ কপট হইয়া থাকিতে পারেন ? তিনি পুষ্টেলিকা উপায়না ছারা আপনার প্রিরভয় ইশ্বকে কভক্ষণ অনুমাননা কবিতে পা त्तम ? हेहा मथार्थ पटि य लाक ममाक চ্যুত না হইলে ভাষার আনেক উপকার করা যায়, কিন্তু স্থানৰ ও ঈশার এই ত্যের অমু-থোবের মণো কাথার অমুরে'ধ রাখা ক र्खेका २ केन्यरसंस अञ्चलका त्राच्या व्यवसा कर्षना, किस नेनारता अयान नित्रमार कें। হার অনুরোগ রক্ষা করিতে গেলেই দেলের छेनकात पानि पानि करेता छेटो। সীয় দুটান্ত ছারা দেশীয় লোকদিগের স্ পরে কপটভার প্রভি বিষেধ উৎপারন করা অপেকা দেশের হিডকর जात कि चांटह ? यमन श्रदांशका कना मिथा। कहा फेठिए बटह एकमिन एनएमात के शकांत्र कता अर्था विषया कश्रीतनात अवस्था क्यां कर्जना इत्र मा। विश्वक छेटलना हा-ধন জন্য অবিশুদ্ধ উপায় অবলয়ন করা কগ-बहै छेटिए इस ना। अनी विषद्य अक्शी श्रेश विविध अकादत कि म्हानत उपकार कता यांटेटक शीटत ना ? मल कतिया धरमीत অনুষ্ঠান আরম্ভ কবার বিষয়ে পুরার্জ গাঞ্চ थाना करत्र मा। मका चार्तिर वक वक्षन করিয়া মুতন ধর্মা ও তাহার অনুষ্ঠান সব-नष्टमञ्ज मुक्कील धामनीन कत्रिशाहिल, छोटाटमञ मरेशा भटत एल स्टेशिहिल। ये विनय

जन्देशन जाइत रहेक मा त्तम अवस्य अकि-अक्कार्याच्या **अर्थेट एके** क्वेटर । প্রতীত হইতেছে যে ধর্ম পরিবর্তনের স্থ-थरमता छेलाय नारे। धर्म शतिवर्छन माधन করিবার জন্য ঈশ্বর সহজ্ঞ সূপ্রমার জনার্গ বিধান করেন নাই। সমাজের শান্তি ভক মা করিয়া কোন এহৎ কার্সা সম্পাদিত হই-वाके निवय याजीक त्वान का-জ্যের দোঘাবহ শাসনপ্রধানী পরিবর্তিও হই-যাছে ? খাপতিজঃ অনেক তালি লোকের কন্ট বাহাত কোন্ সামাজিক কুরীতি **উম**্ निक इंडेगाइ । यमन श्रु गांजनी वालीख तालक, श्रन्तानिवादलालमध भृतितिदय भृ কিও হৃত্তে প্ৰেম মা, খেমৰ মতুন যাত্ৰা ताओंड प्रसुप्ता प्रांतानीतिक स्राचन व्याचन উলীর্ব হইতে পারেনা, ভেম্মন কর্ম ও বেম বিপান্ত বাতীত ধর্ম প্রিবর্তন কার্যান নাধন হট্ডে পাটো লা। নিশান কোন, थ-थरम भन्त मार्थाम (नार्यम्य मरप) थान्तिक হৃত্যে পর দল কার্যা অফুটানে পর্ক हर्रे बस्या करे क्ष कडरे लावित्य गांतक, अवित इंडिट इ.सं. चन ही जा ग्रमा सेक्स cease करतम, विभि प्राप्तिक क्यों। अप লৈতে কেয়েছ কৰ্ম মাল অনুধাৰৰ কামা এক बर्गाहरू मुल्लाका कार्यक । भवतः १०७० वि এই বলে পদ্ম প্ৰশ্নিক্ত্ৰ কাৰ্য্য সম্প্ৰাধিত जेसर्राह्म । अधिवन्य किष्टु समाधिक भियः १४२ विक्कि के नत्व । अन्तानः रत्तान भवा मा कार कार्या त्य कत्ना कल्ला किए श्रेष्ट्रोट्स स्विडन्ट्रसंड स्टोर्ग (गर्ने कार्यु गण्यानिक रुदेश(८५ ७ स्हेरन।

अक्षात्मक नावनां कथा ।

(新樓)

अनुकीद्यत श्रीब्रष्टाविष अत्नदक अत्नक ध-শার তক উপাছিত করিয়া ইখার অনাবশাকতা अक्षाम् अविटल सबुकुक दहेशाद्यमः आमुकान काली आक्षतन खरिक ଓ खरूपमनी वनिया नाथा-রণ সমক্ষে পরিচিত হইতেতেল। বলিও ভাঁছার। ्रमन्थ्रहिष्ण यावछीय कुञाया ও कुमरकाप्त मक्रालंड क्षेत्रभवाती कहेगा विनिद्धालय, विभिन्न ভাঁছারা পৌড়লিক ধর্মরূপ বিষম জনজাল ইইডে আপেন্দিশকে সম্পূর্ণ রূপে উন্মুক্ত করিয়া এক মাত্র সভ্য পর্যের পরা অনুসরণ কবিগাছেন, তথা-পিও অনেকে ওঁলিকিখনে খোর কুনংকারাক্তর দ্ধলে পরিচয় দিকে কিঞ্জিয়াতও সম্বাচত নহেন। এমন কি উহোৱা বেমন পৌতলিক ও জনাান। ধৰ্মাৰলৰীদিগকে ভ ক ভ্ৰমসন্থ নভ ও বিশ্বাস এবং ছুবিভ আচার ব্যবহার সকল পরিভাগি क्रमधानसङ्ख्या आधित्वत प्रष्ट्रकी ६ अनुरुद्धन कविएक অনুভোভনে আহ্বান করিছেছেন, তেমনি অপর क्यमे 'क्ष'क्ष कृषे इम् मीश्रत। 'चाल्यामव नाचावन नक्कारमध्य व्यक्तिम्कानी खेक्यान महात्व प्रमृत्य भावकितिः क्षेत्रकः अक्षान्य छन्दम्म किरल्डस्न : এই রূপে অসুষ্ঠানে জন্মত করিয়াকেন বলিয়া সর্ব মধুরীজ্বাসক্ষম আন্ধাননভাষেত নাধারকের স্থা-स्थान्त्रतं कवियोतं ८६कि। स्थाटमः स्थाटमः स्थितः स्थी-**ंकराज़ । त्या विस्न त्मां ब्यामांग के। मामिश्रात्क वार्यान्छ।**-ভূত্তি ৰলিয়াত সংখ্যাপন করা ত্রীয়াছে: আপচ (केवल व्य ब) व्यत्यूत्र ब्लोटक है। कानुक्रीम कहिया क्ली नेटमान खेलाँडिङ कविपाटडम ध्यम नटक, किन्द्र Cकास (कोच अ। क्रिए जेकान मन्मूर्ण दिखाधी स्टेडा উচিয়াভেন,। যাঁহারা আক্ষা নক্ষেত্র ভাঁহারা খীয় খীয় সন্ক নলে প্রভুত ক্ষতাশালী ও বিজ ব্ৰিয়া তাসিভ হুইলেও উভিচের অনুঠান বিষয়ক मण्ड मराह क्यंभेट आंदा हरेटड शास्त्र मा, किन्द अधिमञ्जाद व द्वारामञ्ज बादका युक्त इहेशा करू-केरमञ्जलाम क्रिया किर्मन हेरा कालका चारक-পের বিষয় ফি আড়ে গু বোক-তর অংবা কোন খাৰ্থের ক্ষীভূত হইয়া বে ভাঁহারা অনুঠানের क्षालिकृत्व मकाग्रमान इरेग्राइन, जामि बक्दन ल विष्ठा कि हू विवाद । इंदा विद्रान क्या (ध. ব্রাক্ষদিশের মাপা এই অনুষ্ঠান জনিত অনেতে অ-ट्नक भए जिस्रोविक कतियोद्या अ**मुक्तीम विचरत वचन** मरल्य बलाइन विजिन्न सिथा यादिलाइ, जन्मन ভাগা যে একবার সাবশেষ আন্দোলন করা अधिनाक जाहारण जाह गत्मक नाहि। असुनान अही जामन श्लीविन श्रद्धः क्लाक्षमि निर्श

Auffig er miere erftellingen falle Girff einelaniers aifeine date vise faur a क्षात्वत नव्यत क्षत्राम सात्र नकानत कावतत्र वि-वान ज्ञान करा कांछ कड़िया स्टेशाएक। तथ्मता-धिक अजीक हरेन आधामित्मक अंदेन त्रयान-कावन कविकाचा जोकानमारकर बाहारी महा-শয় ভবানীপুরের বাজাগদাক্ত-দল্পিরে "ব্রাক্ত সমাজ ও সামাজিক সংস্থারের⁾ বিষয়ে যে ৰজুতা করিয়াছিলেন, ভাছাতে অনুষ্ঠান লইয়া প্রকৃত ক্ৰপে ন্যালোচনা করেন। ভিনি ভাষাতে বিল-क्रम तुवादिशारम्म (य, भरमीत नाहांचा अहम ना করিলে সামাজিক সংস্কার কোন প্রকারেই সক্ষা: দিত হইবার মতে; এবং নাজিকদিশের ও ক্ষাই माहे, यांहाया गर्वमा किसारकरे वाल, बीवार। দেবলগাল সুন্দর্গিনাত ভাষাবলিপরিপূর্ণ সং মাজ সংখ্যার বিশয়ক গ্রন্থাদি লিখিয়া এবং অংশ শয় বাক্ণাটুভার সহিত কত্যুকা করিয়া পরে ক্রিয়া কাবে হত্তকে সজ্ভিত করিয়া রাজেন, উল তারা ঘেষণ প্রাথনাদের লক্ষণে শিক্ষ করিয়া ও भिटक शांतितम मा, रङ्गांन शोजाहा दिक्षिकोळ হাতা কলে ভাৰিময় উৎসাহিত হইয়া সংঘাঞিক সকল প্রকার আচার ক'বভার কুসংস্থার এক কংগে विन्त्री कतिरस डिमान दन, यीदिति। व क्षांकिकाः। কুল বিশাল বুজ সহতে মহত বংগর কাল ন্যালিন। बूल बळ कृष्णाटफ, खाका अक मिनसम खेदभाषिक করিছে অগ্রসর হন, পরে ধনাফতে কি নিগগে শৃষ্মধাৰৰ কৰিবেন—ছাহাৰে পৌৰুলিকভায় ১৬ হউতে কেন্দ্র উদ্ধার করিলেন ভেমনি জাগান নিমিত্র কি আহ্রহান গুড়ত করিবেন, ও শ कल व्यक्षणाः । एक बाइए भागा भागा व्यक्तिः-लन मा करवन, छ। हारहरू मानन तमदे जुल अन ল্পু থাকিলে ৷ ভিমি ইছা ও সকলের অভীতি क विद्यापिया छिल्लम या, आकारमाज धारे छूरे मत्नव মধ্য পথ অবজয়ন কয়িবাচেন, অৰ্থাৎ এক দাত্ৰ বাকেরে ওপর নির্ভর না করিয়া হস্তকে কিনি शिव्यानन। श्रीवाक्टाइम, अन्य व्याम श्रीकृतिक আচার বাবহার সকল আপনার সীমা ছইতে ভূর করিয়া দিতে। চন্তেদনি আঁবার ভৎপরিবর্তে डिवक ७ धर्मान्द्रपामिक विश्वक व्याधिक वार्वस्थि সকল আপদার পুত্রাণ নাথ্য, প্রবর্তিত করিতে-एक्त। व्याटवार जामामाम निकार क्लान कन्य इटेटवन । किन्छ जैवित विक् छ। कर्षियोगी रहेरजल छाश विरामंत्र कालांगधाती हुए माहै। देशक कालन मरदल है त्यायनक बहुतक लगाइत मध्म छाष्ट्र। रकरण स्थान मध्यान मास्त्रिके स्थान कुरुद्ध कार्यमे क्षिप्राहित, श्चेम जाहा प्रश्निन-कार्य कार्याण करिया गायाल्याक स्वाप्त क्या है।

নাই, ভবন বৈ ভদারা বিশেষ উপকার সংআটিভ পূম নাই আক্টা কি ? ভবে ত হা
ইতিয়ান শিক্তরে পত্তে প্রকাশিত ইয়াছিল।
নাঁহাদের অনুষ্ঠানের কর্ত্তবাভা বিষয়ে সন্দেহ
উপভিত হয় উহিচ্চেয় সকলকেই ভ্রম্পাতে আনি
বিলেষ করিয়া অনুষ্ঠান করিছেছি, অনুগ্রহ পূর্কক
ভাহারা দেন ভাহা পাত করিছে উদাস্য না কবেন। একবে আনার ইহাও অভিনাহ যে প্রামা
সম্পাত সেই বন্ধ ভা শুক্তকাকারে মুদ্রিত করিয়া
সাধারণের প্রেট্য করেন।

(海州河南部四村村)

सद्यान मोत्र।

शक्त ६ देवको स ज्ञास्त्रासु मध्याक्ष्यंक की मकः प्रमासिक छात्रिकाल का निर्माण का प्रमासिक प्रमासिक के कि का का कि प्राची का कि प्राची का कि प्रमासिक के कि प्राची का कि प्रमासिक के कि प्रमासिक के का कि प्रमासिक के प्रमासिक

বিষ্ণা থক বৈধান কোষ বিষয় কিনা কেব পারেলি প্রামেটের শীপাই পুনার্নির বিষয় কইবে। ছাছার স্থান ব্যাপ্ত জন্য ইংলক্তে ভার্ম স্থানিত ইইছেছে। থানেন ভারবােক, এবং ভালেকালেনা সাঞ্জী প্রথাত লাকেন বংম শাল করিলেছেন। নিজনান সংঘান বিধানন ভারব ইংল্ডের বিশ্বেকা কভান্য জিলেবিন প্রকার এবং ভারার ঘটারি। লাহেলি কাল ভান্ত

अरख बाटख किनिय आशांत करिता। अवि क्रिक्ट्रास बह बन्नू होता गितिनुक हरेसा मूक्टियानाएक असन कतिनाम। क्रिक्टिक रूक्क्विकिटारिक आह्नक। दकान मिटलरे किछू देनली मोह नो। रूक्तीर खानन हरे बन्ना नोन नेनी कीटन कर्णका किनिया हरित लाम किछूकम शद्द कार्यका शहिकात हरेता देनले, मनेन बहुरे एकि द्वारित करिता बहुरक नाशिन। समुद्धान अधिमूद्ध अमेम बानिएक व्यक्ति कविल । विनित्र अस्ट अध्यान विनित्र अस्ति । विनित्र अस्वि । विनित्र अस्ति । विनित्र प्रामिति । विनित्र । विनित्र

ব্ৰহাৰে ১৭ট প্ৰয়েশ্যাল 斯拉斯特的大学的 化甲基甲基 网络一种人的复数 "一直不见 জিলিয়া লাসে। অনুসৰ্তানী ক্ষুত্তিনা বারুজার भृष्ठित राष्ट्रिक प्रतिवाधिक र वेता । यदा र यकरात प्रवाधि प्रोक्त चित्रम करिएएन प्रश्लिय रहता चनवा वर्गान है। ध्याधर्षप्रकाव मध् गोलीव मा गा। नर्गक न, न, नकल জীহারে স্মালেট আছি জন্ম ক্রের্কের জাহার बाज्यस्य व्यास्त्रम्यक्तित्वः । स्थीताचा । यः वर्गार्गः द्रापतः । राजा का विकास करा का साहसी वर्षका লাংক্তিকেটিটেট বিষ্ণা কৰিছে কৰা কৰিছে 事情结束 古新文体 \$11年1月11日11日 11月日 日本年十十年日 11日1日 প্রাপ্ত প্রতিষ্ঠ প্রতিষ্ঠ সংগ্রেছ । করে । করে । করে । করে । ख्यान कानका विकेत । विकास करान का का में स्वारकात चित्रं व विश्वक्षः अवेद्यश्चन भाषाम १८६० । १८५० । প্রাঞ্জি হয়েশে একট করিছিলের 🕥 েল দেখি ন क्षेत्रि भिकास सबस्य ते । १ १ १ व १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ पा, बार्स कें, बर्ड व्यक्ति । का कार कार प्रवास कर है। व्यक्ति व আনুষ্টেরপূর্ধক্ষে ১০০ কে খিলু একজন স্বেন্ড ১ ু কেন, ইবেলৈ মান কলেন ও আনুদ্যে জোক আনুদ্ लाक्ष्म अंग्रिक कालाइ कालाइ किल्ला লোপতে গেছ ১ চিচামেয়া প্রতিটেখ প্রের (১) স্থান य लाही। १५८७ या प्रमुख वर्षा प्रमुख, इमना कि है जि कोरी गुक्ताभीलाः स्थलाहक स्थलावत स्थलाः विश्ववना कः िहा के एक हैं। इसमार बन किंतर के कि काफोर क्रवरहर शेल हो गयहात करिया धारक আহিবেও লিখেনে নিব্ৰা কৰিবা প্ৰিক্ল, জন ভিনে ও ভাষার ভিন্তার শামন করে, জন চারিলাচ গ্ৰাহাট আংকা উপায় উচিয়া খলে, এবং নার্য দল व्यवादानिकास भावनं मित्क निर्देश करेता दास ह कलक ठीराव वनिवकात त्या नाहै। जनाना लाकान्त्रादीमित्या मतम्**७ व्यापता** विविध निरुद्ध करपालकथन कतिया पाकि। व्यक्तिया गांकिस हरे-

যাত বে সমূহে ক্লানিয়াতি ইয়াতে জীয়ার সকলেই হর্ম- প্রকাশ করিয়া প্রক্রন। আনাদিনের সহল প্রায় সর্বপ্রেক ৩০টা রালক বালিকা আছে। কেই বা দৌড়িতেছে, কেই নাচিতেছে, কেই কেই ক্রীড়া করিয়া কেড়াইতেছে। জাহাদিখনে দেখিলে বোধ হয় যেন এখানেও পরিবার মাগা বিচরণ করিছে।।

कुक्शक 🕠 है (कुक्काहि -

থনীয়, খন্দ্রীল, গভীর সমূল চতুদ্ধিকে এবং
পারে। ভাছার মধ্যকর্তী আমর। যে রভের
মধ্যকিন্দু প্রভাৱত আলাশ ও ময়ুদ্রের সংলোগে ভাছার প্রিলি স্থাপিছে ইইছাছে। সমূল
মূলনে মরুষোর হাল্য যে রুপা রোশন্ত হয়,
লোগেকার মহন্বারে, উল্লভ আলায় পরিপুরিভ
শ্য ভেরন ভার কিছুতেই হয় না। নজ দেলায়
লোক্দিংসর হীন মন ইইভে অপ্রুটি চিনা ও
ইছে সকল দুর করিলে সমুদ্রের নত উপা। আর
কিছুই লাই। সমুদ্রে আমিলে লোকের যে এক
কিছুই লাই। গুলুনে আমিলে লোকের যে এক
কিছুই লাই। সমুদ্রে আমিলে লোকের সে এক
কিছুই লাই। সমুদ্রে আমিলে লোকের সে এক
কিছুই লাই। সমুদ্রে আমিলে লোকের সে এক
কিছুই লাই। সমুদ্রের আমিলে লোকের সেন্তান্ত

ब्तिकात १२ ही दक्त कुमार्गित

खामर क्षाची, भदर्भन्न महरू थि। क्षेत्र शिवानित --化新沙明试验 化水路 化抗性性 激明人 化原色 多色的 人名德特斯 人 राज्डिका, विकास्त स्वा कृषिका गर्भ छ। वृश्यकारू इत्य होशान ग्रम विशासिक । रिलीन ब्रायन (कर्णाम -) रभन्ने, भोगर्नामरगात जिलामरणात्, प्र सुमलमास्त्रिरणा रार्णभारक जनक । यस महाभ गणा साक करा गाँग । প্রাক্তার ক্রিক্রের একরাক্রাসার ভার মান সংক্রমী। আন मानिद्दशत्र खोकां च व्यानाकशास्त्र त्यात्रीखनिकाश পরিত্যান করিয়া এক উপায়ের উপাণনা করিছেছে हेका क्षिया किया अन्यक्ष कास्कामिक क्षेट्राम ! भारीत भाषा अपानातकताहे भार्कादकके व्यवस्थि । कोरलारका यक मकरक खरू यक भीषु रमभीश লা ার সংখোধন ও সতা প্রচার করিছে পারে अर जाबरकार्ड आहब ना । जिस्साणां मिनारक ালনাড বামন করিজে বিশেষরূপ অনুরোধ ক-्र । ज्योगिरलमः दिल्लाम् स्य अदमभीषः स्क्र क्र . . (अपेरिक कारल क्रिक इंदेश देशन **छ घरम**ीस ्लाकिएरमेड मञ्जार्थ नमम करम्म छोटा प्रहेरन क्षीश्रहा सका श्रम कि कहे हे स्थापन श्री से हिटल व्यक्ति । लाहर, असरजंडे एन्हर्गप्रशास्त्र मुक्कां कहिएको ।

उतिरात १० ८कक्षा हि । १६१ छ।

आमा त्रवित्र । व्यक्ति त्रशिनाद्वे क्रिक्सिक प्रथा प्रक्रीवामां १ वित्र जिलागता हरेशा चाहक विद्या गांत्रि विदे कामा त्रमाथा क्रियां क्रियां क्रियां

उभावक ना बादबन, कारा स्टेट्स कार्य नार्यन मारबन बाबाई गाना तिक विका अधिक जनक कारतम नाट्य सक्ताक क्षेत्र क्रिया क्रियाना करिएनम । धेरे जान रहेएड मासाले ३७ दर्गान माब, मास्तारकत्र याजीमरगत्र सवागि तकन कम यात्र उत्कानिक श्रेटरका, ध्वर नकालहे बद्ध वारक अञ्चल वरेरक हुए। जायरम पुत्र वरेरक न्यूक टीइन् बक्टी शर्मा ७ कडक्डनी उक्त देवता (बन्न, পরে "কেটামেরাণ" নামক কভকভাল মাসোজী ডিলিনৌকা সমুডের উপর দিয়া জাহাজের স্লাজি-गूर्थ जानित्क नांशिक, अवश् करम करम छीत्र हु दूरद ব্ৰহৎ অটালিকা ভালানিকোর প্রকাশ্ত কারা আমা-দিগের চকুর সম্মতে প্রকাশিত করিল। জাহাতের উপায়িভাগে ৰাজ্ভাগ্ন আচল হইল,সমস্ত কর্মাহারীপণ फिल्माट्ड लहिल्ल इटेश, अवत् भक्टलाई मदर्यनग्रदन कीतालिश्राम क्रम ५०० (प्रथितक लालिन। सुमृद्ध-रक्ष गर्भर स्कारभाव भारू वर्षणा सम्बद्ध निभाष्टिक ক্রটল এবং *শান্ত শান্ত ব্যথ*নিত ভা**পরিকার ক্র্**ট বেশকার দারা আমর। গারিস্থা চইলাম। 'ভিশ্বন क माल्या क्यां भिरा दलोडियान, दलाश्राप्त गरिन 💒 कोरे कर्श खानिरकोछ नमार मगरह नक शास्त्रि काक গানি কুর এল আমাদিকের কল্পে দিল, জাছাকে भिक्षिक भागे व पंक्षित्रक पाव कर्मभारतस्त्र स्वीत-প্র ক্রা আপ্রামী তেরী স্থাশ্য এই ক্ষুদ্র एक्षी भागि भारि शिहर७०६म । । भागानियां समा भाषती ट्राकाट लोशेहेदा मिलाम, द्राव माव-পাৰে ভছপৰি লাড় দিয়া পড়িলাল, লাইদিবার मगञ्ज अक्ट्रे अमारमान्छ। एम्सः यो। यो। स्तीकारः विश्वतः क्ति मा भाषा यात, लोहा वहेटल तक कारण मीरा ভর্মিত সমুদ্র মধ্যে পভিতে কইয়া একক প্রাপ্ত उद्देश इर, छै। कि ख्यानिक खब्छ। कि लशानक জাংশোনন। দাড়ী গুলা মিছান্ত অসভা ভাষা-দিণের পরিধান একটু কুত্র কৌপীন, ভাষারা বিলক্ষণ ক্ট পুন্ট ও বলবান, দেখিতে পালড়ের মভ, ভ্রফানে ও ভয়ে আমাদিগের প্রাণান্ত, কিন্তু ভাহারা সক্ষেদে দাঁড় বাহিয়া চলিয়াছে আখাদের निटक ल्डिक्स ए करब ना। आयामिनेटक छीतन कतारे काशमिरगत जिल्ला रेशाल आमहा की-ষিভই থাকি আর মৃতই হটা আধার মৌকার इडिक्रिक हिम ? कलक पुर अध्यक्तरं भगने कि বিয়া কুলে পেঁছিলাম ৮ নিরাপনে সাইজর্মী 🛊 রিবার জনা তথা ডিরোপরি অভার অভাত सम्मानिक क्षेत्राहित रमेड्रे महा ब्रेड्डिक क्रांक নিৰ্দ্দিত খোপান নাগিয়াছে ৷ ভাষা অৱস্থান कतिया नगरम छिटिएल क्या । करण क्रांस मिल्ल Bis Min I was a second of the second of the

मुक्त अस् अस्थि।

প অনুবাদ্যার 'জীবুজ নহেশ্বন্ধ বন্দ্যোপা ধার্য অনীত কলিকাতা ''নিউপ্রের' বজে মুক্তিজ। এই পুস্তকধানি কএকটা মুন্দর নীতি-গর্জ প্রেরন্ধ ভারা পরিপূর্ণ। প্রস্তাবহুলি উৎকৃষ্ট উৎ-কৃট ইংরাজি এই হইতে অনুবাদিত হইরাছে। আন্দর্বক্ষ মুবক্ষিণের এতং পুস্তক পাঠে নিশেষ উপকার হইবার সম্ভাবনা।

' বীরুরাক্যাবলি '' শ্রীযুক্ত হরিশ্চন্দ্র দিজ প্র নীন্ত, ঢাকা মাগলটুলি স্থলত গঠন্ত মুজিত।

ণ পারনা দর্পণ " এই থাসিক পত্রিকার ছই সংখ্যা প্রাপ্ত ইইয়াছি:

" কিনন্ধা-ভোত্ত " প্রান্ধারকানাথ ওও পরি-নীডিড, কলিকাডা ওওফত্তে মুডিড।

াই পুস্তক থানিতে প্রাভঃ নধ্যাক্ষ এবং শা গংকালের ভিনটী স্থোত্র আছে। দিনা স্থানিনাথার চন্দ বিরচিত, এবং স্থানে স্থানে উৎক্রটা চাবে পারপূর্ণ। উলিখিতে তিন্টী স্থোত্ত গুটার বিদ্যালিত অংশ উজ্ঞাত ইইল। বোপ কবি পাইক্রন্র্গর আন্দক্তর হুইবে।

লাভঃকোর।

विद्याय कांत्रमः विना जामरानात र साम । उन औ जिन्सूरा, गारा, कछ है नश्य, ाच दक्स भाषा कोशा वर्षिनादत लोदत है উষার শৌভাগ ভাতে জোমার গৌন্দাণী . সক্ষা অকণ করে । এড্রার কুরুমে : भएर स्थानत्मन डालि युष्ट गन्त स्थरन निकार कोन्। म, भारते निवास, बाखरत जाबः, पार्टी, मधीकृतन, मानदन, जिनादन प्रभोखन मधीदन, कांद्र नां बुक्ति श्राम, श्रमि खंडांकि-मझ्म, भाष १८व भागीमल गिलि लक्ष (८४ मक्षुकुछ -न्द्रम्म्द्रम्म मा स्ट्रीटम धान्नटम्पद व्यादक ह <काषांक भी देशका यात्र खन क्षेत्रका अ ° কে পারে ৰণিভে ভব অন্ত মহিনা। পাইজেছে পাথীকুসা স্থানে ভোমার गरिमा निकुष्यः । जब व्योखि-पूर्यानस्य वश्टिक श्वन बाद्य बाद्य, मानारेशा अकुमात कृत कुस्रामातः। नियाह विद्वारम एख श्राहरू मेलिन, आह्वाहित्धः अञ्चावन विभएत विद्रासः 5 दकात रहेटल क्रथी—स्तित दुर्मन— अक्षांत्र करम करम करेंग मेनिन !! वर्षास मगरम, नाथ, त्क शांद्र प्रक्रिक ष्ट्रविष्र दिख्यात ? एव जानस-कानदन

করির, বসজি, কেবা জুলিবে ভোগ রে ? ভূমি শান্তি-নিকেজন। ক্রম্বের পন, অধুনা-রজন, চির-প্রীতি-অজ্ঞবন। ভূমি চিক্ত-বিনোদন, দানস-রঞ্জন। মাধ্যাক্ত-স্থোত্ত।

শ্বন্ধ-কথল-রবি। থে দিকে নির্থিন্ন নগর, কানন, জলে, দলে, অন্তরীকে, সাগেরে, পর্যকে, পথে, ছাটে, ছাঠেল্লেলি ভোগার জুবার, ক্রাণার শোভায়, নিশাকালের গান্তীবে। রয়েছ প্রকাশ ভূমি — রক্রেছ প্রকাশ দেই কবে ও ম্যান্ত ক্রের গোভায়, রফ্রিয়া ভার্ক-ক্র ক্র্যন আর্থা, রফ্রিয়া ভার্ক-ক্র ক্র্যন আর্থা,

क्षत्रे नियानकः नदः निर्मान कृष्यं स्थितिहरू द्याने न्ना । स्थादकारियकः । उद्याने न्ना । स्थादकारियकः । उद्याने नामा । स्थादकः स्थादकः । स्थादकः

्तन वाहन सम्बाद्ध हरू । वह विक् भूदत्व के स्थान । के स्थान विक् महार परात्त का सोग के स्थान वर्ग महार परात्त का सोग के स्थान वर्ग महार स्थान सीन तक, वन्द्र, भोगना की निवासिन विक्ति का स्थान के स्थान रम्भादिक का का का स्थान कर ।

和情報2月14日1

পুণাৎশুর বশিংখালে করা-খাদাখন গলি ! স্ট্রাছে থবি কেন! ব্রাঞ্জি এবে দিকচর ! আলা, খেই ভারাবান হ্রম-আকাশে নেবে গোহন-মুর্জি ভার প্রকাশ, গনা, ভারার জীবন ! কি মুক্তর রূপ ভব—অনুপ্রানীয়,— মুদ্ধি ভাগিত আগ, কারেক দেবিলে ' তক্ষপ আকার হতে পাইখাকে কেল।
প্রভাকর ন্মনাহর রূপ বন জেনি
কুনুগ, গাগন্ন, গিরি, নদ, নেম্পালা
গানোহর রূপ গাইমাকে ক্র্যানিধি।
না জানি ভূমি হে নাগ, বতই ক্রমার।

विभाग-एकामा नेत्र सुनीय-व्याहामा तिल्लाएक, किया गरि, हम्मा भटनांकत । क्रणक तिक्रक, मृति, काम्यम वक्कटन ! विक्षाएक मिके केटले केन्द्र व्याकामा यम, सुनाक्त, खाल (मृथिश क्लिमात) व्याचिमा व्याह्मणा, मृश्च किन्साम हिन्स नित्म थाक व्यालक व्यक्किला। एक प्रन हिन्सावत कुण सुनामिति ।

বিজ্ঞাপন

मक्त्रमम्। भूतकात्।

नुत्रकादितं कता हरीः श्रेष्ठातं निर्फितं कहा इत्यादि । श्रेष्ठातं वाक्रिता व्याप्ता देशताकि जाणां ति व्याप्ता । श्रेष्ठितं निर्धा । श्रेष्ठा । श्रेष्

প্রকার ৫০০ টাক। 1

The second second second second

প্রেল্ড দশনের মতের সহিত তাতার,
প্রেল্ড দশনের মতের সহিত তাতার,
প্রেল্ড কি তবা বিষয়ে ব্রাক্ত তাতার,
কি ও নেদার নর্মনের মহের সহিত তাতার,
প্রভেদ কি, এবং প্রকাশ নিয়নে আশ্বিদ্ধানির মত কি ও নেদার শর্মানির সালিক
সহিত তাহার লাভেদ কি

र प्रति। जीकार्यात (वेट्य मण दिनांक रमंद्रित मध्यत विक्रम, द्रारे तहे सक द्रमांक सम्बद्धित मण जारणका कि समा छेटकुके उ केशारण

ও প্রস্থা তাক্ষ্যকা দারা প্রিরার-মধ্যে ও সাধারণ সমাজে কি ক্ষ্পা উপকারের স-স্তাবনা ?

দিতীয় প্রস্তাব। পুরস্কার ৫০০ টাক।।

> প্রশ্ন। ঈশ্বন-বিষয়ে, কর্ত্তব্য-বিষয়ে ও প্রকাল-বিষয়ে ত্তাক্ষধর্মের মত কি ?

্ প্রশ্ন। আন্ধবর্ম ছারা পরিবার-মধ্যেও সাধারণ নমাজে কি রূপ উপকারের সম্ভাবনা ১

७ लक्षा विक्ती. मङ्ग्रम्म ७ शेकिन् मट्ड महिल विक्रिंग विक्रिंग एउ काम् कर्म वर्षा विक्रिंग विक्रिंग क्रिंग क्रिंग व्यक्ति क्रिंग विक्रिंग व्यक्ति क्रिंग विक्रिंग व्यक्ति क्रिंग विक्रिंग व्यक्ति क्रिंग क्रिंग व्यक्ति क्रिंग क्

ক্রি বেগদের বিষয় বিশিষ্ঠ প্রতান মাজসংক্রি মান লক্ষ্য প্রতিবেল বিষয়ে সালের মুদিতে ভারপর্যা প্রিত ক্রাক্ষমন বা প্রেম্বির কা প্রিকাশ প্রাক্ষমন্ত্রির সংব গ্রাম কা ও বিষয়ে বিশ্বিকাশ প্রকাশ স্ক্রিয়া স্বা ক্রেন্ত্র বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া

প্রিকার অবিম মূল।।

किविकाला जिर मक्कलल शांक मिर्टर शिक्त विकास के कि विकास के मिर्टर की स्थाप कि विकास के कि वि विकास के कि विकास कि विकास के कि वि विकास के कि विकास कि

মিধ্ কী

न्तर्वाद रखात भरना पिछा । (উপজ गणिका) गिर्मि पुत्र कारो । भाष्ट्र गढ़िक नभारणत दङ् छ। जसुर्वेदिन स्थानना रुखा (श्रीका) भरना मात्र

ছত্বোধনী প্রিকার মুদ্য নিকার। আর্ম রুলা (পরিকার্য করা) " (গম্পদের জনা) নাপিন মুলা ব্যাপ

SE CONTRE MINERAL MARY SURVE METER BUTTE BAGE !



इन्नवीक्षित्रमें क्षेत्रां मित्र क्षेत्रमानी उपित्र नर्का नृज्यः। छत्त्रव निष्ठाः क्षान्यन स्थान क्षित्रः कष्कित्र स्वत्रके विश्वः क्षेत्रके क्षे

নিশীপ সময়ে সাগরবক্ষে ব্রাক্ষের ক্তোত্ত।

হে বিশ্বাধার বিধাতা পুরুষ! কলম্পার্শ বিশাল দলিলময় সাগরবৃত্তে আ মরা এখন তোমার অভয়পদ আঞার করিয়া ভাসিতেছি। এখন স্ক্রিকেই তোমার খনত স্বৰূপের পরিচয় পাইতেছি। উর্দ্ধেতে নয়ন উত্তোলন করিয়া দৃষ্টি করিতেছি আ-কাশ তোমাকে পরিমাণ করিতে সক্ষম হই-ভেছে না, নিধেতে দেখি সম্পন্থিত বি-তীৰ নাগৰকে ভোমার অপার করণা অ-ভিত্তম ক্রিয়া খিতি করিতেছে—ভোমার महिन्न किन्नुतरे कुलना इत ना। अरे नावार इसा लाकावत चना हुनम भएक पूसरे का गोदन्त्र (मणा। भामता त्य भगन्निष्ण तांदमा देन कीय क्रमान क्रमानात कि आति ना। ata i sent agre autilitatia cana में तरन, प्रविद्य क्रमारत आधुर्ति संस्थ क्रफा THE PROPERTY OF THE PARTY WAS Kulenga Tikang talah bar

इहेग्रा यामादनद "उवसीटन कतिरहर्द, अवर मन्त मन्त हिर्छात्त अक তাপ দূর করিতেছে। হে জ্যোতি সকপ। रयम्म निक्रतक आंकांभ करेटक कारे ठला भार विभव कित्र मांगतनक मस्कृत क-রিতেন্তে, ভোমার শুভ করণাম্ত তেমনি অৰভ্ৰমপে প্ৰশান্ত হৃদয়ে বৰ্ষিত হয়। আতে কেৰিলাম ভরুণ ভাষা ভোমার যাশ ঘোৰণা করিতে করিতে সমুদ্রগত হুইতে অপুর্ব্ব মহিলা সহকারে পুর্ব্বদিকে নমুখিত ছইল, প্ৰদেশি কালে পশ্চিম আকাশকে वक्षरम अन्त्राक्षक क्षिया मील সলিল দর্পণে ভোমারি জ্যোতিঃ ছটা বিকীর্ণ कतिल, ज्यायात अदे निनीध नम्दत्र ज्यन-कुष कुछनकष मोम्बर्धा (नशिया क्रान्य केष्ट् मिक इहेटफट्ट। जाकारमा अभाग अनील-माल। जामारमञ्जूषी रुहेश अथ अवर्गन कंत्रिटण्डह, नमीत्रम छत्रम्याकी मृह्नेन मक्षानिक हरेश। यद्यस गटन कि बटक स्मी-हिक क्रिक्टि । जिस्ति स्थान की वि पाविष्य (महिष्य नश्न अनग्रम, श्रेगश आह-विक प्रदेश। अबै विश्वास सिख करास्त्र सर्

অ'পনি ভবে কেমন মহান তাঁহা জাবিতে শিয়া নত ফিরিয়া আইবেস। নাথ। কোনার: पारतरम् स्था एक एतिका अहे सनस्ना প্রদেশেও আলোক বর্ষণ করিতেছে। ভূমি বিশেষ সনির পুর্বো আমাদের ভাবি প্রয়ো-জন স্পাই দেখিবা সকলি আমাদের অনুকুৰ कितियां द्राचित्राष्ट्र। आयक्ष (पथारम घारे एक गांत करूवा निरमस्यत **करत** व्याचारमत मक इंग्डिं इह सा। कारांड करानांच किन्द विकत कतिया अभिका अहे जन्न मन्द्र शर्म भाषामात क्षेत्रक नाहम कतिलाम १ দুকর মাগর দদি সোলার আদেশে নিস্তরক हर्नेन एएन बात जाभारमर उन्न रकाया ह আমাতের প্রিজন বন্ধ বাজ্ব ভোষার হতে व्यामालियरक अभनेत राज्या विक्रिक हरे. श्रीहरूल, होने अखोर मान खार्गानगरक ক্রোভে এখন ফাবছেছ, এব যে স্পরিচিত रारका नामरिन्तर क सहित यो हेर्न रमश्रीरम्ड रक्षाणीत अगारभ शक्रवादे सांगारम्त समुगुण स्ट्रेट पर पर नासे । अप गेटक सावित्स की पर त्रशुंह नहान निरम्भक्त समाम इन, व्यक्त ि वि । तमना १८ १०१।यदिक (वर्ष हार, धार्यस छ-পাল লীকা মান পৰ্যন্ত ওও পাকি জাক পথ আন্তৰ্জ क्हेंगा योरसः विभिनः अगर व्या**गार**सर মাভার চেলত পরিভাগে লার্থা কৃত মুরে আদিলাহি বিভূত্নি ক্ৰ**নীয়নায় এখা-**নেও বড়ের গহিত আহার ও পানীর দিলা নি মুখের জনঃ জালা দিশকে মাতার ও ভাব জ্যানতে পিতে: না—ভোষাৰ বজে মাত্ কেন্তের পাত্রা নাই · ^{জু}হে মাত তেরামার ্রক্ষময় চনণ্ স্থাপে, দুখাছিত আতৃন্ধক जा भान यनिद कई सांभारमत नवना जामना निक्ष के अपने पर्राष्ट्र (से आसता केश्रिटकर मझरम् का एक फिक्क का उपरश्का लकाकरम पुरस्ति है। शिमर्स के महिल्ली उपापि यामाराज लंगना । सङ्ग्रेट्स

कन मा इस ट्यामात निक्रे अहे जोगाटनत व्यार्थना।

अं करमवाविजीप्रः

বান্ধর্ম প্রচার।

खग निर्मात निर्मीथ नमत्त्र यदकारन लाटक अथर्म निकांत्र अगाउ ७ अटहरून-यांत रहेता थातक, यदकाटन कुमश्काद-ि ত্রিত স্বপ্লবৎ ঐহিক ও পারলৌকিক স্থা-লালশায় লোকে অবশেক্তির ও বিহরলচিত্র হট্যা থাকে, তৎকালে দহল। আন-গগনে যদি অখর ভাপান্ত মতাস্থোর আবিচাৰ হয় তাহা হইলে গোলাজকারনিম জ্জত মানবীয় অস্কুক্ত নিভাস্ত আকুলত কইয়া भार ५ जावर **मकरल मञ्रस क्रम्य** करां है আবন্ধ কৰে। এতলিশ্লন ঘত যত ধশ আবিমান ক্ষা পুলিব জে মম্পিক প্রি-मार्ग अप्रविच हहेगा काभिर्डाइ ७-खाव हे संवरम अनगुरुष्ट श्रीत अमृति प्र উপায়াবলিতে দেশ পরস্পর্য এচারিড হট্রাছিল। প্রাস্থান্তঃ নবে স্থানিত প্রত্য कां कारकहे माधारन कांक ममोदन कां। **परनीय एवं नाहै। क्लांकिटक उ क्लं**-কারে বেরপা বিয়োগ সভোতে ও জন ভোজে হতে।বিক। ধাক্ষপ্রিয় নিশাচয় भक्त भन्तीनन कर्षाक्रद इंडरमा अवह प्रिया त्यादक नेवन खेपीयन ७ रिष्ठवन केविटड भारत, किन अगडाधित जान अवार्षिक लोक गंगारिकान महा कविएक भारत मा. হ্ৰা-বাত স্বাকারপূর্ণ অজ্ঞান প্রহায় অ বস্থিতি করে, এবং ইচ্ছা করে চিয়দিন ঈদুল অবস্থায় জাবনু অতিবাহিত ইউক ৷ পরস্ত টাশবের রাজে: কৈন প্রক্রি এই চার্ড विश्व होती। बारक । १५ व्यक्ति श्रेष्ठानिक । जनस्यादिन रकार्य र के हा गरीतन अमेरिकारित उप SECTION OF PROPERTY AND A SECTION OF THE SECTION OF

বসনা ভারা সকল নোদনীতে আনোক ও

আনন্দ সঞ্চার করে, অম্যানিনীর অবসানে

সেইরপ সভাগনীরণ সঞ্চালিত হইতে
থাকে, সকল হবর আগ্রভ ও আলোকিত হয়

এবং প্রভুল বরে ভারতি বরণ প্রমেশরের

মহিনা গুণ গান করে।

বর্তমান সমরের তিন বৎসর পুর্বে যদি আমাদিগকে কেছ জিজাগা করিছেন, কি কি উপারে ভারতবর্ষে ত্রাহ্মণর্ম প্রচারিত इहेटर जोशं हरेटलं इसक आगता अहे বলিয়া নিরস্ত ইইডাম যে যিনি ত্রাকাধর্মের প্রেরমিত। ও অবর্ধক এই সকল উপায় তিনিই জানেন, কেবল এক মাল বিশ্বাস थांमांनिटशंद्र श्रद्ध, त्यरे विश्वांग व्यवस्य করিয়া আমরা সমল চিত্তে আশা করিতে পারি যে ''সভামেন করতে ন'ন্তং"। মতই कांश वाहरणरङ् कहे विश्वाम व्यामाणिदशत स्भारत ७७३ तशबर क्रीटक्ट्स वन देशह गदम गदम विकास कादनत छै। सक हरे কেচে মন্ধারা আমরা উল্লেখিত উপায়াবলি ্ৰান্ত স্পটকলে দেখিতে পাই। কি बसः वना योग्न ना, किछ विदेवहना क तिदल विलक्षन द्दोष इम्र एवं वस्तिव**मा**विध ভারতবর্ষে পরিবর্তন এবং উপ্রতিয় চিহ্ন আয় কিছুই লক্ষিত হর নাই। পাধীনত। **ও ब्लांगाधकदर्वत मदम मदम भृणियीयस** गर्बट्यहे चात्माक्षत विद्याध ७ गतिवर्डव मुके हरेश। बांदक; किन्छ ভाরতবর্ধে गकनरे স্থির অচল অস্ত্রভাবে চলিয়া আনিভেছে। कि यार्थ विसंदर्भ, कि तांकनीं विषया, कि नामाक्षिक व्यानात वातकात विवरम, मकत विषयार हेन्स अध्य विक्रीयच्य जिंकि हो। खंडता संदर्गान बाक्रवर्ग अस्तरम अस्ति वाशिक् क इरेन असन दरदर्भाव मुख्य र अवस्था दर बात कि छ-शास कारो नगरूनत्थ काहिक रहेता.

व्यवसार्य करा जरुक त्वाप रहा महि। अछ-चियटत जिल्लाहोत बाज्य तमा ७ छ। त्रख्वार्षत्र मार्था अविभि व्यक्ति व्यक्ति मान मृगाँ विकिञ इस। वृष्टीसर्थम सिर्म सान इंटेंट श्रवात इहेरात भूट्य डेक अस्ति। ৰূপ হীনদশাপৰ ও অফ্লারার্ড হইয়া-हिन त्य दक्ष कथारे था नाम् करह गाहे কথার স্থাবিত্র খৃষ্টীয়ধর্ম অম এইণ ক तिरव, किश्रो कग-धहन कतिश अधिक হইতে গারিবে। সংকালে পারব দেশে महणान चीत वर्ण अगास कात्रन छन्न चात्रन দেশ অভি ভয়নক অয়ভাতায় আলয়ছিল। दक्रमण्डे एक्रिकेटम क्वास्टक विष्ट है सिहर মেৰা, অন্ধা, মোনিতপাত,এবং পৌন্ধতিক छेशामना। यस्का धांच गायांना (बांक हि लन, कारांत्र काल मत्थार व्यक्ति करण किल। ভিনি যে এক ঈশংগর আগ্রাহনা আগ্র र्राप्तर्शो इंडिकोर्गा स्ट्रेट्यन, कि केल्ब अहेत्रा विषय 'अभाना क्लीएटलांक्निटनात विकल নিস্তার পাইবেন ভাল্য প্রণমে কেনে ক্রমেই সম্ভাবিত পেৰে শ্ৰম বাই। নৰ্জমান ক্ৰ্যু-লেয় কিছু পুৰেদ ভায়ত এর্ছনে মলপারে! गांकि शैगांदका परिशाहन। ৰ্ষের মধ্যে ৰ**ল্গ**েল কৰিবৈ গ্ৰেছ দ खन । अविक्य भ्रीश्रमित्वर बाह्य अवस्य বান্যান্য অবভিত তুলকাশিত হুইগাছিল ক্রিম্বা এক দেনে র মধ্যেও ভাতৃত্ব মার্রিত পতিশনি সম্পন্ন নহেন। এতংবস্থায় যে मायस्य ब्लाह्कर उप्तिमक महोत विवाहम সন্দেহ উপস্থিত হুইবে আহার আন আ-**省**到 (本)

किन जकरन जकारत मक्त महस्य पूत क्वेटकर्छ। जोत्रज्यसम्बद्ध मुक्त क्वेटकर्छ। जोत्रज्यसम्बद्ध मुक्त जिल्ला मर्गक जामा उदमाह कार्याकताल मक्त जानक्वे केळाल क्विर्ट्छ। भूतास्य

क्षांब छ्यटेसर सर स्थोवन भूनद्रांश छ स्टेल, কাহার মুখতী পরিবর্তিত হইল দেখিয়া কাৰার মন না আশা ও বিশ্বাসে পরিপূর্ণ र्का किल अनकन किरमत बना रेरात কি কোন উদ্দেশ্য, কোন অৰ্থ নাই ? বি-মৃত বিস্থু সম্পদ বছদিন পরে যিনি পুন तानयन कतित्वन छोशत अहे हेव्हा त्य नत्ता-मि**उ मण्लाम**ेटलाटक ভाরতবর্ষ <mark>डाँहाর ग</mark>रा জ্যোভি সন্দর্শন কথে এবং ভাঁহার আ-দিখী সন্তেৰ ধশা অব্বাহন করিয়া সেই भन्त्रभारक विवस्त्री करहा।

ভারতবর্ষের পূর্বেরাক্ত ম্ববলভার একটা আধান কারণ ধর্মাজ্ঞানের অসম্ভাব, এবং ভাষার বর্তমান সঞ্জীব ভাবের একটি প্র ধান কারণ জ্ঞানোমতি: পৃথিবীর ইতি-बुख शांठे कतिरमं अभन द्यांन समाई मुख इस मा यहा এक समार ह भी तिलक्षकी नियान करत साहे । सम्बद्धाः निकृति। বস্থাতে কোন অকার না কোন অকার পৌ-ললিক ছ' এছণ করা এছ স্বাভাবিক, যে : পাতিরে: েবার বিশেষ মান্**র জা**তির बरक्षांवर्षि इंटेर्ड भारत कि मा मरकह: বিস্ক আবার ইহাও সভা যে কথনই কোন अंदुण। काहित मर्पा (भोजनिक्यर्थ हित-शाशी का मारे, जिन जिन अकाटत देश व्यक्ति (मरमहे डेब्मन् क्षांख हरेशांट्या (भी-ভুলিক ধর্ম এছন করা যেৰূপ স্বাভাবিক পরিত্যাপ করাও ওক্রপ স্বাভাবিক। অজানতা হেতু সৰ্বতেই পৌডালকতা এক कारत आहर्ष च रश डारांत्र अवगारनरे गडा ধর্ম প্রচারিত হয়। অতএব অক্সানও জ্ঞান মন্ত্ৰমোর প্ৰাক্ষ যে ৰূপ প্ৰতিবিক বৈপীত নি-कडां ७ म्डानक मसुर्यात शहक

शांडादिक। जामता क्रेडे कांत्रन दकान दकान शर्मा मन्त्र माही मिट्डाह मके देशो क निक्रिक्टिक এককালে প্রমেশ্রের প্রতিষ্ঠ সন্তাম ও সা

मस्मद्रकर छेलयुक विद्वकर्ण कहिना। विश् कारनागर प्रत महत्र हो के लिक की पृत रेश करव बिकामा रहेत् भारत रह जमा विध जातकवर्ष स्टेटफ कि क्या कुगरकातहत ভিরোহিত হইতেতে মা কি খনা ইহার नैस्टिएरे खाकार्य धानात स्टेट्डिएर मेरिक्ट করিত রাজা রামমোহন চার খনেশের মঞ্জা-**खेटफट्य गडा थहांत्र कतियांत्र क्या धांग्यट**न यञ्ज कतिहा कि अना त्यांटकंत्र विषम विदयम डाजन इरेग्रा हिटलन, भिछा बाँछ। बरेटल বিচাত, গৃহ ধ্ইতে নির্বাদিত **পর্যান্ত হ**ইয়। ছিলেন) ছুর্দিনে জন্মছণ করিয়া ভাষ্র জীবন কি জন্য পরিশ্রমে ও যন্ত্রণায় অভি বাহিত করিয়াছিলেন, স্বীয় আণগত শোণি ভাক্ত চেন্টার কিফিয়াছ কল ভোগ করিয়াও ইহলোক হইতে বিদায় হইতে পারেন নাই ১ একাকী নিশীধ সময়ে ধর্মবলে ভাঞ্ড ধা-কিয়া যথা-গাঁখো কি কন্য ভিনি ভারতনর্বের শুভগাধন করিতে নিযুক্ত ছিলেন, লোকে তাঁহার উদ্দেশ্য বুরিতে পারে নাই,টাঁহাতে কত তিরকার করিয়াছিল, অবমাননা কার গ্রাচিল, ভাঁছার জীবন পর্যান্ত বিনাশ করি-বার অভিসায়ি করিয়াছিল 🤊 এ সকল 😂 নোর অভিবাদে আমরা মৃক্তকরে প্রবিজে পারি যে দেশের যে অবস্থার মহাদ্ধা রাজ। तामरमाञ्च तांत्र क्रक्यश्च कतित्राह्मिटलन ভাঁহার উদ্দেশ্য তদমুক্প ছিল,এবং তাঁহার व्यवन পরিভানেও ভাঁহার শিষাগ্রণর সমূহ गटक रम जिल्ला महमिक इहेशाटह । দেশকে কুদকোর ও পৌস্কলিকভার হস্ত हरेए मुक क्वारे डीश्व विद्नेष रेक्। हिंग, रेश्वर विमादम अञ्जित नहत्र देन रेक्ट मल्लाम हरेगांट्स. त्नलीम राज्यांक जान-दशहे थात अवनिक विक्रुपटकार वागीरक। जनार बर्ल इकिएज शाहिबार । हाका MACHINE OF IT OF THE PARTY

विषि अस्त, किनि गकन-मेरनाउप दहेश। अस्तर्व अभिनेत्रहरू धनायान कहिरक हन।

हर अवना क्षेत्र्या (स. अकटन दम्दमत প্রাণ সকল ভর সমাজেই পৌৰুলিকতার विक अधका कमितादह। किन्न वापून देनी-ভিনিকভার উপর অভক্তি কমিয়াছে ভাদুল সকল স্থানে সভা ধর্মের উপর বিশ্বাস कृत्य माहे। माहिडा, भुमार्थ-विड्डांनामि বিবিধ অপরা বিদ্যা নিগত কপে অভাস ক্রিলে নিক্ষই লোকের মন হইতে পৌত্ত-লিকসংস্কারলাত ভ্রম অপনীত হইতে পারে बटि, किन्दु उक्त विष्ता ७ मानवश्रक्ति उद ममाक् कटल अञ्चर्यादन मः कविरण मटणात প্ৰতি একান্ত আদ্ধা এবং ত্ৰান্ধৰ্যের প্ৰতি একান্ত অনুরাগ হইবার সন্তাবনা নাই। মহাত্মারাক্ষারামমোহন রায় তক থড়ার হস্তে লইয়া পৌডলিকতা**খৰপ নিবিড অ**রণ্য ছেদন করিবার উপায় প্রদর্শন করিয়া গিয়া-ছেন। প্রম্পিতার অন্তাহে তাঁলার আরেন মহৎ কাঠা কতকদুর সমাপিত হইবাছে, এক্ষণে সেই পরিষ্ঠ ভূমিতে, বিখাদ ওয় রোপণ করিতে হইতে, **ধাহা**র কল কুলে ভারতবর্ঘীদের। পুরুষ্মুক্রমে ইছ লোকে এবং পরলোকে অমন্তকাল পর্যাত্ত স্থানীয় ষ্ণানন্দের আশ্বাদন মন্তোগ করিতে পারে।

तक्त विवाद वाता अकान गर्वाष्ठ दक् त्मरना तं कजन्त जेनकात करेतार जारा कामना त्मर्थी वाता राज कतिर्व जगमर्थ। ताक्ष्मुक त्यता त्य कार्य खार्य रेश्तिक अर्थ वक्षरिकात महिलान कित्रपारक ज्ञान जाशिकारक जानता पूर्व क्षप्रता प्रभावान कति कित जन्मिता क्ष्माप्तित सक्ष्य मन्द्रपार्थि नीत कार्या क्ष्मित्य करे अवस्था मन्द्रपार्थि नीत कार्या क्ष्मित्य करे अवस्था मन्द्रपार्थि नीत कार्या क्ष्मित्य कर्मान मन्द्रपार्थि क्ष्मिता क्ष्

भरत्र केश्शनिरशत शर्विकार निम्मेंस करे शामि मानिक शक्कि। निश्चमिक्दरश यहा-নিত কৰিয়া বিশুল তত্মালোক অন্তৰ্গৱহত माक्ड्मित नखदारन विकीष कहिएल मा-तिरलन। ७९भट्य मगरग्र धर्माकनायूगोरद धकरी जन-विमानस मःशानिक हरेन। विके थकादत वक् रहेट वक् गर्या, शक्किंग हरें एक शांक बार्या, विन्तानम हरेटक छोज मस्या द्विणि विमान्द्रमाणि श्रद्रमा कविया ध करन अ तम्मीय मकन लोक; मकन शक्तिका, সকল বিশ্যালয়ের মূল উচ্চুল করিয়াছে। ट्स छोटन श्रमन कहि सम्भ विस्टाइस् चारलाः हमा क्षित्र शहि । क्रबांदभा युवक-दुम्ह क कृष मध्यात्रिक माओ भागा, आवाहिक मा खोरिक भाक्ति मानिक मीत्रध्याद्रिक तकल প্রকার স্থাদপ্ত মধ্যে, বিদ্যুল্মস্থ শিক্ষক ও শিশ্যগণ মধ্যে সকলের মধ্যেই এক কেশে अकाटनाच्या उन्ह र्या अक्षाम व অকারে অসাবিদ্যার ছারা প্রাকৃত দেখো মতি ও ত্রাক্ষরশের গাচার কার্য। সংসাধিক হইতেছে। আমরা সমুলাধ হৃদদেব স हिछ श्रदमनीय खाँचा ७ जिनीवयदक छैद-माह अमान कविटलिंছ था, केलिया अधि कछत् अधाननात्रमञ्जादि अनिन्दर्भ संभा-लाहनाम नियुक्त क्छेन, छैक्तिन सङ्ग्रह क्षेत्रः चटनत्मत क्षीतम दक्षि करेटव, धवः भावकारण काराव्य मृक्ति वांच स्थेत्व । (सक्ष भ सक्र दस्य मत्या खक्तरिमात क्रोटनां हम। হ্ইতেছে এবং ভাগরে দারা শ্রন্থ ভুত উপকার लक्ष इंट्राइट्ड, ममञ्जू हात्रकार्य गयाचा क्रांश्रं प्रदेश, मत्म् इ साहे।

বলিচ হিন্দু ধন্দের গা ভার সন্দর্শন করিলে প্রতীতিহয় যে, দেশীর আচার নাসহারের সঞ্জে ভাছার অভেষা সম্মন হিন্দু বশকে বিনাশ করিতে গেলে দেশীয় প্রধাপরক্ষরাকেও বিনাই করিয়া কেনিয়ে

er, and gardies autopive excessis काम ब्रह्म बर्धा अवधित रावहीत हुन का ना बाबा दिन्छ घटना महिल नहि कटल সংযুক্ত নতে ৷ কি সামাতিক কি পরিষায় महका के मक्ता वाक्षि असू की म है हिन्छ धर भीत जमुद्रमानिक छ जन्मकान, मांगा किक ध्रमा-श्वरणवा श्रीविकाक क्रेंटल क्रिक्म भूगा োধ হয় এবং অভি সহকেই বিষ্ট হইতে পারে ৷ হিন্দুধর্ণনাত পৌতালিকভার উপর थात्र नवरणत्रहे व्यविश्वाम व्यादश, किन्छ অকশিং কপে তাক পরিকাশে করা এই জন্য কঠিন যে তাহা হইলে আয় সামাজিফ गक्ष व्यक्ति भाषश्चातः व्यवाश्चिति भिट्छ इत्रें जवर मंग्रीकाहार एवेएक रहा। অন্য কোন মহত্তর ধর্শের আভায় এচ্ন म। कविहा हिन्दुधर्यादक विमान कविट्य পেৰে, সামাজিক পৃথানা বিপ্ৰাস হইয়া এগনা অম কুসংখারে অমনুরক্ত হইয়াও অন্যাব্ধি অনেকে অকাশ্য কপে चीत्र विधानानुगानिक काही। क्षिट्रक मनर्भ হয়েন নাই। কিছ সভা ও পবিত্র ধর্মের সাহাযো উল্লিখিত দেশাচার সমূহকে পরি-বহিত ও সুমাজিত করিলে পৌজলিক কুণংকার ভেরোহিত হয় ও সামাঞ্চিক প্রথা ब्लाइकर अजादबोशः**गानी (१७**०३ महा किन्छुयना त्रांत्रडांनिद्यात्र कि कोमल । मार्गाः ফিক পালে ভালদিলের কি অপুর্বে দক্ষতা। भण्डल गर्गाज**পরিশেষক, এবং সমাজতক** গতপ্রিপোষক করিয়া দিয়া 'দ্বীম্রা স্বাব-লাংড মতাবলিকে একুপ বিষয় তুৰ্বাৰ ছিছ কৰিয়া বিশ্বাছেন বে, শত বুধ্ববৈত্ত বিশ্বা াদ চেটাতেও তাহার আপুনার ক্ষতি ক-বিত্ত পাতে মাই।

পার্গের বাক্ষর গেই কৌনুন্ত্র গোড়ীরুত জনিরাছে। বেছিন "বান্তিনার পয়সার '' কমটি আমাদিকের কিবিছা

निविष्ठे व्यक्त त्मरे विभावति सरकार अक्ष एका पूर्वी आमानित्यव नम्म द्रनांत्री करे-TICE I TOURS AND AMERICAN AS fanta feet, warrants were a wice, ca वाष्ट्रभं वार्तिक शिवक क विकास वर्शन त्नात अन् कांका नामाना त्नारकत कत्रप्रक এবং জীৰনের অভাব মোচন করিতে পারে नाः खण्डोर खोनार्या त्य कान सारम सम्ब ভারতবর্ধের ধর্ম হইতে এমজ বিস্থান কোন जन्दम रे नज़दर ना । किन्छ अक्टन दश अन দূর হইরাছে। প্রশাস্ত গভীর উর্কর্জন क्षानमञ्ज्ञ चौष्टिशिह मद्मानक सदल অভাৰ মোচন কবিয়া करम करम कर স্থীয় ধর্ম উপাসনা অনুভাগ দয়া কমা विश्वाम नाम निर्फाधिक। षाञ्चक्रयकश्चातत्र **अम्या** অৰ্ভর্ধ তেতে, এবং অঙ্গনাদিগের সরল স্পর্কো-প্রশ कतिया काशानिश-কেও ডব্লিভার্থ कतिरङ्खा (कवण देश नत्र, आविति गृरु ७ गोर्गालिक कार्कात সজে সামাণিত হইয়া ভক্তাদিলের জীগনে श्रुकारण निक्कि **इटेटल्ट**ा ধর্মা, কোষায় কোন ফালে থকাশিভ হই-খাছিল : হিন্দুননাজে ব্ৰাহ্মধৰ্ম এবেশ করিয়া দুবিও সামাজিক কিলাকলাপকে न्नार्किंड क्रिक्टर्स. अक्रीका खर एकस ক্রিয়া পার্থস্থ আছার ব্যবহারকে পাবিত্র क्रिट्टार, मामक वालिका, पूर्वक, इक दक्षी, मकरणत आक्रिक नांधू हेन्छ। तकना भूति कतिशा व्यरक्षा व्यवन व्यविनयत त्रवटक আপনার শরীরকে আবেন্ডি করিছেছে 🖥 वर्षज्ञान काटल विश्वासम्बद्ध मार्थ कि कुर्क रग । क्वम विवास, विद्वास, अक्टरी बदेश-ष्ट्रांग, र गठेका, माधिकका । अञ्चल दर्गा বইতে তিংশল হইয়াছে : সমাজনাত **পুর** नीत वाक्षाचिक स्ट्रेस्ट । इस मेबाटिक पार्क

बाबस्थेक तमाचक लाकिन्द्रभव देखा के कर वा बादवा गरक व्य शाकारक विकिन् तारे शहिमादिन दमहे नगाम छत्रक्ष अस्त अस्त व গরিমাণে উলিখিত স্থাতার বাবসার লোক-निरंगत ज भारतत डेमेंटवांनी ट्राई महिबादन ग्रमान यूरी ७ डेन्नडिनीन विक्यू नमा-নের প্রধাবনি উন্নতজ্ঞান উত্থানোযুগ व्यवसाय-मन्त्राच नवा मन्त्र नाटस्त्र हेका विक्रक, क्रम विक्रक कान विक्रक, धर्म-বুলি বিরুপ্ত। অতথ্য হিন্দুস্মাত অভি पंक्रांश्काष्यव्यानम इहेशारह। উভুলিত হইলে বরং ভাষ্কে সামান্য বালুকা বস্তানে আবন্ধ করিও, আভ্যের-গিরিগজার নিক্ত গাড়ুগুম প্রস্তর অথি নি-জ্ঞৰণকে বরং মিশ্বাস ছার্চ নির্বাণ করিতে চেন্ট। করিও, তথাপি মন্তব্যাকার নিমে -বিত বলুসম বলবতী আশাকে অবরোধ ক-ति अ ना । तमने छूटक कोटल में छात्र कदर धंद এই তুর্বস্থা, বঙ্গদেশের **এই জ্**র্দ্দিন।

একনিকে ভ্রমসমূল অপবিভ সামাজিক দেশালার, অপার দিকে বিরুত অস্বাভাবিক विदनभी प्रवादकादात कीन असूक्क्षण छ म মান্তবিচ্যুকি; একদিকে কুসংক্ষার অজ্ঞানত। পৌত্তলিকতা, অপর দিকে সংশ্য নাক্তি কতা, অথবা ক্রিরাকলাপসুনা ভ্রিভাদ্ধা-रीन पृश्नमाक्षरिव क्षित्र व वंधत्रु किनम्भन কাৰ্যা-কারণ-সন্তুদ্ধ প্ৰকাতম ছকোধ্য বি-জ্ঞাৰ ৰ্শান ব্ৰাজ্যণৰ ইয়ার মধ্যবন্তী रहेत्रा मकदलक भाषा गाँख गांचक्षमा मन्त्रो पन क्षिट्डट्ड। वर्गीक्य छाटन मकन व्यक्ति जम्बना जिल्लान करिया नेच-तित अत्र के कार्य सामा भावतां करें छिएक, क्रव मस्या मान्य कान्य विश्वान कति-त्वरका विकास की कर की न, पति ए । विकास कर्म अवाना कांग्री सकटनत क्रन्टसत मजीक (महरूक के कार प्राप्त के कार के कार

महरोम संगतिए गामां कर गुन्न निवक ক্রিভেছে; বিদেশীয় বাসহার পদ্ধতির সভা-मात मध्यह कतिर प्रदर्भ मामा किक भारतर विश्व उर्शरमण कटब ममाजटक वर्र शर्मारक धर्मिक क्रिया संगोष्ट ७ घटनमा बटन আবিদ্ধা করিছেছে, এবং নাণ্ডিকভা ও সংশা-अणिक विष्णाम भटकत शर्थ व्यवद्वत्त्रश्च कहिएक-**८ए। ८२ वक्र राजीशेश (६ व्यक्ति।** वर्ड विवाजी ভাতৃপন। জাগ্রত ইও অক্টানত। পরিহার कत, बुबुक् रहेश लेतरमध्यतंत्र अमारम का ল্পানিক ধর্মা প্রিক্যাগ কর, এবং নিক্যা সভা ধর্মকে অবিলয়ে আক্সর করিয়া চির্দিন প্রম সংসদ্ উপজোগ হর: " मडार्श অম্পিতবাং ধর্মার অম্পিতবাং অমদিতব্যং। সভাং চর সভাং সংক্রিং। ভুজানাং মধুঃ। কাল্পনিক গণোর গ্র পরিত্যাগ করিয়া বভাকে আঞায় কর, এ-পাকে আতার কর, এবং তাঁছার আদিই লা धार्यमात्क चाला कहा।

भटना विष्क्षीन।

भविभूके किरिडेट विश्वाम भविताक इक्रमक्षामनामि विच्छकत किया वार्थना भाभिमि मन्नव एरेम यारेटल्ट । वन्यत म्बार्य के बाद अकृषि अरकार मातीतिक व श्रह विक्रिय । वृद्धित संगमा त्यां हहे त्यह किय आवाद समानि महस्त आन्दर्गाजन 🕉 क्रेके भरनामिन्द्रत था 🕏 नग्रन निर्योग ক্ষি ভাবে ক্ৰই না বিমোহিত এবং লৰ-श्वाक पूर्व इहेगा श्रीए १ दर भातीव्रविष्णा আলোচনা করিয়া সহজ্ঞ নান্তিকের কঠিন क्रम भारतार्थ जिल्ल तरम चाल हरेगा याहे-তেছে, পরীর বহিত্ত যে বাহাবিজ্ঞান আ-্ৰোচনার মনুধা অভিপত্তি ও মনুধা নভাত। गितिक्स। मानद्र ६५० कट्टिन यानदानटक অভিক্রেন করিয়া যাইতভচে, মনই ভাষার बियोग कृति । मटनद अथवा क्रांटनह नियं-खुर्बंद क्षति निलंतवाय रहेगा এই ममल व्यविष्टि क इंटलर्स, अवर दय श्रांदम भदमत যে, ৰূপ অবস্থা, যে স্থানে ভাছাদিগের क्रांमुक्त व्यवश्र ।

वक्षरः आत्मिक्षित अन्ति कृम वर्षे ষে সাহা এক বিষয়ে সংঘটিত হইলে তং-महसीय मकल नियदर्शन छेथ कर्म माधन कदत নাবং দুরভিত অলক্ষিত অনেকানেক বিষ্যোর সংস্কৃত। তাহার গাঢ় সম্বন্ধ নিবন্ধ করে। শা-तीइ विलाध रम किकियमा गाँउत्र छेन्नि হরংখ, বাস্পরত্ত জানে যে যন্ত্রবি**জ্ঞানে**র क्रकर्म लाज इहेरव हेंह। मन्त्रु वित्त म-মাবিজ, কৈন্ত জোজিবিদার নাবিকতা भारतात सेवेडि इवेटव, त्रमात्रवर्माटक क्रवि कार्याप्र े छेपकांत्र युरेरव, छोड़िश्चिक्रारन काल वर्गात जिल्ला मांच स्ट्रेटन दकाथ-क्षामा क्षेत्रमं क्षित्र है कि किये सर्टे करे थ जीक हरेरेय एवं विकासिक मेर्स मेर्स करेंगी करि तर मक्स प्रमण्डा । वरे मेक्स पाता अकेंग्री दिगांव उस - ३वेटन मुक्त केंग्रि-

तरे छहा देश। विशेशनिय मन गरप्रदेश बाक्य जरुमा द्वाखरूप श्रीफ श्र स्टेटन रच्येन ममल कातानि वाटक लिए रहे अवः महा-ভাত তরক মধ্যে ক্রমণ প্রশাসীয়ত চইয়। कुनएक थाणिकन करत, त्मरे क्रम हिट्छा। लिए दिया मत्रगीत एतम् तामि निग्रं विक् इक्ट बाटक अवर श्रीबटनटेंच छाउँदी मन लिलतामिटक आकृत करता गाउँ मकन विनावरे भटनत नटक समान संस्का कारा र्केटक विक्रिय-मंत्रका स्टेटन मटखर कर करा ালান বিদ্যাই তিটিতে পারে না। খনই বিদ্যা लारकाइ ताकथांनी, जारा अधिकांत्र कतिरण जात जकन हे अरिकृत हर, छ हात एन अवश्र हर्टन गकन रुख्ने अवगण १७३१ मास! কারণ যে কোন প্রকার জ্ঞান অনুধারিত হউক মনোরভির পরিচালনাই ডাগের অ-পরিতাজা উপায়, তদাভিরেকে কোন দিলা: রই উল্ভি স্ক্রাবিক নহে। বি রাজনীতি বিদ্যা বিষারদ পণ্ডিতগণ, কি স্থানিপুন চিন্তে 🕆 দল,কি স্থুমাজি তবুজি ধর্মাশাব্রজ্ঞগণ, কি ক his পরিশ্রমী পদার্থ বিংবর্গ, কি সুবস্তাত। भर्टे भश्विक नमं, मकटमहरू मर्थर्गावक करण मरना इंडिंद्र मोशीया धेरून कतिरङ रूप, कर মনভান্ত অবগত হাটতে হয়। সকল বিদাং সম্বাক্তি মনোবিজ্ঞান এত্তপ আবিশ্যক ও মহত। মনোবিজ্ঞানের এবস্থিপ মহত্তকে শাহার্মিক महद् कटह। किन्नु अहे गन्निक महत्त्व रा-जित्तरक देशांत अक्की जिल्ला वरु मरूप

পৃথিবীর মধ্যে মনুষাই স্কাইপ্রেক্সা শোল পদার্থ, এবং মনুষ্যার মধ্যে মনই নকাপেকা ভোষ্ঠ। এটিন এটিন এটিন বে শীর এক জন নভালিকান ভাষার আচা বাকে ভিজাদা ভারতেন হৈ ভারত নান বিষয় চিতা করিবে ভারী মধ্যা মাই ব আচারা উত্তর ভারতেন গ্রামার বিসক্তি

TO THE PART OF THE PROPERTY OF THE THREE WAR WAS STEEL LAD शोकाम नाटक जुलि केकर १ मध्यक्रील जाना তোৰাতে পাইটে কাছ কোট কোটি ঘোৰন **प्रेटक अरोता प्रदेश ध्यांक मध्यांक धावन** क ब्रा बनाकी ए अन्दर्धत भद्र ७७८था उ क्रेब्रा कि क किर्ण्ट । अहे आकारमत महरपारभरे तरहे द्वांग इत्रवनाहा वामःचा বেকে নিচরের বৃহিত্ব কোনারক্ত শরীরের শটির সম্বন্ধ চুমি অফুডৰ করিতেম, এবং ভাহাদিগের আদি অন্ত পর্যালোচনা করিয়া কালের অসামতা ছান্গত করিভেছ ৷ কিন্ত छान मृष्टिक असर्वश्च नायधारन पर्नान कत् व्यवना लाक मिश्रक व्यतीम व्याकाम व्य-পেকা মহৰত ৰূপে অন্তেত্তকাৰ ভোষার वाद्यात शिक्षिक हराव-वनसञ्चान व-নন্তপ্রীতি অনন্ত পবিত্রতার আভাদ উপলক্ষি कतिक्षां स्वार्थ बहेरन। यशन धाकां ध নৌর লগতের উপযার ভোষার নরীর ধলি-क्यांवर यदमामाना । अक मिट्स मरबारिंड অপরিষেয় লোকরানি সহস্র মহস্র বৎসর षाकान दरक जागामान हर्देहछहरू, षात निटक की प्रेवर मामवरमञ् स्त्राहम ल्यादक मीर्न रुरेशा भृषिकी छरता वह दक्षरण विषय कति-**उटाइ क्षेत्र गाम वस्मत्र मणाभित्र मा स्ट्रा**ङ रहेटक रुखिकात महित विजिल हेरेटका है। अड्यर विश्व कंगरंडत महिङ आक्रोलिएस महोरतक निजास कारणाही मसक वारर सर-नवरक नामक की देशकुकी है समास का जीव न TALBUMA I FAN VICTORIAL MARINE MARKET

বাল প্ৰকাশ ইইটোট বৈচ্ছা প্ৰচাল চালিছেই লোক স্থানের প্ৰেল্ট লাছে, সেই জ্ঞানেতেই প্ৰজ্ঞানং প্ৰকাশ ভাইৰেছি যে অভীপ্ৰিয় শালানিহিত শীতি পৰিভাগৰ পাত নাই নাং স্থানিকান কৰা নাইৰে, নিশ পেছ ভথ কইয়া থাইৰে, আকৰ্ষণ বিকাশ কিন ভিড তি ইয়া খোৱতৰ সংঘৰ্ষনে লোক ক্ষো কাৰৰ চূৰ্ল ইয়া যাইৰে, জ্বালি আভায় বিনাশ কৰে না উপায়ের শুভিত্নতি আভা, অনিকাশৰ নতা শ্বাপের প্রভিত্নতি। এবস্থাকাৰ আভাব শ্বাস্ত্র

বহিজ্ঞাতে ঈশ্বর প্রকৃষ্ণভাবে অবস্থিতি করিতেভেন, অন্তরেই তাঁহার উল্লুল আ প্রাকৃতিক ঘটমাপর্যপর্য সনের मद्भ विक्रिय मस्या रहेटम पार्थ होम लाहा হীন কঠোর কার্যাকারণ-শৃষ্টা মাজ একাশ করে, কারণ শক্তি সৌন্দর্য্য ও কৌশল বাহা कि हू जक्लर्श भटनतः । जार । এই क्रमा या-হারা জ্বমাল ও আহাতভ্রিয়ত হইয়া মনো-বিজ্ঞানকে শুগ্রাহ্য করে, ভাহারা অঞ্জুভিক্তে সৌন্দর্য। শক্তিও অফা বিলাম, অনন্ধ কার্যা-কারণ জ্বোভ বিবেচনা করে, এবং গোর नाल्किङ। भटक निमध रहा। किन्न दर बीत পরতি মহারারা আতামুদ্রান করিনা তল-कर्क क ब्लान की कि स वारी नहा मब्बोह विविध मत्नात्रसिदक चेड्यू लब्दभ উপजन्ति करतन अवर उदगोहीट्या क्षत्रक्षित्र मकल विषद्यक वर्थ रूपग्रक्रम करतम, डीहोतोरे के सद-गंतीसनः धर्मनीन, कें।हाडाहे मरमात अरहिनकांत व থাৰ্থ ভন্ত অৰণত হয়েন ৷ আত্মান্ত দলানে व्याखादनाहमात्र विदंश हदेश वास् वादमादन উন্মন্ত হইলে, কিয়া শুল ভৌতিকপদার্থ-বিজ্ঞানে নিমগ্ন ক্টলে, মনের প্রকৃত মহত্ত ধৰ্ম করিয়া বহিচ্ছ গভকে ভদ্পুর উদ্ভোদ भन कतित्व, व्याग मोखिकडा ख व्याक्तियाः हरम। शस्तिक आस्त्राज्यानी दिखामधून।

लगा विश्व के विश्व विश्व विश्व कि विष्व कि विश्व कि विश्व कि विश्व कि विश्व कि विश्व कि विश्व कि विश्

भारमानिकाद्वेत्रते आवश्चित । एउट्य म-ेर्ड प**िलक्ष** ४ मेल, क्ष्यारण (श्रीतर अ ४ ऐरब कि कि विशाहक काहा आकृति भाषा । भवदिवस मरूल अधिक्षित् है करण रुद्ध नाइमानाक्षित्र प्रश्नाम विषय सन्दर्भनदान पादे 斯伊日 在如何一要打成的一批进行性的不 रमस्तित स्रीय सक्त एकोसल एक प्रकार भागपाल बेलेटाल भारती भाषता है। का ना ना वैरेत, कि अक्सनमा अस्त्रने उद्योष्ट्र मंत्रात, है कि जीर्न मीन एक कार्य, मजर दनमें हार क्षिक साप्त आंकानक स्टब्स् सामाना आउन्हक क्षेप्राक्षमः अध्यक्षति । कि.च. भहनत ऋषि Wer district an profiter, the soil ा भा । ११ का । । । । । । । भाग सम्बर्ध हाल सम भीत गर्भ, १५: किल स्थ, छ। स्थ, अक्षकांद्र এই ৷ তাহ জেনে প্রীক্তি স্বাধীনতা সুস্পন্ন ্যান প্ৰাথ মন্ত্ৰাল বৃহিদ্দিন্তিত ভাইতি (मिनि) ५ लाल्टर शास मा । सिंटमदसह सदसर ংথ কাইটেড কন্ত শত শাল ভোৱের উদয় হয় क्ल काकार मध्या। कतिहरू साहब, अवर ८७ में বা ভালাদিগতে জ্বিদালে লগা ভারতে भारतः विश्वारकतः माध्य अभे अन्तम क्रांद ४८९१ कर्ष अभव इष्ठ, 'तिष्ठारास्त्र नाम्य वि-लुभ हम आत कार्राजिदशब किस आता पूर-राणि भूगे २२ वर्ग । प्यक्तिका अवस्थित प्रान्त भाषा हरू व करवारी इस्तिसिक्ष अप-

তৰ্কে এই নীত্ৰ ক্ষা জুমহাত ত ব্ৰিচনের দলে তাহাদিনের সংলা নিবল করা, একং এই দনত নাগাবেও আর্ভি ভ্রেমারণ করিয়া নবাহীত কান নীভি ইচ্ছার সাহত তাহা দিবেক সমভাব অনুস্থিত কার্যা ভারেনাতে অম্যাধা। এই চ্রুচ কার্যা ভারিনাতে আমানিগকে প্রত চইতে হইবে।

ত্রাক বিবাহ।

षांगरा जाकास कांक्सारनंत्र महिलाला লাশ ক্ষরিভোছ যে, বিগত ২০ কে ভৈয়ন্ত মেদিনী পুরস্থ প্রীয়ু লৈ কাত নার্যাগন সম্মুখ মহা সাহসত প্রথম ভাষ্ট্রতি জীয়াল্য ক্রণের . यहिसर अभिनेत निर्मा १५ कि होस्स असर र 電影性 有門門 解制性 安克爾 计特殊设计 电 स्मरको अवश्रक चारिता में शास्त्रक निश्चक सा अवाक्ष्यंत बस् महाकता गामनान्त्र रा विद्यास्त रेरतर्राक अभागगणन कश्व भाषान करः ख्यामक भरान और न्तिसन " गाक्तः রায়ধ ব্রুর ব্রুপ্ত। পুরুরগাসভার वर्तभाम महरू कार्या श्रीतो प्यामानिस्त्र । अर स्क्रम व्राक्तनात्राचन नश्च महाभाग खाक्तरहम्ब महाधारि माधम चांतरभव, महकालिक मुमनीय नामाकिक विश्वमाक प्रतितृष्टिक कथिए। বেশের মুখোক্ষাল করিলেন, আধনার স্কুলক্ষে পৰিজ করিকেন,এবং একটা বৈক্ষেপরিষারের প্ৰতিষ্ঠা কৰিলেন ৷ জাহালে মাধ্যাদ প্ৰদান না করিয়া আখন নির্প্ত হতে পারি না চু পারটা শালি স্থলীশ ধর্মপরায়ণ ও কভবিল্যা िनि अरे वत्माद भिष्कित्व कोटनरका ইংরাজি শ্রেণীর শেষ প্রক্রিষ উত্তর্শিক্তি मारहन जरः सरशोहिल जिलाहि बाह्य हरे बारहर । रवश्यक जन्मरन विकित्सा मान-अभि अधि व विशा की अधिकारिक नेम्बिक अस्मितिक डेपॉन भावन कवित्वमेत्र कमात्रि

स् भाक्ता, मर्गानांता जतर खां थ रशका, डेशिंड संश्रमके त्यात ठ कुमें से कि रेगम-ताविक रिपार मिलाटन मेराबीन सम्बास इन्हें। विकादकत भूटका है जिलि विकार तिया। উন্নজি এবং উপাৰ্যনাদি শিক্ষা করিরাছিলেন, क्रकार व्य कर्त न द निर्वाहर अनल करेगा एक न नी खरे मकन विषयं संविक्त व छेरक सांच कतित्वन मटक्कर नारे। विवाह छेपलाक পবের অস্ত্রিণ জন্য অভ্চা 'মনেক জ। জ बरत्रत चाळूगाज इन्हें ६ छ लारत्रम सांहे, किन्द व्यक्तिमुङ्क अटनक महर ७ विक्नि व्यक्ति রাজনার্যাণ বাবুর ভবলে সমাগত হইখা भाषामहरू केहिटिक छेलमाई क्रमोहाबा आनान ক ব্যাহিবেন, এমন কৈ কেই কেই ক্টাইট দিংগর পরিবারাদি পর্যান্ত দিংসন মিকেভনে / अतन क्राहित व सक्षा हुन भएगाव नाई । विदास कार भगरत्। असाम मन्त्री महीत्। इन -भारतीयुर्व धककारत समुख्य माण्याधि-शक्ति। तक्षे चेन्द्र स आहमानमान्य वर्ष वेतिया भूका आकार मार्का इक. वामहाइनदा ারপুণ, সাজনাঞ্চি (কি)পাইকে শ্রেষ্টিয়নিত তের, কড়াজন রেলাকেন আমন্দ্রন্ত কল-ব্যৰ আজ্ব স্থ্য, আয়িকাৰ্ফোৰ বিবেদ বৰ্ণ क्षाणिक पार्थाकि के केन जातर चनक खोइ भट्य भन्दात्रभाग हडेट्ड व्यानिक । सन्न कारम रे फिलाग महरायमव, काशांत अ सूरश भ-প্রভাষ ও বিষাদের চিহ্ন কাঞ্চিক কর নাই।

करनम युक्त श्वरमधरतत लेगाल व करण्य डांचवरणंत कर को छ इहेगाव आप कि छू अवनि छे तिहल गो। डांचवरणंत चर्छ छान खाता आंचा, शिवांच छ अभारकत शांत-ज्ञा जवर आनम गर्किछ इहेरछ्टछ, जवर पंडाहे लोग कुमरसाव विविध्य छ जवर मछा-श्राहण इहेरत एक हे छाखा आंत्र अभिक छेनेकात छ उहाँछ मधन हहेर्द (व गर्म बाता भक्त अकार को श्राहण कि व्याच

गएकातः भातिका छ रते । अवर उमक्षकात नि-क्कि वर्तीय मणाद्यांकि ल्याटकर विराज्य अंगः भृथिनैष्टित नमानीष एकः विवर्ष भारा धीछित ताजा शुविरीत मीमा क्हेंटक भीषाष्ट्रत श्रवीस जास्त्र इम. रंग श्र**टम** लिखा পুত্ৰ, জাতা ভগিনী, ত্ৰী পুৰুষ মধ্যে প্ৰম পৰিত্ৰ ক্ষেত্ৰত আৰক্ষ হয়, পাৰিবাহিক मकल क्षकात सकल गरमाधिक वर गमारभात पुषिक ध्वानी हय निमक्के इस् अवर ७६-পরিবর্কে বিশ্বস্ক কর্বধানুসোদিত আচার रादक,त आलिकिड हरीय मगल प्रविदेशिक का इस्मी धार कर अधिक अभीवर्ग मन्त्रविक कस्द्रम् कराष्ट्रभुम्न विद्वान प्रान्यम् स्थ ८५० पर्याते भाउर रगरे पर्याचे असर्वाद असला चित्रम राष्ट्र करियों भटार । कहन करियारे करा 遊賽時 不得 解(電) (電影) 超钢(因知時以外 質) 4 人間(本) 明都 國際 美型产品的公司 李沙特县 6 18 要毫古古 下

अ:क्षिम्टभय मासल्लब्धाः ।

ান্দ্রাপ্র ক্ষায় কৃষ্ণ নাল্য ক্ষায়ার এইর ক্ষায়িটোই নিযুক্ত কবিবাদ ক্ষা তেওঁ টি টিকার্ড সন্ধান্তক্ষা আক্ষায়াক্ষার ক্ষিত্র ক্লা তেওঁ এক মিবার ক্ষায়েব্য কর্ম ত

শীষ্ণ করে কশান্তক কে কাল্য নত্ত পশ্চতি এতন কলা বিভেক সালিও প্রথ শরেওক সজ্পাতি কর্মিন্তি জিল্লাত ক্রিন্তি শীষ্ণ করে বিভূমিন্ত সক্ষেত্রী ক্রিন্ত শৌষ্ঠারী ক্ষাম্য সক্ষেত্রী

কাষ্য ব্যায়ৰ বাংগ গান্ত কাৰ্যনাল পৰা আ্ষ্য হ্বাং বি শংকাৰ ইয়াশ্য প্ৰকৃতি শিল্ড প্ৰান্থ প্ৰথম কাৰ্যকাশ বিংধ বিংধ

াদ্ধ কিংকর বৈকার সর্গ্য চুচ্ছ বিশ্লি

Mary Mary S

পরবাদ বার্থন কর্মচানী গণকে ধন্যবাদ আর্থক বহুলে পাতৃয়ে ঘাটাত প্রিযুক্ত নাতৃ দেকেজনাল ঠা-কুর মাধানতের প্রভাবে ও প্রিযুক্ত রাজারাম মুখো-প্রায়ের পোদকভাষ বস্তুলান রার্থন কর্মচারী নি-কুক্ত করা ক্রিন, ব্যা:

अवश्याकः ।

जियुक्तः स्वरक्षम् ।

जियुक्तः काद्यभ्यानः कदः ।

जियुक्तः काद्यभ्यानः कदः ।

जियुक्तः काद्यभ्यानः वदः ।

जियुक्तः काद्यभ्यानः वदः ।

जियुक्तः काद्यभ्यानः वदः ।

जियुक्तः काद्यभ्यानः ।

न्मिनिक स्वारणकः किन्द्रकः गण्यस्य द्वान्त्रको न्यान्त्रको न्यान्तिको न्यानिको न्यानिको

82 [8736] I

श्चिमुन्ह रेजकुर्णसाम रमार र

可以明明的 斯特 对其不证 不知明實上因[於一 ·胡太雅皇 (2)[2][4] 出文[故中 17 16](2) 可[建立] [] 化香酸 化号 化合物性 网络拉拉 医水线管板 医外外形术 नावभ करियाकमध्य भेज भीतराक मोना व्यक्तंत्र ा का अधिकार प्राप्ति या गांचा अधार कांक्षे प्राप्ति ही सिन् भारत हासियां करित अपन करता अस्ति। अस्ति। গালৈ সৈপান্তৰ আছি নিছৰ কান, ভলত আছেল স্কান करने पूर्व इंडेंग हैते. उक्तिम एक सक्स निसंध प्यान ्याहरूमः कविषः सिक् निकास स्वित्रास्य स्थ, क्षेत्रहरूव व्यक्ति । मेन भनाई जानाम्य व्यक्तित्र काममन्द িপাৰে । অংগৰ কৰি কেন্দ্ৰত উপায়ে জী সাৰলখন কৰেছে া গোলা কিছুট্ড হ'জ লাখন সংগ্ৰহণ কৰি হালোৱ क्रिकेन के जिल्लामा के प्रतिहत्त **गर्मायसम् क**्षिण्ड 机锅缸料 ेनस्य एक वन्त्र जिल्लिक कहेरकरहा

া ক্লিকাভা একোস্থাজ। তথ্যত সংক্ষিপ্তাভাৱ কালে ক্রিয়া, ব্যক্তি তথ্যতিক ভাসা আক্ষমতাজ।

ে স্থাক্ষী কলিকাতা প্টল্ডালাভিত।

ত দি ওগাংন উপাস্থাগ্যির কবি করিয়া থাকি,

ত গালার পরে এক একটা বক্ত ডে করিয়া

ত গালার পরে এক একটা বক্ত ডে করিয়া

ত গালাভিত সর্বাচন করিয়া

তিবাহিত।

া লোক্ষা রাজ্যমাজ। এই সমাজ কলিকাতা শীখারিটোশাল্ডিক। সমাজ কলিকাতার কর্মা করিয়া একি, करा उमामनाक शहर कक्ष क्रमणि रक्ष का प्रशास । करात्म काम ३ महिलाक का क्षत्राहि ।

ह। बाग्जुकश्व बान्तममान

व्यक्ति महानेदारक राक्षांत लाग्न करे समाध्य हेंद्रगा पाटक १. (वाध यह करे समाध्य किन भिन्न विधा-किलाम, व्यक्ति निरम क्षक क्षम्की बक्का किन्नि हिलाम।

थ। माजाबाही जाममगाम।

উল্ল প্রাথে ক্রন্তি রবিষার সন্ধারি পর এই, সমাজ হইয়া থাকে। এথামকার সভা গংলা ৮ ১০ করা। বাধা হয় এই সমাজে জিন নির্ম গিয়াছিলাম, এবং ক্রাভি দিবম এক একটা দত্ত ভা করিয়াছি। ক্ষপিত সালোগাছীত কাতণায় বা জিন গারকাল, উপাসনা, ধর্ম, এই কনেকট দৈশকে ভূরীন ভূত কৰিয়ার ক্রনা চেনী ক্রিয়াতি।

छ। दक, माम प्रकार हो। प्राप्ता स्था स्था

ाजाम नगर सोगुन्त वर्षु सिरान्त (बटवर प्रकिटन लिका करें) । लेका नगर सेगा करें। लेका नगर सेगा करें। लेका करिया करिया

ণ। ইণরামপুর রোধাণনাজ

তে তি ইনিবার সন্ধারি পারে এই সম্ভি কর্ম।
গানে । এখানকার সভা সংগা তেখা ১০০১ জন । এখানে কুই দিবস নিগাভলাগ তেখা দিবস উপাসনার ভালিখাকত। নিয়ে এখানী স্ভেড়া করিয়াভিনান । দিউনি দিবস এক বাজি ব্যান্ধপ্র এছণ করিয়াভিনান । উহিবি উপ্সেশ দিবার উপাস্কেশ নিবার উপাসনার সকলে এক করিছা দিবার উপাসনা

५ ' माखिशूद बाकगमांका।

শান্তিপুর ত্রাধানমাজে এক দিবস প্রমন্ত শবিষ্কা সেখানে বিশ্বাস, পীতে অস্থ্যান দৈই জিন্দী বিষয়ে বস্তুত ক্রিয়াভ্রব স

ক্ষ কল ভাষে ভাষে প্রাক্ত প্রাক্ত কল ক কিছা বীয় উদ্দেশ্য সাগম ক্ষিত্রত বাবিকাশ্য পরে ১৭৮৫ শংকর ১০ই পোষে আচারা মহার ক্ষেত্র অংকলাভ্যানে ক্ষরীপ ক্ষেত্রার ক্ষরপাতি হাপ্ৰাহ ছা প্ৰাংসগগৰন কৰিবাৰ, উত প্ৰথম কৰিবাৰে, উত প্ৰথম কৰিবাৰে, উত প্ৰথম কৰিবাৰে, উত প্ৰথম কৰিবাৰে প্ৰথম প্ৰথম বাজ্যির দক্ষিত প্ৰথম কৰিবাৰ প্ৰথম কৰিবাৰ প্ৰথম কৰিবাৰ প্ৰথম প্ৰথম কৰিবাৰ প্ৰথম প্ৰথম প্ৰথম প্ৰথম প্ৰথম প্ৰথম প্ৰথম প্ৰথম বাজ্য প্ৰথম প্ৰথম প্ৰথম প্ৰথম বিভাগ প্ৰথম বিভাগ প্ৰথম বিভাগ প্ৰথম বিভাগ প্ৰথম বিভাগ বিভা

ানিকটি লাগে নামল করিছে আরম্ভ করিয়া প্রায় হটার সময় বাগ্ডাঁডভায় উপন্থিত করিয়া প্রায় হটার সময় বাগ্ডাঁডভায় উপন্থিত করিয়া প্রায় হারণ করিছে করিয়া প্রায় হারণ করিছে করিয়া করিছে করিছার করিয়া হারণ করিছে করিছার করিছা করিছে পরিবারের পরবারা করিছে পরিছার করিছা ক

中, (有4) 10 (1) 12 (1) हिर्देश प्रभावता अस्तितिक विश्व अस्तिकाम र अस्ति। बर होहान इ.स.स.च. चहाम ज.ह াত হটকা আফানকা অসমের জন্য সংকুল अध्या सिक्तिकार । अस्य छित्ताक्षिक । अर्थक 對極 প্রিক জন্দা ভালে এমস্থানো বালনা উল্লেখ Financia and \$1150 我的好好好 對文件 海拔15万万 押。 वह कदिलाय । व्यक्ति स्मर्थात् । विनय दिलाक अकान राजा २७के जा स्वांत ज बालमां अवन जीन व्लंस . १ मीवा जानामा धूरन काइए। १४, १००० ছানেজার গাগত কংগ্রাস রাপিলেন ভাতা নতে. त्राकाभयाँ अस्टराव मटक मटक मटक 'लोग्यलिक किया कर 明年 医骶骨韧带 计通常程序 电流控制工作 मनात्वे क्यांत निर्मानी, जारमकात विवस्तामय जना उंक्के लाहेटल एश। किन हेर्स्टेश्टर वर्षेत्रम नसार् श्रेटक्ट स्थानक दहेगा फेकिन। हेंहाई 如門 医单侧管 (四年)对安门安阳 安门两日 河门等时门外 क्रींकि खेलि, कृष्णकाराज देशीएमत स्थान पूर्व **इहेब्रा श्वल** । यं द्यांत्रा **जूदि जूदि श्रुक्षक** अधाया করিমা বিদ্বান বলিয়া গরিক্ষিত হইয়াছেন, बीकार बद बदर्धत छन्। इने लाइएकः इस नी, उँ। क्षता अकसात के विषया वृश्विदीन किया द्वारिक निर्मात धर्मी देन व्यक्ताक कृतियों निका कन्नमें देव, जीकापाप रकरक धनी के लेखिएकर सना मरह, हैं शेष बीच मधुभाष अभूयामारेनद्र विस्तिनाहि । अनस्त. रमसारम् अक्षी जामभाष्य जाममः करिया कालः कालाम अञ्चालमा कविनाम । केरिके

विकास उत्भागमाध्यक नीवर्गिक नगावक

त्रसम् क्रिसिक्सिसः। एमाल भिरुष्त छाउ। ।।। ।
औग्रसः शाहीलाल भिरुष्ट्यः बृह्मीट्ड अभानसासः
इहेमाहिल, त्यसाटन स्थाद सास विसस्य सम्हीः १
छ अ क्रिसा हिलामः। वाद्यिकारन जैलाहारा ।।
स्रोध क्रिसा हिलामः।

०३ हे रे०ळ पारना प्रकाल वंदन कविष्टः डिलाम ।

विक भारतात्र इन्हें आक्रममान कार्क

व्यक्ति भोग्नाः भन्नातं भव निवसः निवस्तिः वित्रास्त्रातं व्यक्तान (मक्किक शिव्यकः । १४ द्रव्यक्तिः । वारमञ्जानातं व्यक्तिः न्यास्त्रातं भेषाः वार्षः नगन्तिः क्रियतं व्यक्तिः स्थानकः विद्यकः व्यक्तिः । भित्रातं क्रियतं व्यक्तिः स्थानकः तः स्थानिः । अवः विस्तिः ।

खीर के बाब मिलेक्स असे शिक्स शिक्स के मिलेक्स खीर के मिलेक्स के स्थान के स्वार के स

新日本人生を理解者 ここれが かれの 本では 実計当時以下 かれる 可認知 日本で 乗りまします。 「可な行う時間、は行う 所有なけ ちゃれんがま かってい 国本書」はであれる。日本美の、例でも、「は「中」、中 行いれ 資金に成す 東京日 当時 はなかれる 古です から、しは 回り 管理に対す 可しま ないあれたれる ないみかっから 「それ」に 日本書はかか からからないによ しないがかける かい 一分に これらめ 海水 と

अवस्थित कृषित प्रति क्षाति क्

আনু হার্টেনর আবিদ্যাক্ত।) বিগতি হারের পর। , কোক:

म क्राप्त समा व्यक्ति क्रीनागाप्तम मग्राक किर्माण्डल गर्रकार । जार्यात कार्यामकात विश्व শোলি দিপক্ষণ প্রবাদ আছি। কৈড় পিছ স্বৰ্জ্ব "被加快被赛""被称为这个一种物",他们们这样,他们还有一个 मान र प्राची करियानाकात आणि प्राचित र किया क्षाभक मुख्या गलाक व्याहर संग्रेस कर्णाक 化二氢磺磺基 化甲二二甲 斯伊斯 49岁的 不知 海门斯,明书门所 करा १६ । हेलारा ६, कर्का ४ आईमा ४ । चारामान जना है 19、1、1878年 - 1.5. \$P\$ \$P\$16、 \$P\$16, 如此城中 (1965年) 新聞 (1967年) 1月七年11日 (1967年) 在月月 1971年 भागांक क्यांचान व्यावहाय पर्वत्य वाच कर्नांक भागित 工物 美龙 跨线管路 "不安全的" 薄矿 人名 古地 "好好,这么晚年"这个 "實力中 人名马特 化人名法兰 "好这一公子,一种唯一不确实物故 好的工作的 機一件 医枕头 在此。 門時期 电电影形 राज है। एस अरुक्त नेत्रह कर रह नरकान लाग न नहीं र ्रास्त्र त्रा केरा वर्षात्र । प्रदेशन विश्वमाध्य कर्षेत्रते स क्षा मा १७ किसारामक अभिने के द्वेत कोरा है। यार 医脉络性 经现代的 化抗磷 人名西拉 医骨髓管 化二氯甲基 化骨 抗抗 "敏"。 "你"更有要的人的"你"为事的

一批的 化 資 人名英德姓伊伊 建氯 भूकेत र द्वारा ज्या । ५ महीकामते व्यवस्था देशरी रही त्वस र १५९५ । ११५ ५५ १ छ । य री रामकी अस्वद्याप्त 一、日本市 共和分子多州。 · The second 1 人名阿尔西伯纳 计设存货件 医牙口炎 摄气剂 and the figure of the state of (名は かいた) と と しゅい (を) (を) (を) (機能 (機能) (機) 的东西的东西西, 1、 为1960年中旬 中国的 电对数 1、 不過基 कार्याः, इतस्य १८५० मध्यः स्थाप 4000 THE PARTY REPORT AND A SECTION OF THE PARTY AND A 人名阿里西 经回归工 医二乙酰 化烷基 多美数 功而止于 不断的变度 100、艾莉拉的 西瓜红口 就捉捉我。 哪個 《 错算之》 ्यं राष्ट्रः प्रश्नामन्। ए द्वा पुत्रस्यम् वृत्रिमः मक्ष्यः प्रम ারত হয়তে বার্গিন ৷ সংখ্যাদর বাংসাধিক ाय बद्दाराक एक एसामा २ ४ ४ ७ ४ वेख का लिह भा । त्यां म विकासी निमंत्र त्स्यीय त्यांक धीक. ्तारीत क्षात्रः लुधिनीद्व शक्तिम खोषण आवारमा া ্ৰাড় জ্বান প্ৰমানে) সংস্থাৎস্থান্ত আহিছে ইচা-া ু নৰ্শন ক'ব, জেমনি 四月司代 河南州 ৰত বিজ্ঞা গোল্লগা **আস্থাতি পূৰ্বা-পঞ্জিতি ভাল**প 如此人,以此是一次 原 并现代时间 通過基本性、如此所述 यो भव १७ ११ पुर प्रदेश के किल के हेंग्यू औरके १ कि के की अल्ला नगर, वास्ति की किशन ংশ্বেক প্রক্রোষ্ট্রাক এইজে আধুনাভন্কালের আ

जिप्रत्ये या अनेत्र रही जारा इंट्रेश्न (मिश्रिक नाह বে পর্যানুষ্ঠানের ব্রেছি কথান আছি তাবল, কথন या मुद्दरभी यावरमामा क्रांशाहात श्रेशा व्यापितः মাছে। একণে জিজামা ক্রিকেন্ট চত্তিকে करे अकल परेना आमारमहा इनकारक शांकित सम् कम है भन्तानन अलग कहें।
 कम है भन्तानन अलग कहें। বালা সমত কইবাছে। খুটীয় সম্প্রায় ভাষা নি বিক ক্ষ্যাত্মিক তে নাজিক কলিয়া মুখা করিছে भागम जार मरूरा लोग क्रिक लारिक निःकार ঘৰতা হউতে পঢ়িএটা ভইমা কালগুৰুপ্ৰায় न्यक्रा परा क कक्षात्र कार्यकाल व्यवसायक्रम, शिया बनिष्यं काश्रारभग्न अध्यक्षित् वर्गक वानगरित ए अभिन शहरक भारत्म, किन्न जारणहा महे अ-क्षा १३३४। इ.स्के अञ्चरमञ्ज अवन्यन्त्रीक निषद्ध वर्ष होंगू हिंकान के सिक्षाचीन तम लो, बदर एक्स्सरम উন্দির্ভাষর 'বা**ভা**ছে এউপ্রথম কিলাস কার্ডে ১৯ नम रा अपापन सम्भ विशिष्टियात सम्भारतः, ज्यापाराज्य 有智慧的 医解射 医瞳孔 一种 解 一个,这种"原产",他阿斯特尔 一个小女 机分间性链 背外心门缝 (肾 对2件) 歌 व्यक्षकाल अकर २ २ भन । मेळील । भीतन १७ (४) । १४० ক্ষিত্ৰে প্ৰথম মন্ত্ৰায় সূত্ৰ, ১০ চনৰে সহি চচাৰ 聖前蔡紹 黃龍野山 入舍用于 凄。写到【微性 (4) 字。所以。) সভারত হৈ **পরেয়** ও পদ্ধিত লগীলা চুকিতে ৮ জন্ম अक्ष महत्रम रिकीस एक लाजमात्रील व्यवस्था र जुराय व ন্তিল জা, ইমেটাৰ মেট্টি জ প্ৰয়ন। প্ৰাঞ্চ ক নিমেটিন র'হ বিজ্ঞে **ক্রিকান্ত্র** ক্রান্ত র'লেন ১ ১৭ গ্রুড প্রতিন कार्य कर्षिका । का अवसंद्री राष्ट्रक घरता भवनाष्ट्र आस्त ार्यं, म हे त्थम कांख, क्युंति रिष्ट, म सकाप्त (स्ट्र भाक्षिकार भूभाधिक ३६, ७ थ्या लागा का शस्य कि कहिएक अन्दर्भाकन क्षि है जागर है के देश है ए छि ংবাচর স্ক্রি রা বেং ১৮ - কাম সপ্ত ভাষার গ্রমারখ नीर करा यात्र तम कार्यान वागलाह गरिक सामा 朝以祖母者有 在其(日 西北) 以中以 明治者 本日! कांबते। एएकाक आंकारतम रथा जनवान रम युविएक পারে নাই কিছা কুখার উন্দেশ হওয়াজেই মে বে নাকুন্তাল গাড়িত লক্ষ্ কন্ত্র আতি থাবিত हरू. १८१४ को १ ८७६४ कारा अबीक दि कविद्यम मा १ ন্ত্তি লিকত ভারত সংক্রম । সময় ভারতে অর্থনৈ 如於 所有,因如本 多子的形,同时随便 专情群的专用,看一 ভারতে নাদত আলাম ভারাক্ত ক্রাম আজামভার প্র-तिरश्रहे क्यापान क्या, यहिल दय ला**यदम् शक**्रा-रिमान । करान जिल्ला कांक्रिको करान । विकास करत. भावतिक स्वरंग प्रके, कालाम जिनादत्व वर्ष-

संग अके। यर्डपाम 'वाकिया बीम संगतित्तम में जि ও ভেজঃ প্রভাবে এই সমস্ত সৃষ্টি করিয়া ভাষা-भिर्वत अविद्रंकन कार्या निकार कविराष्ट्रका धरे বিশ্বাস প্রথম হইতেই বাসার মানীমধ্যে আরি ভূতি হয় ৷ ভাষার আছেরিক বর্ষ ভাব নকল **७**थन ७ अन्तर्भे ७ इश्रेमार्ड, भ रक्शस्त असीरक व्यक्षे वारण काक इहेरदर भुक्दार सारास्क्र বিয়াও পরিমাণে মন্ত্রন ভার দেখিতে পায়, বাহা-रल है अक है अनाम हान महिल ७ एक विसीकन करत, खाइतक व्यमनि व्यष्टे अवा प्रदान निवा श्रीक-क्रिक्रमाहि पृत्ते हत (व सह। ८७४-াজন কলে শানী প্রভাকর ও খাখ্যক, প্রচণ্ড প্রভাব বিশিষ্ট वास्ट्रक 'अन्नद्रक्षद्र क्यांजिक्ण क्रीधक चास्क्र बान सद्रक्ष बालि आर्क ने स्पृष्टरक जनर सर्वाच घटनाम राधन-কাৰিণী ব্যাস্থলীকৈ ও মনেকের কিন্তু সম্ব क कि स्विक हम्मभारक मञ्जूष कार्यिक करिया है। লাও প্রিচা জেটার ক্রিডা

(राज्याः नास्यामा)

nestility Canen

गहर्वाभवात ।

ত্র আনি বিশ্ব ন প্রেশ শাভ্যে রাষ্ট্রে প্রের্থার বিশ্ব নি কালি নিবিল চন্দ্র পান্ধ্রিল প্রান্তির নিবল লাম লোগন নান্ধ্রন প্রিবেশিক প্রান্তির কালি লুক নক্ষা লাভ্যাল গালে কালিল প্রান্তির কাল কেলিলাকে প্রিবিশ্ব প্রের্থার সাল্ভ্রা কাল কেলিলাকে স্বাধ্যালেলাকি নেই প্রের্থার সাল লাক্ষার প্রেন্থান প্রাণ্ডালেলাকি নেই প্রের্থার সাল লাক্ষার প্রেন্থান প্রাণ্ডালাক্ষার নিবলিক্ষার বিশাস এই শ্বা দল্লী প্রান্তির ব্যালাক্ষ্রিলার ক্ষা এক ক্ষিত্র সাল্ভালাক্ষ্রিলার ব্যালাক্ষ্রিলার কালিক্ষ্রিলার নিক্ষার ক্ষা প্রাণ্ডালাক্ষ্রিলার কালিক্ষ্রিলার কালিক্ষ্রিলার কালিক্ষ্রিলার কালিক্ষ্রিলার ক্ষা এই ক্ষা ক্ষার কালিক্ষ্রিলার কালিক্স্রিলার কালিক্ষ্রিলার কালিক্স্রিলার কালিক্ষ্রিলার কালিক্ষ্রিলার কালিক্ষ্রিলার কালিক্ষ্রিলার কালিক্ষ্রিলার কালিক্ষ্রিলার কালিক্ষ্রিলার কালিক্ষ্রিলার কালিক্ষ্র

नाम कि नगरत देव प्रतीन शाम कुक्ति श्र क्षमणीक मरणालिए ने न्या का गणा के विकित्त । । माम क्षीमुक्त दोन्या प्रतान , प्रोप्तक प्रदेशन कर्मा कि लाम के जिल्ला कि लाम कि लाम कि लाम कि लाम के जिल्ला के कि लाम कि लाम के जिल्ला कि लाम कि लाम

ৰমে নগরত কভিপয় পাশী এবং মাচালাকীয়

लिक्षिक्ष् असाध अध्यात खीवा अध्या क्रिक्ष कर्म प्रतिश्व महिला ए कर्म जन्म जन्म स्वादित स्वति व्यवस्थ महिलाक अधिक स्वाद विश्व स्वति स्वति क्रिक्ष क्रिक्ष व उक्त कार्छ। भवाक स्वाद इंगिए एक स्वति खानक विश्व क्रिक्ष वामा विकास स्वाद विश्व क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष खाला क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष खाला क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष खाला क्रिक्ष क्रिक्ष

निष्ण क्षी १५०१ अरेग्यंच कर्षा स्थानके ना किलाहा के व्यक्ति का किलाहा के व्यक्ति का प्राप्त के व्यक्ति का प्राप्त के व्यक्ति का किलाहा के व्यक्ति का प्राप्त का व्यक्ति का किलाहा के व्यक्ति के व्यक्ति का किलाहा के व्यक्ति का किलाहा के व्यक्ति क

প্ৰস্থাতন্ত্ৰ কৰে। যাৱস্থ হছত। অধাসা নিয় বিশ্বাস্থাৰ প্ৰতিও বিশ্ববিদ্যাত সমুক্তি হৈছি । সংগ্ৰহস্থাতন্ত্ৰ

শ্রীষ্ঠান্ত ব্যক্তিরের মুক্তের প্রকাশ প্রক্রের স্থান্ত ও । বিশ্ববিদ্যালয়

জ্ঞীপারে পের্যান্তর্ভার সময়ের বিষয়ের ১৮৮(৪) স্থান্ত্রম

क्षीर्यः प्रतास्य नारः अध्युक्तसम् । संकृतस्य स्थानः स्थानः स्थानः । स्थान्तः । विश्वकृतसम्बद्धाः स्थानः ।

न्धिपुण्यः व्यामः। ५६६मः श्रद्भमभ्यतः । अनुकासः । आः श्रः । । कानुष्याः)

শীয়ুদ্ধানকৰ কৰি হাতিল গুলামান সংগ্ৰহণ কি ক নামকৰ বিষয়

क्षापुर्द्र व्यक्तानामाल मा. १ पुरस्का मा अवस्ता ।

(क्योंग्रीको ।)

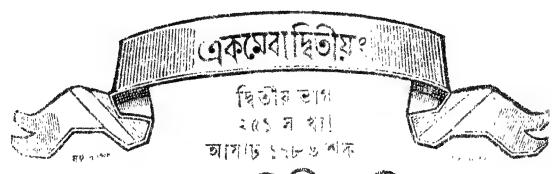
প্রিয়ুক্ত পেশবরুলার গোটেনর প্রথমের লাগকরণ ।

(নাজপুরার হ

श्रीपुष्ट अक्षरपूर्वाव मनगर्भात्वश कम्मातः अवस्याः अम्बादकार (कस्पुराह्यः)

क्षेत्रक चित्रकत्वनाथ क्षेत्रक्त श्राह्म कालका। स्वनामकत्वन (दिश्वकार्यका)

and the second of the second o	
शिक्षक शावमाध्यमात्र गांकालाशास्त्र क्यां व स्था-	341544 WW
क्षित्र संभागकत्ताः (वाष्ट्रान ह्रिकाः)	
	ALL THE REAL PROPERTY OF THE PARTY OF THE PA
अपूर्क कालीना॰ मटचन लिखान खाला	The state of the s
(স্থালিকাপুর)	28008 #18
শ্রীপুত্ত উপপ্রকাশ সংক্রম পিতামধীর আল।	The state of the s
N(way)	The same than divine and there is not the same than the sa
	The state of the s
अक्षेत्रक अध्यानगामास् लाकसामीत निष्ठात आमा	A STATE OF THE PARTY OF THE PAR
如作者 · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	्यातामा इस चत्र
ীয়ক প্ৰকাশনের হৈছে। বাধার আন্তর্গান্তা	ं रहे कि कि अधिकारी
(१९५४मार्क)	A to the same two managers from the state of
	11 Farmers retrocked form
लायुक्त नीजनाच शक्षकारक्व चित्रामण्यत भाग	रसम्भाग्याम् । विषय
লাদি (বিদ্যান্ত্রিপারি)	505110
केर्युक ४९१भन्त राथ । स्युद्ध्या १९८४त विवास ।	मंगिक भान।
The state of the s	The same of the sa
The second second is a second	
निर्मुक करावन १८७० मान्यानीत कराना विवास ।	ी स्थापित वस्त्रक्षा । । । । । । । । । ।
The street of th	्रेक्स क्रिक ।
·顧益/起 节点的(154时 · 通年 安內村市 14 日宇(্ৰেক্টা স্বস্থু
(Antight of)	A SE SECOND SECO
	े प्राथमिक स्थाप । जान क्ष्मिक
अधिक एक्षण । जा एक एडाइ (स्विधीएक)	The state of the s
mile commence of actions of the	A CALL CANADA
The top to the state of the sta	্ ব্যাহন প্রেধান
When come to have soil.	ं भेलकार वरनभागाना :
ार्र्सिका क्रिके के प्रकृत की देवनीय स्पटकारकी किसा	SE THE SEC WITH STORY
Market (stantal)	के जिल्ला किया है । । । । । । ।
	् भौताकार्यः विकास
	े विज्ञानिकाल मा
ことのではいいです。近代時代でであり、いからでにかん	
•	
遊野養養 18 15 A 27 (1 19) 4 (2) 19 (1)	ल्यानकश्चात (त्राच्या)
अनेत्राप् पर्धः च्यस् विस्तन्।	भाषे च च त्राच्या स्थान । व व व व व व व व व व व व व व व व व व
merch 1 1/14 del latanite	'अक्षाहरण सहस्रात्में (स
the property of the second	" दशरमसम्बद्धि गुरुकाभाषात्व ।
	and the second s
make the transfer of the contraction of the contrac	ं व्यक्तमभाभ द्वाप्त ।
այ) ստրքին տես են, ու և եր երև համար	•
386 91 / 2	व्यक्तानीम मान
trages	अभिक्र ध्यमवनुमात भाग्राभागः
· 中国 () 100 100 100 100 100 100 100 100 100 1	
カロマ (A)	े दक्षान्त्र हुन्स् १ मन्द्र ^{ात}
安全最后的。第1000 · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	
4 3 774 4 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7	ather words
· 横作 安全 一	
*	in the second of
ক্রেব্যালয়ের লেভিক্সাত সাহিৎস্ত্রিক দবি ।	ATMINISTER MIN I SPACE
Att Both William Charles and the state of a state of the state of the state of	AND THE PROPERTY OF THE PROPER
अविष्क राष्ट्र वर्षक भागकर पश्चित । अप	fay &
	90 .
· 特性關鍵人物與人民的問題的	मिनीस फेर्स्ट नावरण्ड ह्यांका रहाक. 🚉
The Charles Charles and the control of the control	· 澳大學 · 2017 · 20
The same of the sa	महमारिकास
to appoint the comment of the company of the comment	
	अभा विकास
	द्धार्थात्रम् १ वर भवा १५ ह
the second state of	weeking the manifest (with) in the state of the
· 我们的有效的 人名英格兰 人名 · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	गर्दाम्याः
भ सम्भावास महरूषि ।	ण पण अनुस् विश्व तन
The state of the s	The second secon
A NEW YORK	७ इ टवाभिनी शक्तिकात भूना निकर्णन ।
THE THE PERSON NAMED IN COLUMN TO SERVICE AND ADDRESS OF THE PERSON NAMED ADDRESS OF THE PERSON NAMED IN COLUMN TO SERVICE AND ADDRESS OF	many of market for marries of the against several age of the contraction of the contracti
ित्रिकारक में राषा	णांज्य भूमा (योगमाञ्चाद समा)
一 特 特特技術 (無行) 第一	(स्थापात कार्या)
一日、安村塔山农村 田棚之 1、11、11分别 多 11小手	मानिक भूता
THE ROOM THE COLUMN TO SERVE THE SER	den the state of t
**************************************	20 海龍潭 海海点地 为此心 2062 新规模的 地名西
માં તમાર કરવામાં તમાર છે. મામણા કું મામ કું	
والمراجعة المراجعة ا	A STATE OF THE STA



ज्यविभिव्यक्ति

यानभरमार के शामः

· wigo of the Manager

নি । শ্রাক সংগ্রাহার করে। ১৯ ক্ষার্থ চন্দ্র স্থানি ক্রিক্ট্রাই

四月间 公正 可 事委員

14.24 16.1

भागातः कामानस्य छ नाला-इतः मद्रशासीस्थादनकार भागानः भाग भोडाचम् कास्तिमित्र। शुक्षः मसुद्रिमित्र मधार्यमुख्यः।

বালকের — নির্বেশ্রের বিহিনিশ্যের প্রতিষ্ঠান করে।
প্রতিষ্ঠান করি বালি ইন্দ্রিয়ের বিষয়—ক্ষু
কামনার বিষয়েরই পশ্চতি গমন করে।
'তে মুডোনি ও বিশতদা পাশং' ভাষার বিদ্যান করে।
বিদ্যাণ মুকুর পালে বন্ধ হয়। ভাষারদের আক্রানা ভাষারদের আক্রানা ভাষারদের আক্রানা ভাষারদের আক্রানা ভাষারদের আক্রানা ভাষারদের আক্রানা ভাষারদির। ক্রানা ক্রানা বিষয় ক্রানা করি ক্রানা ভাষারদের আক্রানা ভাষারদির। ক্রিডারারা ক্রের জানিয়া—নেই অপরিবর্তনীয়

राष्ट्र के विश्व निर्माण करें के स्ट्रिक के

আছে, নিম্প্র আছে— সুযোর আলোকপ্র আছে, রক্মীর অস্তব্যুক্ত আছে। সেই কল এখানে ভ্রান্ধর আক্রেন, বিষয়ীও আল ভেন্ন, বিজ্ঞানি ভ্রান্ধন পাননাতর নিগ্রেলির মহিমা ছোলেই ইলল উদ্মুক্ত ইপ্পুরের মহিমা ছোলেই করিভেছেন, বিশ্র মান্ত সংস্থিতি আলোক্ত হালেই মান বহি মান্ত সংস্থিতি আলোক্ত হালে করিছে। স্থান শুক্ত ইলি মনুনা জ্রেছি, করিছে। স্থানী সালাক-লা, হালেই মান জ্রেছি, করিছে। স্থানী সালাক-লা, হালেই মান জ্রেছি প্রিয়েক ক্রিন্টি স্বল্ভিক্ত অন্তর্জা লাকে ক্রেন্ট্রিক ব্যান্ত্রী হল।

থিয়েল ঘটি সংক্রে লেখনে উশার ভারের নের উপ্রিয় । তাংগার সম্প্রেক পর্যার্থ মানুন্ধ মাজ জন্প ল'কে , যুল্লাল জালিল বা **স্থিত প্রাণ্ডি তিলেল ক্রির নির্ভ** क्षेत्र अध्यक्षात्रवार्थक अत्यक्ष व्यक्तिक के खुद्धाक (तप्रध्यान १८६४) छ। । बर्धाः ভিৰ্মেটিট আলি আনু দেও মুখ দেও, পুৰু (甲丸、艾山 (甲甲) 引强(交) 例(例)中的 (十個) 李阳(1) 马西山 野山西京(【新阪 五川野河 [奉 क्यापिया, करताम २ कि.मी.र १८५५%, १ मुर्लाम रमधार कार्यात, भूत्र नेव अर्थन — " स्व নাম প্ৰিল্পেকামাই (৩) লেওড ব্লাপিকাল : বিষ্ণাভ বিষয়ে হল সময়ত অস্তুচন থাকি ভোষারি ৷ তাজের এই আমিরিক আর্থনা नरम भूगंदर, ७५२ हेडिय अनुस इहेरड কু ই এই ৯) সত্র দের বিচ্ছালত হুইয়া **ঈশ্**রের চরতে ধারিভ হয়। নেমন উ!র বিষয়-তৃ-মার নিরুত্তি ২৪---যেমন তিনি **বতে যামূত** লাভে তাবেল বেমন ভাঁহার স্থানস্থ **প্রদা**র আন্তঃ হ ইম্প্রকে বিরাজিত দেখেন; ভিনি অংশ্যা হয়। বাজ করেন " আশ্চয়া। অংশ্যান - আশ্রেষ্য ভোমার দরা, জগদীশা। वानामा ट्यामास करूना--वाधि कि दा আমাকে ভূমি দেখা দিত্তেছ "। তিনি ক্রত-

জ্ঞান কোথায় রাখিবেন, কি প্রকারে ব্যক্ত করিবেন, তাহা তিনি জানেন না। ভাঁহার থেমার ক্ষয় ঈশ্বরের মভাতে পূর্ণ হইল— ভিনি কি করিবেন, কি বলিবেন, কিছুই স্থির পান না।

পদা তথ্য তাছার অনুক্র। যে ধর্ম আনার্বনের এই পৃথিবীর অনুক্র। যে ধর্ম অন্থানির বন্ধ —যে ধর্ম অন্থানির বন্ধ —যে ধর্ম অন্থানির বন্ধ —যে ধর্ম অন্থানির বন্ধ করিল পারম পিতার নিকটে লাইলা লালে, লোলির করিলালে, লোলের করিলালে, লোলের করিলালে, লোলের করিলালে, লোলের করিলালে, লোলের করিলালে, লোলার নিকটে লোইলা লাকার করিলালে, লোলার করিলালে, লালার করিলা

दक्ष उर्जन पहुनन, दिर्गालक १०० অভিকৃত্য। বন্ধ যথন ভাষাকে গভার ১০ छात्रात हुन्। छ लात्रहाटकत छाना । ५ न न सन ইফর বিষয় তথ্য ক্রিব্র আংশেশ ব্রেট ওখন ভাগার মনে ফে আদেশ কি কটোচ-ক্লিক স্ণিভিতে কামনার (दान दम्। বিষয় পরিভাগ করিছে যে কেমন কুঠি ভ হয় ৷ সে পদ্মকৈ কটোর শিক্ষাকের সম্মা দেখে, ভারার মপুমল ভার গ্রহণ করিতে পারে ন । সমৎসব কাল পরিশ্রম করিয়া যখন যে ভাঁহার পরিভামের বিষময় কল. নীচ প্রবৃত্তির পাপ-দুশিক বিষয়, লাভ করি-বার পনা হস্ত অসারণ করিতেছে—ধর্ম বলিতেছেন, মিধা। সাক্ষ্য, প্রবঞ্চনা, শঠত। পরিত্যাগ কর, এখনি পরিত্যাগ কর— অ-ন্যায় ৰূপে পর-ক্রব্য গ্রহণ করিও না—নি-

র্জোষকে ছুর্বালকে পীড়ন করিও না—পান-माय, वाकिनात लांच जांश कत- এই भकन আদেশ তাহার প্রবণে যেন ৰজুপতি হয়। याहात्। मर्वत-धाराज्ञ विषय-सूर्यदक्षे (मर्वा করিতেচে, তাহারা ধর্মের জন্য ত্যাগ ক-রিরেও মৃত-তুল্য হয় ৷ ''ধর্মাং চর ' ধর্মা-স্তান কর, এই অর্থ-পূর্ণ শুরুতর আদেশ ज्हितिद्व निकटणे अध्यक समत अर्थ-भूना माजुङीस हत्। 'डोहात' मसीतक धर्मात लना, ইখনের জন্য আভিসন করে না, ভাছার। অগ্তায়, হুধ চায়— সাথে লাভ ক্ৰির विष्यारहर्वा करता अहे खना वर्ष छ। স্থানের নিকট কলোব ওক্ত, ভাষারদের স্থ সাচা প্রতভারের বিহানরী ৷ ভাইরো भारत्व मधराम घटनात गृष्टम अन्यान्ति र्का मक्त भारतालमा करिया गहा छश्लि 型1% 中国人

বিক্ষা গৃহির প্রথমির জন্ম থাছার লক্ষ্য,
বলা দিহার গাল্ডুর কট্যা উটোরই প্রথম নার প্রিরেশ্বে ভাগের নিকটি অনিয়া দেন। বলা এক জনের ক্ষান্তর্ব শিক্ষক— আরি এক জনের ক্ষান্তর্ব। কারণ জুট ক্ষানের লক্ষ্য সম্পূল বিপ্রতি। একজন স্থাপ্রতা চরিচাথ করিবার জন্ম সংসাধের ভ্রমণ করেন, আরি এক জন স্পার-নাড়ের ভ্রমণ করেন, আরি এক জন স্পার-নাড়ের

যাহরেদের জন্মরেতে বিরাগ ও বিশযেতে অনুরাগ , ভালরো সীর ক্রদরে জন্মরের আনন্দ-রূপ অনৃত-রূপ দেখিতে পায়
না। বিষয়-লোলুগ ও নোলাক্স হইয়া পাপায়িকে রন্ধ বোধে এহণ করিতে যায়, দক্ষ
হইয়া কিরিয়া আইনে। মস্তকে ধর্ম-দও
সহু করে , ঈশ্বরকে দেখে যে তিনি উদাত
বিশ্বে নাায় ভয়ানক। ভালারা অন্যায়াজ্জ ত
সম্পত্তি ও পাপ-প্রস্তুকি বিসক্ষন দিয়া
তাঁহার শরণাপন হইতে চাহে না, তাহারা

তীহা চ্ইতে দুরেই যার এবং দুরে পাকি বার অভিলাম করে—স্তরাং নির্ভন্ন চইতে পারে না, সংদার-মোহে মুগ্ধ থাকির। শোকই করিতে থাকে। তাহারদিগকে এই করতে থাকে। তাহারদিগকে এই করতে থাকে। তাহারদিগকে এই করতে থাকে। তাহার কিবল যত্রণা তাহার কেন ভোগ করিতে করে জাতিশার এই যে তাহারা বিষয়-স্থেমতেই তুপ্ত না থাকুক। তাহারা আপনার হীন লক্ষ্য পরিত্যাল করক। তাহার। স্ক্রন-যোরা ভীগণ অরণা করতে আপনার পিতার আলহে কিরিয়া আল্লক, বেলানে মোহ শেনের বল নান, সংমার মন্ত্রণ বোল নাই, গাল ভাবের আল্লিকার নাহান

विषय अपुरुष्टिलव हास्का, स्टूट विष्ठां ह कामाइटम्ब मालि गाह । (राववीर थेडा टक्ट बन वियस स्टब्स्ट लाइभून । निन्ती वर्ष्ट्र মুকুরে গানেও পুথিবীর পালনে করে এইয়া যালিছে হাজে। জিনি লাগি কথানে 🏳 एक विवस यथ श्राति है। या स्ट्रिस -- विवस श्राहितक क्या मका श्रीतरासर क्या करणाव । वेशकोत करिशन, जादेव समादेश चा स्थाम दान्य ता उत्थातिस 有相 心有 百姓的 集团农村 埃尔姓氏 矿 电计分 料酒 छत्र विषयं ना । 🗢 इतेहत् । 💢 🏟 स्थार हा हा-काम नारम समा सन्मत् रामा विश्व अध्या প্রতিক ক্রমানের বিশেষর প্রথাক্ষ লাহয় कृष्णम । विषय्वीतरमञ्जूष १५ १५ महरू टेक्सब्रे ङ्गाः ७० करा≷ खाकदाम कारण--" প্রাচঃ কামানুষ্ত্রি ন্রাং ম মনের,হবি निष्ठमा भौतर भेर । (सहस्रकारण वर्धिका बटर्र हे अन्हाद संत्यात रह इत दिसीनं মৃত্যুর পালে বজ ধ্যা

কিন্ত নামান বিশ্বনের হিন্দানা, কি অন্তিলাধ। তেনি এটাকা করিতেছেন স্থানিত লগতে লগতের সমল মূর্তি দেখিলে পাইনবেন, ভারতেক বিশুক্ত প্রতি আরেণ অবিক্রিটি প্রতি প্রিবেন। ভারতে স্থানিক

নয়—দেব-লোক হইতে দেব-লোক তাঁছার জনা প্রস্তুত বৃহিলাছে; উৎক্রু উ জান-প্রীতি-সমস্থিত দেবতা-সকল ভাঁহাকে প্রতীকা করিয়া আছেন ৷ অনস্ক স্বৰূপ ভাঁছবৈ লক্ষ্য — সন্ত কাল ভাঁছার ভাবন। তিনি স্বর্গ হুইতে স্থা-লোকে জনিকই **ঈশ্বরের স্মি-**्रिक इंटेटक थाकित्वन : व्यक्ति पिनरे कैं। हात भागासम्ब ४ हेट्या । आमहा अहे अर्थाटमहे পশ্বরে জ্বীভি দান করিয়া যত টুকু **আনন্দ** মণ্ডেরণ করি, হাদ ত,হার এক মাত্রা আর অণিত হল, ৬৫৭ খে প্রেম. মে অণুমন্ম কি भाग धानन कता जो वादका**टक** तरका क्या: राज स्थानलाहरू हैं। मीत अधिक अधिक प्रहार केंभ्रास्था वारिक्स आहेत, छोझा अ भूधियो হত্তে কি পেকারে অর্ভত ভাবেণ আম্ব कई अभिने कहें एक एका का सर्व कारबंगक क्षी १८६ हेबल हरेगा गयन संस्तित गरस कोट्डा ताफ-कर्भ मन्त्रिति हरेव, दश्य आभातिका किया गास्त्र गरेक है। अहे भारती শারের লে না উৎসুন বয় ্ ব্রাহ্মারক্ষ্য আ সায়েব্ৰৰ মধ্যে এই। উন্ত আশা পোৱণ কবি খালেকা তিকি লগাদেশ দিতেত্ব যে আমরা ঈশ্লোর প্তিন দশুনি নৃষ্ঠি। আমিরা পর্ম । পিতার ভাক। পুতা নহি।। আমরা অমূচের পুঞ্জ--সমূত-লাতের অধিকারী: দেবতাদের गटक आंशीतरमत मधीन वानकात। आंकारम অগ্না অগ্না ক্যাভেন্ম বোক-মণ্ডলে ল্লান পৰ্যা প্ৰীতিকে ভয়ত দেবতা-**নকল** যা-প্রমাহনা সহত্রে ওবে পান করিতেছেন, ভাষার নজেই আমারদের নিতা কালের খোগ। এই সময়েই বধন আমারদের স্তৃতি-পাতে আক্লাক পুল হইতেতে, এখনি ক'ত ক্ষত ১ছন বিশাৰ পোক হইতে **ঈশ্রের ম**-হন-প্রতি মারিত ব্রতিত্ত । যে যেখান एडेएडर छाराड भुका करह, नकन भूजाई ভাঁহার প্রতাল । এক্ড হইয়। মি**লিভ হ্য়।**

হে পরমান্ত্রনা আমার দের থাতি তোমার কুপা বিতরণ কর। এই বন্ধ দেশের
দীন হীন সন্তানগণ পাপেতে মলিন রহিরাছে। যেখানে দেগি, লোকেরা তোমাকে ছাড়িয়া কেবল বিবয়-স্থাথে উন্মান্ত
রহিয়াছে। হে পরমান্ত্রন্ যোড় করে
বিনীত ভাবে প্রথানা করি, ভুনি আমার দের
ক্রামকে পরিএ কর। ব্রাহ্ম ধর্মের উন্নত
লক্ষ্য সর্বান্ত প্রকাশ করিয়া এই বন্ধ দেশের
দূষিত ভাব পরিস্কার কর। হে নাথ। তোমা
ভিন্ন প্রার অ্যানার দের গতি নাই।

उं এकस्मवाधिकीयः।

धीय-िछ।!

मभन्न क्रमाद-स्कारन जनश्मिन्य-कीनदरः, মকল সময়ে ও মকল অবস্থাতে উপ্লেড ম্ভিম্ প্রকাশিত র্লিয়াছে ৷ প্রকালন ञ्चममः मन्ध्रा लि र तमन्त्र मशीतन कुन्न मि र निर्देत কিন্ত্ৰীটি স্মান্ত শক্ষা বহন কৰে ভগনও জ্ঞান মহিমা, আর এখন গো প্রবল জীয় ভাছেনার বিকল্পে ও দীপ্ত শিলা হট্যা পৃথিবীর সম্ভ জাৰ হাহাকার বার্তেছে এখনও তাহার মহিনা। যথকালে ক্টি-সাধ্য ধ্যা-ত্রত প্রাণন করিয়া প্রশাস্থ চরিত ধার্মিকের क्षशाकारण यानसः जा। पत्र अकां गह হ্য় তখনত ভাঁহার মঙ্গল ভাব, এবং আলু-প্রামি ও অনুমোচনার করাবাকে আকুলিত হইয়া পাপী যখন হা হতোগিয় শব্দে ইভ স্ততঃ ভ্রমণ করে তথ্যও তাঁহার মঙ্গল ভাব উজ্জুল ৰূপে প্ৰত্যক্ষ হয়।

এই ভয়ন্ধর প্রায় কালে কেন্ত কেছ বিষম
অক্তাপে সমস্ত রাত্রি জাগরণ করত স্থেদসিক্ত শ্যা পরিত্যাগ করিয়া ভূবলে কুর্মা।
ক্ষম শরীরে প্রাতঃকালে গাত্রোপান করি-

त्नम, अदर जानतमा जाकून रहेश जर्भ-মুক্তিত অবদন্ন নরনে বারম্বার ধরাশারী **इहेटक लाशिटलन। क्लान क्रांस**े नियात-•স্তের মধুরতা উপলব্বি করিতে পারিলেন मा। (कह कह वा नांझन यामिनीत नकन क्रिन निवादन मानदम **धाउःकाटन रह क**न শ্যাব্লুপিত হইয়া অধিকতর নিবীর্যাও নিচ্পুভ শরীরে নিতার অনিছা-ক্রে দি-বদের নিয়মিত কার্য্যে প্রবৃত্ত হইতেছেন। ध्यभव (कह (कह ममस्य वक्रमी छेदमत-(क।-लाहरल उग्रेख हिलान, এবং ভয়কর कचना আমোদে শরীর-মনের তাবৎ বল নিঃশেষিত করিয়া, অধেবিদনে, মৃতকম্প শরীরে, লজ্জা ल ब्रानिशूर्व क्रम्दर, अक्रदर्व व्यापनामित्यव তুশ্চরিজের বিষয় স্থারণ করিতেছেন। প্রা-ক্তির প্রফুল মুগ ক্ষম অববি মুনি ও বিষয় বেশি হইতে: ছা। স্বায় অধিকার-কাল আরম্ভ ন: হইতে হইচে কুপিত বিভাবস্থ সহস্ৰ বিষমর খাত্রবিদ্যাল জারা**অসমযে বস্তুজ্**রার শান্তি-নৈভাকে বিন্দ করিতেছে। উযার শিশির-হার ছ্রাব্যনকে পরিভাগি করিল, পकिशन नीत्व इहेल, **७**वश महमाञ्चार প্রাচঃকুল্পনরাজি অকালে মিরমাণ হইযা পড়িল। ক্রমাগতই দিববের ভারত্তাব इक्ति इहेट टहा शीध कड्का तठ व्यवसञ्च শরীরে, হে দর্বনক্লময় প্রম্পিত। ব্প্রতি-দিন প্রাতঃকালে প্রত্যেক ব্রাক্ষ প্রেমাক্রপূর্ণ নয়নে তোমার স্নেহ অরণ করিতেছেন, প্রতি करमत्र क्षमत असू श्रम जिल्दितरम आफ इहे-তেছে, এবং সকল তাপ সকল ক্লেশ বিষ্কৃত हरेग़। श्राजिकत्बरे चाउत-क्रांथ-भट्या वनक-শোভা সন্দর্শন করিতেছেন। তুমি ভক্ত-वरमन-मीन भवन, जूमि धनी निर्धन मकटलवर्ड বিমল বাসনা পরিপুর্ণ করিতেছ, ও সকলের শারীরিক ও মানসিক ক্লেশ নিবারণ করিভেছ। त्र नाथ । (कामोदक धनावान कति ; कीवदनत

ছুংখ-ছুতাশনে যেন তোমার প্রসাদ-বারি আমাদিনের আত্মার পতিত হর, এবং যথন পাপদক্ষ অমুতাপিত ও নিতান্ত মুমুক্ হইব, তথন যেন তোমার প্রসন্ন মুখ দর্শন করিয়া নিরাপদ্ এবং রুতার্থ চইতে পারি।

अहे औष कांटन सभाक् नमस्रक ভয়ানক! প্রচণ্ড রবিনিঃস্ত অগ্নিক্র লিক দহনে সমত জগৎ-কেত্ৰ দাহমান হইয়া छेठिन, कामात माधा वहिन्दीदग करत । हर्जुक्ति निष्ठक, शशुभकी नीवत, পথ বাট জলম্ভ অঙ্গাবনমান উত্তপ্ত, এবং गद्रावद्रमानन वियम छेक क्षेत्रा केंद्रिक्ट्छ । मकलाई नीतन, रकतल भएषा भएषा मृहिंडिए। इरकालविक निर्मात कान लाहर । **সূচক শব্দ আকাশ**েভদ কবিয়া কৰ্ কুছবে **প্রবেশ করিতেছে;** স্বর্থ। কোন শের্থি। पूरा करनी जंगांकिनी अनावृत्व वहांवत् **ঠিত হ**ইয়া **প্রাণ্যম** প্রেলক বিকোণ ব্যাপার স্মাবৰ কৰিতেছেন, এল চুনিবাল, শোক বেগ মন্ত্রণ করিলে অফল: ইইন: ব্রেগ্র **উटेकः यटत ७**६ करके विज्ञाल क्रांतर ५८ छन्। ভাঁহার রোদনধান মলে। মধের কংক্তরে প্রবিষ্ট হইতেছে এবং জনগ্রে এলাড়ত क ब्रह्म । अहे अधीव भगता तम् श्रम মাল্ল আমরা কোন্র শ্রাণ্ড ১ট। এ কৰে ঘাঁচারা ডোমাতে ক্লটো ব্রণ ভাঁহার সমুদ্রমান মহান করিয়াডেন আনন্দে পরিপূর্ণ রহিলাছেন। কি ন্ধানের वाख्यां ७ कर्मात्मानाश्वमत्वा, क वाली-আমন্ত নিজৰা গভীৱ শাভিমানে, কি মান গরবক্ষংক্তিত পোটেনটো, কি নি ড়ি অর-लाह विकास भक्षा अभगत्या, त्या शाहन ভাঁছারা অবাহ্যতি করিতেছেন ফেপানেই সাধ্কমজনিক নিকা শাখত জ্থ বড়োগ করিয়া তোমার নাম কীর্ত্তন করিতেছেন। करें, कोटलत मटक अवर शृज्ञात मटक निर्म

मामृगा लक्किंछ इस, हेइ। यम नित्रक्टे मृजूरिक न्यत्व क्रियो निटफर्ट । मृङ्कात्र निख्क नीत्रव অস্থার ভাব বেন ইছাতে মুদ্রিত হইয়া क्र श्वाद्य । हेकाव नारा मृजूद मनत मकल है নি মন্ত্র ও গভীর। এক্ষণকার ন্যায় ছৎকালে मंतीत ध्वतमञ्च ७ विकल इहेरव अवः ममस्य ममरत्र ऋषुख मरनामरथा वित्र পরিজনের রোদনধনি ভাতিবোচর হইবে! আজা দেই অনম গোধ পর লোকের দিকে वीदत बीदत अमन कतिदर, अवर गणत छ একাগ্রচিত্তে স্বীয় কর্মকর্মাকল চিস্তা ক-রিতে করিতে মেই জন্দনশব্দে চাক্ত इहेट्य। गरम^१३थण्डु हे उ स्थ्य कुछूम मीव কাবনভরতক পারভাগে করিবে এবং মান-শুষ্ক ও সৌরজ হিটান হইনা পৃথিবীর ধূলিতে প্তিত ছইবে, বিলেশ বিদেশ বোধ হৃহতে, স্তুদেশ স্থানেশ বেঃ৭ হইবে ে পাপ-ছভাশন महत्व अक्र-अन्यु ३०व (कर दिन केटिफ अटर) विशायन " श । (रायाम वागिसी हिलाम, কোনায় গদন এবিডেডি, কাছার নিমিন্ত, কিসের জন্য এও দিন পরিশ্রম করিলাম? का: अर्थ कु: नमत्य अक विन्धू नाखिवाति मान क्रिशा अध नितायात्र विटमनीत यक्तना কি কেছ নিৰ্বেশ করিবে না ২ বফু-বাঙ্গাব-ক্রা-পুত্র কেবার রহিলে? হে পতিত-পা-বন ছ্ৰীডন জীবন প্রমেশ্বর : ভোষাকে বিশ্ত হটনা জালাদিলের জন্য এত দিন মন প্রাণ দমপণ করিরাছিলাম ভাহারা এই ঘোর বিপদের সময় আমাকে পরিতাগে করিল। তুমি পাণী তাণী কাছাকেওপ-রিতর্ণা কর না, এই ভর্যায় আমি অন-নাগণি চইয়া ছার্থনা করিতেছি বে তোমার नाशिकुराउ नास्त्रिक्षिट्ठ आंगोत अभविता আন্নাকে পরিশোধিত করিয়া চরণধূলিতে श्राम पाछ। ' स्थात याँ श्रातः कीवटन श्रे श्रीक বনস্ত এীম সকল কালেই সমতাৰে মুধা-

নাধ্য ধর্মের আদেশ পালম করিয়াছেন তাঁহারা এই সময়ে বলিখেন "যে দিনের জন্য এত কাল পরিজ্ঞম করিয়া গ্রন্থত হই-য়াছি, অদ্য দেই দিন উপস্থিত। হে জ-০ মাধ্যের নাথ পরমেশ্বর। চিরলীবন একা-দিক্রমে যে সমস্ত স্থেসম্পদ্ অজ্ঞধারে বিতরণ করিয়াছ ভাহার জন্য কৃতক্ত হৃদরে ভোমাকে ধন্যবাদ করি। স্ত্রী-পুত্র-পরিবার, ধন-জন-ঐশ্বর্য ঘাহা কিছু আমাকে প্রদান করিয়াছিলে দকলই ভোমার হস্তে প্রত্যা-প্রণ করিয়া বিদায় হইতেছি, ভুগি সকলই রক্ষা কর; আমি একাকী একনাত্র ধর্ম মন্তল গ্রহণ করিয়া অনন্তের প্রথ হাত্রা ক-রিতেছি, ভুনি আমার সহায় হত।

মৃত্যুর পরে পর লোক বেরুপ মধাক্ষ ক।লের পর সন্ধার্গনন সেইরূপ ? ভ্যা অ-স্তামত কইলে প্রকৃতি অপুনা শোভা ধারণ করে। নভোমওল সমূজ্ব ফেনাররে ভাব-শুকিত হয়, এবং ভাগিরখীপারে পশ্চিম দিক্ মহাপ্ৰ ভ নীল পীত গোছি গালি বিবিধ বর্ণানুরপ্রিক্ত স্থানন্ত ষ্বনিকার সুন্যোভিত হয়; পরিপ্রতি বিভাবস্থ তাহার অণ্রালে নিষ্কুণ্ড হয় এবং অকৃতি রক্ষভূমিতে কুতন মূতন অভিনেতার স্বাবির্ভাব হইতে থাকে। শোভনতমা স্থকুমারী মেদিনী ছরিদ্দরে পীতজ্ঞা ধারণ করে, মুকুলিভ নন্ধার ক্লম একে একে अक्षुष्टि इत्र, घन-हिल्लानिज विश्वक मकिन मभीमन ह्यूफिटक ध्वतिहरू হয়, এবং নিজ নিজ বাসরুকে বিচিত্রকার क्ष दृहर भक्त विस्क्रम একতে লগিত कनत्व वात्र करत्। এই ममरत्र भत-লোকের ভাব স্মরণ মা করিয়াকে নিরস্ত ধাকিতে পারে? ইহলোক ও পরলোকের মধ্যে মৃত্যুই ব্যবধান। স্থ্যী যেমন পশ্চিম আ কাৰে অন্তমিত হইয়া অন্য স্থানে উদিত হয়, त्तरेक्ष्ण भीवटमक्र भाग जाग निज्ञिय नाम

করিবা ধার্ক্সিক জনের আছা মৃত্যুববনিকার অন্তরালে অভিক্রান্ত হয়। স্ক্রনন্তসময়ে পশ্চিম আকাশ যেৰূপ দেদীপামান বোধ •হর, ধার্মিক আত্মার নিকট মৃত্যুও তক্ষপ বোধ হয়, কারণ মৃত্যুই উজ্জুল ব্রহ্মধানের व्यटंबमदात । चर्गीत भानम-मभीतरा धा-ৰ্শিক আত্মার পবিত্র আশা-কুন্তম বিকসিত হয়, ফ্রুয়ভার লবু হইয়া যায়. প্রীতি নবীন বেশ গ্রহণ করে, অন্ধা ভক্তি অনিবার্য্য বেশে উচ্চলিত হর, এবং তাহার কণ্ঠ-ममस्य अमन-ध्निरिक নিঃস্ত ব্ৰহ্মনাম প্ৰতিধনিত হউতে থাকে। এই ৰূপে বীত-শোক, বীতপাপ, হৃদয় ভার বিমূক্ত হইয়া পুথিবী হইতে প্রতি দিন কত আত্মা পর-लोक निरम्जरन शमन कतिरज्ञाह, धवः তিরকালই গমন করিবে !

কিন্তু প্রতিদিবসই ত প্রকৃতি শোভা ধারণ कटत मां। कथन कथन पिवावमादन अधिम-তাপ সমভাবে অবস্থিতি করে। বায়ু অব-सक इय्रानिशांग अशाम श्रांत्रांतन ककिनांधा दरेसा छेट्ठे, जाकाम म ७७ जाम दिन्कु है मिलन বৰ্ণ মেছে আঞ্জন হয়, স্ম্যালোক প্ৰয়ন্ত ममाक्-कर्ण पृष्टिशावत इस मा। त्रक-शेकवत ন্থির হয়, এবং পক্ষিণণ নীরবে আকাশ-মার্মিধ্য দিরা ক ক কুলারে পলায়ন করে। অক্সাৎ গভীর কুঞ্বর্ণ পর্কাচায়তন स्मयमाना मनवक रुहेगा चाउतीरक (तरश विष्ठत्रभ करत, এবং निरमस्यत्र मरथा भृषिवीरक স্বাকারারত করিরী কেলে। এখর তেজ-থিনী বিছালতা দপজিহবার নাারক্ষণে ক্ষণে ৰহিৰ্গত হয়, এবং দক্ষ লোক ভৱে ভটভ হয়। পরিশেষে অতীব ভরত্তর নির্ঘোধিত नमजिवादित थवन वाजा भृषि বীকে ছিল ভিন করিয়া কেলে, ভক ভ-त्री कलमध रत, कड कड मराम् इक मम्दल ধরাণাৎ হয়, কত অটালিকা চুর্ ছইয়া

বায়, কত লোক হাহাকার করে। পাপাত্মার জীবনও এই পকার। বতই জীবন জবদান হয়, ততই মৃত্যু তাহার নিকট ভয়কর বেশ ধারণ করে। তাহার শেষাবস্থা
লোভা ভূন্য, শাস্তি শূন্য, অন্ধকারারত। মৃত্যু
নিকটবর্ত্তী হইলে তাহার পাপ-চিন্তা হৃদয়মধ্যে ভয়কর বেগে বিচরণ করে। পারে সে
যথন পর লোকে উপস্থিত হয় ও পরিমেত্মারের রুদ্র মৃত্তি দর্শন করে তথন ভরে
ক্রান্তি হয় এবং নিছাৎ, বজু, প্রবল বাত্যা
তাহার আত্মাকে বিষম ছন্দিশাগ্রস্ক করে।
সে শোকদাগরে নিমগ্রপ্রান হয় ও নির্ভেশ্ন
হইয়া হাহাকার করে। প্রভি দিন এবলপুকার চরবস্থাপন্ন হইয়া কত কত লোক
সংশার হইতে অন্তত্ত হহুতেছে।

Activities of the second secon

তথাপি অদাবিধি একটা আন্থাও বি
নিক হয় নাই! ঘাঁহার অজুলিয় চিজে
সমস্ক মেছনালা, বলু, বিছাৎ কড়, হুটি গগনমধ্যে সঞ্চরণ করে তাঁহাবই অলভ্যা আজ্ঞায়
তাঁহারা নিজ নিজ তানে প্রভান করে।
পুনবার অযুগুহারকমালা পরিবৃত্ত স্থাংশু
নির্দাল নভামগুলে অভ্যান্ত হয়, এবং
মুছহিলোলিত সর্গা-সলিলে প্রভিনিছিছ
হুইঘা আনন্দে নৃত্য করে। ইম্বন ব্যাহে
পাপান্থার ফাবন-আকাশও এক দিন পরিশুজ হুইবে এবং তাহার ছ্লিয়স্থাইছে
পতিভপাবনের ক্রণাক্ষ্যি প্রতিবিভিদ্
হুইবে।

হে পুণাপাপদর্শী পাবনেশ্বর। এই বিষয়
সংদারদাগরের পর পাবে নির্কাহম উপ-,
নীভ হইবার জনা আহ্বানিত মনে ভোমারই অতি নয়ন নিকেপ করিতেছি, আমাদিলের দোদসম্পন্ন আহ্বাকে রক্ষা কর।
পৃথিবীর ঘটনাবনী দেখিরা আশ্চর্যা হই,
এবং ফত সময় ভাহাদিনের ঘণার্থ ভাব
গ্রহণ করিতে মা পারিয়া হৃদ্দের বড় আ-

কুলিত হই। মন্ত জীবনকে যথার্থ পথে
নিয়োগ করিতে না পারিয়া শোকে ভাপে
কত সমন্ত্র বিষয় হই, কোন স্থানেই বিশ্রাম
প্রাপ্ত হই না। ভোমার নিকট প্রাথনা
যেন সকল অবস্থাতে ভোমার মঙ্গলভাব
হুদরঙ্গা করিতে পারি। যথন গ্রীম ভাড়
নার ব্যাকুল হইব, যথন বিকারতাপে
ভোগশ্যাকে নিপ্রান্ত করিব, যথন মারীহুয়-গ্রভাবে সমস্ত পরিবার ও সমস্ত দেশের উৎদাদ আশালা করিব, যথন ছুভিক্
লীজান জীব লাব প্রান্তিমান্তরশ্যে হইব,
হুরান্ত্রেন কেন্দ্র ভাবিদ্যান্তরশ্যে স্থান
ভাগনি কাব্যে মার্য ক্রিট্রারও মাত্রেন্ত
উপলব্ধি কাব্যে মার্য ক্রিট্রারও মাত্রেন্ত

রাজতর্থিনী।

· 自己 特殊可於 可指面實行 京人 网络特殊 好意主

fateg-करनत गार अंट्याक तक राज्यो বিকার ভারেন ? বিন লব্দের্থম নামক এব अस्त प्राथम कान्स्री हरताहा उक्ताद कर भारत रेक किसामा, दारानाची, रहे उत्राह्म की अस हर्ष्ट्र नवल उन महिमार्शन महिमार्गहर । वरकर भूत । शालामिता । ल श्रीमः भागम और इंडरें। आहे अव्यक्ति प्रकृतिवर्ष ह क्षकार्यालन (इन् प्राक्तित विधार हरेसान हित्यमः । नोकोट्ड अकाननं विस्तुवसीय-ষ্ঠ্য এলাব গলাও প্রতিপালন করে এবং হিন্দুশ্বিষ্টে ও কথাকাও অন্তর্ভান করে তদ্ বিসংগ্রহ ভূগতি।বনেশ এরধান ছিলেন। eath अल्डाल्ड क्षण १वेट । क्रमावीन् छ मम्पार्थी जानामा गरक ममामत मुर्वक व-ব্যক্তি আন্তেভ কলিয়াছিলোন ৷ অপর ाम शह । अन्तर अकृतिक्रके **रहेशहिन फा-**হাবের বি কিন্তেদ করিয়া দবিত कविष्य । असः दिश्य सञ्चा वाडीड পশুক্ষিণা এতে বানে ত্রিত করিয়। দিয়া

ছিলেন। গোপাৰিত্যের পর গোকর্ন, ছৎ-পরে নরেক্রাদিতা, তদনস্তর যুধিষ্ঠির নামক নরপতি সিংহাসনস্থ হইয়াছিলেন। বুশিষ্ঠির প্রথমত মুপ্রণালীক্রমে রাজত্ব করিয়া; ছিলেন কিন্তু কালক্ৰমে দৌভাগ্যমদে মন্ত হট্যা নিতান্ত গঢ়ি তাচারে প্রবৃত্ত ও অসং-পাথাবলগ্নী হইলেন। তিনি এক বারে সমন্ত রাজক যা পরিকাশ করিয়া ই ক্রিয়-भिनांत्र आश्रनाटक विमक्तिन कतितन । पि-বারাত অসংপুরে থাকিয়া স্থরাপান ও স্ত্রী মংসর্গে কালহবণ করিতে লাগিলেন। রা-জকাম: সুভরাং বিশৃ**শ্বল চইরা** গেল, স্থানে স্থানে নিজোহ উপত্তিত হইতে ঘাৰিল এবং নিক্টিত প্রক্রণ অবকাশ পাইয়া ক্রমশ র! কোর আক্তার আক্রমণ পূকাত অধিকার कतिएक गरिना वह कार वारकान कतरका नमार्थमा अतिरमास्य साम मास्रिम् ाहोस्स क्रिया रेमना मध्यम भूकाल लोक ভাৰন আক্ৰমণ কাৰ্যনা ভাষণ্ড ভোগ-अभागाल स्तुलिक खानासाय क्षेत्र वर्षस ন্ত্ৰাজ্ঞা হউক্তে প্ৰশাসন করিলেন। প্ৰমান্তঃ-প্ৰকালাপানিকা নামক ভিন্ন দেশীয় এক নরগ্রিকে আন্রান করিয়া ব্যক্তপদে অ-তি,ধাস করিল। এই ভুপতি বহু দি**বস** নি,বেংরে ও প্রশাস্তিভাবে কাজ্য শাসন করিয়া लारत रहिए स्ता छ एमा अ मान নত ক্রির পুত্র হাজা হন। জলোকের তন্ত্র वृक्षारमंत्र ताकवर्गाल कान्योरत 'विकास ভুষার পত্ত হেন্তু ভরানক চুকিক উপস্থিত হইয়াছিল। ইহাতে অসংখা লোক **অন্না**-ভাবে মৃত্যুত্রামে পভিত ম্ট্যাছিল। এজা সকল একে বাবে শীৰ্ণকায় মৃতপায় হইয়া স্বীয় আভ্রবের মৃত দেহই আছার করিতে वाश इहेशांछ्ल। ब्रांका व्यक्तां मिटशंत अहे ছুংস্ফ শতনা নিবারণার্থ **স্থায় ধনাগার মুক্ত** ক্রিয়া দিয়াছিলেন। তিনি অন্যান্য দেশ হইতে ধান্যাদি আনমূন করিয়া বিভরণ ক-तिर**७ नाशिरनन । हेराट**७ किंडू कालमर्था রাজভাগুরি খুনা হইয়। গেল। পরে অমাতা গণেরও দর্বাহ এবং রাণীদিগের অলকারাদি बुरेकाल समस रहेन; उपालित इर्फिका উপশম হইল ন।। ভূপতি নিভান্ত কাতর ও হতাশ হইয়া স্বীয় প্রাণ ত্যাগ করিবার প্র-তিজ্ঞ। করিলেন, কিন্তু দৈবৰণত এই সময়ে এক অত্তি রুহুৎ কপোতপাল উড়িয়া আ-দিয়া পড়িতে লাগিন। ভাঁহাতে লোকের कर्शावर बागगावरनत छेलात इनेन, धनः পরে শদ্যাদি উৎপন্ন হইলে ছুর্ভিকের শাস্তি हरेल। पुक्षीनवाक ७ डीहार महश्रमिती छ इताहे भत्रम धार्मिक ছिल्लम, किन्छ कैं। होत অপত্য ছিল না, এই ছেতু তাঁহার মৃত্যুর পর বিজ্ঞার নমেক অপর এক বংশার ভূপতি রাজ্যাভিবিক্ত হইলেন। বিশ্বরেব পুত্র জ-রেন্দ্রে সময়ে সঞ্জিমতি নামক এক অভিশয় নিজ্ঞবর অধামান্য-ধীশক্তি-সম্পন্ন ব্যক্তি অ-माञा প्राविधिक इहेशाहित्वन। हेनि রাজকার্যা স্কুচারুজপে নিঝাছ করিয়া বিশেষ। প্রতিপত্তি লাভ করিয়াছিলেন, কিন্তু রাজা ছুট লোকের কুমন্ত্রণায় মন্ত্রিকরের প্রভি বিরাগযুক্ত হইয়া তাখাকে পদচাত করি-ণোন। সন্ধিমতি এইৰপে চুত্ৰস্থায় পভিত হইয়া অতিকটে দিনপাত করিতে লাগি-লেন এবং দেবার্চনা ও ধর্মচিন্তার আ্পনাকে সমর্পণ করিলেন। ইছাতে তিনি লোকের নিকট অধিকতর পূজ্য হইরা উঠিলেন, এবং कत्म धरेकण खनका छ हरेल एव (पर्वासू-श्रो**छ मित्राबि ब्राइम्भ श्राक्ष इरे**द्दन। রাজা জয়েক্ত এই কথা শুনিবামাত আশ-कायूक क्रेटनन, এवर भाटक मिक्रमांक छी-হাকে রাজাচ্যুত করে এই চিস্তা করিয়া তা-शटक थ्र कतिया कातांक्रक कतिरमम । ক্ষিমতি বহু কাল এই প্ৰকারে কারাবন থা-

কিয়া **অভিশয় ফ্লেশ** ভোগ করিলেন। পরে कटहरा भृजूति शृत्वि कोत्रोवक ষ্ঠিতেক শূলে স্থাপনান্তর বধ করিলেন। ইভিহান কর্ত্ত। লিখিয়াছেন, যে, স্থানিত रेमवनिक्वेश वग ७३ शून उकी विक इहेग्रा श्रास्त्रां गण कर्जुक कर्यस्था अल्ड निःश्नित अভिधित रुरेग्नोहित्तन। এবং जिनि चार्मात्रोक नीत्म খ্যাতহইরাছিলেন। আর্যাধ্যক্ত সমং অভি-শায় শিবভক্ত ছিলেন, এবং দেশমধ্যে শিব-লিক্ষের অর্চনা গঠি প্রশস্তরূপে প্রচলিত ক-রিয়াছিলেন। তিনি যতিও সমানীদিগকে বিস্তর সমাদর করিতেন এবং সর্বদাই তা-হাদের দহিত আলাপা ও দহবাস করিতেন। অযিবাল প্রায় ৪৭ বংগর রাজনের পর चीय जेख्या छाना कतिया कार्य तमस्मत मानम कतिरनन, এবং এक निवध गामाना (दर्भ অনার্ছ পদে পদারতে পুরা হ্ছতে ব্লেগন্ত করিলেন। পৌরগণ রাজার পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিলে পরে আ্যালাজ নগর হইতে কোশাধিক গমনাস্তে এক তমুভবে উপ-বেশন ক্ষিয়া প্ৰজাণণকে স্বেল্বাকে। বু-কাইয়া গৃহে অভিগ্ৰন করিতে কাহলেন, এবং তিনি স্বলং নন্দীকেল নামক তীর্থে যাত্র। করিবেন। রাজদিংলাদন এইকপে শ্না হইলে পর প্রজাগণ লক্ত হর্যা নে-ঘবাহন নানক রাজবংশীয় এক বাজিকে রাজপদা ভিষিক্ত করিল। (सघदांहर রাজ্যাভিষেকের পুরের ছ্রবস্থাঞ্জ ১ইগা গান্ধার-দেশাবিপ্তির আশ্রয় লইয়া ছি-লেন। পরে ভিনি প্রাগ্ডেয়ভিষ দেশীয় म् अकनावि आनिधं इन कहिसा हमी जानामाली হইয়াছিলেন। মেঘবাহন যুক্তপ্রের ছি-লেন। তিনি পাশ্বিতী রাজগণের সহিত সংগ্রামে নিয়ত ব্যস্ত খাকিতেন, এবং ক্রিড चार्ट्स राजिन रेमना मामस लहेश नहा-ছীপ পর্যাস্ত গমন করিয়াছিলেন ও তথায়

রাক্ষনরান্ধ বিভীষণকে পরাক্ষয় করিয়া প্র-ভাগানন করিয়াছিলেন। মেঘবাছনের মৃ-তুরে পর তৎপুত্র প্রবরদেন রাজত্ব করিয়া স্থীয় ভূই পুত্রকে কাশ্মীরের সামাজা ও থৌৰৱাজা প্ৰদান করিয়া লোকান্তরিত ছন। এই ছাই রাজপুতের নাম হিরণা এবং ইহাঁরা অভাপা কাল মাত্র ভোরনার। একত নিলিক হুট্ধ, রাজত্ব করিতে পারি-য়াছিলেন: সুবরাজ ভোরমাণ স্বীয় নামে मुजा अवलिक कटाटवर कैंक्षि रकार्येत म-হিত বিবাদ উপত্তিত এইল। হিরণা পরা-क्रम महक्रात क्रिकेट्ट अन्त्राङ ७ क्रांब्र-বন্ধ ক্রিলে**ন।** জেরেমাণের পান্নী এই **নময়ে** গাৰ্চৰতী ভিলেন : ডিনি শ্বামীর এইৰাপ বিপদ্দেথিয়া আন্তিরেয় নগর চ্ইতে প-लायन क वर्श कर कुपकारतक १८६ अक्टन-ভাবে त्रविधान এবং अहे शास्त्र व्यानस्य चित्र क्रांति भूक व्यमन कतिरामाः विद-পারাক্ষ অনেক অনুসন্ধানের পর ইহাদেবও मकारू पश्चित जापक जानदा बहुता লোলন, এবং যাহাতে ভোরমাণের পুত্র সং স্থান হইবার কথা কোন কমে প্রকাশ না ছ্য় এই আভিপ্রায়ে তিনি তোরমাণের বহ-ধর্মিণী ও উচ্চের শিশু সন্তানকে সংগো-প্রেরাহিলেন। কিছুকাল পরে তোর-মাণ কারাগারে প্রাণভাগে করিলেন, এব হিরণারাক স্বীয় লাতার প্রতি নিষ্ঠুরাচরণ-क्रानिङ অন্তর্কেদনা হেতুই ইউক অথবা অ-পর কোন কারণ নশতই হউক এই ঘটনার পরেই ভ্রাতৃষ্পুত্রকে সঙ্গে লইয়া দেশ ও তীর্থ পর্যাটনে গমন করিলেন। কিছু কাল পরে বিদেশেই তাঁহার মৃত্যু হইল। গারাজের পুত্র ছিল না এবং তাঁহার ভাতু-স্বার তংকালে অপরিচিত ছিল এই হেডু কিছু কাল কাশ্মীর রাজ্য ভূপতিপ্রনা হই-शक्ति। श्रुत्व धरे कथा मण विष्णु

শ্রচারিত হইলে উজ্জারিনী নগরাধিপতি
শ্রীমান্ হর্ষ বিজ্ঞাদিতা বিনি এই সমরে
মহা-প্রতাপানিত ছিলেন। তিনি তাহা শ্রবণ
করিয়া উাহার সভাসদ মাতৃগুপু নামক এক
রাহ্মণ কুলোন্ডব ব্যক্তিকে রাজ্পদ প্রদানার্প্র
কাশ্মীরীয় সন্ত্রান্ত ব্যক্তিদিগের নিকটে
প্রেরণ করিলেন। তাহারা হর্ষরাজ্যের কথা
অবহেলা করিতে না পারিয়া অগত্যা মাতৃশুপ্তকে রাজত্ব শ্রদান করিল

गटना विख्डान।

কোন বিষয় অনুধাবন করিবার প্রকা সকলেরই স্থির ভিত্তে বিবেচনা করা উচ্চত যে মানবীয় ছকাল মনোর্ভির সাধ্যেয় ভাষ্ क्छ पृत श्रांख अ'स्त्राविहात कतिए समर्ग, এবং কত দূরই বা উক্ত বিষয় আমে দিজের বিবেচনার অধীন ক্ইতে পারে ৷ বেমন জল-পৰে ভরণী সঞ্চালন করিবাব পূর্কে ভাছার पृष्ठा ও গঠন-কৌশল পরীক্ষা কর¦ এবং সন্থস্থিত জলরাশির গভীরতাও বিগ্রবি পদের পরিমাণ করা কর্ত্তব্য, দেইকপ কোন বিদ্যাবিষয় আলোচনা করিতে গেলে মনের প্রকৃতি ও ক্ষমতা বিশেষকপে অব-গত হওয়া এবং আলোচ্য বিষয়ের প্রভাব ও কাঠিন্যাদি অনুভব করা নিভান্ত ক-র্ত্তব্য। কারণ এতন্ধারা আমর। বুঝিতে পারি যে উপস্থিত কার্য্যে আমাদিগের অ-প্রশর হওয়া উচিত কি না। এই সামানা উ-भटनम विकार इहेशा अदनकांत्मक महाभ-থিত এমত বিষম জ্ঞাজালে জড়িত হইয়া-ছেন যে তাঁহাদিগের নাম চিরকাল জ্ঞান-জ গতের তুরপনের কলক-স্বৰূপ হইয়া অব-স্থিতি করিতেছে।

मसुरवात छ्यांन आंटशिक्तक, সম্পূর্ণ-রূপে স্বভাব-প্রদত্ত প্রস্তুত্তি-সকলের প্রতি অপেক। করিতেছে। পরমেশ্বর ম-মুব্যের মনকে নিরপেক্ষ ও পরিপুর্ণ করিয়া श्रिष्ठि कदत्रं न ना है। व्यमानिदगत्र गांतीतिक ও মানসিক কল্যাণের নিমিত্ত তিনি আ-মাাদগের শরীরেও মনোমধ্যে কৃত্রকগুলি প্রবৃত্তিকে সন্নিবেশিত করিয়াছেন। এই ছি-বিধ প্রবৃত্তির পরিচালনে থিবিধ জ্ঞান লাভ क्रिया आमता कै दित भन्न नमग्री रेव्हा नायन করিভেছি। চকু কর্ণ নাদিকাদি ইন্দ্রি-निज्दात नियमिक कृदिया व्यामता वाटा क-शटखत-विषय मकल व्यवशं केशे कौवन ধারণের উপযুক্ত উপায় অবলম্ব করি-**ं इ**हि ; এवः ख्वान श्रीकि हेक्हानि मानिमक প্রান্তর পরিচালনে মনোগত ভাবং ঘটনা অবপত হইরা আলোব অমূহ উন্তিলতি क्तिट्छिछ्। हेशत गए। मानत एर ध्वत-ন্তির অসন্তাব, ভাহার জ্ঞান সেই পরিমাণে मकीर्प कवर एवं श्रीतमादन याहात कहें भ-मल धवृत्ति উन्नड (मरे পরিমাণে জ্ঞান প্রাণ্ড। আমরাধাহা কিছুজানি েছি ৰাহা কিছু দেখিতেছি তৎদমুদায়ই আলেকিক, তৎনমুদানই সম্পূৰ্ণৰূপে আ-মাদিগের শরীর ও মন দাপেক , তাহা-**मिरशत महस्रा इहेट उ विक्रिश इहेटन आंभ**त। সম্ভ জ্ঞান বিবজ্জি ভ হইরা পড়ি। অপিচ উলিখিত দকল র্তিই কুদ্র, অদলপূর্ণ ও **जग्गीन, श्रुक्तांश श्रामानिर**शत जावश स्था-नरे जनम्मृर्वे खमनीन । विश्वकार गर्न ন্ধীয় অনেকানেক বিষয় আহে যাহা আমরা উপযুক্ত বৃত্তির অসম্ভাবে কিছুমাত্র উপলবি করিতে পারিতেছি না; তক্তেফা আপাততঃ आमाषिटश्व शदक मूर्यका। आमापिटशव স্বাভাবসিদ্ধ শক্তি ছারা জড় প্রদার্থের ক-তৰ গুলি খণ উপলব্ধি ক্রিডেছি এবং

मिहे मक्त्र छन चंडिल को স্থানে দর্শন করিতেছি; ি এৰপ গুণ থাকিতে পারে শারীরিক ও মানসিক বে সংলগ্নর না, স্তরাং ত কিছুই জানিতে পারি না। ৰূপ আত্মার বিষয়েও দেই আগ্না হইতে এৰূপ প্ৰবৃ পারে ঘাহার বিষয় আম: চিন্তা করি না। ঘাঁহারা রিস্থিত উন্নত ধামে ভারাদিল্যের উন্নত स्रेश শক্তিদক্ষর অধিকাংশ অনুভৱ করিচ शिमिरगत छ। न । वार्षा ता अ चीत्र चीत्र दृष्टि-मधः চালন করিজেছেন। প্রদেশ্রই নির্দেশ্য এ হার চক্ষুর সক্ষাধ্যে জ্ঞানিম সকল সভা প্রকাশিত রহিং প্রাণিমাতেরই নিকট অ অস্তরের অন্তর্তম ভাব-স न्यकीयभीन विद्याद মন্ত্রম্যাদিবোর প্রস্প্র এবং টিরকাল অথকা শিভ খা। জ্বাদ্য ব্যক্তি অকমাং ই প্ৰনয়ন হইলে হেমন আং অসদৃশ শোভাদেখিয়া অ শ্র, চির-ব্ধির ব্যক্তি জ हर्देत (यक्ष म मखांचन क অপুর্বন আনন্দ অন্তভর ব তুঃখ-শোক-অঞ্চলারসয় *হ* স্ত হ্ইয়া আমরা মহত্র করিব, ভূডন মূতন মৃত্যু निरमय मत्था विश्व-श्रद হুদক্ষম করিরা বিস্ফার ও

এই প্রকারে প্রমেশ্বর মন্তুব্যের মঞ্ लात जना विश्वजन १९ नत्रकीत वर्ष्ट्र विषय ভাঁহার নিকট প্রকাশিত না করিয়া স্বকীয় ছুরবগাহ্য জ্ঞান গর্জে নিহিত রাধিয়াছেন। বে প্রশান্ত এফ্রডি স্থারা আপ্নাদিগের ছকলতার মধ্যে সর্বস্রেকীর গুড় অভিথায় র্কিতে পারিয়াছেম জীহারা সেই মেই বিষয়ের অ্যঞ্ভ আলোচনা হইতে বিনীত-ভাবে দুরে অবস্থিতি করিয়াছেন, এবং সাধা্-মুগত স্বীয় জ্ঞান উত্তত করিয়া পৃথিবীর পরম मध्यत माधन कतिसादहन। जार या होता তুর্বিনীত হৃদয়ে আপনাদিগের নৃন্ধিকে দ-कंशिक-मण्यात मदन कतिशा निविक प्रवादना -छ। विषदात आत्नांग्नांश अहा स्टेशार्ट्स, তাহারা লাভি-সর্ব আবহুমান কাল সকল লোকের তিরস্কার-ভাঙ্গন কইয়া আসিতেছে: এই समारे विष्ठानमात्र महस्स अकाल ल-ৰ্যান্ত ব্যেন বছসংখ্যক মহান্নতা লাক শিত হটরা মন্নধোর মুখনে উল্লক-तिभारक, मिरे कर्ण व्यवना व्यक्तिया जान জ্বাকাশকে অন্তর্গরে খাজন করিয়াছে। পুথিনীতে সন্মাৰিক্ত প্রাকু 15 মংখ্যা অধিক কি ভ্ৰম্মংখ্যা অধিক ভাষা সিক্ষান্ত করা নিভান্ত সহজ নহে।

কথিত কইল আমাদিগের জ্ঞানের নি
কিন্তু থিপ্রকার উপায় প্রদন্ত হইয়াছে,
শারীয়িক প্রকৃত্তি এবং মানসিক প্রকৃতি। এই
বিপায়দমসন্তুত জ্ঞান স্তইপ্রকার বিভক্ত
হইতে পারে, পারিদর্শানক জ্ঞান এবং
নৈমিত্তিক জ্ঞান। বহিবিশির দর্শন করিয়া,
পুরারত্ত পাঠ করিয়া, গুরুমুখে উপদেশ
শ্রবণ করিয়া যে জ্ঞান জলে ভাহাকে পারিদর্শনিক জ্ঞান কহা যাইতে পারে। এবং
কার জ্ঞান উপার্জন করিতে মনোর্ভির
ভাদুশ পরিচালনা হয় না, ইহা অপেক্ষা-

কৃত সুদাধা। পৃথিবীত্ব ঘটনাৰলী এবং
পদার্থ-নিচনের অন্তিত্ব মাত্র অবগত হওয়াই ইহার উদ্দেশা। চিরজীবন পরিশ্রম
করিয়া পৃথিবীর পূর্বতন পণ্ডিচগণ জ্ঞানবিষয়ে যত দূর উন্নতি সাধন করিতে না
পারিয়াছিলেন, অতি সামানা চেন্টার অভি
অংশ কালের মধ্যে আমরা এ ক্ষণে তাহা
হইতে অনেক গুণে অধিক উন্নতি লাভ
করিতে সমর্থ হই। মাহাত্মা বাাদ, বাল্যাকি, শক্ষরাচার্যা, সক্রেটিনাদি আমৃত্যু যত্ন
করিয়া যত শিক্ষা না করিয়াছিলেন, বিংশতি ব্যীর বিশ্ববিদ্যালয়ন্ত একজন মুবা শুজ্ব
প্রাক্ত পাঠে ভাহা হইতে অনেক গুণে
অধিক শিক্ষালাভ করিয়া থাকে। এবিধ্য
ভ্লানকে পারিদর্শনিক জ্ঞান কহা যায়।

কিন্তু এতদ্যভিরেকে অপর একপ্র-कात छहार अ राक रुप। शर्मार्थ निहत्सत छ। থবা ঘটনাবলীর কেবল অস্তিত্ব মাত্র অবগত ছইয়াই লোকে নিরস্ক হয় না, কিন্তু ভাহার কারণ অনুসঙ্গান করে। এই রূপ কাবণ अञ्चलकांन कर्तत्वात हेक्हां विद्यवन। कर्तिन नकत्नद्र भरपा हे लिकिन्ड इ.स. ऋरव (यः, त्य পরিমানে জ্ঞানম্পুছ, মে মেই পরিমানে গুড় করেশের তত্ত্ব করিয়া থাকে ৷ দৈবাৎ কোন শব্দ ভাবণ করিলে অজ্ঞান শিশু ভা-হার কারণ জানিবার নিমিত্ত চতুর্কিকে দৃট্টি পাত করে, দৈবাৎ কোন আশ্চর্যা ঘটনা দৃষ্টি করিলে প্রাপ্তনয়ক্ষ মনুষ্য ভাষার কা-রণ জিজ্ঞানা করে/এবং উন্নতজ্ঞান পণ্ডিত প্রাকৃতিক সকল বিষয়ে বিশিষ্ঠ হইরা পদার্থমাত্রেরই করিণ অনুসন্ধান করেন। बल्ल इः कार्या पिथित्व जाहात कात्रत्वत व्यक्ति বিশাস এবং তজ্জিলাসা মন্ত্রের পক্তে নিভান্ত সভাব-সিদ্ধ। কিন্তু বিশেষ বিশেষ কার্য্য দেখিলে তাহার বিশেষ বিশেষ কার-ণের প্রতি প্রভায় খাছে বলিয়া বে আমর।

দকল কার্যার কারণ অবপত আছি বা হইতে পারি এমত নহে। শুল্ক কারণ অন্ত্সন্ধান করাই আমারদিগের স্বভাবসিদ্ধা
এই অনুসন্ধান ভারা স্বকীর পরিশ্রমে আমরা যে জ্ঞান লাভ করি তাহারই নাম
বৈশ্বিভিক জ্ঞান। অতএব নৈমিন্তিক জ্ঞান
কঠিন ও কই সাধা, ইহাতে মনোর্ছির
বিশেষ পরিশ্রম হইয়া থাকে। স্বীয় যত্রে,
স্বীয় চেইটায়, চির জীবনে যিনি বিদ্যামণ্ডলীস্থ একটা বিষয়েরও গৃঢ় তত্ত্ব অনুসন্ধান
করিতে সমর্থ হয়েন. তিনি সহস্র পুস্তক
অধ্যাসনাপেকা অধিক কার্যা সম্পন্ন করেন,
ভাহার ছারাই প্রকৃত জ্ঞানের উন্নতি হয়।

रेममिक चंद्रेस श्रुक्ता अवटनाकन ও ডাহাদিগের ওক্ত নির্ণয়কে বিজ্ঞান শাস্ত্র কছে। বাহাজগতে নিয়ত নানা প্রকার प्यान्हर्गा न लिखि मुखे इंटेटडटड । এই ममन्द्र দুষ্ট বিষয়কে উপযুক্ত মত বিভক্ত করিয়া যে যে কারণ সংযোগে তাহারা নিজ্পন হই-য়াছে তাহার নির্ণয় করাকে প্রাকৃতিক বি-জ্ঞান কহে। জনং মধ্যে যে সকল পদাৰ্থ अडाक इरेटडाइ उदममुम्बिर विट्रम् বিশেষ কার্যা। কতক গুলি কারণের একর মিলন ও নিগড় সমুদ্ধ হইতেই তাহারা উৎ-পন रहेशा थोटक ; खुउवार এই ममस्र का-যোর কারণ জিজাগা ও নির্ণয় করিতে পা-রিলেই পদার্থ বিজ্ঞানে ব্যুৎপত্তি জ্বিল। व्याकाम পথে मृष्टि कतिदल पुगरकषू, हेन्त्रः ধরু, বা স্থর্যা গ্রহণ দৃষ্ট হয়। কি কি কারণ मिनात पुमरक इस्प्रेश्च वा स्पादाहन দৃষ্টি গোচর ইইল ভাহার বিশেষ নিদর্শনকে व्यक्तिक विकास कटह। सत्स विकास সেই ৰূপ। মনুষ্যের বিশেষ বিশেষ কার্য। ও মনের গতি দেখিয়া কোন কোন প্রবৃত্তি এবং কি কি কারণ সংযোগে তত্ত্বাবৎ উৎপদ হইডেছে, তাহার তত্ত্ব নির্ণয়কে মনোবিজ্ঞান কছে। অতএব সমাক্ ৰূপে ভৌতিক ও মানসিক কাৰ্য। নিচয়ের কারণ নির্দ্ধেশ করার নাম বিজ্ঞান শাক্র, বিজ্ঞান শাক্রে যে জ্ঞান জম্মে তাহা নৈমিভিক জ্ঞান।*

পৃথিবীর মর্ব্ধ স্থানেই কার্মানারণ শু-শ্বলা বর্ত্তমান রহিয়াছে। যতই বিশ বাা-পার পর্যালোচনা করি ততই প্রশস্ত কথা কারণ শৃত্যলায় উত্থান করিতে থাকি। সমুদ্র গজ্ঞ নে, বজ নিঘেষিণে, ভূনিকম্পে, আ-(ध्रम जिति উक्षोिवर्ग, मक्टनत मट्यारे व्हित-চিত্ত বিজ্ঞানবিং বাক্তি কাষ্য কারণের পরি-एश श्राश्च इरशन। किन्द्र विश्वमदना पणिव निरमम विरमय कार्याह निरमय निरमन কারণ দ্র্তুইতেতে ত্রাপি এই সকল क्रिवरे अर अक्षे कार्या माजा । याहारक আপ্রতিত কারণ বলিয়া নির্কেশ করা বা তেছে বিবেচনা করিলে পর তাঁদাও কোন মহন্তর করিবের কার্যা মতে প্রেটীয়মান হয়: ভাষাই প্রকৃত কারণ লামের রাচ্য যাতা একা-জ্ঞেষ্ঠ, মহো কালার দারা স্থাট নহে। এই। कात गत्रदाक्षक मकारामी वाकि कांत्रन. পরমেশ্বর ভিন্ন অপন্ন কেচ কইতে পানে নাং वहे भहमा १ (बन्दल हैं। हात है प्रहर व्यक्त हित छेशयुक्त । धनाभि क्या १८१ लावन धन् १ लान করাই বিজ্ঞান শালের উদ্দেশ্য হয় ভাষে ভাষ্ নির্ভিজ কশতবের দিকে বাজবা। পথ পরিস্থান করিম। দেভেছে। বিন্দুলীল সভঃ জৈজান্ত ভাগাৰান ব্যক্তি এই কলে কলে। ত্ইতে করিণোপরি আরোহণ করিলা সমস্

[&]quot;Some of the defination of places by a very continent philosopy or, are as followed the element of things divine and harmon workers to easy many other things divine and harmon workers to easy many other by their causes?" If shows, as the Science of sufficient reason, "I handle of the Science of the relations of the knowledge to the easts of human reason. Bank and Philosophical knowledge is the knowledge of affects as dependent mean their causes? If William Hamilton

ভূলোক ও ছালোককে অভিক্রন করন্ত প-तिरमारन रमरे मून काहन, रमरे कांतरनंत्र का-**३**० चक्रल शतरमभटत्र मन्त्रुट्य छेशनीङ অল্জা ক্যাকারণ हराम । अगः था আসরণে আবেটিত হইয়া তিনি প্রজ্ঞ ভাবে পুথিশীয় সকল নিয়াই নির্বাহে করিতেছেন। 'শার মানত ই কাষা কেবল তিনিই কারণ। नित्र करण भाषांग यक्षा (छात्रहे छानि-(क उस, अए क निटक्छन। भुटक्शं भति **डेब्र**ड শুক্ত গ্রিপ ক্রিয়া পেমন সহল রহন হিমাতল थाकानदक एक एउक भिन्न करबाति है বিকে উন্নত ভ্ৰিছাতে, দেই ৰূপ অপ্রিমীন কাম, বারণ রাশি উপস্থাপরি বৈবিস্থিতি ত্রিয়া প্রতি বিষয় উচ্চারি চার স্পর্ম করিয়া ত্রিত্তের। সলক কটিক(যা পর্যা-লোচনা কডিয়া বিশেষকলে উল্লিক জগ-লা, ন করা ক্ষুদ্র আন্তঃব(শক্তি মন্ত্রণার প্রক্র গ্ৰাপ্ত হৈ নিত্তি অসমূৰ গোপ্ত তৈ পাঁটো तहरूक जो १ किन् नेकारी बाबन ज'बरबह ট্রাম্পর ইত্ই মনে প্রেল কের টকেশ।।

आध्याज ।

े लोकेक प्राप्ताले स्थित। ज्यानिक व व्हेस्त्रन स्व পুরের তার্লাচ্ছা এলেজ নে জ্রাক্ত পরিবারতক্ষেত্র বিষয়ে পাস্তাতে উনিংখক ভইয়াডিল উট্রার্থ লত্য লৈ আল্ডালিকের আনে একটা ব্রাগ্রস্থাক श्रीचरा कशियात्वस जर ज अभाग संग्रह इस्तिति নাং কান্য সম্পন্ন কাংগাংছেন 🔻 প্রজ্ঞাস্পদ জ্ঞানুক্ত বিভান্তাত তেলেমি মহাশ্র উছেরিনিধের উপ-प्रकोत ५७३ ज्ञास्त्र शतिवादोन**्यति विवरत् विदर्श** নত্তা এই গাওঁটোলিগের সর্জন্তা ও **ওর্মপর**া-ন্তভা অভি আশচ্চ। তথাকার জীলোকদিনের कार प्याक्तराक्षेत्र । यक्ष अकात शृहकार्गा धवर দকল প্রকার আমোদ প্রমোদ পরিত্যাপ করিয়া যে পালে উপারের উপাসনা হয় ভাষায় ভাঁহারা হা ক্রতিরে প বিভ হয়েন, এবং সর্বাদাই এমড পালুবিক ভিডি আল্লাব প্রবিচয় **জাদান করেন যে** श्रुवन्त्रः वर्षद्वः भ्रायक्ति **छनवल्याकृत्म अछास्र** भीकर्नेटक स्था क्षेत्रहात्र निवष्ठे आर्थना ख

এই পর্যা জিজামু সরল লোকদিপের ছন্ত্রে জ্ঞান ও পবিজ্ঞা প্রেরণ করেন। সকলেরই প্রাক্ত আমাদিগের বিশেষ অনুরোধ যে ভাঁহারা হরার বাগাঁচড়। গ্রামে একটা বিদ্যালয় সংস্থাপন ক-রিভে তেন্টিত হয়েন।

সিন্দ্রাপতী নিবাসী মৃত প্রাযুক্ত কাশীনাথ
মিলিক মহাশায় মৃত্যু কালীন দেশ হিতার্থে পঞ্চ
লক্ষ্ মুখা দান করিয়া পিয়াছেন। এই অর্থ হাইছে
মৃতী সংক্ত বিদ্যালয় সংস্থাপিত হইবে, জ্পায়
দার্গ্রা অবৈতনিক শিক্ষা ও পাঠাক্ষায় ভংগ
পোষণ অবধি প্রাপ্ত হবৈ। আপর কতক শুলি
অক্ষ পঞ্জানি দীন হীন বাজিও সময়ে সময়ে সাহায়
লাভ করিবে। অর্ণীয় প্রীষ্ক্ত কাশীনাথ মলিক
মহাশ্যের এই মহৎকাল্যের জন্য সকলেরই কুজ্জ
হণ্যা উচিত।

মান্দ্রিক কেন্দ্রেক ক্রামার একথানি স্বস্থান বিনী পত্তিকা জ্ঞান্তেৰ প্ৰকাশিত হউ ৰে আন্ত भेरेशाद्ध । अला सङ्ख्या (य हेर: ऋऽक्रम-श्राः किंक जाकामशेष कर्नन (धनम् संगदन) १ ३५ फिरमंद 'अवायमास छ मा ५ मण्योपिक करे हर । 아(마리) 이렇게 하 한 한 가장 현급한 나 好是不是我们 學 难 有學問情報 上下上。 দা জন্মাতে ভাইটে কৈচুই বুলিলে পাড়াট এই ভাৰভৰণেৰ ভিচ্চিত্ৰ স্থানত্ত্ব ২১০০ জন্ম গিনী প্রক্রিকা প্রকাশিত হইছে আয়ুর সংগ্রে ক্ষাৰ্থকাৰ বৈজেলি এবং মান্ত্ৰাক চাৰ্যালে ব সম্বাক্ত সম্পান্তন মহাস্থায়ের যে প্রের বিপ্র 🛒 🦏 🔻 ন্বৰ'ন বেশপাত সজায় ৷ ধোলা, জ্ঞানী ব্ৰাণি ১০০ ন্ৰাৰ্ডি ল লাখাত আহে গাঁজাবর। সমার্জন বিভাগ এক रक्ति, कन, प्रति व्यक्षितिरवर्ष दन, ५ अका हिल्ला ভাষা জিলি শাস্ত্ৰীকেছেন, কৈও কিছাল্ট ভাষের स्त्रीक्षक रहेव जो, काइन जामता गर्या, लाल मैक्टबंब दिवास्त्रेशेटनव व्यक्त व्यामन क्रीराजीकः অগ্নসর হও। স্থুম্ছার ইচ্ছা উপর ভাহার সক্ষায় 1

বর্দ্ধনান ব্রাক্ষাসনাজের নিশেষ উন্নতি চইতেছে।
তলত ক্রাক্ষা সহাশায়ের। একটা ব্রেদ্ধানালয় সংথাপিত করিয়াছেন এবং প্রায় মধ্যে মধ্যে নিকটক্
গ্রামে ব্রাক্ষাপর্ম প্রচার মান্যে গমন করিয়া
থাকেন। বোধহয় ভাঁচাদিগের দুন্টাতে ও বজে
বর্দ্ধান নগরের অনেক উন্নতি হইবে।

সম্পৃতি বিসাতে এতদেশীয় স্থীবোকদিবের মঙ্গল উদ্দেশে একটি সভা হইয়াছিল। তথায় আমাদিগের মদেশস্থাই ব্যক্তি উপস্থিত ছিলেন। স্থিয় হইয়াছে যে ইংলও হইতে কতকণ্ডলি সুনি-পুণা শিক্ষিকা বলদেশে আগমন করিবেন, এবং অস পরিবার ঘারা আহুত হইকে অতি দামানা বেতনে শিকা প্রদান করিবেন। তারতবর্বের উ-মতির জনা বিদেশীয়েরা যাত্র্র চিত্তিত, নিবা-সীরা ততদুর নহে।

বলীয় স্ত্রীদিগের যেরপ পরিক্ষদ ভাহাতে থেকাশান্তলে গমন করা দূরে থাকুক, ভাহারা সীয় ধীয় পিতা ভাতা ও অন্যান্য সম্প্ৰীয় লোক-/দিগের নিকটে উপস্থিত চইতে সঙ্কৃতিত হয়। की नाकमित्रात्र वाधीनकः विषयः विस्मय कान অনুষ্ঠান না করিয়া, ঘাঁহারা কেবল একণে বিষ্ণ গওগোল আরম্ভ করিয়াছেন, জাঁহাদিগের গুতি নিষেদ্ধ যে প্রথমে ভাছারা সংদেশীয় মহিলাদিকের পরিজ্জন পরিবর্ত্তন বিদংল বিশেষ মনোহোগা হযেন। কলিকাভা ব্রাহ্মসঙ্গতের गरङ ता, এकनित्रम উच्छ विषया व्यटनक तिरत्नहमः প্রিয়া প্রেশেষ সীয় সীয় প্রিবার মধ্যে অ**জন**া-গিলোর পরিক্স পরিক্তিনে স্থিরকণ্প ইউয়াডেন, কি জেকারে বস্তা ভাবিশাক ভাবা নিশ্চন হইলো বেংশ হয় সকলেই ভালা নিজ নিজ আলয়ে १ वर्षिक कशिरास । शरिष्ठम विभक्ष का मानि লোও আম্জু স্বেপান্ কওল। উচিত্র স্থানের। ্মন্থাত্র বালি কে: বিশেষ জ্ঞানির বস্তের অনুধ্রণ করি ভাছা হটবে কোন কলেই ভাছা छन् भग्रम अवस्थि देवेतात महावन। मार्च, जारकत भरभर जागा। स्कलन मानावन वर्षास्थ नेश्वाभाग्यम इकेन।

একনে রাগারোগিনী পরিকাধে প্রকার মু
চাক মুণে নির্মান্তিক হইছেছে ভাইতে জাহা বে
শীঘা বিশেষ উপ্লিভ লাভ করিবে এবং এতদ্দেশক
বামাদিশের বিশেষ উপকার সাধন করিবে ভাল
হাতে আমাদিশের উপকার সাধন করিবে ভাল
গিনী পরিকার গাহক মহাশারদিগের শুভি
নিবেদন ল যেমন উহিরা ভত্তহাধিনী
গারিকা পাঠ করিয়া নিজ নিজ আল্লার উল্লিভ
শাধন করিবেন, ভেগনি বীয় প্রীর প্রিবার্থ
অঙ্গনাদিশের উপক্রের নিগার বা্যাবেগ্রিনী
প্রিকা গ্রহণ করেন।

আগামী ২১ আবাড় ছালিসহর ব্রাজ্মনাজের সামৎসরিক সভা চইবে। কোন কোন ব্রাজ্মের অসদাচরণ অযুক্ত এবং উৎসাধী ব্রাজ্মদিগের বিধ্যাল গমন জন্য যদিও মধ্যে হালিসহর ব্রাজ্মমাজ কিঞ্চিং হ্রবভাগ্রন্ত ইই্যাছিল, কিন্তু একণে পার্মেরর প্রসাদে ভাষা এরপ উন্নতি লাভ করি ভেছে বে নিশ্চরই উদ্বারা আমন্থ লোকদিগের সমূহ মলল ইইবে।

বেহাল। ব্রাহ্মসমালের অধীনে ব্রাহ্মধর্মা প্র-চারিণী নামী একটী সভা সংস্থাপিত হইয়াছে। বাহাতে সাধারণ ব্রাহ্মদিণের মধ্যে বিশেষ ক্লপে ত্রাহ্মপর্মা প্রচারিত হয় ভাতাই এই মভার উদ্দেশ্য, গ্রাহ্মপর্মা প্রচারিণী সভায় ক্যায়াগ্যক্ষ মহাশ্যের নিকট নিবেদন যে সভায় কার্য্য প্রগলী অনুগ্রহ করিয়া বিশেষ রূপে সাশারণ ব্যেশ্যণকে অবগ্রক

বিগত ১৫ জৈনি কোন নগর প্রাক্ষণযার জর দ্বিতীয় সাম্বংসরিক সভা তেইছা গিলাচে । শুল হওয়া গোল ভর্পলক্ষে ভাবনক লে, দ সমাগভ হইয়াছিলেন। কলিকাভাস্থ এক খানি ইংরাজি সংবাদ পত্রে সভার ভার্ম্য বিশেষ কলে প্রশংশিক্ষ হইয়াছে।

আমরা শ্রুত ইইয়াছি কাশী নগরে এনতী ব্রাহ্মননাম গুড়িস্তিত ইইয়াছে। এ নগরত ক এক জন ভাল বংশীয় ও কুজনিদা বাজিই এবিদরে নিশোগ উলেল্ডী। পোড়ানিকভার নিগড় ছুর্গুর্গন কাশীপানে বাদ দিক্ষা ক্ষানেল্ডির প্রভিত্তিত পূ সমানুক্ত উলি ভবে কালার বিধান লা হল যে সন্ গয়ে ব্রাহ্মপ্রা শ্রুত ভালতবর্গক অধিকার

শোৰা, অভ্যত অভিনাৰের স'হত ক্ষম ক'ল **ভেছি যে** জ্ঞাপক্ষেত্র বিশ্ব 'মারেটক' জ্বনে সংখ্ खोळापिटवंड अबाध्यत भगास क्यानंत ही का हा भव्यति । । । ने द्वारा विभी विक्रिका । । । अभा -স্বিদ্ প্রেণ করে ১৮৮ ও রচনালি দ্পন্ করা यात्र । हेन्। १८ क बहुत क्यक्ति छ प्रमाशत विका ভাহাবলিল, শেণ দর্শিল মা। ১ সার্থ নং लदमभंद औरलादकत्रा स्वाम क्रक्यांत रक्ष यह নি দা ও কুসংক্ষার পরিভাগি করিয়া সভা পর্যার **অনুস্থার এইণ কবিবে এবং স্তত্ত্বরেন্দ হতে এবংশ** क्षांस बाक्त करित्व ए जोरस क्रान्डे एकारण्यत क्षा इ.स. क्षेत्रीस क्षेत्रीय मञ्जाबन। मार्कि । अपा १० १० मार्कि নিশ্চয় যাগ্ৰ সংক্ষারের মল ৭৬০০ তে আছের राप्तराः सीरवाच लियाव स्ताः अवस्ति ६०% एक्षिक असम् वित्रवाशी इंडेस्ट। ह लाहाला চিরদিন পূপিরীকে জনগরাজ থ্রিয়া আংসিংক্তে। জন্মীর স্কন্য ইক্ষা ফেন্স শেশুর শরীলে ক্রন্সত র এ माध्य ७ व्यन्ति सक्षात् कर्ततः । अते क्षतः । उत्तः আফাল ও সংক্ষার ভালার সমাত । কি ৮ চারেন **প্রেচা ব্যারেদ্রি স্কর্**বারে মুখ্য হন্ত দ্রনা ক্রিয় সম্পত্র ইউন ন্বিকন, যে জানি কলে ছিলে এছিল বালা সংস্কৃতি ও পার্তিনারিক আচাদ শানহার পরিতানে করিছে পারে - দেই জনাই অনেকে कुछितिमा क । छ। । । नग्रा १३मा ७ भग्रा तुन्धि व्यक्षशिक भागे। कविटक श्रीविटक्टफल में । व्यं क्षेत्र भी छ राहारक अवस्पातम 'अक्सामिरशव घटना ४८मा ४ ভাব এবেশ করে ভজনা আনাদিধের বিশেষ ছেন্ট। করা উচিত। এতভুদ্দেশে আমাদিণের গুল্ডার বে থেমন পুরুষদিগের জন্য প্রকাশ্য স্থানে একটা ব্রাক্ষনমাজ আছে, সেই ক্লপ কোন একটা ভদ্র প্র-রিবারে কিছা স্থানাস্তরে স্ত্রীলোকদিগের হিডার্থে একটা ব্রাক্ষনমাজ প্রাভিত্তিত হয়।

নুতন গাস্ প্রাপ্তি।

আদরা কৃতজ্ঞতার সহিত নিম্ন লিখিত পুস্তক শুলি প্রাণিধ ধীকার করিতেছি। 'বিবিশ পুস্তক প্রকাশিক। সাহিত্য-সংগ্রহ'' ভূতীয় সংখ্যা। ' মুস্লমানদিধ্যে অভ্যুদ্ধের সংক্ষেপ বিবরণ। ' দেশোর্মাল সংঘাধনের উপায়।''

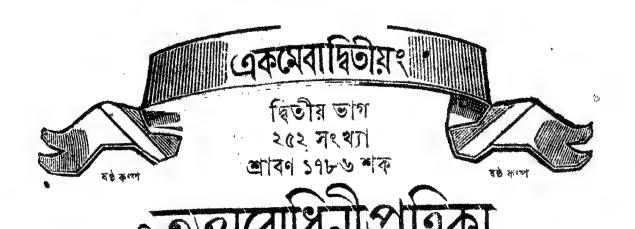
বিজ্ঞাপন।

আগামী ২১ আবাদ রবিবার প্রতিভ কালে হালিসহর ব্রাক্ষদমাজের সাখ্ৎদরিক সভা হইবে রোজ মহাশ্যু দিগের প্রতি নিবেদন বে তাঁহারা উক্ত দিবদে প্রতিসহর প্রামে উপন্ত ক্যায় বেক্ষোগ্যুকা করেন।

কলিকাত। তাক্ষ্মযাকের ২৭৮৬ শবের তৈয়ে মান্যের জায় ব্যায় বিবরণ।

沙城市	द्वि । भूकि		9	ish lare
			»» > > !	80 1/3
ৰ) গ			6	65 /W
FIND!	रदलत क्टल्ड		G	12862
		এভাদ্য		
2190	a 400零			2996
1,440	*19'8		(000
	the section C	Print to war		
4.h	াদিগের প্রতিজা	ত সায়ং	দরিক	मान।
ब ्राह्य ज	ুদ্ধগোপাল সেন	* *		ર હ
• •	रेवकुर्यन्तिथ स्थम		. •	ર હ
1.1	टब्स्य का कि नग्न			>
•6	গ্রনেশ্যান গ্রন্থিক	* *		>
46	泰州沙洲 37		4 *	5
"	राजीकाम द्राव	• •		>

'' भोनगति व्यक्तेभाषात्र	1
" कम्बनाम महीक >	
" नविनशीम बड़ावा ১	
49	
र्मानिक सीन।	
ঞীযুক্ত রাক্ষা সভাশরণ ঘোষাল ৫০	1
" যজেশার সিৎহ ১২	
ে কাশীপ্রসাদ ঘোষ ১২ 🖟	,
" জगरगाना सम्	
48	
শুভকর্মের দান।	
শ্রীযুক্ত রাজারান মুখে।পাগায় ৮	
" इंदरश्विन्स कोश्वि	
এककालीन मान ।	
শ্রীযুক্ত কালীকুশার দান 🕚 ১	
डाक्सर्य अणंड कमा मान्।	
প্রায়ুক্ত প্রসলকুমার সেন্দ্র কোত 👝 🐰	
· अर्व्यक्ति । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	
" গোপালচন্দ্র গাঁলক	
440	
निय के शह।	
त्रु के।	
ব্রাহ্মধর্গের ব্যাখ্যান /2	
শ্রীক্ষ চিম্বা	
রাজ ভরবিনী ৪০	
arrantians fun	
় মনোবিজ্ঞান ৪২ ' সংবাদ ৪৬	
ज्ञास्त्रास वित्रुण	
সংবাদ ৪৮ ভাল ৰায় বিবরণ ৪৮	
সংবাদ প্রচ আন বার বিবরণ প্রচ ভিত্তবাধিনী পাত্তিকার মূলা নিরূপণ। অগ্রিদ মূলা (কলিকাভার জন্য) ্	
সংবাদ প্র আয় ব্যয় বিবরণ প্র ভত্তবাধিনী পাত্তিকার মূলা নিরূপণ। অগ্রিদ মূলা (কলিকাভার জন্য) ৩	
সংবাদ আম বায় বিবরণ তত্ত্ববোধিনী পাত্রিকার মূলা নিরূপণ। আগ্রিম মূলা (কলিকাভার জন্য) () (মফগ্রের জন্য) মাসিক মূল্য । ০০০	
সংবাদ ৪৬ আন বায় বিবরণ ৬৮ ভঙ্কে বাহি বিবরণ ৬৮ ভঙ্কে বাহি বিবরণ ৬৮ ভঙ্কে বাহি বিবরণ ৬৮ আগ্রাম মূলা (কলিকাভার জন্য) ৬৭০ মাসিক মূল্য ১৮০	•
সংবাদ আম বাল বিবরণ তত্ত্ববিধিনী প্রিকার মূলা নিরূপণ। অগ্রিম মূলা (কলিকাভার জন্য) (মফগ্রের জন্য) মাসিক মূল্য এক থকা নির্বিট ভত্তবাদিনী প্রিকা, কলিকাভা নগরে মোড়া	
সংবাদ সংগ্রাম বিবরণ প্রিকার মূলা নিরপণ। ভার্মে মূলা (কলিকাভার জন্য) . ৩ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০	ī



প্রকরাএকনিদমপ্রকাসীয়াম্যৎ কিঞ্চনাসীডনিদং সর্প্রমসকং। তারের নিতা জ্ঞাননন্তং শিবং সভ্রমির্ব্যবনেক-মেরাম্বিভীয়ং সর্থাব্যাধি সর্থানিয়ন্ত্র সর্প্রাপ্রয়সর্প্রবিৎসপ্রশিক্ষিত্র বৃদ্ধার্থিকভিন্নতি। একল্য ভবৈদ্যবোধানিয়া গাব ক্রিকনৈত্রিক শুক্তম্বতি। ডামিন জীতিওদ্য জিয়তাবাদাধনক তদুপ্রিন্ন্ন।

डामधरम्ब नाथान।

ভিতাত প্রকরণ--একাদশ আদেশ।

১ ৮৩ শকের ১০ মাতে কলিকাতা ব্রাক্ষদশাজে
প্রাণান আচার্যা কর্তৃক
বিকৃত হয়।

মএতিষিদুরমৃতাত্তে ভবন্তি।

শীলাক, তিনিই তাহার অমৃত। তাহার আতাবে আলা ক্রিই তাহার অমৃত। তাহার আতাবে আলা ক্রিইন হইয়া বিষাদদাগরে মল হয়। তাহাকে এক মাত্র গতি
আলা জীবন পাল, তাহাকে এক মাত্র গতি
জানিয়াই দে নির্ভন্ত হয়। তিনি বধন আলা
লাতে প্রকাশিত হন, তথান তাহা মধুমন
হর। সেই মধুমর আলা করিরকে মধু-অরপ
রদ-স্বরুপ দেখিয়া পরিত্তা হয়। তিনি
তাহার দেই মঙ্গল-কিরণে জগৎ সংলারকে
উজ্জান দেখেন। তাহার নিকটে পৃথিবী,
নদী, সমুলা, চক্র স্থা, সকলি মধুমর হয়।
সেই অমৃতের দক্রে যোগ করিয়া তিনি
অমৃত লাভের-প্রতি ছির নিক্র থাকেন।

रच वर्गाल जीव आंबाटक প्रतमाओं दे मर्भन करत नाहे, या छोटा एइएड हिंद जिन বঞ্চিত রহিল-নে ভাঁছাকে জীতি দান। পূको ना कतियां, देखा भूतिक केंद्र काया সম্পন্ন না করিরা, বিষয় সেবাতেই জীগনকে क्रम कविन ; धिक् छोत्र (मार्च की रन। छोत ছুর্গতির আর ঋষ্ঠ নাই- দে ক্লেশ কইডে ক্লেশে, দুৰ্ভিক্ষ হইতে তুৰ্ভিকে, পদ নি-क्किन करता । এ अवस्ति दीन होन भन्दरः व्यालमात्र कुल জীবনে কি প্ররোজন। मिन क्षत्र सहसाह कि आंगात (५त की १न অবসান হইবে / চতুৰ্দ্ধিকে পাণ ভাপ **पृथ्य ल्यांटकत मर्स्या शक्तिया यांन** मार्च পবিত্র-শ্বৰূপের উপক নিভর করিতে না পারিলাম, তবে আর শান্তি কোণায় পাইব? आगांतरमत बना स्गा, हन्त्र, नक्त यांतिक বর্ষণ করিতেছে—বায়ু অবিতামে বহনান ষ্ঠয়া আমারদের জীবন রক্ষা করিতেছে— वृष्टि आंगांतरम्त अना व्यामनोदक করিরা আমারদেব শরীর পোষণ করি-তেছে—গৰুত্ৰ কামনার विषद्य जामता পরিবৃত রহিয়াছি। এই দকল ভোগই विः जामात्रतमेत जाव ? हेशत मद्या कि আমরা সকা-স্থদতোকে ক্তজ্জা উপহার দিতে পারিব না ? বেমন এই পৃথিবী
নিঃশব্দে স্থাকে প্রদক্ষিণ করিয়া আলোক
লাভ করিতেছে, আমরাও কি সেই ৰূপ
অচেতন হইয়া তাঁহার প্রদন্ত কামনার বিধ্য-সকল উপজ্জোগ করিব ৷ না আমারদের কণ্ঠ হইতে ফুডজ্জভা-ধনি উথিত হইয়া
সমস্ত জগৎকে ধনিত করিবে ৷

ঈশ্বর হটতে বে বিচ্যুত রহিয়াছে, সে মূহুার অহীত শক্তিকে—সেই মূ**ত-সঞ্জী-**বনী শক্তিকে আর হৃদয়ে অন্নভব করিতে পায় মা ৷ সে অমৃতের অভাবে এই জগৎ সংগারকে শ্বাশান তুল্য বোপ করে। মৃত্যুর মূত্তি দেখিরা ভাষার অমূতের ভাব উদয় হয় না। যে শহীরের আন্ত চর্মা মাংসই দেহে---অন্তরের আত্মাকে পেথে না। তা-হার নিকটে পর লোক প্রকাশ পার না! टग । माहाल हहेता मदन कटते, शृथियो अधा-শুট গ্রীবন – মৃত্যু কইল ভোলেৰ কল। নে পুনিবীতে কথন কথন পাঁপের স্বয় পর্ণের পরাষ্ট্র দেখিয়া ধর্মাবহ পর্যেশ্বরের অকর ন্যার মনে করিতে পাবেনা। যে-খানে শশালার দকল জ্ংশের অবসান হ-ইবে, গেখানে অন্যায় অভ্যাচারের শাসন महेटन, एमन स्था रम रमधिटण शाम ना। সুত্রং সমুখ্য ঘটনা তাহার নিকট প্রহে-লিকার মাত্রে থাকে।

নৃত্যুর নিকটে কাহারে বিচার নাই—
ধনা দরিজ, পাপী পুণ্টবান্ দে নকলকেই
ব্যক্তমণ করে। এখন বিনি হবর্ণ পর্যাকে
শরন করিতেছেন—যিনি বীণা বেণু মুদদ্দ
গনি অবং করিয়া মনে করিতেছেন, তাঁহার
প্রের আর বিরাম হইবেলা: মৃত্যু এক
নামর ভাঁহার স্থের শরীর হইতে সম্ভ মানরবা করে করিবে। তিনি শাশানেশব
স্থ্যা পঢ়িয়া থাকিবেন। তিনি বথন দ

প্রে আপনার স্থান্তর মুখ দেখেন, তথ্য আর মনে করিতে পারেন নাবে এই মুখ **এक ममन्न क्यांक्टीम अ**खारीम हरेना घा-रेटव। यनि कर्यटन स्ट्राटक भारत कतिशा আপনাকে জিজানা করেন, মৃত্যুই কি আ-মার শেষ? না মৃত্যুর পরে আর কিছু আছে? আপনার মোহ-মেঘাক্র আর্থী হইতে ইহার কোন উত্তর পান না। দিন দিন অপেকা করেন, মৃত্যুর পর দেশে কি আছে তথাপি তাহার সংবাদ কেহ তাঁহাকে আনিয়াদের না। যদি কোন লোকের নি-কট জানিতে যান, তবে কেহবলেন, "চ-ন্রলোকে গিয়া পুণোর সমুদার ফল ভোগ করিয়া পুনর্কার পৃথিব্রীতে আসিতে হ-ইবে।" কেছ বলেন, " পুণ্যাত্মাকে তিনি অনন্ত স্থগ অদান করিবেন--পাপীনে অ নশ্ত নরক-যাত্নার দক্ষ করিবেন। 🕆 ইহাতে তাঁহার ভর যায় না! ডিনি কোন কথ: গ্রহণ করিবেন? কাছার বাকের বিশাস করিবেন ? আমারদের আত্মাতে যদি ঈ শ্বরের আলোক প্রকাশ না পায়, যদি তাঁ-হার সঙ্গে যোগ না করি, ভবে এই সংশয় অজ্ঞকার কিছুতে বিমোচন করিতে পারি मा। किन्तु राथन जिचादतत महक्र यांत्र नि-বন্ধ করি—যথন তাঁহার মঙ্গল ভাব হৃদয়ে প্রতিভাত হয়, তখন সংশর অল্পকার হৃদ-য়কে আচ্ছন্ন করে না। তথন আ**প**নাপনি বুঝিতে পারি, ঈশ্বরের সঙ্গে আমার বে যোগ ভাষা চিন কাল থাকিবে। তথ্য নিঃ-সংশ**ে**র বলিতে পারি 'য**াত্রিস্**হাত্তে खविष ' साहाता अहे शतरमधतरक **का**रमन, ভাঁহার। অমর হরেম। বদিও মৃত্যুর পরে কি হইবে, ভাহার সকল জানিজেনা পারি; কিন্ত কানিতে পারি, আমরা ইস্করেরই আ-टाटा शांकित। अवात्म याच स्त्रान, याच सर्था, यत श्रीकि छेभाक्षन कतियः जमनूगादत

উন্নত লোকে নিয়া উন্নত হইব। यদি আ-মরা কৃটিল পালে বিক্ত হইয়া এবং ঈশ-Cत्र मंत्रगांशम मा रहेता हेर ताक र-इटड व्यवस्थ इहे, छत्व व्यामात्रदेशत নিঃসংশার অবোগতি হইবে; কিন্তু সেখানে তাঁহার ন্যায়-দণ্ড ভোগ করিয়া পরিশুদ্ধ হইরা পুনর্বার তাঁহার সৎপথে ফিরিয়া আ-मिव। अनस्य यक्ष्टलत् त्रांटका अनस्य नत्रक নাই; বিনি আমারদের পর্ম পিতা, যিনি ইহারই জন্য শাস্তি দেন যে আমরা ভাঁহার পথে ফিরিয়া আদি; তিনি কি পাণীকে ध्यन स्वत्क मक्ष क्षिद्यन ? हेश यमि मठा হয়, তবে আর মকলি নিখা।। সেই মঙ্গ-ল-স্ববেপর উপর যথন আমারদের বি-শ্বাদ যায়, তথন মনে করিতে পারি না যে তিনি পাপের জয় করিবেন—অনস্থলের জা করিবেন-নরকামিকে অনন্ত কাল জ-লিতে দিবেন। যদিও চতুর্দিকে রোগ শোক পাপ তাপ দেখিয়া ভাহার অর্থ বু-বিতেনাপারি, বিন্তু ইহা নিশ্চয় জানি एव केश्रत छाङ्गात मःगात्रक दिनके इहेट्ड দিবেন না। তিনি সহজ্র উপায় ছারা মঞ্জ-লেরই জ্বয় করিবেন। তাঁহার সংসারের একটি প্রাণীকেও তিনি পরিত্যাগ করিবেন না। তিনি সকলকে উন্নতি হইতে উন-তিতে লইয়া যাইবেন। পাণীকে ফু:খ क्रिण मध निया—भूगावीन्**रक** व्यानत्त्व छ-পর আনন্দে প্লাবিত করিয়া, আপনার শি-কেই আকর্ষণ করিবেন।

এই প্রকার, উত্থরের সঙ্গে বিনি আস্থার বোপ করেন, তিনি কালের হস্ত দে
থিয়া তীত হন না। ইশ্বরের আলোক
বাঁহার হৃদয়ে আনারের দীপ হইয় প্রজ্বতিত হয়, ছিনি লেই আলোকে সকল
দর্শন করেন। তিনি তাঁহার পরম পতি ইন
রন গতিকে দেখিয়া ভার-শ্বনা হন। প্র

ক্ষিরা যেমন অরণ্যে গিরা আপন আপন মনের উল্লাসে সঞ্জবণ করে, তিনি দেই ৰূপ শরীর পিঞ্জর হইতে মুক্ত হইয়া ঈশ্বরের निक्षे यारेबात पाजिलाय करतन। मेचारतत উচ্চুল মুখ দেখিয়া তাঁহার জ্ঞান উচ্চুল হয়। বে আলোক তাঁহার হৃদয়ে প্রজ্ঞালত হয়, তাহাতে তিনি মৃত্যুর পর পার জ্যোতি-র্মার ব্রহ্ম-ধাম দেখিতে পান। ঈশ্বরকে পা देश किनि नकन अञ्चलाद्यत आंटनाक भान। শত শত এত্থাঠ করিলে—শত শত বা-ক্তির উপদেশ অবণ করিলে যে বিশ্বাদ ন। হয়, এক বার ঈশ্বরের আলোক দেখিলোপা-हेत्व आमातितमत एक उद्योजन इस । এक বার তাঁহার অয়ত-রমের আস্বাদন পাইলে तांचि तांचि शवन ४०म रहा। जेचातत मान (यांन क्तिटनके आमता मुक्तित शुक्राजाम পাই। বিনি এক বার পরমান্তাকে দেলিতে পান, দিন দিন তাঁহাকে অধিক দেখিতে পাইবেন, এই আশাতে ভিনি উৎকুল থা-কেন। বিপদ্ ভাঁছার নিকট সম্পদ্ভুল। হয়— মৃত্। অমৃতের সে(পান • ইয় : দিনি পর লোকের প্রতি সংশয়-শূনা হইতে চা **(इन, छाहोत्क अ**हे मांज चिन्छ भाति स्थ প্রবিত্ত ফ্রান্ডরের ক্রিক্টে গ্রামন কর की हात मझन मुर्जि एक्सन दत्र, प्यवशाई गरमय भूमा इरेरव। " जिनारक रामत्रवा स्टिन्टिनः एक मर्कमः भग्नाः। " क्रीम्टिक (४-बिटन "क्षरतातं अवि छ। इत, मरुज नश्मत ছিল হয়। । आमना यांच भाटभटक कलाहिक रहे. छथानि आमता निर्दाण हरे ना! आ-মরা অনুতাপিত জ্গন্যে তাঁহার শরণাপন্ন হ-ইলেই তিনি আমার্দিগকে এইণ করেন। তাঁহার ইচ্ছা এই যে আমর। পাপ ভাপ হইতে নিজ্তি লাভ করি। আমরা যদি আপনার ইচ্ছাতেই পাপ ভাপ হইতে নি-ফ্তি পাইবার নিমেত্তে তাঁহার শরণাপল

হই, ভবে দে ইচ্ছা পূর্ণ হইকে না ভো আন্ধ্র কোন্ইচ্ছা পূর্ণ হইবে; তাঁহার শ্রণাপন্ন হইলে তিনি আমারদিগকে অভয় প্রদান করিয়া বলেন "বংস ভীত হইও না—আমি ভোমাকে গ্রহণ করিব।" তাঁহার অভয়-লারে গেলে তিনি আমারদিগকে দ্র ক-রিয়া দেন না। এই পৃথিবীতেই ইউক, অন্যত্রই ইউক, যখন যে অবস্থাতে আম্রা তাঁহার শরণাপন হইতে যাইব, তথনি আ-মারদের সন্তাপাক্র মার্জনা করিয়া আপন আলিকন পাশে বন্ধ করিবেন। "পাপী ভারী সাধু অসাধু দিবেন স্বাবে ম্ফল-ছায়া—কেবা জানে কত স্থা বন্ধ দিবেন মান্তার তীর অমৃত নিকেতনে।"

হে পরমান্ত্র । ভূদি আমারদের সক-লকে তোমার অভিজ করিয়া তোমাকে প্রীতি ও তেমির কর্ম্যে করিবরে জন্য থে-রণ করিয়াছ: আমর: এখান হইতে শিকা লাভ করিয়া ক্রমে ভ্রমে উন্নত্ন লোকে গিয়া শ্রেমার অভিনুধে অগ্রসর হইব। মে অ-भूता भाषाध्यक्षश जुनि ज्यामांत्ररम्य जना म-ঞিত করিয়াছ, আমরা খেন আপনার দোবে जार। कड़ेटच विकित्व भा कहे। आभारत्मत আত্মানে উন্নত ও পৰিত্ৰ করিয়া যেন তো-মারই পদত্রল স্ক্রানিয়া রক্ষা করিছে পারি। কুমি আমার্রিদগকে যে সকল অমূল্য অধি-কার দিয়াছ, তাঁহা যেন তোঁমারই হল্তে ঐ-ভূমি সহায় না হ-ভাগণ করিছে পারি! ইলে আমরা আপনার যত্ত্র কিছুই করিতে পারি না; অতএব তোমার অক্ষয় সাহাব্য শার্থনা করিতেছি, তুমি আমারদিগকে তো-সার অমৃত পথে লইয়া যাও।

ওঁএক**মেবাদিতী**রং

আত্মচিন্তা।

"যত দিন পুরিবাতে জীবিত থাকিব ভত দিনই অংশে অংশে ধর্ম দঞ্চয় করিতে हरेटव । माश्मादिक व्यवसा यक्तरे मन्द्र इंडेक ना किन कोन करमहे था। महत्र कर्डवा मांधरन উদাসীন থাকিতে পারিব না। ঈশ্ব-तरे कीवत्नत छेल्मगा, मेश्वरे कीवत्नत সুখ-নিকেতন, যতইকাল অভিবাহিত হইবে তত তাঁহারই দিকে অগ্রসর হইব এই আ-মার আশা। তবে কি জন্য তাঁহা হইতে ব-ঞ্চিত রহিয়াছি, তাঁহা হইতে বঞ্চিত থাকিয়া कि थकांद्र कीवन-जात महा कतित ? এই পৃথিবীর সকল বস্তু চির কাল সমান ১ছি-বিংশতি মহন্ত বংগর পূর্বে রাছে। **এখানে যে বাপ গোন্দর্যা সহকারে স্থা**র উদায়ান্ত হইত এখনও দেই ৰূপ হইতেছে, নে ৰূপ শোভা সহকারে বিংশতি সহস্ৰ वश्मत भूरक हस्त नक्छ निःशम निशीश সময়ে ৰাগণ মণ্ডলে বিচরণ করিত অখনও **म्हें क्रम क्रिट्टिंड**, स्वित श्रुट्यंत्र म हिड आमानिरंगत पूर्व भूक्यमन जनक জননী ও প্রিয় জনের স্নেহ লাভ করিভেন আমরাও সেই ৰূপ করিতেছি। কিন্ত भेचत जिन এই পৃথিবীর সকলই শুনা শোভা হীন, সকলই অক্ষকার ও বিষপ্প দে-থায়। হা কি প্রকারে তাঁহার সহিত পুন-শ্বিলন ২ইবে ? " একবার যে তাঁহাকে জ্ঞান-চক্ষুতে থীতি-চক্ষুতে দৃষ্টি করি-য়াছে, তাঁহার অদর্শনে ভাহার পক্ষে এই ৰূপ বিলাপ-উক্তি করা নিতান্ত অস্বাভাবিক नदृ

কিন্ত প্রতি নিরতই কত প্রকারে আমর। তাঁহা হইতে বিজ্ঞা হইজেছি। কত বার প্রম-বশতঃ ধর্ম উপাক্ত নে বিরত ও বিকল-যত্ন হইডেছি। অনুসন্ধান করিলে

এবজ্ঞকার ভূরকভার কারণ আন্ধ অভাব ভিন্ন আর কিছুই অভীক হর না সকল বস্তুর মূতনতা এবং পুরাতনতা আছে। व्यगरम स्थान भाग-भाग-भागी मसूरवात मरन धरम्बत भोग्स्या अवश भारभत्न कम्याजा প্রকাশ পায় তথন সে অতি আগ্রহ পূর্বক धर्माटक प्रविषय करत, अवश्राहे धर्माटक প্রতিপালন করিতে শরীর মনের সমস্ত শক্তিকে নিয়োগ করে। এই জনঃ দৃষ্ট হর যে ত্রাক্রধর্ম গ্রন্থ করিয়া প্রথমতঃ ত্রা-टकात। छोड़ोत जारिन भानरन यथ्भरतांनी छि যত্ন করিয়া থাকেন, এবং পিডা মাডাও গুরুজনের অনুরোধ পর্যান্ত পরিত্যাগ ক-রিরা কেবল **ঈশ্বরেরই পথে অগ্রসর হও**য়া জীবনের সার কর্মাবিবেচনা করেন। কিন্ত আজ-চিন্তার বিরহে, এবং আয়ার গৃঢ় অ-ভাব गरूटनत अञ्चाना जना, किছু पिन भटत **এট উৎসাহ এই আগ্রহশীতল হইয়া যার,** ধর্মের শোভা পুরাতন ও বিলুপ্ত হইয়া আ हेटम, এनং नव मोन्न्या महकादत माश्मा-রিকতা স্বীয় স্থা-সম্পদ্ আমাদিগের হৃদয়-नश्रत्नत नमरक ध्वकां करत। मन विरमा-চিত হইয়া যায়, ঈশারকে বিভাত হয়, ধর্মের এতি অস্বাহয়, পর লোকের প্রতি गन्मिक्ष इरा, धवर व्यनक हिन्छ हिट्छ मर्स-माकी शत्रामश्रदतत ममत्क स्टबच्छा होदत প্রবৃত্ত হয়। অনুশোচনা ও আত্মানি আ-ইনে, ভূতন ভূতন স্থাফুধাবন উলাদে जीहाता **भेतीकिंड इंग्न, धवर कमलेट क्**षम् व्याकामी इहेट**ड शांटक। सर्व-विद्या द्वि**ण-कत्र ७ तम्भूना करेत्रा भटकः, कटम कटम গাভীষ্য পরিতাক হর, পর-নিন্দার আ-व्यान करत्र, यानाव्यकात्र (कोकूक-त्रश्रा गमानाम ७ जनात्नावनात नतन व्यविक रम, गाडात थाडि चांचा किताबिक स्रेटक शांदक, अवर वकुमिरभन्न मानम विस्तामन

উদ্দেশে অনৃত বিভৎস ভাষা পৰ্যন্ত সময়ে ममदम जानत्नीत स्टेश উट्ट। यांकात চরিত্র স্থভাবতঃ যে সকল দেখি-সম্পন ভাছার কার্যো সেই দেবিগুলি একে একে मृष्टि-(গাচর হইতে থাকে, এবং লজা, ভন্ন, অমুরোধ, ভক্তি, আদ্ধা, আর্ত-বদনে একে একে প্রস্থান করে। যে গবিত, धर्माजिमादन, विमाजिमादन, कूनाजिमादन ক্ষীত, সে কিছু দিন ধর্মের ভাতৃনে কন্টে ক্লেশে খীয় কুৰভাবজাত অহকার দমন করিয়া এখন নির্ভয়ে বিক্ষারিত বক্ষে লো-কের পৃষ্ঠে পদাঘাত করিয়া চলিয়া 🖣 র ; रव धन लाखी, रम धर्मात व्यक्ति रेनताका प्यवनश्चन कतिया (क्यम नश्चरम् प्राप्त प्रमुगक्तात्व रेडेडेडे खमन करत, धवर रच हेन्त्रिय थिय, নে ইন্দ্রির নেবার উমত্ত হইয়া মান ম-यानि धर्म व्यर्थभाक भकत है विमञ्जल पहर किन्छ इंश्रांटम्ब मट्या मकटलई रव এक कारण ঈশ্বরের নাম ও ধর্মের উল্লেখ পর্যান্ত পরি-ভাগি করিয়াছে, কি নবলভায় ও সাধু ব্যবহারে এক কালে জলাগুলি দিয়া কপ-**নিযুক্ত করিয়াঞ্চ এনত নহে। উন্ন**িও আন স্মোহকর্ষণের যে ৰূপ মোপান আছে, পাপ ও আন্ন-বিকর্ষণেরও ডক্রেপ্সোপান সাছে। रयमन छ्त्रदश इहेट अक काटन जाट्यान-ভির শিপর-দেশে উত্থান করিতে পারা যায় नां, तष्ट आंशांत्र कत्म कत्म आदिशहन করিতে হয়, সেই ৰূপ এক বার উন্নতি লাভ করিয়া এক কালে অধর্মা ছুর্গহির অধস্তন शुरु व्यवख्रुन कहा यात मा, करम क्राय নিমগানী হইতে ২৪। বিদ্যাচলত্ত অভ্যুক্ত অধিতাকা-ভূমির প্রস্তর-মণ্ডিত অগ্রভাগে দণ্ডায়মান হইয়া বহু দুরে নিম্নস্থিত প্রান্তরে অধঃপতিত হইয়া চূৰ্বইতে কাহার হৃণয় না ভয়ে বিকম্পিত হয়? অদাবিধি যাঁহার।

ভূপতির শাধাকাতা আগু না হইসাছেন,
আদাবিধি বাঁহাদিগের চিতে ধর্ম লাভ করিকাল ইজান লেশ মান অবস্থিতি ক্ষতিতেতে:
ভাঁহারা অবশ্য স্কুল্য বন্ধু-বাক্য কৰাচ
অবংকলন করিবেন না। এবং দেখান হইতে
ধর্মোপদেশ লক ইউক না কেন ভাহা গ্রহণ
করিয়া মনুষা জীবনের মহজু লাভ করিবেন
ভাহাতে সন্দেহ নাই।

এই পৃথিবী পরীক্ষার স্থান। এথা-নকার বিস বিপাত্ত ঈশ্বর প্রেরিভ। দেই বিস বিপত্তি সত্ত্বে খাঁহার৷ যে পরিমাণে কর্তব্য কর্মনাধন করিতে পারিবেন, সেই পরি-মাণে তাঁচারা পর লোকে অতুলা শাশ্বত পুরস্কার প্রাপ্ত ছইবেন। পরমেশ্বর স্বীর অপরিনাম করুণাগুণে মনুষ্যকে ধর্ম দা-ধনের অধিকারী করিয়াছেন। কিন্তু পাছে ভাহার গৌরব ও মহত্ব লঘীয়ান হয়, এই कना मिहे धर्मा कि क फेमाधा छूल 😇 ও वह-প্রলোভনে বেধনীয় করিয়াছেন। সমুবোর স্বভাব এৱপে ফট হইয়াছে ফে ধর্ম বা অধর্মকে অবলয়ন করা তাঁহার পক্ষে मन्भूनं कटभ (चक्कारीन) मसूया (यमन म-**ন্তুণ দেখিলে তাহার অন্তর্গত আখ্যাত্মিক** भोन्नट्या भूक इटयन, अवश्यक मूत्र माथा ভাহার অনুকরণ করিতে ক্ষণকালের জনাও উৎস্ক হয়েন, সেই ৰূপ পাপকাৰ্যা ও অপরিশুক্ক সূথ-ভোগ সন্দর্শনে **তাঁহার পশু** প্রকৃতি উত্তেজিত হয়, তিনি বিষম মোহে মুগ্ধ হইয়া স্বীয় দেবভাব**কে উৎদান করিডে** সহজেই প্রবৃত্ত হয়েন। বাস্তবিক পাপাচ-রণ করিবার ক্ষমতা আছে বলিয়াই ধর্মান তরণ ভাঁহার সম্বয়ে বিশে<mark>ব আদরণীয় ও পু-</mark> াকালের উপযুক্ত। ইশ্বর ধর্মের প্রবর্তক। মন্ত্রমাকে কেবল সাধুর্**ডিতে ভূকিত করি**-যাই ক্ষাপ্ত না থাকিয়া তিনি শ্বয়ং ভা**হাকে** সভ্য ধর্মের পথ **প্রদর্শন করিতেছেন। সেই**

नथ वर्णन कड़िहां अवर छात्रतहर सनिक বিশুক্ক আনক্ষ্টিপটভাগ করিয়াও যদি কেহ মূরতা বশতং ভারাকে পরিত্যাগ করে তবে তাহার অপরাধ সন্দূর্ণ করেশ ভাহাতেক ভিন্ন আর কাহাকে অর্লিডে শারে? যে সভ্য ধর্ম অবলয়ন ক্রিয়া ভাষাকে সামান্য আয়াস-माथा मरन करत अनः विश्विषदम् है निमध हरे য়া আত্মাকে নৈদ্যালিক গতিতে ঈশ্বরের मि**रॐ**शंबन कतिरङ चारमन रमग्र रमहे चनन कानुकृत्वत खरमद मीमा माहे। अञ कार्य পরমেশ্বর মমুধ্য-হৃদরে আবিভূতি হইয়া ধর্মাধাধনের উপায় ও আনন্দ নির্দেশ করত অন্তর্হিত হয়েন, এবং স্লেহভরে অলফিড় ৰূপে দেই পথে ভাষার পদচারণ নিত্রী-ক্ষণ করেন, যত বার সে তাঁহার নিকট মাহায়া প্রার্থনা করে তত বার তাহা প্রদান करतन। किन्छ हेक्का थहिका अवर धर्म সাধনোপযোগী আত্ম-পরিশুদ্ধি সমাক্রপে মনুষ্যের স্বাধীনভা-সন্তু, ত। আস্কৃতি छ। ক-রিরা আপনার দোষ সমূহ অবগত হইতে हरेद्द, दक्वल मच्छन मदन ७ উপामना-१८३ গমন করিলে হ্ইবেনা। যে আছচিত্ত:-বিরহিত হইয়া সাধু-সঙ্গে গমন করে, সে ভত্তস্থ বাহ্যিক ক্রীড়া কৌতুকে দংসক্ত থাকে এবং নাধু সঙ্গকে অনাধু নজেতে পরিণত कृद्र। এই व्यकाद्य कार्य वाद्रा मक्क्निनिदग्र চরিত্র পর্যান্ত দূবিত হর। যদি পরমেশ্বরের मिटक शमन कब्रिवाइ हेक्स श्राटक नियुष्ट्रहे আত্তিতা ও আতালুসন্থানে এইড হও, আপুনার অভাব-সকল আপুনার মোব-সকল দর্শন করিয়া অকপট চিত্তে তাঁহার নিকট वार्थनां कत्, माधुनिरशंत्र डेश्ररमण खर्ग कत्, जरर मक्त् केटला अक्रुकत्व कडा कीवटना দকল কালই অতি ভয়বর। ৰান অত্যস্ত নাৰ-थानठा श्रृक्षक मर्कान। व्याचारक ना क्रका करा, এবং সরবাই यनि তাহার वर्षभनीन अर्डि-

निहत्रदेक क्षेत्रभाना के जदशदय निर्देशन না কর, ভাষা হইলে দিক্যই আজা গৃঁচ काल गारमादिक जनका कि सीख इहेरव, वदर এমত সময়ে निक अङ्गार्कः अनर्भन कतिरद যখন চরিত্রসংশোধন তেন্ডাবহিতু তে হইরা গিরাছে । কারণ সমুব্য বর্ষ যে অবস্থায় অবস্থিতি করে তথন আপনার প্রবৃত্তিকে मण्युनं बदम जाशंत्रि छेभरगाशी कतिया नह, এবং পরিণত প্রকৃতি পরিশুক্ক করা ভা-राज्ञ भरक निष्ठां छ छः माधा हरेशा छेटि। অভএব উপযুক্ত সময়ে আক্ষচিন্ত। ছার। हतिज मः भाषन कतिदव, **अवर मनदक प**-র্মেতে উন্নত করিবে, আত্মচিন্তা না থাকিলে व्यविक्रक शृंद्धत नाति ऋग्दत वर्ष व्यकति ণাপ-ভদ্ধর প্রবেশ করে, এবং অমূল্য ধর্ম-রত্নকে অচিরে অক্তাতদারে অপহরণ कदत्र ।

मण्णूर्नकरण याज्ञिष्ठा अपरत वर्डमान না থাকিলে, কোন মতেই উপযুক্ত উপা-মনা সন্তঃবিত হয় না। আমাদিগের উপস্থিত ভূরবস্থার একটা প্রধান কারণ অনুপযুক্ত ঈশ্বরোপাসনা। যদি প্রতিদিন ক্রদয়ের অ-ভাব জানিয়া সমান আহ্বা ভক্তি ও বিনয় मङ्कादत भत्रदमश्वदत्र निक्षे वार्थना क-রিতে পারি, তাহা হইলে আত্মার উলভির मीना थाटक ना। किन्न উপामनाभूटर भमन করিয়াঁকি অভাবের জন্য প্রার্থনা করিব তাহা না জানিলে কি প্রকারে প্রার্থনা স-खर्द ? ने बरहर कान थीं वि सम्माधाद मा অনুভব করিলে কি একারে ভাঁহার এতি অৰাও মুক্তজ্ঞা উপিত হইটেড পারে? अञ्जत गनि ने खेद-अञादि वाक्नि इहेता থাক, যদি ভাঁহাকে লাভ করিবার একান্ত वागमा हरेता चाटक, उट्ट महल सम्दन ना-পনার সামাকে অসুসন্ধান কর, রালি রালি शीरणत कम जन्र छ इहेज्रा वियोगिक्यभून লোচনে ভয় ক্লেরে তাঁহার নিকট প্রার্থনা কর, তিনি ভোমার ক্লেরতক ক্তক্তহাও জ দ্ধাতে পরিপূর্ণ করিবেন, তোমার অপরাধ মাজ্জনা করিবেন, তোমার দূষিত চরিত্রকে সংশোধন করিবেন।

গুরু জনের প্রতি আছা ও রুডজ্ঞতা না থাকা আন্ধ-বিশ্বভিন্ন কার্য্য। যে আপনার त्मांव मा त्मद्रश्चे रम्हे भरत्रत्न त्मांच प्रकृमकाम করে। আমরা নিজে বাহা মনে করি তাহা অভান্ত নহে। জগতের আর সকলে আমাদিলের সংকপোনুযায়ী কার্য। করে না বলিয়া ভাষার। অবিশুদ্ধ চরিত্র নীলে। আমাদিনের স্বীয় অপরাধের সংখ্যা এত যে তং সমুদায় পরিশোধন করিতে গেলে আর কালরও দোবালুসফান বা দোব কীর্তন করিবার অবকাশ থাকে দা,এবং দেই 🦚ল দোবের প্রতি যথোচিত ঘূণা থাকিলে অপর কাহারও দোষকে দোষ বলিয়াই বোধ হয় যদি দকল ত্রাক্ষ আত্মচন্তা-পরাযণ হইয়া স্বীয় দেশ সমাক্ৰপ সংশোধন করত প্রাক্ষধর্মের ১য়তি চেক্টা করিতেন ভাষ্য **হইলে এত দি**ে ভাঁষ্দিগের আলা: কভ দূর সদ্গতি প্রাং হইত এবং ব্রাহ্মধর্মের মুখ কতদুর উজ্জ্ব । ইড়া বিনীত ভাবে করযোত্যে সকল ত্রাগ ভাষাগণের প্রতি আ। মাদিগের নিবেদন যে ভাহার। প্রতিনিয়ন্ত যেন আত্মচিস্তা ছারা আপনাদিবের ক্লন্তের বছ অভাব দুর করেন, এবং যে দমক চরিত্র-গত দৌষ ও অসম্পূর্ণতা জন্য ত্রাফাংশের ध्यं क्रिक महेख् अन्य-मः । উপল্कि क्रिडि পারিতেছেন না, ঈশ্বর-অদাদে তাহা হইতে অচিরে মুক্ত হইতে নাধাাত্রুদারে চেন্টা করেন। নকল-স্বাদ প্রমেশ্বর আহাদি-পের মধ্য হইতে ছেব, ছিংসা, অহঙ্কার, পর-निम्मा ७ क्र के छोटक विमूखिक क्यम अवर . আমরা বেন পুণোর পবিত্রহা ও অমৃতত্ত্ অবিলয়ে লাভ করিয়া সমস্ত পৃথিবীময় ত্রান্ধ ধর্মকে ব্যাপ্ত করিতে সচেট্ট হই।

যনে বিজ্ঞান।

मत्निख्डात्नत धाकृति, जावणाक्छ। भर्द, कार्य। ७ উচ্চেশ্য-विकास आंभां निर्भत দাধারণ মভামত পাঠকবর্গ দমীপে যথা-হাব। প্রকাশিত হইল: আমাদিগের চেটা। কড দুর ফলবভী হইয়াছে বলিতে পারি না। মন অতীক্রির, দৃষ্টির বহিভূতি প-দার্থ, তৎ সম্বন্ধীর কোন ভাব, কোন গুণ, ব' কোন ঘটনা, শারীরিক শব্দির ক্রিয়া ধারা কিছু মাত্র অনুভূত হর না! কঠোর, একাত্র, এবং অবিজ্ঞান্ত চিম্বা ও পাত্মদৃটি ষারীভাগার তত্ত্ব নির্ণয় করিতে হয়। দেই ৰূপ চিস্তা ও দেই ৰূপ আত্ম দৃটি সহকারে আত্মার প্রবৃত্তি শক্তি ভাব নিয়ম ও উদ্দেশ্য নির্ণয় করাই মনোবিজ্ঞানের প্রকৃতি। মন বিশ্ব জগতের মধ্যবিন্দু এবং মনোবি-জ্ঞান জ্ঞান-রাজ্যোর রাজধানী-স্বরূপ। সমস্ত স্ফি-পরিধি প্রদক্ষিণ করিয়া ঈশ্বর প্রতি-ষ্ঠিত নিয়ম কৌশল ও সৌন্দর্যা ক্রম্জন করণার্থে মনের মধ্যেই প্রবেশ করিতে হয়, কারণ মনুষ্য মুদ্ধকে এতভাবৎই মনের थ्रवृष्डि-भारशक।

অপিচ চিন্তাশক্তির কার্যা একপ অ
ক্ত গে যত অধিক পরিমাণে এক বি
যয়ে তাহা পরিচালিত হইবে, তত অধিক
পরিমাণে সর্ববিষয়ক জ্ঞান উপাজ্জন

করিতে মনকে প্রস্তুত প্রস্তুত প্রমর্থ ক
রিবে। মনোবিজ্ঞান আলোচনায় যেমন

চিন্তা-শক্তির পরিচালন হয় এমত আর কিছুতেই নহে, সেই জন্য আল্ল-জ্ঞানই সকল

জ্ঞানের উপায়। বিশেষভঃ যে শাস্ত্রই অমুগাবিত হউক মনের প্রস্তুতি ও কার্যা ভিন্ন

কোন কমেই ভাষাকে সুংশান্ত ক্ষেন্দ, তবে যে বিদ্যা মনের তত্ত্ব নিদর্শন করে ভাষা যে সর্বাপেক্ষা মহৎ ভাষাতে আর সংক্ষে কি ? মনোবিক্ষানের ছারা যে অন্যান্য শাস্ত্রাভ্যাসের সৌকর্য্য হয় ইছা ভাষার আপেক্ষিক মহত্ব; আর মনোবিক্ষানের ছারা যে মনের স্বতন্ত্র উন্নতি ক্যেইছা ভাষার স্বতন্ত্র মহত্ব।

অধিকন্ত ঈশ্বরজ্ঞান যে কপ উচ্ছ্বলভা সহকারে মনোদগতে লক্ক হয় দো
প্রকার অন্য কোথাও হয় না। পৃথিবী
মথ্যে জ্ঞান গ্রীতি পবিত্রভার সকা শ্রেড
প্রতিক্রপ মন্ত্রার আত্মা। ঘাহারা আপনা
দিগের আত্মার সহন্তাব না ফানিয়া পাপাচরণ করে ভাহারা পরশেশরের স্থকগেব আগৌরব করে, এবং ঘাহারা আত্মভত্ন অবণ্ড
হইয়া নিয়ত জীবনের উদ্দেশ্য সাধন করে
ভাহার ধর্মের পথ উজ্জ্বল করে এবং দশর
স্বরূপের উজ্জ্বল পরিচয় প্রদান করে। অভএব যে বিদ্যা দ্বারা সেই আত্ম-ভত্ন ও আভান্ত্রশ্বান শাপ্ত হওয়া যায় ভাহার আ্বাবশাক্তার, ভাহার মহত্বের কি সীমা আছে ?

দৃষ্ট বিষয়ের কারণ অনুস্থান করাই বিজ্ঞানের কার্যা। পৃথিবী জড় ও জীবন-বিহীন
পদার্থ। মন্তুব্যের মনই ভাহার অন্তর্গত
কার্য্য কারণ শৃত্থালা অনুভব করে, এবং স্থীয়
স্থভাব অনুসারে কারণের পর কারণ অনুসন্ধান করিতে থাকে। এই প্রকারে উপর্যু
পরি কারণ শৃত্থালায় উপ্থান করিতে করিতে
পরিশেষে সর্বোপার সেই কারণের কারণ,
সেই আদি কারণ স্থলপ পর্মেশরের উজ্জ্বল
মুখ দেখিতে পায়। বিশা মণ্ডলন্থ ভাবৎ কারণরাশিকে সমাক্ষ্রপে একত্রীভুত করিয়া তাঁহাকে গ্রহণ করা আপাততঃ মন্তুব্যের পক্ষে
অসাধ্য, কিন্তু ইহাই মনোবিজ্ঞানের উদ্দেশ্য
বলিয়া নিশ্বয় বপে নির্দিষ্ট হইতে পারে।

ভাগরোক্ত বিষয় সকল সহকে আনহা

যাহা কিছু বলিয়াই ভাগ নিতাত অসক্ত্রিও

সামানা সন্দেহ নাই। সকলে সহকেই

তাহা আয়তীক্ত করিতে সমর্থ হইবের।

কিন্তু আমাদিনের উন্দেশ্য ভ্রমনত ব্যা

সাধা আলোচনা করিয়া পাঠকবর্ম ও সকল

ত্রান্ধ জাতুমগুলের হুদরে মনোবিষয়ক

চিন্তা উদুল এপ্নিন্দীল করি, যে ভাগরা

আমাদিনের রাহাযা অপেকা মহতর উপারে মনুষোর প্রকৃতি এবং ভ্রিছিত ক্রম
পারে মনুষোর প্রকৃতি এবং ভ্রিছিত ক্রমপারে উদারতা উপলব্যি করিতে পারেন।

এ ক্ষণে আমাদিগের গৃঢ় ৰূপে মনো-বিজ্ঞান শান্ত্রের আলোচনার প্রত্ত হইতে হুটবে। এতাদৃশ আলোচনার পূর্বে বোধ হর আমাদিণের মন শব্দের প্রকৃত অর্থ অব-গত হওয়া,এবং মন-সম্বন্ধীয় সর্ব্বদা ব্যবহার্য্য কতি পয় শক্ষের ভাৎ পর্যা নিৰূপণ করা একান্ত আবশাক। কারণ সাধারণতঃ বিজ্ঞান শাস্ত্র সরকো, বিশেষতঃ মনেশ্বিজ্ঞান সরকো, বি-শেষ বিশেষ ভাব-নিদর্শক একাদৃশ কভক গুলি শব্দ নিৰূপণ ও তাহাদিগের অবৈধ অর্থ সংগ্রহ করিলে ভবিদ্যালোচনার অ-जिमा दिनोक्या अटमा। मक लहेता विक-বিভগু। তেতু अमारिषि य कड अस्मत अञा নর্থকর মতামতের উদ্ভাবন ক্ইয়াছে ভাকার সংখ্যা করিয়া শেষ করা যায় না। অধিকন্ত वक्र जायात मत्नोविष्यांन मत्रश्लीतं क्लान तठ-नानि बना शर्यास धकानिक इस नारे, ग्र-ज्जाः छेङ विवदत्र त्य चंदनं त्य नकानि বাবসত হইতে, ভাছা দাখারণের বোধগদ্য कर्नादर्थ अशादन विश्व इंड्रेट्ड्र

मन काशादक तरण, धर्ट विषय गर्हशा य क्र काशास्त्राण स्ट्रेग्नाट लाग स्त धा-निद्य धरणक जात्रमा दक्ष मनदक गरीत, क्र गरीतरक मन, क्र वा मनदक गरीत छ मन के उत्तर विद्यमा करतन। क्र वा क्षिक्ति क्षेत्र, स्कर् वा भाषिक, दकर वा म-किटकत बर्ग मांज विद्वहमा कदतन। এह क्षकादा मन देव कि अनाव है। नहेश हित्रकान है विकामविद्यानति मत्या वन्तु छ-निशंदि । वित्वहमा कंत्रिटन व्यक्तीयमान হইবে যে কডকগুলি গুণ ও ভাব দেখিবাই আমরা কোন একটা পদার্থের অন্তিম্ব নি-र्फिन করিয়া থাকি। তেন থাকিলেই তা-হার একটি আধার থাকিবে, সেই আধারকে পদার্থ ক'হা যায়! এই পদার্থকে অবলয়ন করিয়া সকল ভাব সকল গুণ স্থিতি করি-তেছে, এবং ইছা হইতে বিচ্ছিল হইরা গুণনাত্রই অবস্থিতি করিতে পারে ন।। আহুতি, বিস্তু, গতি, আকর্ষণাদি কডক-গুলি গুণত্রেণী একটা পদার্থকে আত্রয় করিয়া রহিয়াছে তাহার নাম জড়পদার্থ : জ্ঞান, প্রীভি, ইচ্ছানি কতকতালি গুণ-শ্রেণী অপর একটা পদার্থকে আত্রয় করিয়া রহি-য়াছে, তাহার নাম চেতন পদার্থ অথবা মন। এই দিবিধ পদার্থ হইতে বিচ্ছিন হইয়া কি উপরোলিখিত গুণ-মগুলীর মধ্যে একটাও অবস্থিতি করিতে পারে? কেহ কি অ-मार्गियथि वञ्च-विशेष चाक्र्रांज, या वञ्च-विशेष বর্ণ নয়ন গোচর করিয়াছেন, না মনোবিলীন জ্ঞান, ও হৃদয়-বিহীন শীতি উপলব্ধি করি-পদার্থ হইতে পৃথক্ করিয়া য়াছেন ? গুণ-চিন্তা মনুষা-যভাবের পকে অসম্ভব। অতএব কতকগুলি গুণরাশি দেখিলে আহ দিগকে কোন একটা গুণশালী পদার্থের অন্তর্গত বলিয়া নিন্দর প্রতীতি হয় ; তাহা मा इउता चरशोकिक ७ चत्राचादिक। এই গুণয়াশি যদি সাধারণত সদুশ হয়, ভাছা **হইলে** তদবলমিত পদাৰ্থও এক স্বভাবাপন হইনে, কেবল ভাহানিলের ৰূপান্তর ও অবস্থান্তর নিবন্ধন উক্ত পদার্থের আরুতি ও অবস্থার ভেদ হইবে, এবং তাহা ভিন্ন

ভিন্ন নামে উক্ত হইবে। যথা বায়ু ও थाखत, धरा छान ७ जन इंशानिगटक त शिल निठां विভिन्न भेगोर्थ तोष रहे। किन्न यमि ७ हेरांनिरात विरामय विराम । अर्पत প্রভেদ আছে, ভত্তাপি জড় পদার্থের সা ধারণ সমস্ত গুণ উভয়েডেই সমান ৰূপে বিদ্যমান বহিরাছে ইহা অবভা স্বীকার্য্য; কারণ আকৃতি বিস্তৃতি বর্ণ ও আকর্মণাদি জড়ীয় গুণ উভয়েতেই সমভাবে স্বিত দুক হয়। অভএব তাহারা ভিন্ন অব্য মাত্র, ভিন্ন जिल्ला अमार्थ नरह। किन्न यमि छेलि-থিত গুণরাশির মধ্যে একটী শ্রেণী অপর ख्यांणी हहेटड मन्ध्रानं करण विक्रक ७ **डि**म-স্বভাৰ হইয়া উঠে তাই৷ হইলে ভদবলমিত পদার্থদয়ও বিভিন্ন-স্থভাব ও বিরুদ্ধ হইবে ভাহাতে আর কোন সন্দেহ নাই। একাণে नहरक है दार्थ इंट्रेंट शांत य अड़ श्रेमा-র্থের এবং চেতন পদার্থের গুণ্মমন্ত যেমন পরস্পার বিরুদ্ধ ও অসদুশ-স্বভাব এমত জ-গতে আর কোন বস্তুই নহে। বাস্তবিক একটা লক্ষণ ও উভয় পদার্থের সাধা-রণ সম্পতি নহে! জড়বস্তুর যে সমস্ত গুণ চেতন বস্তুতে ভাহার সম্পূর্ণ বিরহ, এবং চেতন বস্তু অথব_া মনের যে সমস্ত লক্ষণ জড় পদার্থে অথবা বাহ্য জগতে তা-হার সম্পূর্ণ বিরহ। কেবল বিরহ নহে আ-বার বিরোধ। জড়তা এবং টৈতনা কেমন বিরুদ্ধ যেমন অক্সকার ও আলোক, যেমন ক্ৰীবন ও মৃত্যু। অতএব বাহাৰস্ত অথবা জড় পদার্গ, এবং চেডন বস্তু অথবা জ্ঞান পদার্থ সম্পূৰ্ণৰূপে অসদৃশ ও বিভিন্নস্বভাব। শরীর यकारक ७ कड़ शरार्थ, कड़ीय मम छ छन्हे क्षारक दिनामांन मुक्के इता अवर मन एक्टन श्रमार्थ, एक्टन श्रमार्ट्यत समस्य **छ**न्हे ভাষাতে শক্তি হয়। এই জন্য শরীর ও হন এই ছুই প্রস্<u>পর ভিন্ন বস্ত। যামানা যু-</u>

क्रिटक अवनवन कतिरकरे विश्वक्रव विश्वाम श्टेरव स्य महीतंत्र आहरू, मनल आहरू, किन महीत मन मटर, मनल मतीत नटर, छ-चात प्रका स्ट्रें किया। वह नहीत उ मरना विकिश्व विकर्णनार्थ भूता कालीन এक जन महा পश्चिर जत्र योका अञ्चलानिक हरेल। আচার্য্য এবং শিষ্য পরক্ষার কথো-পক्षन हहेए छ। आर्गिश पूर्ति कोशंत महत्र कथा कहि-ভেছ ? আমার সঙ্গে নছে ? শিষা। হাঁ ভগবন্ আপনার লক্ষে আলাপ করিতেছি। আচার্য্য। আমিও তোমার সঙ্গে আলাপ করিতেছি? भिषा। यथार्थ। আচাৰ্য্য। তবে আচাৰ্য্য কথা কহিতেছেন 🖓 শিষ্য। যথার্ম ভগবন্। আচাৰ্য্য। এবং শিষ্য শ্ৰবণ করিতেছেন 🏾 শিষ্য। যথার্থ। আচাৰ্য্য। আমি শব্দ দারা তোমার সংহ আলাপ করিতেছি? শিষ্য। ভগবন, ইহাতে আর সন্দেহ কি ? व्यक्तिया। व्यक्तिश कता अवः मक नगतः श्व क्वा ७ डेड्स ७करे क या ? শिया। এकरे कार्गा। আচার্য্য। ব্যবহার-কর্ত্তা এবং ব্যাবহৃত পদার্থ এউভয় কি ভিন্ন নছে ? **गिया।** जनवन! कि वनितन छेख्य करण হৃদরক্ষম করিতে পারিলাম না। व्यानार्या। वागकत श्रीप्र वागम्बळ इटेट কি বিভিন্ন নহে? কাঠ ছেদক স্বীয় কুঠার हरेट कि विजिन नरह? শিষ্। নিঃসংক্ত ভগ্ৰন্। বিভিন্ন। আচাৰ্যা। আমি ভোমাকে ইহাই জিজানা ক্রিতেছিলাম, বাবহার কর্ত্তা এবং বাবহৃত

বস্তু কি পরস্পর ভিন্ন নহে।

निया। देशाय जात गरमर कि। थार्गा। किंदु में कार्थ (इनक कि त्करण তাহার অস্ত্র হার। কাঠ ছেপন করে, না তাহার मटक योग स्टब्स नाहासाछ ध-**इनं कटत्र ?** भारतकर वार वास्त्रकात्वास्त्रका । विश्व त्यान निया। इटला मोहायाक अहम करत । व्यानार्था। करव रम श्रीव श्खरक वावशांत •করে ? শিষা। যথাৰ্থ ভগবান্। আচার্যা। সে হচ্ছের ন্যায় স্থীয় চকুকেও বাবহার করিয়া থাকে ? শিষ্য। ভগবন্! করিয়া থাকে व्याविधा। उदव कांग्रेटव्हमक अवः वांमाकत ভাহাদিগের হস্ত ও চকু হইতে বিভিন্ন ? শিখা। ভগবন্ ইহাই তো বোধ হয়। আচ্বিয়। কিন্তু কেবল হস্ত ও চকু কেন? गकल मञुपाई इन्ड भन ठक्कृ कर्नानि गमन्ड অঙ্গের দমর্ডিযে শরীর তাহাকেও তো ব্যব-হার করিয়া থাকে। भिया। ७ शवन् इंशटण णात मटमह कि। আচার্যা। আমাদিগের ইহাই তে। সিদ্ধান্ত श्रेतारक य वावश्रंत कर्डा अवः वावक्ड বস্তু এউভয়ে বিভিন্ন ? 🛶 निया। ইहाई आंगानित्तर निकास। আচার্ঘ্য। মনুবা তবে ভাহার শরীর হ-ইতে ভিন্ন ? শিষা। ভগবন্ ইহাই তে। আমার প্রতীতি र्शेटल्टि । व्यागर्या। जत्र मनूषा कि ? শিষা। তগৰন আমি জাত নহি। আচাৰ্যা। তুমি তে ইহা আছি আছ যে मसूषा महीत नटर, ता कारात महीतटक वा-বহার করিয়া থাকে। निया। हेश काठ जाहि। वार्गार्थ। मन जिन नहीतरक कि कात (कर वावरात कतिएक आहेटमा

मिया। आत (करहे नटर। আচাৰ্যা। মনই তবে প্ৰকৃত ননুবা। ছोक। दि जगरन्। मनहे अक्ष मनुषा। আচার্যা এবং শিবেরে উপরোলিখত मस्रायन इहेटड जाबदा दक्वन इहाहे निका করিলাস না যে শরীর এবং মন এ উভয়ে বিভিন্ন পদার্থ, কিন্তু ইহাও স্পার্টরপে জ-दश्छ इड्लाम (र 'भैनहें अङ्ग्रंड मनूष्।''। এই मछाँग (कमन महान्। देश इहेट ह আমাদিনের হৃদয়ে কত মহস্তাবের উৎপত্তি हरेटल्ट्स, এवर आमानिटनत धर्माटक्ये। उ আছোয়তির আশা কতই সহায় লাভ করি-তেছে। এই বৃঙ্গ দেশের হীনাবস্থ সন্তান দিলের মধ্যে ঘাঁহারা মাংশারিক স্থর ছংখে উদাদীন খাকিয়া কেবল স্বীয় স্থীয় এবং ম্বদেশীয় লোকদিগের মান্দিক উল্লাভ সাধন করিবার চেন্টা করিতেচ্ছেন, যাহাকে এদেশে ধর্মের গৌরব রুদ্ধি হয়, শান্তি কুশল প্রদারিত হয়, তাহারই জন্য ঘাঁহারদের হৃদয় বাকুল, তাঁহারাই প্রকৃত মনুঘ্তার পরিচয় দিতেছেন। ইহলোকে ওঁ।হা-**मिट्रांत रव गमल रकुन कर्के इहेट इह**, নিষ্ঠ্র খত্যাচারী লোকদিলের নিকট হইতে যে আঘাত যে নির্মাতন সহা করিতেছেন, তাহা এক দিন ভাঁহাদিগের জড়ীয় শরীরের गरिक ममाश्व हरेता वाहेत्व। काहाता নির্যাতাদিগকে, এবং নির্যাতারা তাঁহাদি-গকে বিশ্বত হইবেন, কিন্তু আমৃত্যু প্রাণ-ণত-চেক্টা-মন্তুত বে আছোন্নতি ভাহা অনম্ভ কাল সুখ শান্তি ও প্রত্নত সম্পত্তি विधान कतिदव मत्नह नाहे। महिक नातीतिक ऋथ छः८थत व्यवनाम इस, किंख भड़ीर कर्फे शांश मान्तिक नामाफिन्हे তিরকাল পরলোকে মনুবোর সম্বল হট্যা 🕆 विञि कहाः नेश्वत दक्षन मा माण्डि इहेट्ड যেন কেহই বিচ্যুত না হয়েন।

मत्या मन्यारे न संद्वाष्ट्रं अवः मसूर्यात्र मत्या मनहे मस्त्यात्रे।

গত ১৫ই জৈতি কোন্নগর বিতীয় দায়ৎ-দরিক আন্দ্রমাজে নিম লিখিত বজুতাটী পঠিত হয়।

अम्। এই नगारकत नशःक्रम এक स्टमत शूर्व ছইল! করুণাময় প্রমেশরের অপুকম্পাতে বে এতংকাল পর্যান্ত সমাজের কার্য্য নির্মিল্লে সম্পাদিত হইয়াছে ই২াতে কুডজ গ্ৰহা নেই মঙ্লময় পুরু-ব্যক বার বার মমস্কার করি। যদিচ এই সংক্ষেপ-काल मध्या कहे आरमञ्जू व्यक्तिमन्त्रीक दलाक ব্ৰোক্ষৰমে অনুৱাগ প্ৰকাশ করেন নাই, ভথাচ যে কয়েকটী যুৰ। ব্ৰংশ-কোণী ভুক্ত ২ইগছেন ভাঁহারদিগের অৰূপট-ভা্ব ও ধর্মের প্রতি লাস্ত-রিক আদ্ধা পাকাতে বিশেব তৃত্তিকর হইয়াছে। আর ইহাও আৰাদিংগর মারণকরা উচিত, ভূ-নিতে বীকা বপন করিবানাত ফল লাভ করা যাইতে পারে না, প্রত্যুত কালকে প্রভীকা ক तिए**७ ह**ेरिक। कार्ल महकाद्व मिट्ट वीक अक-রিভ ও পল্লবিভ হইরা রক্ষরণে পরিণ্ড হয়, পশ্চাং ভাষ। ফল পুল্পে সুশোভিত হইয়া থাকে। অন্তর্রে গত বর্বে আমাদিগের উদ্যোগ যে কিঞ্চিং প্রিমাণে সফল হইগ্রছে ভজনা সেই স্লেহ্নর পরম পিভাকে ধন্যবাদ করি।

ব্রাহ্মপর্য সম্বলের স্বাভাবিক পর্যা, ইহা কিছু ইতন ধর্ম নহে--অতি প্রচানীন কাল অবধি--সৃষ্টির আরম্ভ অবিগি এই পর্যা মনুষোর হুদ্গত কইরা আনিজেচে, এবং ক্রমে যে ইহা সমুদায় পৃথিবীতে গারিব্যাপ্ত হইবে তাহা স্পান্ট উপলব্ধি হইভেচে।

এই সনাতন ধর্মের উন্নতি সাধনই আদান্যকাতের প্রধান উদ্দেশ্য। এনং সেই পর্যের মূল পরদেশরে প্রীতি ও তাঁহার প্রিয় কার্য্য সাধন। এই পর্যা-বীজকে লখ্য করিয়া আনারদের সকলের একতা ও হল্প সহকারে কার্য্য করাই কর্ত্র্যা। সমান্তের লোকের কুল্প কুল বিশয়ে মতের বিভিন্তা থাকিছে পারে, কিন্ধ ভাষা বর্ত্ত্যা না করিয়া নানালের উদ্দেশ্য সাধনের চেন্টা করাই বিধেয়; নানে এই অবনী মণ্ডলে কোন ছইটা বস্তু পরক্ষার অভিদানের বায় না, ছইটা রক্ষা ছইটা জীব কথা প্রায় না, ছইটা রক্ষা ছইটা জীব কথা প্রায় না, ছইটা রক্ষা হাইটা জীব কথা প্রায় না পাণ্ডয়া বায় না। ফলভার পরনেন্দ্রের স্থানি কিয়াই এই প্রকার বিভিন্ত, ইবাডে

नगानक नकता कार्यित गेंड नकता विषय व गण्णुर्वत्या केर्ना करेट्ट छात्रा कर्माठ आज्ञामा कता बाहेराक शास्त्र मा।

থিত, যানসিক, তলের বিভিন্তা আযুক্ত অনুসারে সভ্যাতুসন্ধান পূর্বক ভদত্ত-योगी कार्या कतियात कमा शहरमध्रेत ध्वदकाक मनू-बादक वाधीनका अमान क्रियाद्वन, वह बाधीन कार ने के कहा आयानियात कथन छैठिन नटह। কেন না তাহা হইলে সভা আৰিছ ভ ও অব-লম্বিত হইতে পারে না, এবং বে পরিমাণে স্বাধী-* নতা থর্ম করা হইবেক সেই পরিমাণে সভাকে আ এয় দেওয়া হইবেক না। পরমেশ্র সভাষ্ঠপ, সভাই প্রমেশ্রের জ্যোভি, সেই সভা অৱলগন করিলে মঙ্গলের আলয়ে উপনীত হওয়া যায়। সভ্য মঙ্গলের ৰীজ, ভাহার একটী বীক রোপণ করিলে বহুপ্রকার মঙ্গল কল প্রাপ্ত হওয়। যায়। অতএর হে ব্রাক্ষভাতাগণ। আইন সকলে মিলিয়া সভাকে লক্ষ্য করিয়া পর্যের উন্নতি কল্পে বছুশীল হই। আমানের মলো বদি কোন কোন বিধয়ে মতেব আংশিক বিভিন্নত। থাকে ভজনা প্রকানের विद्राप ও विषयाम न। कदिया आभारमत सकरनत निकार्गा (व धर्मार्गात्रीक एक्षिम्या धेका धारतसन করি ৷ ঐকা শাতিরেকে কোন মহৎ কাণা সম্প্র निष्ठ कहेट्ड शास्त्र भी, धतः हुर्यन गरतात्रोक ঐক্য গুণে অভিগুরুত্তর কা্ণ্য সম্পন্ন করিছে সমর্য হয়। অভএব পর্ণের উহ্নতি কম্পে দকর বা-নোরই, দুড় ঐক্য অবলয়ন করা অভ্যন্ত আনুষ্ঠাক। বাহাতে বিশুদ্ধ পর্মা ও জানের জ্যোতি সর্বজ বিকীর্ণ হয়, দেখের কুৎসিত আচার ব্যবহার সকল ভিরে'হিভ হুইয়া সদাচার ও সভা বাবহার সংস্থা-পিভ হয় এবং লোকের ছঃখ বিনোচন ও সুখ वर्षान इश काश्रमदन् विदिका छोडा ३ ६०चे। कहा था-मामिरगद क ईवा।

হে পরনায়ন। তোমার সহায়তা ভিন্ন আমরা কোন বিষয়ে কুজনার্থা হইতে পারি না: কেবল ভোমারই কুপার উপর নির্ভর করিয়া আমর। এই শুরুত্তর কার্থ্যে প্রবৃত্ত হইয়াছি। তুমি আমা-দিগকে এরপ ধর্মাবল প্রেরণ কর, বলারা আমরা সংসারে নানাপ্রকার প্রলোভন ও বিশ্ব অভিক্রম করিয়া ভোমার মঙ্গলমরী ইন্ছার অনুপামী হই। আমরা বেন দিন দিন ভোমার প্রতি অধিক্তর প্রীতি হাপন করি, ভোমার নিয়মিত ধর্মা পালনে বল্পীল হই, এবং সকল মনুষোর বিভ চিত্তান্তে জীবন অবশান করি। এই আমার

ॐ এक्टमवाश्विकीयः

অমুষ্ঠানের আবিশ্যকতা।

২০০ সংখ্যক পত্রিকার ৩১ পূথার গর।

(গ্রাপ্ত)

যাহা- হউক মমুবোর ধর্ম তৃকা চিরকালই প্রবল, চির্কালই সে ধর্মের জন্য লালায়িত। ু সে যে কোন অবস্থায় কেন নিপভিত হউক না, অতি বিস্তীৰ্ণ নামুাজোর নমুটি ইইয়া সংখ্যাতীত লোকের উপর প্রবল পরাক্রনের সহিত আধিপতা করত, অধবা পর্ণ কুলীর নিবাসী হইয়া অলাভাবে ক্লিক শরারে অভিদীন ছংখী প্রজার নাার সময় ক্ষেপণ করুক, প্রভৃত ধন উপার্জনাশায় ছন্তর জ-ৰ্ব সকল পার হইয়া বাৰসায় বাণিজোই প্রবুত s টক, অথবা পরিবা**র-মূল্য স্থেহ, মমতা, প্রীতি**-কুপ কোমল বস্ত্ৰন উৎপন্ন অনিৰ্বাচনীয় মুখ লাল-সায় বাসস্থান গৃহকেই সার করুক, সে যদি কিয়ৎ পরিমাণেও প্রকৃতিক ধাকে ভাষা হইলে দকল অবস্থাতেই দে ঈশবের দিকে ভূষ্টি না করিয়া থা-কিছে পাবে না। ফলভঃ ইহা নিঃসংশয়-সভা যে সকল স্থানের এবং সকল কালের লোকেই ধানার জনা বাংকুলভা প্রদর্শন করিয়াছে; ভবে প্রাপাধিক এই মাত্র।

লশ্ব মনুষ্যের অস্তরে পর্মভাব সকল রোপগ জবিয়াছেন বলিয়াই দে কথন পৰ্মহীন অবস্থায় কাল যাপন করে নাই। ভাষার প্রায় সকল किश्च १८७३ धर्माकात बास्त वया। कि चकीय कि পরিবার-সম্পর্কীয়, কি সামাজিক কি রাজনীতি-विषयक ভारांत्र नकल कार्या है सम्बं मुश्किर । গ্রিছদীদিগের ধর্মাভাব ভাষাদের নিজ নিজ আচার ব্যবহারে প্রকাশ পাইয়াছিল, এবং হিস্ফু, মুসল-নান, খ্টীয় সম্পূদায়ের রীতি নীতি প্রভৃতির অভান্তরে প্রবেশ করিয়া দেখিলেও আমরা সেই ^{*}শভা উপল্কি করি। ধর্মী মনুষ্যের আতাকে এমপ প্রশস্ত ভাবে অধিকার করিয়া রহিয়াছে, যে त्म भूरबर७हें थाकूक, आत इश्रबर७हे थाकूक, কোন অবস্থাতে কোন কালে নে ধর্মাকে সর্বতো-ভাবে অভিক্রম করিতে পারে না। পাছে সে কোন मिक् मिश्रा शेला**हे**श के**ष्टत्त खाळात्र हरेटल सू**र्त গিয়া পড়ে এই জনা ধর্ম ভাহার সকল ভাবের সকল কাৰ্যোর ছারদেশে প্রেৰেশ করিয়া প্রহরীর ন্যায় অভি সভক ভাবে চতুর্দিক রকা করেন। ज्यानक गराजा बार्कि धर्माटक ममूरवाम कीवन क्रश ठटकत्र मधा विन्यू विकास खिक केन्द्रिसाटहर । खादात সকল কার্যা পরিধি রূপে সেই মধ্য বিস্ফুকে পরি-८वधिक करिया हरियाट्ड ।

धरमीत मत्क मनूरवात महम वर्गन व्यक्तभ का वि-

কেদ বোগ হইল, তথন যাহার। মনুবোর প্রকৃতি विर्मिय कहिया मर्णन करत नाहे, जाहाता, जिन कात কেহই ভাষাকে আদেশ করিতে পারে না, '' ভূমি व्यालनात गरन परनहे अर्पात व्यारमाहन। कतित्त, সাৎসারিক বিষয়ে ধর্মাভাব প্রকাশ করিবে ন।। नामांकिक कार्या भरमात अनुवर्जी शरील शहेर छ পার, কিন্তু আহলাদের কিন্তা শোক প্রথের সময় কথনই ভাহাকে অন্তরে স্থান দান করিবে না। বে বাজি কিমা যে খার্ম মরুষাপ্রকৃতির সমাক উন্নতির অর্থ জনবগত থাকিয়া ভাষাকে স্থানীন ভাবে পরিচালনা করিতে না দেয়, সে বাহিচ এবং দে ধর্মা অভি অপ্রশস্ত অনুদার এবং ক্রীণ-मभी विलिट्ड इडेरवक । एएनम बालकरक छाडांत ইছামত অঙ্গ প্রভাঙ্গ চাল্যা কাবছে ও গঙ্গত জীড়ারুরত হটতে না দিলা ভাষার প্রকৃতি विक्रमा करोब आएममा भकत श्रीलम करिएछ वाधिक कविरम, रम निकारण जिल्लाम ଓ किन्न विदीत इड्या काटन मकत ध्वकात जिलाम, माठन, वीर्या मृत्ये हरेया भएड़, ध्यावरे डांडान पात क्यान महर कार्य। भाजिक क्येतांव महोतना শাকে সা; সেই রূপ গ্রুষাকে ভাহাব প্রকৃতি অনুষায়ী কর্ম করিছে না দিলে ভাগর উলচি ও মহত্ব লাভের পথে বিষয় ব্যাস্থাত উপস্থিত করা:. हर्ग। द्वक्रदक छैल्भक्षे कल । ध्रभन कविग्न । मार्थिनात मानम थाकिटल त्रमन अवभाडी छोडीटक ध्रम जोटन (त्रोलन कतिराष्ठ कहेरत, स्थान गर्गा । शहरा अन की-ভোক্ষতা হইতে ৰঞ্চিত না থাকে, এবং সামাৰ যে -দিকে ইচ্ছা করে সেই দিকেই শাখা প্রাশালা বি खाद कदिएक ममर्थ मन्न, मनुसमात्र स्थितिहरू । मही क्रम बडाई खादर मर्क्सनित्य पानिक वर्षेत्र ए अमी कर्द्धाः १९५७ समस यन सभी मध्य दश्काः শয়াভিমুখে ধার) করিলে অত্যুক্ত শিলাম্য রঞ্ সমান স্কৃত্-প্ৰত প্ৰভাৱ প্ৰতিবাপ কৰিছে मंबर्ग हम मो, गर्हे क्रेस मनूषा क्रमप्रक छ।त स्वाद मत প্রতি সহল সহল প্রতিবন্ধ চতাচরণ করিনেও ভাহা কাল সহকায়ে সকল বাগা অভিক্রণ কবিয়, थ भरक हिन्या बाहिरवही गाहिरवा মনুৰুদ্ৰক শ্বভাৰেৰ ৰিপৱীত কাৰ্ণ। কবিতে নিয়োগ করাজে কেবল আমাদের তুলেচনাও অভ্যানতাই প্রকাশ পায়। স্থামরা কেবল ভদ্ধাবা সভবোর উমতি আেছকে ধৰাকালে নিৰ্দিট ভানে উপ-नीज इहेला ना निवात क्रमा अजावाय जाती

ধান্ম গতুষ্যে সমুদ্য আলোকে পরিবালি ক্ষিয়ারহিয়াছে। নতুষ্যের প্রতি ক্ষিয়াই বর্ণঃ। নুগত হইতে পা।। সকল কান্যই ঈশ্র-প্রাপ্তির উদ্দেশে সমাধা হইতে পারে। সামান

देववत्रिक क्रिक्त व्यवस्थि मान्य कीव्यमत व्यक्तिका किता टेश्यम् भर्गास मस्बद्ध धर्मात्र मानद्य जाना योता। वसन् बहुना जाभवाद क्षांकिकार्या-কেই গর্মের শাসমে খানিত করেন ভখনই তাঁ-দাকে প্রকৃতিক ববিয়া উদ্ধি করা বাইছে পারে। र्थाप जन्नेशन भेटक धर्मा मधकीय किया गांद्रवाहरे জার্ম্ব বুঝায়, ভবর বে রূপ জালোচিত হুইক তাহাতে আজীতি হইতে শারে যে যাঁহারা প্রকৃত শাণু ভাষারা হয়ত নিয়তই অনুঠানে প্রকৃত হই-· जरधन । किस अनुशंकतक **वर्षे नाभक अर्थ** नकरम दूरत मा। अनुश्रीम भरका सांभक अर्थ সহলে, সভাষার আখাজিক ও কভিক কিয়া বিশেষে ভাষাকে আধাবিষয় ও ৰাহিক এই চুই শ্রেণীকে বিজ্ঞ করা হাইছে পাছে। স্বয়স-ন্তরে কমা, উদার্থা, দরা, উপচিত্তীর্থা, ভক্তি, প্রীতি াপ্রভৃতির অনুষ্ঠানকে আখ্যাত্মিত অনুষ্ঠান করে, । धर्मः मारमादिकः ७ देनसम्बन्धः कार्या अस्ट श्रेतस्थात निकिछ इटेशा क्षेत्रदारमध्य असूरिक कियादि-भिरयत बाम राधिक अनुश्रीन। **व्या**धना विक অনুষ্ঠান সকলেরই 'লমুনোদিভা, কেছই ভাহার বিরোগী হউতে পারে না. বাহিক অনুষ্ঠান विस्मावर थाङ्हि जाभणि हुके दश। धहे मकज আপত্তি কত দুৱ মুক্তি সম্ভত কমে আলোচনা चन्ना गानित्य ।

বালিক অনুধান হুই প্রকার লক্ষিত বয়। গত তারা আমাদের আত্তরিক ভাব **প্রকাশক**, বখন আমাদের হৃদয়ে কোন সর্ব ও সাধুভাতের উন্যু হয় তথ্ন আমরা কোহাৰায়। ভাষা বাহিরে জাকাশ করি; নয় ভাষারা জামানের সংসারের अ का शाह डेबाज माधरमत जेशामकद्रश जननिक्र ्रवेश थात्क। अथत्याक वाक्तिक **अनुश्रीत्वत** প্রতি মনরোগ প্রকাশ করা নিতার অসকত, এ হেডুক ভাষা ইইলে মানব আকৃতির আভি বি-কৰ্ত্যৰ প্ৰকাশ করা হয়। আমালের আৰ্ত্তিক গণভাৰ সকল ৰাহিৱে প্ৰকাশ ক্ষ্নিতে লা পাইলে জাফাংদের আছি। লি নিজে**জ ও জকর্মাণ্য হটুরা** 'गएफ मा । धवर तिहे मक्क वाहित्व खेकामं क्या कि जान एवं वास्तिक काकी नरह १ शूर्वाह छ-িলিজ হটসাছে বেলিছবোর গভারকে **বীয়পথে** भारति अमेरल मा स्मर्थशास्त्र व्यानारमञ्ज्ञ स्करन छ-শ্চেটাট সকাশ-পায়। যাঁছারা মনুবাহক নীচ 😎 মতিন সাৰ পাহিচ্চাগ ৰৱিয়া **উহত ও পৰিৱভাৰ** : কুল্লে বিভূমিত দেখিতে অভিলাধ করেন, তাঁহারা य विकोश अन्यास वाक्षिक **चलुकेल अक्लाटक अनू-**চিত্ত তেপে হেলু জান করিবেন্ **এবিছাদকে** থামি ৰখন মনে ভান দান করিছে পারি না। ছবে অনুচান অনেক সময়ে বাহা। ভ্রমার **হইরা**

উঠে, ভাঁহা আমন্ত্ৰিকের আন্তরিক করেবিও প্রকাশ করে না এবং আত্মার উন্নতি সাধন ও করে না। এরপ অমুঠান অবশাই প্রেডি জনের ঘৃণার বিষয় হওয়া করিব।

अबूर्धान रममें ए काब एएटा जिल्ल जिल पृष्टे *হয়। বৰ্ষন মকল_ক দেখীয় লোকের ভাৰ নানা কারণ ৰাশতঃ ভিন্ন ভিন্ন হইয়া গিয়াছে, বখন এক দেশের অভাবের মহিত অন্য দেশের অভাব সং करवात धेकाणा नारे, यथन कारमत नहिंद चामा-দের ভাব ও অভাব ষকন পরিবর্তিত হইভেচে, **७ थन ८ मध्य अवास निरम्पर अञ्चल्छीन मकत छिन्न** ভিত্ৰ কৰেণ প্ৰকাশ পাইৰে মন্দেহ কি ? ঘণন মন্দ যোর মৰে কংগ্রামছারা খ্যাতি ও গৌরব লাভের স্পুহা অভি যাধারণ ও বলবতী চিল, তখন ডঃ হার প্রতি অনুঠানেই সংগ্রাম স্থার ভার প্রকা-শিক হইত। গ্রীক ও রোমীয়দিগের বিবরণ পাঠে এ সত্যের সহস্র সহস্র উদাহরণ আগু হওয়া যায়। যথন জ্ঞানের রাজ্য অধিকতর বিস্তারিত হইয়াছিল তথনকার অনুঠানের ভাব আর সে-রূপ ছিল না। ইংলও, ফুলি, গুড়তি গুড় मछ। इंडेदाशीय थ्योश अमुद्धात असर्वड दहम যমভের প্রতি নিরীক্ষণ করিলে সে সভা বিলাধন রপে প্রতিপর হয়। দেখানে আর দেশের যুদ্ধ मध्यक्षीय ভविषाद समनासम्बद्ध कानिवाद निर्माय छ त्म (छल्कि तमभीग्र कविमामानी अ नाहे, अवर दक् বন দেবের মদিলর ৬ সার তথায় বিরাজ করে নাঃ मिथादन मिथाइ शाहे लाक जाशहामि भगा ह বিষ্মুভ ইইয়া দিন ৱাত্তি প্লাকৃতিক বিষ্যান, ম-নোবিজান, নাায় ও ধর্মাশাক্ত প্রভৃতি ছক্ষহ ব্যক্ত **खत्र विमान्यकल आलाइन।श अखिनिविधेननां** হইয়াছে। সৃষ্টির অম্বরন্ধিত মুকৌশল ও নিয়ন সকল আৰিফ্ড কৰিয়া লোকে সেই অন্তের অস্তু গহিমা চতুর্নিকে মহীয়ান্ করিতেছে, এবং याशास्त्र मत्नाहिक मकत छित्रेजीर्व इग्न, अहेक्रल • व्यमध्या छेभाग व्यक्तमन कतिहरू वाडिवास ब्रह्मि

(অনশঃ আকাশ্য)

John deline

मश्वाम

গত বারের পত্তিকাতে জ্বীকোকদিপের নিমিত্ত-একটা ব্রক্ষোপামনা সমাজ সংস্থাপনের কথা আমর। উল্লেখ করিয়া চিলাম। আমরা একংশ অরগত হই-লাম বে কডকণ্ডলি মহক্ষরিত ব্রাক্ষের প্রথমে কোন এক ভার পরিবারে নিয়মিত ক্রপে মহিলাদিপের।
উপাসনা কার্য্য সম্পন্ন হইবে। মতদিন না এই
ক্রীস্মাক্ষরী প্রতিষ্ঠিত হইতেছে, ততদিন ইহার স্ববিশেষ বৃত্তান্ত আমরা পাঠক বর্গ সমীপে প্রকাশ
করিতে নিরস্ত থাকিব। কারণ কোন আরম্ভ তত্ত কার্য্য সুসম্পন্ন না হইলে ভল্লিষ্ড লইয়া অকারণ গোলবোগ করিলে মঙ্গল না হইয়া বরং অনিট হইতে পারে।

আমরা অভীব আফ্রাদের সহিত অবগত

হইলাম বে এীঘুক্ত বাবু কাশীখন মিত্র মহাশয়ের প্রয়ত্বে বহরামপুর নগরে একটা ব্রাহ্মসমাজ প্রভিষ্ঠিত ২ইয়াছে।

ৰাগাতড়া গ্ৰামে পাঁচনী ব্ৰাহ্ম বিবাহ সুচাক রূপে নির্কাহিত হইয়া গিয়াছে। দেখানকার লো-কদিপের ভাজ্তার ও সর্লভার কথা প্রবণ করিলে অভান্ত আনন্দ জন্মে। ভত্তস্থাকদিগের মধো অনেকেই পণা বিকেতা; কুড় কুড় পণা বীথী সং-ष्ठापन शृक्षक वया कर्पाक्षत । आहम **कीरन यो**जी निक्षां क्रिया पारकः अञ्चलात् कार्याबद्धीपि-भारत भारता योगीता जीकाश्रमी अञ्ज ভাষারা কেডাদিকের স্কিচ বিজেয় দ্রবার মূলা নিরূপণ প্রথা এককালে পরিস্তাপ করিয়াছে। কেং কিছু কয় করিজে আসিলে সরল ভাবে এক-क !' व र्राविध । छेटरे " अ स्ट्रांत अन्न भूना; हेक्हा इस এ২+ কর, না হয় করিওনা ; স্মানরা ব্রাক্ষ সামরা দর্করিনা। '' দোকানীদিবের দক প্রায় যথ। প্রিমিত রূপে রক্ষিত হয় না, কিন্ধু বাগাঁচড়ান্ত ব্রাহ্মরা একক লে এবসিধ অপরিমিত চক পরিবর্ত্ত করিয়া ফেলিয়াছে, এবং সম্পূর্ কুপে বৃষ্ধ পরিমাণে এবাদি বিহয় করে। যাহারা সকদম। করিলেছিল ভাহারা অসভোর ভয়ে মকদ্দনা পরি-ভ্যাপ করিয়াছে, এবং যাহারা কোন কারণ বশভঃ প্রতিবাদী বা গ্রামস্থ লোকদিগের সহিত বিষয় ঘটিত কোন বিবাদ করিতেছিল, ভাষারা আকা भटमीत छेशाममा कटम विवास विषयान हरेएछ । १००-काटन नित्रक एडेबाएड। विमा विदीन लाकपिटधन পক্ষে কেবল বিশুদ্ধ ধর্মের বলে এত দুর করিয়া উঠা সহজ নহে। সাধান্য লোকদিগের মধ্যে বাঁহার। कान जनस धर्मा ध्यानां कतिएक शिवाद्वन छै। हा-রাই স্পাঠ প্রতাক করিয়াছেন ভাষাদিখনে অব-লম্বিত প্রধা পরিত্যাগ করাইতে রত করা কেমন क्तिन। याँशाहा शक्तिक वहत्न नक्तिन वित्रहा थाटकत य माधार्व लाकिमिटमंत्र महन अकश्रे क्षमं आक्षारमात जाशाश्चिक जाव नकल शह्य ৰা পালন করিতে পারে না ভাষালা এইকণে वार्गाहफा जामण्ड दृश्यी, विशा-विदीन-आक्रान्द्रगद्र जनवा जनानम् करून, जाहा इहेटल वृत्तिहत

পারিবেন হে ভীছাদিপের বিবেচন। ক্রম মূলক কিলা।

अजल्लमञ्च भुकीत धर्म अकान्नक निमनती यक्षेत्रिक्तित यस्या वर्डमान् समस्य विश्वकात एव नित्रीकिक हता। अहे इहें के कदनतहे द्वाक नमः জের অনিষ্ট সাধন করা সমান অভিস্থিত। কিন্তু अञ्महस्यत्र भरभा अन्तिमक विनय्न क काञ्चादन, সত্তোর অনুরোধের জনা দীয় সংক্রণ সাধন ক-রিতে চেন্টাৰান হইয়াছেন, অপবন্ধী নিভান্ত অস-**फूल दैवत छाव ज्यवसम्ब श्रुक्त वाक्**राल ७ वाका যন্ত্রণায় সমাজবে ছিন্ন ভিন্ন করিছে গ্রোর প্রক্রিজ হইয়াছেন। কেই সহক্ত। পঠি করিয়া ও ভাত্র न्यायाञ्चलक समाहादानि व्यक्तत कतिया मना नित-মিত রূপে ব্রাহ্মপর্যোর প্রতিবাদ্ করিভেছেন, কেছ वा चुना ७ अह्यापूर्व वाका खारान कदिया, धवर সকপিত দোষ মানি আরোপ করিয়া তাপনা-দিগোর পদানত সমাম পত্রে প্রাকটিভ কলিছে।৯ন, শেবেভি নহাশরদিপের ব্যবস্বেষ্টিও আমর্ সময়ে সময়ে বিরক্ত হই বটে কিন্তু বিশুদ্ধ যুক্তি ज्ञवनक्त कतिया विस्मानमा हम ए। व्यवस्माक महा-শর্মানগের স্বীর:ভিস্থি সাধন রেটা অধিকভঃ কার্যাকর হইৰে স্থলিকিত ধর্মা পরায়ণ লোকত্বত ভাঁহাদিগের ভার ও সাধু চেন্টাম উত্তেজিত হুইয়া বরং খুটীয় ধর্মের ভব্বানুসন্ধান করিছে সমুং এক হইলেও হইতে পারেন কিন্তু অপর শ্রেণীভূক वियम खेरमाही अर्खनीड मटहामग्रामिटनंत्र काला-ষিত ও অসম্ভাব সংযুক্ত আচরণে সকলে নিভাস্ত কৌতৃহলাবিউ হয়েন বটে, প্রস্তু জলুরি। কেচই থুটীরধর্মের প্রতি প্রকামিত বা অনুরক্ত হইকে ৰা, কাৰণ সভাগত', বিনয় গাড়লজা বিবেচনা कतिएक बाकि माहकरे मक्य। मिमनदी को डानिएक श्रां आगानिराद बङ्गा वह छ। हाता याहारक সভা বিবেচনা কবিভেছেন ভাষা ইচ্ছা কয় প্রচার कत्रन, किन्न निकाकीय जेवगारह जेक हरेया छान् ও প্রতিবাসী দিগের প্রতি অনায় অভ্যানার ন। कराने, छाष्ट्रा इंडिया चे प्रतिवास निकार न। नेश्रद्धत निकडे, काङावल निक व्यक्तिम। जास कतिरू भौतिरवन मा। जामसा रकान मदलत विद्याप नामादस्य कतिएक छाहि ना, व्याप कृति उँद्राता স্থীয়া কীয়ে দোষ গুণ বিচাৰ করিছে সক্ষয় হউ-दबस ।

বঙ্গদেশে বত বত ব্রাহ্মসনাজ আছে তবসমুদ্রের কার্য্য প্রথানী বড়দিন না একটা বিশেষ
শৃখানা বড় হয় ভতদিন ব্রাহ্মধর্মের প্রকৃতভাব
সাধারণ সমক্ষে উজ্জুনরূপে প্রকাশিত চইবে না।
বেষন ব্রাহ্ম ইইয়া অসদাচরণ কর্পাপেকা ব্রাহ্ম না
হওয়া ভাল, সেইবপা ব্রাহ্মসনাজ সংস্থাপিত হ

ইয়া ব্রাক্ষ ধর্মানসুনোদিত কার্য্যে প্রবৃত্ত ইওয়া সংগ্রহণ করা কা প্রতিষ্ঠিত হওয়া ভালা। বেমন করার সহকে পৃথিবীতে একটা ধর্মাশাসন আছে সেইরপ মনুহা সহকে একটা ধর্মাশাসনের প্রণালী প্রাক্তিত হওয়া উচিত। যখন আমরা ধর্মাকে প্রভালা প্রাক্তিত হওয়া উচিত। যখন আমরা ধর্মাকে প্রভালা সমাণ ক্রেমধাে প্রাবিদ্দ করিয়াতি, সর্ভমান সময়ে ধর্মন রাক্ষরে ক্রেমধা ক্রেমধাকের ধর্মা ক্রিমান সময়ে ধর্মন রাক্ষরে ক্রেমধার ক্রেমধাকের ধর্মার ক্রেমধাকির ক্রেমধ

আলাসী ভাল্লমানের মানিক সমাকে ব্রাহ্মন-মাজের জন, ছই জন উপাচালা অভিনিক্ত ইইবেন। সমাজের নিয়মিক কলিছিল উভার। প্রদান আ-চার্যা মহাশল্পের সমকে দগোরানান ইইয়া উপালুক উপাদেশ লাভ করিবেন। এই কার্যানী অভি মঞ্চলবর্থা, আমরা প্রক্রেক ব্রাহ্ম লাভাকেই এডফশলে নিমন্ত্রণ করিভেছি; বোপ করি ঘাহার। উপাল্পিভ ইবেন স্কলেই আন্দিক ও উন্নত হাদ্ধে লাভ প্রভাগন্য করিবেন।

সম্পতি ফে্ড্অফ্ইডিয়ানাম্প সংবাদপতে "ব্ৰাহ্মসমাক্ষ" বিষয়ে একটা প্ৰস্থাব লিখিত হয়। বিশ্বন কৌ**শল ও ভাষা**মি দলনে বেপে হয় নে লেখক মহাশয় একজন প্রশাস্তাতি ও উদার :-হিত্র বৃষ্টীয়ান ইইবেন। মদাপি আমাদিগের উ দেশা সমত হইত ভাহ। হইলে 'আমুর্ উলিথিত প্রস্তাবের কোন কোন অংশ উদ্ধৃত বা অনুবাদিত করত প্রকাশ করিয়। লাঠকরগতে প্রীত করিতাম। যাহা ছউক প্রস্তার লেখক বিগত আহিন মানীয় ভব্বেখিনী প্রিকার একটা বিজ্ঞাপন অবলয়ন করিয়া গবশ্যেটের ধর্মবিবয়ক নিরপেকভার শ্রান্তি দোষারোপ করিয়াছেন! বিজ্ঞাপনে লি-পিত আছে বে "Defence of Brahmoism and the Brahmo Somaj." शुक्षक स्मित्रभेशूद्र अवर्ष-त्यने निमा**नस्य व्या**श्च १७शा गायः। स्कर्णसम् है ধিহা কে**থক এই বিজ্ঞাপ**ন ভাৰলয়ন কৰিয়া ব_ল । लग्नारक्ष्य एव शवर्षस्यक्षेत्र भग्नी विषयक निवर्णकर्जी -नरद्व नैश्वारमञ्जू विमानितः जान्यभयः मञ्जीत श्र-खक्छ क्रिकोक श्रदेशकार्छ। अवस्थिति इंडेक र। कार्राव উरक्त कराव रखेक, मामनीभूत किनाव हेकाप्तक है। व मराभार निष्णीयसम्बद्धान भिक्रक महानंदरक लिणिशारक्षम य शेवर्टमन्त्रे मध्कांस বিদ্যালয়ে প্রশ্নপ্রক বিক্রয় করা বিধি অসকভ

কার্য হইয়াছে। আমরা সর্ক্রাধারণকে অবগল করিভোছ যে যে রিজ্ঞাপন অমুসারে উলিখিজ দোষারোপ কৃত হুইয়াছে তাহা জ্মাত্মক, ভাহা আমাদিগের এক জন পূর্ব কর্মচারির অনবধানতা জন্য সংঘটিত হইয়াছে।

বিজ্ঞাপন।

আগানী ৬ই ভাত রবিবার প্রাভঃকালে ব্রক্ষনিষ্ঠ প্রীযুক্ত বিজয়রুঞ্গ গোসামী ও প্রীযুক্ত অমলপ্রিমাদ চট্টোপাধায়, মহাশয়গণ ব্রাহ্ম মমাজের উপাচার্য্য পদে অভিয়িক্ত হই বেন। ব্রাহ্ম নহাশয়দিগের প্রভি নিবেদন উক্ত দিব্দ সমাজে উপস্থিত হইয়। আগার উম্লিট সাধন করেন ইভি।

> শ্রী**প্রভাপচন্দ্র ম**গুন্দার। সক্রকারী মাস্পাদক।

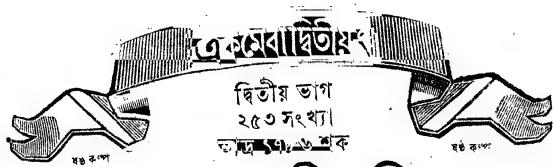
নিঘ'ণ্ট পত্ৰ।

	24!
द्रांकाभरमाई साथान	82
আত্ম চিন্তা	d. /
मत्माविकान	9
কোমগর ব্রাহ্মানমান্তের বক্তা	(g c
অনুসানের আবশ/কতা	V :
मर्याम्	ঠত

फब्दराधिनी পতिकात मूला निक्रप्र।

শগ্রিম মূলা	(ক বি	কান্তা	द्र क	IJ.)	৩
4.	1	भ्यक	শকের	क्रम्	1)	**	৩৮ ০
गांगिक भूवा				4 P			100
এক খণ্ড .			٠.			,	وأما

তিন্ত্ৰী এই তন্ত্ৰেথিনী পত্ৰিকা কলিকাতা নগৰে যোড়া-সাংকাৰিত প্ৰাক্ষসমায়ের কাৰ্যাক্ষয় হইতে প্ৰতি বাংশ প্ৰাকাশিত হয়। ১৭ই জাবণ ব্ৰিবাল সভ্ত ১৯২১ কলিগড়াক ১৯৮৫।



তত্রবাধিনীপ্রতিকা

ষ্ট জনাএকনিদমপ্রকাদীমান্ত কিঞ্মাদীজিদিদ সর্বনিদ্ধং তদেও নিডাং জ্ঞানমনস্তং লিবং অভক্তির্বয়বটোক-নেব্রিডীয়া সম্বাজাি সর্বনিয়ন্ত, সর্বাভ্যসর্ববিৎস্থাণ জিন্দ, বৃষ্পার্থিত মহিতি । একটা তিস্থান্থ প্রতি তিকটন্তি অভজ্জনতি । তামিন্ প্রতিভানা পিয়কার্য, মধনক তদ্পাসন্তে ।

কলিকাত। ব্রান্ধ-সমাজের বক্তৃত। 1

২ ফাল্কন ১৭৮৩ শক। বুধবার :

· उक्र उसक्त अग्राटः । ''

मेश्व मसुयादक मकन कीव अप्राक्त খেঠ করিয়া বিচিত্র কামনা ও বিচিত্র ভাবে পূর্ণ করিয়াছেন, এবং বাহিরেও ভত্পযোগী বিষয়-সকল হজন করিরাছেন ৮ তাহার স্থা, তাহার জ্ঞান ধর্ম প্রীতি, চরিভার্থ कतिवात अना त्य त्य विषद्यत अटतीकन, ঈশ্ব তাহা দকলই জগতে বিস্তু করিয়া রাখিয়াছেন। অন্তরে বাহিরে ঈশকের ক্-রুণার চিহ্ন প্রকৃতিত রহিয়াছে। আমারদের অস্তরে যত যত কামনা, বাহিরেও তত কা-मनोत विषय ; मिरे कोमा विषय-मकन छ-পভোগ করিয়া **সর্বস্থেদাভা**র **শৃতি ক্ন**ত-জ্ঞতা উচ্চুদিত হইয়া উচে ৷ মধুময় ধ-র্মাকে অবলম্বন করিয়া ভাঁহার এই উদার দদাত্রতে ভাঁহার প্রদন্ত বিষয়-মকল উপ-(जांग कतितन व्यामता शिरुश निश्च हुई नां।

'ধ্যানিতাং প্রশাসামা কার্যাযোগ্যহঃ সদা। নাধর্মে কুরুতে বৃদ্ধিং ন'চ পাপে প্রবর্ত। ''যে প্রশাস্তাত্মা ধর্মকে নিতা আশ্রয় কবিয়া কার্যোপায়ে মদা তৎপর থাকেন, তিনি অধর্মের আলোচনাকরেন না এবং পাপে তেও প্রবৃত্ত হন না।" যিনি কাছারে। প্রতি অন্যায়াচরণ না কবিয়া, কাছারো অ-পকার না করিয়া, অনুত বাক্য না কহিয়া, সকলেরই এতি সাধু বাবহার করিয়া, পি ভাষাতাকে ভীক্তি করিয়া, ঈশ্বরের প্রতি কুতজ্ঞ হইয়া, কার্য্যোপায়ে তৎপর থাকেন ুও 🖺 সম্পত্তি লাভ করেন; তিনি ধর্মকে त्रका करेतन, वर्ष ३ डीहाटक तका करतन-की होत भतीत भूके हत, मन गवल हत, জ্ঞান বীঘাবান্ হয়, প্ৰীতি নিৰ্মাণ হয়, আত্মা উন্নত হয়। কৃত্ৰ বিষয় অজ্জ নের উপরে लक्षा করিয়া ধর্মকে ी হারা রক্ষা করিতে চান, তাঁহারদের ধর্ম-দাধনের অভি हीन लका । अटमंत्र भूबकांत कथटन। विषय নহে: ধর্মের পুরস্কার ঈশ্বর। অতএব এই হীন লক্ষ্য পরিত্যাগ করিয়া ঈশ্রকে লক্ষ্য কর; ঈশারকে লাভ করিবার জন্য ধর্মকে সাধন কর। বিষয় তেমের শেষ

গতি নছে। ভোমার শেষ গভি, ভোমার পরম গতি, সেই অনস্ত-মঙ্গল-স্বরূপ ঈশ্বর। ভাঁহাকে লাভ করিলে আর আর লাভকে লাভ জান হয় না, জাঁহার সহিত যুক্ত থা-কিলে শুরু বিগদেও মন বিচলিত হয় না। "ব্রজনিটোগৃহস্থ স্যাৎ ভত্ত্বভানপরায়ণঃ যদাৎ কৰ্ম প্ৰকুৰ্মীত্ তদুন্দণি সমৰ্পয়েৎ।" ''গৃহত্ত বাজি ভ্রন্সনিষ্ঠ ও তত্ত্বজ্ঞান-পরায়ণ হইবেন : যে কোন কর্ম করু ন তাহা পরব্র-জেতে সমর্পণ করিবেন। " গৃহস্থ যে কোন কর্ম করিবেক, তাহা ত্রন্ধেতে সম-পণ করিবেক, দকল ধর্মকার্য্য ঈশ্বরের উ-ন্দেশে করিবেক। ভত্তজান-পরায়ণ সভ্য-থিয় এক্ষিড আন্ধ স্বাণপর ২ইয়া বিষয়-স্থার উদ্দেশে বর্গা-কার্য্য করেন না। কিন্ত ঈশ্বরকে লাভ কারবাব নিমিত্তে ভাঁহার মঙ্গল-ভাবের অনুকরণ করিয়। নিদ্ধাম এী-ভিন সহিত আহ্রছ নিংস্বার্থ ধর্ম সাধন ক-রেন। যে কিছু কর্মা করেন, যে কিছু ক-र्माकल लाज करतन, छ। शा मकल हे जेन्द-রেতে সমর্পণ করেন। তাঁহার হৃদয় মন খন প্রাণ সকল্ই তাঁহার জন্য, আপনার জন্যতিনি কিছুই রাখেন না। আপনার জন্য কেবল ঈশ্বর, আর ঈশ্বরের কার্য্য-মা-ধন জন্য এই সংগার-ক্ষেত্র। যে আন্ধার্ম বিবৃত-চকু হট্য়া ঈশ্বের অতি আপনার লক্ষ্য স্থির করেন, তিনি ধর্মের সাহায্যে স-ব্যাস্থলের মঙ্গল-মুর্তি দর্শন করেন, ভাঁহার থাতি ঈশ্বরেতে উর্জগতি হয়, তাঁহার সকল অংমোদ, সকল স্পুহা, সকল ভোগ উাহা-তেই যায়। তথনো ধর্ম তাঁহার **আশ্র**য়, কিন্তু তথ্য বিষয়-স্থাংখন লোভে ধর্ম সাধন করেন না, তথন ডিনি ভাঁছার প্রিয় কার্য্য দাধন করিবার জন্য ধর্ম পথ আশ্রয় **করেন।**

হে অমৃত-মিকেতনের বাজী-সকল ! ভোমারদের লক্ষা ভির রাখিয়, অমৃতধানে অগ্রসর হও। ঈশ্বরকে লাভ করিবার জন্য
নিঃ সার্থ ধর্মা অবলম্বন কর। মোহাজা হইয়া বিষয়-স্থাকে ধর্মোর পুরকার মনে করিও না। ধন সম্পত্তি কদাপি ধর্মোর পুরকার নহে—সমুদয় জীবন পরিশ্রম করিয়া
রাশি রাশি ধন সঞ্চয় করিলে, ভাহা মুহুর্ভের মধ্যে চলিয়া যাইবে। ধর্মোর পুরকার কেবল ঈশ্বর, ভিনিই কেবল হৃদয়কে
পুর্ণ করিতে পারেন।

হে পরমাত্মন। তুমি সহার না হইলে তোমার পথে অগ্রসর হইতে পারি না।
তুমি আমারদের সহার হও, তুমি আমারদের
ধর্মকে পোষণ কর, সংসারের মোহ-কোলাহল হইতে মুক্ত করিয়া ভোষার জোড়ে
লইয়া আমারদিগকে শীতল কর।

ওঁ একমেবাদিতীয়ং

উপাসনা!

महिक मनुस्यात य महन्त আছে—'' সেই আশ্র আঞ্রত সময় '— নেই প্ৰভু ভূত্য সম্বন্ধ-সেই পিত। পুত্ৰ স-মক্ষ--সেই সদক্ষ জ্ঞানকেই প্রকৃত ধর্মা বলঃ यात्र। शत्रायत केन्य व्याग्यं। कारश अहे ख्वानाद्याकरक मञ्च्यात क्रमत्र-मर्था নিহিত করিয়া দিয়াছেন যে বয়োরুদ্ধি সহ-কারে তাহা উক্ষ্যুলিত ও প্রকাশিত হই-বেই হইবে। ঈশ্বর-জ্ঞান কেমন স্বাভা-বিক, যেমন বাছ জগতের অন্তিত্ব জ্ঞান। वाझ अगेष आहि कि मा व विषदम रयमन কোন জাতীয় মন্ত্রাকেই সন্দিহান দৃষ্ট हरा मां, रगहे क्य के श्रेष्ठ आदिहन कि ना अ-विवरत्र अञ्चय कां जित्र कांन व्यश्म मह्भाहे অবিশাস দৃষ্ট হয় না,ছেরে মানসিক উৎকর্ষণ অভাবে নে বিশ্বাস ভিন্ন ভিন্ন জ্ববস্থাপন হইতে পারে এই মাত্র। স্বাহ্নএব ধর্ম মন্ত্রহার

বাভাবিক ভাব ও সাধারণ সম্পতি। যে স্বভাব-নিহিত ধর্ম,ইহার পরিচয় কো-থায়? উপাসনাই ইছার পরিচয়। পৃথিবীর এक गीमा इरेट भीमांखत भर्याख या या দেশ, যত নৃত্য নৃত্য মনুষা জাতি সাবিষ,ত হইয়াছে, তাহার মধ্যে অদ্যাব্ধি কোন স্থান ও কোন জাতিই এৰপ দৃষ্ট হয় নাই যথায় योहां किरशत मर्था धर्मा छा दिन गण्यु व विद्रश এবং ঈশ্বর উপাদনা প্রচলিত নছে। ছত্তর ख्यांवर्मागद-वटक य छेनबीन, यारा व्यन्व-পোতের অগম্য, বথায় গমন করিতে দ-হিফু সাহসিক পরিব্রাজকের হৃদয়ও ভয়ে কম্পিত হয়, সেখানে নিবিড় অরণ্য নি-বাসী বনা পশু সদৃশ মনুহেব্যরাও দিনান্তে একবার ঈশ্বরের নামোচ্চারণ করিয়া থাকে, এবং অপরিস্ফুট ভাষায় তাঁহার নিকট আপনাদিগের দরল ক্তজ্ঞতা ও সরল প্রা-র্থনা নিবেদন করিয়া থাকে। উপাদনাই ধর্মের মহজু, উপাদন।ই ধর্মের জীবন। যাঁহার সহিত সয়স্থা জ্ঞানে ধর্ম্মের উৎপত্তি হয়, তাঁহার সহিত সন্মিল্নকেই উপাদনা कट्ट। এই সন্মিলনে সেই সম্থ্য উজ্জুল জীবস্ত ও মধুময় হয়; ইহার বিরহে তাহা মলিন, হীন-বল, মৃতবৎ ও রস-খুনা হইয়া পড়ে। সমিলন না হইলৈ সহল নিম্ফল। যদি কেহ আৰুম পরকর্তৃক দুর দেশে নীত হইয়া চির কাল পিতা মাতার মুখ না দেখিতে পার, এবং ক্রমাগত অন্সের দারা লালিত পালিত হয়, ভাছা হইলে পিতা মা-তার সহিত সক্ষম অবগত হইয়াও মে তাঁ-शंगितक क्षींकि कृतिएक ममर्थ इस मा धदर তাঁহাদিগকে অবশাদের প্রকাসুরাগ নিশ্চ-वरे भारत व्यक्ति नमर्भग करता समझ क्रा পরম পিতা পরম মাতার সাহত ক্ষমপুর সমস্ত কেবল জবগত হইলা যদি জামরা কোন কালে তাঁহার সহিত সন্মিলিত হইতে সা

পারিভাম, তাঁহার সহখাস-স্থথ না জানিতাম, উপাসনা না করিতাম, ভবে নিশ্চয়ই তাঁ-शांदक विचाष्ठ इहेग्रा ऋथ-मदस्य नाग्रक সংসারের প্রতি, অনিত্য বন্ধু বান্ধব ধন -মানের এতি নিভান্ত অনুরক্ত হইয়া পড়ি-कांम, अवर विषम अधराम निमध इहेकांम। অভএব ঈশারের সহিত সম্বন্ধ নিবন্ধ করা যদি ধর্মা হয়, আর এই সম্বন্ধ হইতে বিচ্ছিন্ন হ্ইয়া সংসারে অনুরক্ত হওয়া যদি অধর্ম হয়, তবে উপাসনা ব্যতীত কথনই ধর্ম স-ন্তব নহে। কঠিন-ছাদ্য ৰূপট কুতার্কিকের। ঈশ্বর-বিবর্জিত হইয়া উপাসনার অযৌক্তি-কতা ও ধর্মের অনাবশ্যকতা প্রতিপন্ন कहिट्ड हाट्ट कक़्क, किन्छ आमामिरशत বিশ্বাস অন্য প্রকার। ঈশ্বর আমাদিগের পিতা মাতা। যাহার দারা তাঁহার দহিত আমাদিগের এই পবিত্র সম্বন্ধ জানিতে ও পালন করিতে পারি তাহার নাম ধর্ম, অতএব ধর্মে আমাদিগের স্বাভাবিক দায় ও তাহ। আমাদের চিরস্তন সম্পত্তি। উপাসন। षांद्रा (महे मद्यक्त; (महे धर्म छेड्यू ल इत, क्रेश्व-রের সহিত আমরা সন্মিলিত হইতে পারি, তাঁহার দৌন্দর্য্য তাঁহার মহন্তার উপলব্ধি ক-রিতে পারি, আমাদিগের ইহ লোকের ও পর লোকের পথ পরিষ্কারহয় অভএব উপাসনা ধর্মের জীবন ও মন্তুব্যের মহত্ত্ব; তাহা তা মাদিগের অতি প্রিয়তম ও মঙ্গলতম কার্য্য।

উপাদনা দিপ্রকার, ভাব বাচক ও অভাব বাচক। পরম পিতার বিচিত্র বিশ্ব-কৌশল দর্শন করিয়া এবং মন্ত্র্যের প্রতি তাঁহার অলোকিক অসদৃশ করুণা হ্র-দয়ক্রম করিয়া ননে যে প্রীতি ভক্তি ক্রত-ক্রতাদি ভাবের উদয় হয়, সেই সমুদায় ভাব ভাহার নিকট ব্যক্ত করার নাম ভাব বাচক উপাদনা এবং আ্লার মলিন্তা, বিষাদ ও পাপাদি অভাব অন্তুত্ব করিয়া হুগতি প্র- রিচ্রণের নিমিত্ত তাঁহার প্রদাদ প্রার্থনা করার নাম অভাববাচক উপাদনা।

প্রথমোক্ত প্রকার উপাসনা দ্বারা পর-মেশ্বরের মহিমা-স্তুচক ভাব সমস্ত ব্যক্ত হয়; দিড়ীয় প্রকার উপাদনা দারা আত্মার গভীর অভাব দকল মুক্ত হয়। প্রথমোক্ত প্রকার উপাদনায় আনন্দ উল্লাদ প্রভৃতি বিবিধ হাল্য প্রক্রাটিত কুস্তম-রাজি ভাঁহার চরণে প্রদত্ত হয়: বিতীয় প্রকার উপাসনায় কভিরত। অনুভাপ বিষাদ এবং অঞ্জল উপহারে জাঁহার পিতৃ-মাহায্য লব্ধ হয় এবং হৃদয়ের অভাব অপবিত্রতা প্রকালিত হয়। পারস্ক বিচার-দৌকর্যাংগে উপাসনাকে ছুই ভাগে বিভক্ত করা গেল বলিয়া কি বাক-বিকই তাহা বিভিন্ন ই ঈশ্বরের প্রতি ভক্তি শ্রহ্বা প্রতি করিব অথচ ভাঁহার নিকট আ হারে অভাব ভাপক কোন প্রকার আর্থন। ধারিব না ইয়া কি সান্তব; না কেবল ভাঁছার নিকট নিয়া প্রাথনা করিব কিন্তু ভাছার মহিমাদি বৰ্না 🗤 ভাঁহাল এ জি আন্ধা ভক্তি প্রকাশ করিব ন। ইহাই সম্রব । তহ প্রশ্ জিজাদা মাতেই ইছার অন্থকতা প্রীয় মান হইতেছে। ঈশ্বরের নিক্ট প্রার্থন। করিব অথচ ভাঁখাকে গ্রন্থা ভক্তি প্রীতি कदिव ना, ठेटा वना रयमन व्यमस्य ५८ व्यस्यो-ফিক, ঈশরের শতি প্রীতি ক্রভক্ত। প্রকাশ করিব, অথচ উছোর নিক্ট মনের পাপ ও বিষাদ প্রকাশ করিব না, আপনার সহস্র অভাব মোচনার্থে ভাঁহার সাহায় ভাঁহার ा हु अमान आर्थन। कतिव ना हेश दलां ह टमनि अटगोलिक। कि**छ अठाउ प्रश्र**श विषय अहे भ ज्माविधि किह किह विलक्ष কৃত্ৰিদা এবং স্থিত্ৰচক্ **হ্ইয়াও সামান্য** বৃদ্ধি পরিহার পুর্বাক **স্বাদ্ধ অব্যাহ** रीन क्षणांभ वाका विषया शाटकन। क्षत्रकी उत्त शहरमध्रतत छ। न ७ महिमात हिरू

দেশ, অসংখ্য জীবের প্রতি তাঁহার অনন্ত
কর্মণার পরিচমু আহণ কর, আয়ার রতি ও
রচনা কৌশল হাদরক্ষম কর এবং তাঁহার
অসীম ত্রবগাহ্য সন্ত্রাতে নিবিষ্ট হইয়।
তাঁহার মুরুমা কীর্ত্তন কর, তাঁহার আরাধনা
কর, ক্রিমা কীর্ত্তন কর, কিন্ত তাঁহার
আর্মাননা করা হয়, তাঁহার নিয়ম ভঙ্গ করা
হয়, তাঁহার সক্রেজভার প্রতি দোঘারোপ
করা হয়। এপ্রকার নীরস যুক্তি কত দূর
ন্যায়সক্ষত তাহা আমাদিগকে বিবেচনা
করিতে হইবে।

প্রার্থনার বিপরীতে সব্বদ। যা। কিছ ক্ষিত হইয়া খালেক ভাষা তিন্দী প্রধান আপত্তিতে পরিণত হইতে পাবে। : 4. है-শ্ব আমাদিলের সকল অভাব জানিতেছেন। যদি আমাদিলের মঙ্গলের জনা কিছু আব শ্যক হয় তবে তিনি অবশাই তাহা বিধান कतिर्देश, सङ्गा छ। हात्र अस्य अंतित ७ অনন্ত করুণার দোষ স্পর্শে। ভাত এব প্র र्थमा व्यापनाय महरू। २३, जेखाउउ छ-টির সকল নিয়মই চিরস্থাী ও অপরিকর্মন শীল। জীবদিগের জীবন ও স্থথের জন্য যাহ। কিছু প্রয়োজন তৎ দকলই এই সমু দর নিরমের বশবর্তী ও অনুকূল। প্রার্থন। ছারা যে সেই নিয়ম পরিবর্ত্তি হইবে ইহা প্রত্যাশা করা মূর্গত। মাত্র। প্রার্থনা করি-লেও যাহা হটবে, না করিলেও, ভাহাই হ্ইবে। তবে প্রার্থনা নিভান্ত নিক্ষন ম-লেহ নাই। ৩য়, প্রার্থনা করিয়া আমর: যে উন্নতি লাভ করিয়াছি মনে করি, তাহা আমাদিগের কম্পনা মাত্র। আপনাদিগের দাধু চেফী ও সাধু কামনা জনিত যে সমস্ত পবিত্র ভাব হৃদয় মধ্যে উপিত হয়, তাহা-একটা মনঃকম্পিত আভি-স্থতে **मिगटक** করিয়া উপাদনা কালীন আ-আবন্ধ

প্রতিষ্ঠিত করি। এবং বছু সহকারে
নেই মুনতা ভাবকে সাহিত্য স্থিত করিণত ক বিলাপত করি বুলি ই মাজের নিকট প্রার্থনা করিছাত বলিয়া আমান্তারা এই প্রকল সাধু কার্যা সম্পন্ন হইল। অভএব আর্থনা করা নিভান্ত ভ্রম; তৎপরিবর্তে জগতের হিতকর কার্যোর অসুষ্ঠানে নিযুক্ত হওয়া ভাল।

এই তিবিধ কারণ ছারা কেই কেই ই-খবের নিকট আর্থনা কার্য্যের অনাবশ্যকভা. নিক্ষরতা ও অধ্যোক্তিকত। প্রতিপন্ন করিতে **इसी कतिया बारकम। अटर्सरे छेखा हरे-**द्राट्ड य উপাদন। मन्त्र बद्ध मनुद्रात পকে স্বাভাবিক, কিন্তু উপাসনার সহিত मत्रक विष्टित्र कतिशा मिथितमध शार्थनातक সম্পূৰ্ণ কপে স্বাভীবিক বলিয়া বোধ হয়। কোন বস্তু আবশাক হইলেই আমরা লো-কের নিকট প্রার্থনা করিয়া খাকি, এবং প্রার্থিত বস্তুর মর্য্যাদা ভেদে অপ্স বা অ-ধিক সময় প্রার্থনা কারো ক্ষেপণ করি। যদি উক্ত বস্তু নিতান্ত আবশ্যক ও স্পৃহনীয় হয় তবে বার্মার হতাশাস এবং নিক্ষল হইয়া তথাপিও তাহার নিমিত্ত প্রার্থনা করিতে কান্ত ই না। বান্তবিক এৰপ ব্যবহার गल्लानं कटन आमामिटनतं च जावनिक। কি ধর্টনার জনা কি সাংসারিক জভাবের कना शटकाक ममूबादक दिन्स ममदा नै। कान ममर्स व्यार्थमा क्रिटिंग् इंटर्टर । विन अकाद्भन देश इंट्रेंट नेताब न रटान, जिन्दिसान ना दकीन व्यक्तादत श्रीत व अविदय विहर कित्री किनेहार्डन। त्व वांकि समाचारत कीन करनवह ७ बृहुर्ग करेश किका जाजा यह मूक्त कर्जु कर्जु कर्जु रञ राज रामक स्टेडाट्ड, नक्क रम बाह वर्गनिक वे जाविक ११ शिक्षा एन कि THE THE WIFTER STORES

मक् कर्रति छ छ , मकन अवर याशत शतक অক্টাকর হইরাছে সে বার্যাব অঞ্পুণ বোচনে চিকিৎসকের নিকট শান্তি পার্গনা कतिट अक्षा कि इस ? क्षेत्र भाषा भाषा अवश विविध अमामुग अववष्टांश यनि आर्थना मयु-र्यात भटका आं अं दिक इरेन, उटन कि क বল আহা বৰ্ষ সময়ে অসাভাবিক ? পাপ বশবর্ত্তা হতভাগ্য ব্যক্তি কি ঈশ্বর প্রসাদে ধর্ম স্পৃহ হইয়া চির দিন অনুতাপিত হৃদয়ের অস্থ্য প্রানি স্থান্থই বিলীন করিবে ১ তা-হার বিষম শোক ভ্রুৱে যে শান্তি বারি প্রা-র্থন। তাহা কি কেবল মূগতা ও অরণা-রোদন माळ ? रम तमशीन अवः क्षुधार्क रम मसुर्याक মিকট প্রার্থনা করিরা আহারীয় বস্তু লাভ করত তুপ্ত হইতেছে; গে শুদ্ধকঠ ত্রাণ্ড त्म टिक्को ७ व्यर्थिन। महकाद्व ट्वांटकव इन-য়কে দয়াত্র করত জাল স্বারা ভূফা নিবারণ করিতেছে; রোগী প্রার্থনা দারা স্বাস্থ্য লাভ করিতেছে, হা। কেবল অন্থে পাপীই कि প्रतस्थितंत्र बांदका उक्तिविहीन, महास-বিহীন থাকিবে: ভাহার প্রার্থনা বাক্যে কি মতুষ্য কর্ণপাত করিবে না; অসীম বাঁছার करून। महे स्वह्मत अहरमधत व्यविकि তাহাকে এক মৃতি ভিক্ষা দান করিবেন না ? ভাহার মনের অভাব ননের ক্লেশ কি দে স্বভাব বিরুদ্ধে মনেতেই নিহিত করিবে ? धमन कथन इट्टेंड भीत्र ना। न्तः धानाः **रात्रीं छ्क्न कटनवज्र म**तिटक्रव मक्तांण श्रव বারদার আবণ করা যায়, বরং ক্র্যাভিত্ত মলিন-মূর্ত্তি ভূষণ হুর ব্যক্তির হাহাকার গুনি व्यन् कता यात्र, वतः श्राष्ट्रिक्माविभक्ते বিক্তকার মুষ্ধ রোগীর অক্রপুর্ণ তাপোজি কর্ণ গোচর করা যার কৈন্ত ইশ্বন বিরহিত, श्रीनियुक्त, त्माक-मीर्ग भाशीत दिमानिक বৰ্ণৰ ও অনুভাপাতা দেখিলে গ্ৰয় রে। नम कितिहा छ। ठे। यत्रक सबस शहर

পিতা কি তাহার স্থভাব নিংকত প্রার্থনায়-ব্যার হইতে দুরীকৃত করিবেন ? হৈ দরল হার হইতে দুরীকৃত করিবেন ? হৈ দরল হাদর মন্ত্রমাই ইহার বিচার কর।

কিন্ত প্রার্থনা স্বাভাবিক হইল ভাহাতে
কি ? যুক্তি পর হল্ল তার্কিকের। বলেন যে
ভোমার ভাব-পূর্ণ ভাষার মর্মা গ্রহণ করিতে
গারিলাম না। প্রার্থনা যদি আবশাক না
হয়, তাহা যদি সমাক্ রূপে নিম্ফল যুক্তি
বিরুদ্ধ, কণ্পনা মাত্র হয় তবে ভাহা স্বাভাবিক হইল ভাহাতে কি ? পুর্বে প্রার্থনার
আবশাকভা প্রমাণ কর।

ভাল, ঈপর আমাণিগের সমস্ত অভাব জানিতেছেন এবং সেই অভাবের উপযোগী সকল বস্তু বিধান করিতেছেন; কেবল বিধান করিতেছেন এমত নহে কিন্ধু যাহাতে প্রদত্ত বস্তুর ছারা আমাদিণের সমাক্ মঞ্লের উৎ-পাত্ত হয় ভাষারও অভ্রায়উপায় অধ্বরন করিতেতের। ইয়ত ভাষবশতঃ আমর। শমরে দময়ে এমন কত আভাব বোধ করি. কত বিষয়ের জন্য খার্থন। করিয়া থাকি, যাহা আমাদিগের প্রেফ ভরানক অমঞ্চল-তিনি এবস্প্রকার অভাব ও এবস্থা-কার অর্থনা জ্ঞান্ করেন, এবং ভারাই বিধান করেন যাজ পরিণামে আমাদিশের मर्विधिक मञ्जलमाग्रक हरेटव । उटव (कवन মন্ত্রের অভাব অবগত হইয়া ভালা মোচন ক্রাই ঈশ্বরের উদ্দেশ্য নচে, কিন্তু তাহার গনাক্ মঞ্চলের জনা উপযুক্ত অভাব মোচন করাই ভাঁহার উদ্দেশ্য। একৰে আমাদিশের पिथिएक एहेर है ये किएनत कर्ना कर्ना कर्ना ভাবের জনা উহোর নিক্ট পার্থাদিরের প্রা-পনা করা উচিত। 'অন্মরা ধন ছানের জন্য डै। रात्र निक्र वार्थमा कति मी जिन्हा मारमातिक विश्व विशेष इहेट उसति इसे रात जनाव डीशंत निकार शार्यना कहि मा

धामण विशेष गंदाब क्रिया मकत कार्य थि को मन मन्त्र के बाद श्रामक के कि **७९ गर्माङ्क तम् १५ कि विश्वासम्बद्धाः** रत कथनरे निट्वम मा किन्द्र कामानिएनज र्य गम्छ स्टर्मत अन्ति अविविश्वह के हाउ निक्षे आर्थना कतिया थाकि। अर्थन किए हरेबाटक एवं **अच्छा এकक**ाइन मसूरकात শভাব দকল মুক্ত করেন যখার। ভারার দৰ্কোংকৃষ্ট মঙ্গল সংঘটিত হইরাখাকে। অতএৰ বিচার করিতে হইবে যে যে ধর্ম-ভাবের জন্য সামরা তাঁছার নিকট প্রার্থনা করি, তাহা প্রার্থনা ব্যক্তীত পরিতৃগু চইলে बसुरवात अधिक मक्रम इस, कि धार्यना मः যুক্ত হইয়া মুক্ত হইলে ভাহার অধিক নস্থল সংসাধিত হয়। ইহা একটা নাধারণ সভ্য रंग यकि कान वज्ज व्यार्थना पाछीज लक्ष इध, ওবে তাহা ক্রতজ্ঞতা বাহীত গৃহীত হয়। যে রাজতনয় জনাবধি সাংসারিক কোন প্র-কার অভাব অমুভব করে নাই, তিরকাল সম্পত্তি ও সচ্চলতার ক্রোড়ে ক্রীড়া করিয়া व्यागिट हा एवं यान व्यादमाक कांटन छे। পযুক্ত পঞ্চিদ বা উপযুক্ত আহার প্রাপ্ত হয় তাহা ফটলে সে স্বীয় অন্নদাভা পিতা মাতার প্রতি কিছুমাতা কুভস্কতার কি খ্রীডির আধিকা অনুভব করে না, বরং ইচ্ছামত ত্রবা না পাইলে তাঁছাদিলের क्षिक दिनका असे हरेगा **उटें । कि**छ যদি কোন জুংখী সন্তান চির্দিন আন্তর্বৈত্তর व्यक्ति वह कर्षे भारेश भितिरम्द्य शीव পিতার পরিশ্রম-লক্ষ্ম হইতে কিঞ্ছি স-क्वडा बाड करत डर्स त्मरे निकास केडि তাহার কুভজভা ও প্রীতি কেমন উল্লেখ্য रहेट थार्क ता किस्सी बहुनव निक्रिया गडना जनकारण विश्व वर्ग अवेद आधुन PISTA DACE MANUS CONTRACTOR

स्थित अलादगरक पात्रक स्थाप प्राप्त त्माचन कविटबन, काराव निक्ये दकान अ-जारदर जना थार्थना कहिएक मा स्टेड; শ্বস্তালন ও পরিপাক কিয়ার মাায় যদি ধৰ্মাতাৰ পূৰ্ণ হওৱা স্বভাবসিদ্ধ হইত ভাহা •हरेल कि धर्मनार जत जानून मर्गाना ए আদর থাকিও, না তল্লাভ জনিত উপযুক্ত ভক্তি জ্বদা কৃতজ্ঞতা সামাদিগের দূবিত হুৰদেয় সমুখিত হইত? তাহা হইলে কি আমরা কেশ-সহিষ্ণু ছংখী সন্তানের ন্যায় অমূলা ধর্মরত্ব লাভের জনা পরন পিতার নিকট চিরক্তজ্ঞ ও চিরামুগত ভৃত্য হইয়া থাকিতাম, না সমাদৃত উদ্ধত-সভাব রাজ-তনয়ের নাায় তাঁহার অপার করণাকে কর-ণাজ্ঞান না করিয়া অক্তপুণা, ক্রতন্ত্র ও পা-পাচারী হইতান ? ইতাতে কি আমাদিগের সকাশিক মঙ্গল ও উন্নতির উৎপত্তি হইত ? একণে আমরা বছ ক্লেমে, বছ পরিঅমে, বহু প্রার্থনার হারা যাহা কিছু লাভ করি-ভেছি ভাষাতে কুতার্থ ইইতেছি। তই ধৰ্মের অভাব নিগুড়তরৰূপে অনু-ভব করি, সেই অভাব পূর্ণ করিধার জন্য যতই কঠোরতর পরিজান করিয়া থাকি, আ-প্রমার চেক্টাকে বিফল ও নির্থক দেখিয়া वर्ष्ट्रे विश्वाम्पूर्व अन्द्रत्र मेश्रद्रत्र निक्षे धार्थना करि, अर्थ मिट धार्थनात माकार कावका रज्हे यामानित्वत साधुतरकण्य निकृत्ये, जर्जे भाषां मित्रात्र क्षमद्र धर्मात र्गोत्रत ७ मध्रतका प्रामुख रहा धर्म-तल लक ,हर, ने बदरद थिए इच्छार व विचान गरण, बीहि बार । त्य विवस्तत सना यह दिया नहिन, तारे नियक गांच अहिता कर बीट AN, TO THE WITH SECT. USE VI-THE PORTON CO PROPERTY OF FARE FOR eting, with city of the distance pro-

মরা অতি পরিতান সহকারে ধর্মকে লাভ করি তবে ধর্ম আমাদিগের নিকট অতিশর শ্রের নারাবো তাহা লব্ধ হয় তবে তাঁহার শ্রের নারাবো তাহা লব্ধ হয় এ কাণে হে সরল হাণ্য় মনুষা বিবেচনা কর প্রার্থনা আবিশাক কি না। বুদি ধর্মেতে প্রিত্তাতে, ঈশ্বরের প্রতি প্রীতি প্রাক্তা ও ক্রতভাতাতে আবিশাক থাকে, তবে প্রার্থনা-তেও আবিশাক আছে, যদি নেই সমস্ত অন্নার্শাক ।

কিন্তু যুক্তি প্রিয় তার্কিক মহাশয় ইছা-তেও নিরস্ত নাছইয়া শিক্তাদা করেন যে বাদি প্রধান পরমেশ্বর প্রতিষ্ঠিত নিয়মাবলীর বি-রোষী ছইল তবে তাহা কি প্রকারে কলবান্ হইতে পারে? যখন সমুদ্র মধ্যে তোমার ত-রণী জলমগ্র হইয়াছে তথন কি প্রার্থনা ছারা তুমি জীবন লাভ করিতে পার, নামদি রাজি তোমাকে আক্রমণ করে তবে প্রার্থনা ছারা তাহার কবল হইতে নিজ্তি পাও? কদাচ নহে। যাহা অপরিব্রনশীল ঈশ্বরের নির-মের অদক্ষত তাহা তোমার প্রার্থনা ছারা কি

কিন্ত তার্কিক মহাশয় আমাদিলের প্রাথ্যার উদ্দেশ্য বিচার করিতেছেন না। তা।
মার উন্নতির জনা প্রার্থনা যে প্রমেশ্বরের
নির্ম বিরুদ্ধ তাহা কি রূপে নিশ্চিত হইল:
যে প্রার্থনা শারীরিক ও বাহ্নিক অভাব
নোচনার্থে কড় নিশ্বের প্রচলিত প্রথাকে
বিপর্যান্ত করিতে চালে; যে প্রার্থনা জনদীশ্বরের জগৎ সম্বন্ধীয়,গুড় তুজ্জেয় কৌশলের প্রতি দৃতিপাৎ না করিছে ক্লম্মানী
বাহ্নিক অভাবে অন্থির চিন্ত হইরা তাহার
অগরিবর্তনশীল পরিশুদ্ধ ক্রিতে চাহে, তাহা
স্থান্ত্র রিক্ষান করিতে চাহে, তাহা

मध रहेबांब गयस केहर पत्र नेतासन का उ मानव कूटन उभनी ह स्रेबाई जना विश्वतद प्रभुद्धांव कटत्रम मा, खंबर अंशीनक हिल्ला-জন্ত কবলে নিপতিত হইয়াও ভিনি ঈশ্বর महरन देशांत शृष्ट्रा कामना करतन ना, किन्ह गक्त अकात माध्यातिक व्यवस्थात्र, कीवरन व्यवश मृङ्गाद्ध नित्रद्भका वाक्तिया अकंभन्ने हिटल তিনি নিয়ত তাঁহারি মঙ্গল সংকল্প সিন্ধির कना वार्थना करतन। जित्रात्त याहा देखा তাহাই ভাঁহার প্রার্থনা; সে ইচ্ছায় যদি মৃত্যু হয় তাহাও তাহার শিরোধার্যা, মে ইচ্ছায় যদি জীবন সংরক্ষিত হয় তাহাও তাঁহার শিরোধার্য। কিন্তু আত্মার উন্ন-ভিত্ন ক্ষনা প্রার্থনা অন্য প্রকার। প্রাত্মার উন্নতি এবং ধর্ম লাভ যে ঈশ্বরের অভিল-ষিভ ভাহার আর কোন সন্দেহ নাই। তাঁ-হার প্রেরিত ও প্রতিরূপ মনুণা ইন্য়াইত त्य भन्म तुष्कि जांहाई हेहांत माक्ता निटल्ट । পরস্ব এই উরতি এই ধর্ম লাভ কিবপে হুখতে পারে? ধর্মের জন্য একটী গুড় আঞ্জরিক ভাব বোদ হওয়াই ধর্মের মূল। যাহার ধর্মের আভাব বোধ হয় নাই সে कथनहें धार्मिक हहें एड शांद्र मां, य राजि আপুলার পাপ মালনতাতেই সন্তুট্টিত্তে जदन्ति करत. जेश्रदत्त कमा याँदात ऋगग्र वराकृतिक इस नाहे, मंधर्म लहेशा कि শরিবে, ঈশ্বর:লইয়া কি করিবে? ধর্মী কি এড়, ঈশ্বর কি রত্ন যে ভাষার পরিচয় ায় নাই ঈশার ভোষাকে দশন শেন না, কারণ ভীহার প্রতি ভাহার কিছু মাত্র আকর भार यमि तम अभाषादम जीहरिक बाख हम তৰে অনায়াদে তাঁহাকে পরিত্যাক্ত করিব। गार आर्थना कति जींगे था थ रहे, देशहे a कगट रेशीक त्नत निवस मिनि स्नि उठ भन चार्ड बरन जानि छर्द साम स्टेन्ड তন্য কেন চেডা করিব, কেন পরের শীক্ষ

र्गातः प्रतिश्रामात्रः अस्तर्भक्रस्याः सार् यतां भारत यात्र क्या आयात्र अवर अभिव পরিবারের জীবন সক্ষীপর ইইয়া উঠিতে रेश निक्श कार्यक या कि छ। इंडेटबर्ड जामि जर्बत रुका त्नि काहा इहेटलहे আমি সমুদ্য শরীর মন ক্ষা করিয়া ভাষার জন্য পরিশ্রম করি, লজ্জা ভয় ভাগে করিয়া भर्य भर्य चारत बारत जिका कतिए के ঠিভ হই না। केनून कार्यात थन लाख করিলেই আমার কার্য্যে আইনে, আমার উপকার হয়, केन्स भवश्वाय मसूबादक धन नाम कतिदल हे व्यामानिदशत भूगा हत। शतिः অম ও প্রার্থনা উপাক্ষানের নিয়ম, আভাব উপাক্ত নের ভূমি। ইহাই এই পৃথিবীয় অগওনীর ব্যবস্থা। যদি ধর্মোপাজন ক-রিতে অভিনাৰ থাকে, তাহার জন্য যদি निर्शात भीन शीन शहेशा थांक, उद्भव किया ও পরিশ্রম করিতে হইবে, এবং সেই স্থানে ভাঁহার নিকট প্রার্থনা করিতে হইবে যে ভাবে, যাঁহার নিকট ভাহ। প্রাপ্ত হওয়া যায়। চেকী না করিয়া, প্রার্থনা না করিয়া উপাক্তন করা ছুংখী লোফদিগের পক্তে অসম্ভব, তাহা পুথিবীতে অবৈধ, ঈশ্বরের নিয়ন বিরুদ্ধ, কুতাপি কোন বিষয় ভাহার मुक्तील मुक्ते दश ना। यादामित्मात धर्मात অভাব নাই, প্রোজন নাই, ভাছারাই প্রা-র্থনা না করিয়া তাহার অধৌতিকতা অনু-সন্ধান করে,কিন্তু ভাহার অভাবে যে নিউচ্চি দীন হীন দরিজ সমান হইয়াছে, গাটুর ভারে তাহার জন্য ভিক্ষা পর্যান্ত করিতে याहात मंद्रकाठ ना हुछ; महे ने स्वरत नि कटि धर्म-िका आश्च इत्र जदः महे महिन একার আত্মাতী বুক্তিভকে ব্যৱহা হইরা मिक्क दम कीवरमत्र मार्चकर्त परखीत करते। चित्रक विश्वपनाः कार्यः हे **क**रवतः निवस्ति COCK, VINTIES COME ENGINE

मा केत्रकन केंद्रित मित्रम फर्क कहा इस्र

आर्थना विषयक जुजीय आंशिव अहे दत रेहा दक्दल सटनत कण्णना । हेका चाता ८ग क्रमणि इश छाहा ध्यक्रण क्रमणि नट्ट, কেবল মসুখোর মনের ভাবমাত। সমুখোর দীয় চেটা দারা যে পবিত্রতা লক্ষ হয় সে ভাছাকে পাৰ্থনা জনিত পৰিত্ৰতা মনে করে। অতএব এই ভ্ৰমাত্মক প্ৰাৰ্থনার ভাব যত শীঘ্র মনুষাদিলের মধা হইতে নিরাক্ত হয় তত্তই মঙ্গ। উলিখিত প্রকার আপত্তি তাঁহাদিলের ছারাই কৃত হর যাঁহারা নিজে প্রার্থন। কার্য্যের অনুষ্ঠান না করিয়া কেবল ভাষার অযৌক্তিকতা প্রতিপন্ন করিছে ক্ল-जगरकण्ण इहेशांट्यन। व्यार्थना काशांटक বলে, তাহার কি ফলাফল ভাহা ভাঁহারা জ্ঞাত নহেন, হইতে ইচ্ছাও করেন না, কেবল তাহাদের 'বেধি হয়' ইহা সম্পূর্ণৰূপে স-कत्नत्र भटक अकार्या-क्त, अञ्चर उँ। श्रेता কোন অকারেই তাহার যুক্তিযুক্তা উপ-লবি করিতে সমর্থ হয়েন না। ব্রিন্ত এত-দবস্থায় তাঁহাদিগের প্রতি বক্তবা এই যে আর্থনা কার্যোর প্রতি দোবারোপ করিবার পুর্ব্বে ভাষ্। একবার পরীক্ষা করিনা দেখুন, শক্ত প্রার্থনার যাহ। যাহা নিয়ম ভাছা পা-तन क्रमन, उरमाखु उपनि थार्थनात्र कतात्क ভাঁহাদের কম্পনা লাত্র বোধ হয় ভবে খেন ভাষারা ইহার অপবাদ রটনা ক্রিতে প্রবৃত্ত स्ट्रान, नजूरा डाहा मिलाइ आशि थाहा स-रेटि शादि मा। कथिर बाद्य कक्षम मिड জন্মত্ব ব্যক্তি কোন বন্ধু কৰ্ত্ক জিল্ঞাসিত महेत्राहिन त्व त्नाहिङ वर्ग किवल ? त्य विद्याज काम दिसमें मा कहिमा विकल (य त्या-विष्य वर्ग लाहि क्लिक स्थानः आयात्र '१६वार रके हेर जोता सन्धि नाम सन्धि सर्था । रणके। ज्यासा स्वरूपोनिया प्राप्तक तारे

क्ता । के शांतरभन्न "द्वाध इत्र" व्यार्थना कण्यन। सीज अध्यक्षिम् स्व कि क्षेत्र कार्या कार्या दकान काटन छोड़ा यहां अ अवगण नहन। द्वीशंक्टिशत ''(वाका श्रातक स्वामीकिशत नि-क्षे किवन अविदिष्ठमा अध्यानिता श्रीतिहर মাত্র। পরীকার ফল কেবল পরীকার ছা-রাই অনুভুক্ত হইতে পারে। নাধুদিগের অমুথাৎ প্রত হইয়াছি যে ঈশবের নিকট প্রার্থনা করিলে ধর্ম লাভ হয়। ইহা তাঁহা-দিগের জীবন-জাত প্রীক্ষা-জাত সভা, व्यामाताल मानाना कीवरन हेहात निकास अ-मान थाश्च इहेबाहि। यथकात्म पामि माऊ-বিয়োগ-শোকে মৃতকত্প হইয়া ঈশ্বের শর-ণাপন্ন হইরাছিলাম,একান্ত মনে যথন ভাঁহা হ-ट्रेट मास्त्रना ७ देश्या व्यार्थना क्रिश्नाहिलाम, তথন আনার আলা পুনজীবিত হইয়াছিল, আমার অপক্ত শান্তি প্রত্যাগত হইয়াছিল; নেই অবধি আমি মহত্তর কোমলতর জননী প্ৰাপ্ত হইয়াতি, যিনি আমার জননী এবং क्तरज्त कर्नी-हेरा कि जांगात जम? যথন পাপে গুৰুভাৱাকান্ত হইয়া একপাৰও গমন করিতে পারি নাই, সংদার বখন অ-রণাবং বোধ হইয়াছিল তথন তাঁচার নিকট ক্ষা ও থদান ডিকা করিয়াছিলাম; আ মার আখি নুতন ক্রিজি নুতন সাহ্য নুতন ভাব লাভ করিয়াছিল, সেই অববি আমি অংশে অংশে তাঁহার পথে অ্ঞানর হই-তেছি, ইহা কি আমার অম ? ভ্রালভার দ-মর পার্থনা করিয়া বল পাইরাছি, অজ্ঞান ও मःगातीकाकात मरधा, यहकारण आंगात आहा। ক্ষিপ্ত অন্ধ-প্রায় हरेग्राहिल, उथनड প্রার্থনা করিয়া বিশুদ্ধ সত্য ও জ্ঞান প্রদীপ लांच कतिशाधि, देश कि लामांत सम ? এई गक्रण यानि सम्हा, ज्दा मका कि ? এक वात मग्न, पूरे वात मग्न, यन वातरे विमीच वि-योग भून मत्ना काशत निक्षे शार्थना कति,

ज्ञ वादरे भून इन्ट्र किब्रिश भागि, ज्ञ বারই ভাহার করণা, তাঁহার পবিত্রতা, তাঁ-হার মঞ্জভাষ, গাঢ়তর রূপে আমার জীবন भुखदक मुच्छ रम। हो! हेरा यनि मिथा। रह उद्ध आंगांत कीरम मिथा। जब निथा, क्रनाष मिथा। मकल हे मिथा। क्रियल प्यथ-র্ঘাই সভা। ভূষা কিরণে যেমন অঞ্চলার গৃহের বন্ধ কবাট উন্মুক্ত হইলে রৌক্র রিশ্র তাহার সকল নিভূত স্থানকে আলোকিত করে, আমার অফ স্দয় সেই রূপ প্রার্থনা দারা উল্মাটিত হইলেই ভাঁহার স্বেহ রাশ্ম তাহার সকল প্রদেশকে উজ্জুল করে। এই সালোক এই উজ্জুলতা আমার আশা এবং **টেন্টার বহিভূতি, আনি মনে করিলে ই-**ছাকে নিবারণ করিকে পারি না। সময় আমার ছব্বিত্ত হৃদয়ের ঘোর অহ্বকার এবং লৌহ কৰাট ভেদ করিয়াও সে জ্যোভি প্রকাশ পাইয়াছে। অভএব হে সরল জ্পয় সভ্য জিজাতু মন্তব্য! প্ৰথিনা কণ্পনা নহে, জন নতে, মানের ভাব মাত নতে। ইহা প-র্মাতার সহিত আত্মার সন্মিলন, ইল ড্-ত্যের জিক্ষা, প্রভুর দান; ইহা ধর্মের, পর-লোকের, শান্তির সধল। হে দর্শ মনুবা জাণাত্তে কখন ঈশবের নিক্ট প্রার্থনা ক-तिएक वित्रक श्रेश ना।

উপরে যাহা কিছু উলিখিত হইল, প্রা-র্থনা কার্য্যের নিষেধ থ গুনই তাহার উদ্দেশ্য, ভবিষাতে এ বিষয়ের বিধি সংস্থাপন করি-ভে চেম্টা করা যাইবে।

गत्ना विकान।

সন। মন শক্তের প্রকৃত অর্থ নির্দ্ধারিত ইইল। মনের প্রকৃত অর্থই মদাপি মনুবা হয় তাবে "আমি" "আরান" না "আআ" শতের মনক্রেই বুয়ায়, শরীরের কিঞ্মিন অনুভূত হয় না।

चाटनकिक, समगानिक, निहादन किर । मदमब कान किराप ? कान विविध चारशकिक अभिन्नारशकिक व्यव विजया-পিক। স্ফু জীবের প্রকৃতি সময়ে বিশ্ব गःगात्रस् विविध भगार्यत् (य कान करम তাহাকে অপেক্ষিক জ্ঞান কহে। আগ্ন স্ট শক্তবির বহিভূতি বিশ্ব কার্য্যের স্বভন্ত আদ্যন্ত জ্ঞানকে অসমাপিক জ্ঞান কৰেন পুর্বেই কথিত হইয়াছে যে মনুষ্ঠোর ভারত জ্ঞানই তাহার অহুতি সাপেক। 'যে পরি-মাণে মনুষোর শারীরিক বা মানসিক হুতি সেই পরিমাণে তাহার জ্ঞান। হয়ত এমত কত থকার জান আছে যাহা উপযুক্ত হুলিঃ অভাবে দে জানিতে পারিতেছে না, স্বতরাং তাহার জ্ঞান আপেফিক। কেবল ঈশ্বরের জ্ঞানই অসমাপিক ও নিরপেক। তিনি আমাদিগের ন্যায় স্বাভাবিক ইন্দ্রিয় হারা, इंखि बाता,मीमांवक अगमाख नरहन। ममल्ड বিশ্ব হইতে তাঁহার মন অনতভাণে ত্রেষ্ঠ, তিনি তাহার আদাও পাভাবিক ক্ষান-ক্রিয়া দারা এককালে জানিডেছেন। তাঁহার জান নিরাপেকিক ও অসমাপিক।

পরস্ত আপেকিক ও অসমাপিক বা
নিরাপেকিক শকএয়ের মধ্যে যে ইডরেছর
সম্বন্ধ আছে ভাহা যে কেবল ল্ডান-কার্য্য
উল্লেখে সংলগ্ন হয় এমত নহে। ভাহাদিগের অর্থ বোধক আবশ্যকতা বিবিধ অন্য
দৃশ বিষয়ে কিরপ উপলব্ধ হয়, মনোবিভ্রানের ভবিষ্যদালোচনার ভাহা শাবাই
প্রতীয়মান হইবে।

গুণ, ভাব, এবং মূল-বন্ধ। পুর্বেই কথিত হইরাছে যে কতক্তনী গুণ লেখিয়া
আমরা কোন একটা পদার্থের আত্তনির্দেশ করি। আফ্রন্টি, বিজ জি আক্রন্তান
গুণ উপলব্ধি করিয়া সামরা আন্তর্গ নাজিয়
ভাবিকে পারি। ক্রিক জান নাজ

चलतं कठककरी खनवाडा चामता गटनत পতির জানিতে পারি। জত্তান বা মন कान वर दिविष अकात अवकात्मा जनवि माज । ऋण्यस मर्मन कतिरम भागता छ।-ৰার আকৃতি বিস্তৃতি বৰ্ণাদি ভিন্ন সার কি-हूर तिथिएक शारे ना ७ कानिए शांति ना, এবং চেতন বস্তু উপলব্ধি করিলেও তাহার জ্ঞান প্রীতি ইচ্ছাদি ভিন্ন আর কিছুই জা-নিতে পারি না। কিন্ত এই দিপ্রকার গুণ-শ্রেণীর অন্তর্গত বিভিন্ন বভাব ছুইটি পদার্থ षाट्ट। यहे इरेंगे भनार्थ वनि ३ षामता চকুষারা দেখিতে না পাই, তত্রাপি ভাষাদি-গের প্রতি আমাদিলের অবশুনীয় বিস্থান আছে,কারণ ভাহ। হইতে বিচ্ছিন হট্য়া গুণ মাত্র অবস্থিতি করিতে পারে মা। এই ছুইটা পদার্থই বন্তর মূল-দত্ত্ব (Substance)। ইহা আমাদিলের জ্ঞানের বিষয় নহে কিন্তু বিশ্বা-সের বিষয়। কেবল উপরোলিখিত গুণ (Property) আমাদিগের প্রত্যক্ষ দর্শনও स्ङातनंत विषय।

যে পদর্থে যাহা কিছু দক্ষিত হয় ভাহাই ভাহার ভাষ। প্রতি দিন মনের মধ্যে দহস্র চিন্তা, এবং দহস্র ইচ্ছা উদয় হই-তেছে, এই ৰূপ প্রত্যেক চিন্তা ও প্রত্যেক ইচ্ছাই মনের এক একটা স্বতন্ত্র ভাষ (Phenomenon)।

শক্তি ও রুত্তি। এক অবস্থা হইতে অবস্থান্তর হইতে পারিবার ক্ষমতার নাম শক্তি; এবং বে যে তিল্ল শারীরিক বা মাননিক উপালে এই শক্তি নাখন করা যায় ভালার নাম রুত্তি। মন্ত্র্যা আন্ত্রাণ লইতে পারে। আন্ত্রাণ একটি শক্তি; কারণ মন্ত্রব্যার স্থাভাবিক স্বস্থা হইতে নে আপ্রাক্তি স্থান্তর।
ক্ষমি স্থাভাবিক স্বস্থা হইতে নে আপ্রাক্তি স্থান্তর।
ক্ষমি বিশেষ ইতিয়াকে উপায়ন্ত্রেশ অব্

त्रवर्थ इरा. अञ्चत आत्निक मनुद्रवात अ-কটা শারীরিক হান্ত। বৃত্তি বিপ্রকার উদ্যো-निमी ७ निर्मानिमी। উप्पार्शनी दृष्टि बाहा व्यामत्रा क्वेंगी काचा एक महकादत माधन করিতে পারে; নিয়োগিনী রুত্তি ছার। আ-প্ৰায় উপত্ৰ অপুৱের কাৰ্য্য সহন করিতে পারি। আমার শীয় চেন্টার ছারা শৃতি শক্তিকে পরিচালনা করিয়া জ্ঞানের বিষয় স-ফলকে চিরকাল মনোমধ্যে আবন্ধ রাধিতে পারি; এবং কোন প্রিয় ব্যক্তিকে অবলো-কন করিলে খাভাবতই খেহে অভিভূত হইয়া পড়ি। স্মৃতি রুত্তি আমার সেক্রাধীন ও কার্যাধীন, কিন্তু সেহ রুত্তির বারা আমি স্ব লাবভই নীয়মান হই। অভএব স্থৃতি শক্তি व्यामानिद्यात अक्षी উদ্যোগিনী প্রবৃত্তি, এবং **क्षिट्-द्वाथ** अवनी निरम्नातिनी श्रवृत्ति माज ।

গুঢ়, ও বিদামান! মান্সিক ভাব এবং রভি ছুই একার অবস্থায় অবস্থিতি করিতে পারে: এই তুই অবস্থার নাম গঢ় অবস্থা এবং বিদ্যমান অবস্থা। সনের মধ্যে এঞ্জপ অনেক সতা, অনেক ভাব, অনেক রক্তি আহে বাহারা দকল দময়ে জ্ঞানের গোচর থাকে না, কেবল কার্যোর সময় তাহাদিলের পরিচয় এতি हुए आ यात्र। यथा, धर्माध-র্মের স্বভারতাজ্ঞান সকলের মনেই নিছিত শংকালে মনুষা জানালোচনায় আছে: বা দাংগারিক কার্য্যে নিযুক্ত খাকে তথ-কালে এই জ্ঞান বোধ-গোচর হয় না; কিন্ত यथन हे त्म कांग अकी भर्म कांग वा ध्वनन कार्या नितीकन करत ज्थनरे छ।रात मतन हेर् कानक रहेन्। उत्ते स्पेत्र है-শ্বর সকলকেই দিয়াছেন। কিন্তু পাপ ছারা বা কুতর্ক ছারা মনকে পাষাণবং কঠিন ও নিডান্ত অধ্যুক্ত কেরিয়া ফেলিলে ভাছা महरक अञ्चूष इंग्रनी। यथनरे अतर्म-্ৰের এণত সাধু অহতির আনেশানুযায়িক মনুষা কার্যা করে, তথনই এই শ্রেছি জাগনক হয়। উল্লিখিত প্রকার মানসিক ভার ও রুত্তির নিহিতাবস্থাকে গঢ়ত। কহে, এবং তাহাদিগের জাগনক অবস্থাকে বিদামান নতা কহে।

প্রকার বিজ্ঞান আত্মপ্রভায় । যড শান্ত্র আছে তৎগমুদায়ের মধ্যেই কতক थिनि मून-स्क मुखे रम्। এই হুত চয় কোন মতেই বিচার সাপেক্ষ নহে, তাহারা স্বাভাবিক বিশ্বাস সিন্ধ, তাহাদিগকে আত্ম-প্রতায় ক**ে**ছ। কোন বিষয় বিচার করিতে হইলে, মূলে ইদুশ কতকগুলী সহা স্থী-কার করিয়া লইতে হয় বাহারা বিচার পালেক নতে, মনুষা মাত্রেরই যাহাদিলের প্রতি সম্পূর্ণ বিশ্বাস আছে, এবং বাহাদি-খোৰ অভিবিশ্বাস না থাকিলে সকল অকার यूं जिल्लान ও विवात अगस्य बहेश छेर्छ। ৰথা আনি আছি, বাক জগৎ আছে, ঈশ্বর আচ্ছেন,এ সকল বিষয়কে সপ্রমাণ করিছে হ-ইলে মনুযোৱ স্বাভাবিক বিশ্বাদকে জিজ্ঞানা कतिए इत्। शसुरवात मन यनि इहोनिशटक অস্থীকার করে ভাষা হইলে কোন প্রকার विठात्रहे मछ्य नत्ह, कांत्रण यणि आमिना योक्ति, जन्न ना शांदक, अभूत ना शांदकन, ভবে কে বিচার করিবে, কিসের রিবয় বিচারিত হইবে, কাছার প্রনীত বস্তু এবং কিলের কৌশলকে বিচার করা যাইবে। অভএব ঈদুৰ প্ৰকার সকল বিষয় এককাইন স্বাভাবিক বিশ্বান শিক্ষ, ভাহাদিনের নামই মান্ত্রহাত্য ।

আতা চৈতনা। মনে যে সমস্ত ভাব উদা চইতেছে তাহার জানকৈ আতাচৈতনা কহে। আতা চৈতনা না হইলে কোন ভা-বই সম্বৰেনা। আমার মনে জানের উদয় হইতেছে, কিন্তু আৰি যদি মেই জানকে না কানিতে পারি ভাবে তাহা উদয় হুওয়া আর না হওয়া ন্যান, কাজনিক ছার। জনর ইয়
দাই। আমার দনে প্রীতিভাবের উদস্থ
হইতেছে, কিন্তু যদি আমি দেই প্রীতিত্তক
না জানিতে পারি, ছবে আমি কি প্রকারে
বিশ্বাস করিব কে ভাহা কোন কালে
ভামি বোধ করিয়াছিলাম? অভএব আত্ম
টৈতনাই মনের অভিত্তির নিয়ম। বে নয়য়
আত্ম-টৈতনা নাই সে সময় মনও নাই,
কারণ ভাব-বিরহিত মনের অভিত্ত আমরা
বুক্তি ভারা উপলব্তি করিতে পারি না।
অভএব মনের জীবদ্দশার নামই আত্ম
টিতনা।

একাগ্রতা। আত্ম-তৈতনার, নিগৃতভার নাম একাগ্রতা। বিনিধ ভার মনোমধ্যে উদয় হইতেছে, এবং আত্মজ্ঞান
ভারা অনুভূত হইতেছে। যদি ইপার
একটা ভাবের প্রতি গাঢ়রূপ মনঃসংযোগ
করত কাণেকের নিমিন্ত অপরাপর ভাবতয়কে মন হইতে অপসারিত করি ভাই। হইলে মন একাগ্রতার অবস্থা অবলয়ন করে।
অভ্যব স্থাভাবিক আত্ম-তৈতনার প্রতি গাঢ়
কপে মনঃসংযোগের নাম একাগ্রতা। মনোবিজ্ঞান আলোচনার পক্ষে এই কপ
একাগ্রতা একাস্ত আবশ্যক।

উলিখিত প্রকারে মনোবিজ্ঞান শাস্ত্রে সর্বদা ব্যবহার্যা ক্রকগুলী শব্দ বির্ভ হইল। এতৎশাস্ত্রের তবিষ্যালালোচনায় এবসিধ অপর অনেক শব্দ সংঘটিত হইবে, যাহাদিগের বিষয় অদ্য কিছুই উল্লেখ ফ্রাণ্ডেলা না, কিছু দেই সেই শব্দের মর্ম্ম ভত্তৎ-কালে প্রদান ক্রিভে চেক্টা করা মাইবে।

व्यक्षीत्व वात्रगाक्का।

२०२ मरथाक शक्तिकात ४२ मुख्येक महा

ं व्याभारमञ्जाद कर्वा क विवत्यव अवकी सुन्मत দুঠান্তস্ত্র। এখানে ষেরপ ভাবের জীছভাব দুট হয় একপ আরু কোন দেশেই দেখা বায় না। এদেশ যদিও অজানতা ও কুদংকার-ডিমিরে ভয়ানককপে আক্ষন রহিয়াছে, তথাপি এখানকার পিতা মাভারা বেনন সন্তানের প্রতি অন্তর ক, এখানকার জালা ভগ্নী যেকপ কোমল মেই-ভূতে আবিদ্ধ, পুদ্র কন্য'দিগের বেরপে খাতু ভক্তি ও পিতৃ প্রান্ধা, তাহা মনে করিতে গেলে চমৎকুত হইতে ছয়। জন্যান্য নেশের অপেকা এদেশে ভাব ध्यत्त शानाट इहात अयुष्टीम भवत ७ जनस्वश **७ रेशाइ। आङ्गिलीया, जामाञ्च्छि, धाका**मि অব্রান, সকল স্পট্রপে তারার সাকা দিতেছে। धनिक यायारमञ्जलनं मङारमनं नगरस्त ज्ञानार ব্যতি দাধানা ধলিয়া প্রিথণিত হয়, ব্লিও অ-নানা সকল সম্প্ৰেইছা অভি নিকৃষ্টভাবে অৰ-ডিভি করে, ভগাণি অন্যান্য দেশ অংশক। যে हेरा छोद्रवरह रहाके धरे लोत्त क्रिंड आमता মখনই সঞ্চিত হইব ন।। আমাদের দেশের এই ভারকপ সুন্দর কুলুম-পরিশেভিত মানাহরদ-শনে বিষুধাচিত না হইয়াবে ভাগাকে অবজ্ঞাভূচক ष्ट्रिक्टिंग्ड पर्नम् करव, मा आमि स्मिति कर्राद क्रमग्न ! এই ভাররূপ মনোর্ম প্রস্ন-নিচ্চের শোভা ন্দৰ্শনে পুলকিত-জ্বয় হইয়া ডামধান্থ বিশৃষ্ঠানত। पूर करा उंडबंताल कर्मनबादा ভाशामिरभद जानिक-তর শোভা সম্পাদন করিবেন ফ্রিয়াই ত্রাকোরা क्छक्छनि कार्य। विस्त्रीय छात्रुक इंदेशास्त्र । এह কাৰ্যাস্থারা উহোরা নিজের ভারসভাও প্রকাশ करतम, धार कामारम्त्र एम्टब्स् छाङ नकटनत् १ উৎकर्र माधन कतिएकः शाहित्वनः। जाकाधदपीत जनुकान बनिया गारा अनिष हरेग्राटक ७ वादा सहिया **७ इ म्याला क्रिक्ड हरेग्राह, वहे. कार्याध**नि

বশান্তান করা যে নতুষোর রাজ্যুরক ভাষা
এক প্রকার প্রদর্শিত ইইয়াতে, সুভরং প্রাক্ষের
যদি অনুষ্ঠান করেন ভবে এই ব্রাক্ষা উন্থালিগতে
লোযারোপ করা নাইতে পারে বৈ উন্থানা করেন।
নাখ্যিক অনুষ্ঠানের যে গুল ব্রুলা আন্তর্শাক,
স্থাতি হয় ভাষার আন্তর্গি আনানের আন্তর্গিক ভার প্রাক্ষা করেন।
কালত নত্র ভাষার আনানের উন্নি রাধান করেন।
বেই উপ রাজ্যান্তর উন্নি করেন ভাষার করিলাক করেন।
বিভাগত করি বা আন্তর্গিক। করা স্থাক্ষার করেন।
বিভাগত কি বা আন্তর্গিক। করা স্থাক্ষার করেন।

ঠানের ব্যাপক অর্থ প্রচণ করিলে বালিক অন্ঠানের সংখ্যা অগণ হইয়া উঠে। ব্রাহন্দর প্রতিবাছা কিয়াই ভাছা হইলে অনুঠান লাদের বাচা
হয়। আমরা একণে অনুঠানের তান কি কিং
সক্ষ চিত করিয়া লাইব। অর্থাং ব্রাহ্ম দিংগর নথে।
প্রচলিত বিশেষ অনুঠান সকলকেই এগণে মন্ন
ঠান অভিথান প্রদান করিব। হথা অভিকর্মার
নামকরণ, উপানয়ন, গর্মদীকা, বিবাহ অংখাতি
জিয়া এবং প্রান্ধ। কেন না এইগুলি লাইয়া তবি
বিতর্ক উপাতিত ইইয়াছে।

যে সপ্তান্তঠানের নাম উলিখিত হউল, বে.প করি যাধারণে ভাহাদের প্রান্ত অর্থ ভারণত না शांकित्व भारतम, এই जना मारकर्ण छ।इ।सित অর্থ প্রকাশ করিতেডি৷ ১৭ জাতকর্ম-নম্কান জ্মিলে সকল পিতা ন:ডারই মনে খনবভূত बाह्यारमञ्जूषा अवाह इहा, क्षेत्र राष्ट्रे की जीवित है होई। अकुछ नर्भाती इक्ष्यात् छ अभर या स्मार्था क ई । हात গুরু ভার তাঁহাবের কল্পে আদিয়া পাড়ে; সেই এ-পুর্বা আহল।দের নিমিত্ব তং প্রদাত। করণ।ময় পি ভাকে কুছফারা উপহার প্রধান করা, এবং উপস্থিত কর্ত্তরা প্রতিপালনে সম্পূর্ণ সক্ষম হটবরে জনা ভাঁছার নিকট বল প্রাথন। কবাই এই অনুষ্ঠানের উक्तिमा। १स न (गहतन-- प्रकात बिलिस) के चटत्रह উপাসনা করতঃ महारानत नाम व्यनान कनिर्वाह कनाई धरे व्यवकात । ७३ छेलानान--रयन दमर्थः যায় সম্ভানের বুদ্ধ এবং রশ্মপ্রান কিনং প রিমাণে পরিপক হইল। আদিলতে, লে ধন্ম। रामिन धन्दर भक्तम इहेब्राट्ड, छ्यान शिल्। १ छ। भारे अनुशेलकाता महानदम उपायक निकारका इट्डिंगमध्य कट्रागा हर्य भवीतीका + महान সদাচারী এফানিও শিক্ষকের নিকট ঘ্রাবিধি শিকা, পাইয়া ধ্থন ধ্যা কি ভাহা বুঝিছে পারেন, এবং ভার্থকণে সমুৎস্তুক হল, ভার্ম জিলি क्रेश्वरक नाका केंद्रलंड नाभादन नगरक ४८-छ। মুখনতে বিশ্বাস প্রকাশ করিয়া ভংগাত্রপাল-सार्थ हुए व्यक्तिका करत्र,--- बहै गरम तालहे शर्या त्रीका बदन। एम विवाह—हेश मनुषः धोवः मत्र ज কটা জীভি উৎকৃষ্ট ও প্রিক্ত শ্লুঠান। সকল সভ্য জাভিই ইছার প্রক্রন্ত স্থাদর ও সম্প্রনা করিয়ে- 🔻 ছেন। ঈশর স্ত্রী ও পুরুষের নধের ফ্রেপবিত্র সময় সংস্থাপন কার্য়াডেন, ভাহাতে রক্ষণ ও পালন ক-ब्रिक्टाब कराई वह विश्वक कर्शिय ब्रह्मी । ७० व रखास्मिक्या—बहे अनुश्रीमञ्जामक दस्या अधीनहः याँ हारमञ्जू काम्रात मुख दाख्तिक अधि दकान ना इंकान मद्भारतह जैसम् इस: उँ हिस्स कवन है है हारक इंडाइइ क्षिएंड शास्त्र मा। नगु ६ १ मर सन्-केश्न, आका । देव लिखा माखा आंगारमंत्र बना पं

वकीरन व्यवस्था व्यवस्था क्रियं नहा करियादिका বাঁহারা আমাদিণের নিমিত কুথার সময়ে আহার. বিরাম সমরে বিশ্রাম করিতে পারেন নাই; আমা-त्मत किटम मझल इहेट्य म्मेहे खेलांब छिन्दांबन করিতে যাঁহারা চিরকাল চিস্তারপে অগ্নিতে দঝ-হ্দয় হইয়াছেন, যঁতারা দর্ম প্রতিপালক প্র-নেশ্বরের প্রতিনিধি স্কপ হইয়া সর্ক্ষণ আমাদের লালনপালন ও মলল সাধন করিয়াছেন, মৃত্যু জানত দেই পিভানাভার সহিত দীর্ঘ কালের নিষিত্ত বিচ্ছেদ চটলে উছোদিগের জনা আমরা থে কুডজভা, ভক্তি ও গ্রন্থা সক্ষয় করিয়াছিলাম, ভাষার পরিচালনা ও পরিচ্যট এই অনুষ্ঠানের শুদ্ধ পিভাগাড়ার বিয়োগে কেন্ গু 可哪!! যে আমাদের সম্বিক কুতদ্বতা, জীভি, ভক্তি এবং আছার পাত, তাঁগায়েই সম্বেদ্ধ এই অনু-ষ্ঠান অনুষ্ঠিত হইতে পারে।

একটু অনুধাবন করিয়া দেখিলেই স্পন্ট লক্ষিত ফইবে যে বাহািক অনুষ্ঠানের যে ছুই বিশেষ ভণ পাক। আবশাত এই সকল অনুষ্ঠান ভাচ। হইতে विभिन्न मट्ट, देहर हैं हि पिटलंब मटना समिति ভাবেট ভালা দৃট হয়। ইবারা আনাদেব আন্তরিক ভাব একাশক কি না, জাতদৰ্ম, অস্তোটিকিয়া, ও শান্তের প্রতি দৃষ্টি করিলেই ভাষ্। জানা যাইতে পারে। অপিচ ইহারা আ্বাদের আ্ফারেউ প্রতি সাপনের প্রেল্ড মহত্বপকারী। 'দভ্রী আমর। আমাদের আহেবিক ভাব সকল বাধীনকাপে প্র-কাশ করিকে পারি, ভড়ই আনাদের আলা উল্ভ ও ধলিঠ হয়, এ নিয়ন স্ভা হইলে, কাভক্ষা, অন্তোষি ভিয়াও প্রাক্ত ছারা আমরা মহতুপকৃত एके भटनक नाके। धर्मानीका ७ विवादक व्यक्तीन ষে মনুষা নগ'জের পক্ষে কভ দুর উপকারী ভাহা লিখিয়া বাক্ত করা হায় না। বীহারা প্রকৃত ধর্মার্থী **খটায়া সংখ্য ওলী মলো লঙায়মান ছওভ ঈশরের** भर्तमाकिक चायुर्त चातु ७ त क्रियोट्स, धार् পর্যাত্ত পালনে দুর প্রতিকারত হইয়াছেন, উ-श्क्षिष्ठि भग्निमीका क्रम अनुष्ठीरमंत्र উপकात क्रम्गंड क्तिग्राटकन,--- निक्ठग्रहे खनाटक, देश तुर्वान छात्। शर्मानेकात अजाद मन्दरात जीवन ममाक श्रीत-হ'বড় হট্যা ন্ৰফীবনের আবিন্তাৰ হইয়া থাকে, कार्य भर्यानीकात व्यक्तारय मनूषा मार मातिक मनिन জীৱন হইতে উত্তীৰ্ ইয়া পৰিত্ৰ স্থানীয় জীবন भारत शर्म कतिएक मक्तम एवं। विवाह क्रम जिस्होंन দারা কি উপকার হইছে পারে পরে বর্ণিভ হ-रेटव । अधिक**न्छ अ**नुक्षेत्र **कान्ना अफि मनूरवादरे** বেমন উপকার সাধিত হয়, তেম্মান তাপ্র একটী শ্রেষ্টিতর কলাপ নিক্ষাদিত হছিল বাকে। रेश मनुवादक खाकुकाव स्टब्स्कन कविवाद क्रिक

मर्श्भामा। धरे चर्छाम मनत जान बाजाना शहक मरथा मरथा अकटक मरक्षिक करत, जबर विश्वक कर्षात्रकथन ७ खेलामन। बाह्म त्मरे প্রেম স্বরপের সরিধানে উপনীত করে, ভাষা-তে ভাহাদের পরস্পরেম্ন ভাব আপনাপনিই उपात्रका शहल करत। निरम प्रसंस दहेरम् উংকৃষ্টভর 🔻 পবিত্রভর ব্রাহ্মদিগের আন্তরিক ক্ষতি ও বল দর্শন করিয়া আমরা আধাত্মিক वरल वलीयांन एहे, मन मरनारंद्र करहेांद्र वहेरलंख ভাঁহাদের প্রীভি বিক্ষারিত উক্তল নয়ন বিলো-কন করিয়া বিগলিভ হয়। বস্তুতঃ নিয়ত শাধু গল করিয়া যে অমৃত কল লাভ করি, অনুষ্ঠান हाता दम मकल हे लक्ष हहेबाद महातमा । अनुश्रीम-স্কল যে আরু ক্ত অগণা কল্যাণ সাধন করে, সময় থাকিলে ভাষা বর্ণনা করিভাষ। এক্সণে এই রূপ সামানা বিবরণ ছারাই সম্ভুক্ত থাকিছে इंडेट्व ।

পশ্মিনীকাই কাজি মাতের প্রথম অনুষ্ঠেয় ক্রিয়া, অভএব ভাষা ইউতে আরম্ভ করিয়া পাহি শেষে প্রোভের বেখানে বস্তাবা বিষয়সূহল বাড়ন করিব।

(ফ্রমশঃ প্রকাশা)

-- - CORNEO O O POR 1 0 -

मःवान ।

নিগত ৬ই ভাষে শ্ৰদ্ধান্সদ দ্ৰাযুক্ত নিজয়কুষা भाषामी वतर श्रीमुक काममा अमाम एउँ, शाकाध महाभट्यता वाकामभादलत उलाहार्यालाम या अत्यक्त এই ব্রাক্ষরে দেরপ উৎসাহ ও হইয়াছেন। নিঠা সহকারে এতংকাল পর্যান্ত রান্ধার্ণের উ-প্রদেশ পালন করিয়াছেন ভাষা আলোচনা ক-রিলে ভাঁহাদিগকেই উক্ত পদের বিশেষ উপযুক্ত ৰোধ হয়। কাহারও অকারণ প্রশংসা করা ত-खुटवाभिनी शक्तिकांत शक्ति महत्व नां, किन्छ । धरे ছুই বান্তি গর্মের জন্য যেরূপ ক্লেশ, যভদুর অভ্যা-চার মহা করিয়াছেন ভাষা বর্জনাধারণ বকল ত্রা-ক্ষের অবগত হইয়া উহোদিগকে দৃউত্ত অরপ ত্যান করা উভিত। তাঁহাদিলের মত এক শত द्रामा आश इहेरल छात्र कर्दर्श स्य कार्लय मझन 1 1 হয় ভাহার আর সন্দেহ নাই।।

উহি।দিনোর অভিবেক কাকে অধান আচার্থ্য মহাশয় যে নিয়োগ পত্র প্রদান করিয়াছেন ভাষা বিলে প্রকৃতিক হইল।

THE REST OF THE RE

वरम क्रिंदर । अक्रमान के कर्डराजीन जैनी-क दन महाना चलुनील वाक्टिन, अवर महानाचारन मत्था छाहा विख्यम क्रिया अधारम अधारम उ ग्रंथ में बाकरन निवंजन रहेर्व। निवंज पंगी-कुर्वादम् अविक स्टेग्ना अविक-यत्तरशत मस्यादम स्वा-सक्त जिल्लाक कहिए। धवर महल्टामा ७ माधु म्-केन्द्र वृद्धि नेत्राहरू शर्थ नकरमत्र मनर्टक चौकर्रन कॅब्रिया। खक्रकमारू छल्कि कदिरत, ब्रश्निमिटक मयोगत कतिरव, उ मकलंटकं राषीभगुक गन्मान मिट्ट। श्राधीन इटेग्रा विनशी इटेट्ट। श्रद्धत অত্যাক্তি দকর দহা করিবে, কাহারো প্রতি বেষ করিবে না। অনো যদি ভোমার প্রভি অসাধু বাবহার করে, ভুমি সাধুভাব অবলম্ম করিয়া ডা-হাকে শিক্ষা দিবে। "পাপাচারী ব্যক্তির প্রতি आशाहाद कदिरम मा, किन्ह मर्खमा माध्ये थाकित्व।"? সম্পদে বিপদে, স্তুতি-নিন্দাতে, মান-অপমানে অবিচলিত থাকিয়া ব্রাহ্মপর্ম প্রচার করিবে। ঈহর তোমাকে রখা করন, ভোমার জ্ঞান ধর্মা পোষণ করুন---ভোমার শরীর বলিষ্ঠ হউক, মন বীৰ্যাবান্হউক, জ্বান উজ্ল হউক, অভিপ্ৰায় মহান্হউক, ধর্ম নিঃস্বার্থ হউক, জ্নয় প্রিত্ত হউক, জিহবা মধুময় হউক। ভোমার চকু ভাদু রূপ। मर्भन करूक, कर्ष छात्र कथा खाउन करूक।

ওঁ শান্তিঃ শান্তিঃ শান্তিঃ হরিঃ ওঁ।

কলিকাভা ত্রান্নাসমাজ } জীদেবেক্সনাথ ঠাকুর।

ব্ৰাহ্ম-সমাজ-পতি

,3

প্রধান আচার্য।

উপাচার্যাপদে উক্ত মহাত্মাত্মকে অভিবিক্ত করিবার উদ্দেশ্য এই যে ত্রাক্ষ্মমাজের উপাসনার কার্ণোর নিমিত একাল অবধি নির্দারিত কর্মচারি तक्किक स्टेर्ट । छेलानना कानीन छेलाहार्यात অনুসন্ধান করিয়া বাহাকে ইন্ধা ভাষাকে বেদীর উপর উপবিষ্ট করিলে ত্রাহ্মসমাজের অন্যোরব করা হয়।" কিন্তু উপাচার্যা হিরীকরণ কার্যাধীও অতি সুক্টিন। যাঁহারা ব্রাক্ধনের প্রতি বিলেষ অন্তাবিউ ও অসুরক্ত, বাঁহারা কি বাহাক কি আ-धाश्चिक नकत आकात अनुश्रीदन है जीक स्थानी चामन करल मधायनान वहें एक शास्त्रम, व विक्र कि कारन, कि श्रीविरण, कि श्रीविकाल निवर्ष के मग्र व्यक्ति कारत धर्म बार्ड मानम करतन छ। होता है - जिलाकाका लाइक । जानामानाम करण में दाड़। छेड़क भगाविक हरेडा अक मिन कोड़ कीड wighters contain with betham afficer diet. N CA MINE HAS AVERTHER OF PARTY

काइन बर्जनाम नगरत आम এवर छोडि, अनुकान अ जिमहे ना शांकरण लारकत डिजाकर्यन वा आमा अवन कहा वांच मा।

ं क्षेत्र ५५ ८म ध्यां वर्ष मञ्जनतादा श्रीगु क भावी-জীচরণ শুপ্ত নহাশহের শুড় বিবাহ সম্পন হইয়া भिग्नाटक । शहिगीका वानिकां नि विषया कान अ-কটা প্রকাশা স্ত্রীবিদ্যালয়ে সুশিক্তি, এব[ং] সতি সচ্চরিত্রা। শ্রীযুক্ত পার্মজীচরণ প্রোসতেন্দী কালে-জের ছাত্র, তিনি স্বরায়ই বিদ্যালয় হইতে উত্তীর্ণ ছইবেন। দম্পতি প্রচলিত সমাজে একজাতি ভুক্ত নহেন : ত্রীযুক্ত পার্শ্বতীচরণের বয়ঃক্রম বোধ হয় আম ২০ বৎসর, বালিকাটীর বয়ঃক্রম অসুমান ১৫ বংসর। এই কার্যাটী অভিশয় নহং ইহা সীকার করিজেই হইবে: এতদারে ব্রাক্ষবিবাহের আর একটী দৃষ্টাস্ক প্রদাশিত হইন, উপযুক্ত বয়সে ডি-বাহের প্রেপা প্রধর্ত্তিড ও ছটিট চ্ইল, এবং শঙ্কর বিৰাহ অথবা জাতিবিভিন্নে পরিণয়ের প্রথাও স্থারম্ভ হইল। ত্রাক্ষদিগের গন্তাবল ও সাহস কত ভুর ভাষ্য এই ব্যাপারটীর দ্বারা সকস সুজ্বন্ধ বা-क्तिपिरशत्र निक्षे अजीयमान इंडेरत।

শীযুক্ত রাজা রাধাকান্ত দেব মহাশয়ের পৌন শীযুক্ত ব্রক্তেনারায়ণ দেব মহাশয়ের পুতের জাতকর্ম সম্পুতি ব্রাহ্মপর্ম মতে সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে। রাজা রাপাকান্ত দেব মহাশয়ের পৌ-ভালিক ধর্মের প্রতি বেরপে অনুরাগ ভাহাতে তাঁ-হার পরিবার মধ্যে ব্রাহ্মধন্মের এত দ্ব উন্নতি দেখিলে মনে অভান্ত আহ্লাদ জন্মে।

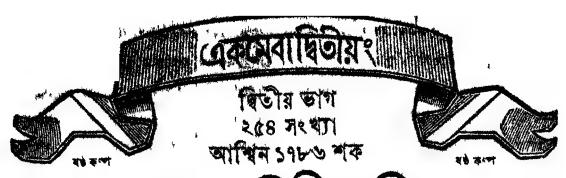
গভবারের পত্রিকাতে বহরম বুর নমান্ধ উ-লেখে কথিত হইয়াছিল যে শ্রীখুরু কাশীশর দিল মহাশরের দ্বারা উক্ত সমান্ত প্রভিত্তিত হইয়াছে; একণে অবগত হওয়া গোল যে উছিলে সে সমাজের সহিত কোন সংখ্যা নাই, তাহা বহুরমপুরুষ্ আর কতকণ্ডলি ভদ্রলোক দ্বারা প্রতিষ্ঠিত হই-দ্বাছে।

বিজ্ঞাপন !

পর্মশিকা-নামক পুত্তক থানি পুনর্বার সংশোধিত হইয়। প্রাক্ষামাকের যন্ত্রালয়ে মুক্তিত ইইতেছে শীঘই প্রকাশিত হইবে।

कलियार। आक्तमात्कत ३१०७ गटकेत	A THE I
व्यक्षां ७ व्यविक मात्मन व्याप्त वार	STE TIME TO STEEL
3 4₹1	

229/20	अन्तर्भ वसी स्मा गाम।
प्रकार जिल्हा	
an appearance and a second and a	ত ভাগলপুর ত্রাক্ষামনাত্রের প্রতিভাগিত
50.88%	কোন তাৰা ভাতা
বার ১২২২ ৸৽ৢৢ	" विज्ञकृषः दश्वामी c
সম্পাত্তিকর হলের	" श्रामण्या सम्
এক দিন	कर्णका राज्य ।
वामान बारक	" হিজেজনাথ ঠাকুর ৫
在神皇帝村南 作中中	' देवकुर्शनाच दनन
Aver H D Systeman	' হালিসহর ব্রাহ্মসমাজের সম্পাদক ও
ভ্ৰাক্ষদিগের প্রতিজ্ঞাত নার্থসরিক দান।	'' कुछ विश्व हो स्त्रम
শ্রীযুক্ত হরচনে ও	¹⁶ दकमान्नस्थ बदम्मग्रीशाग्नः
े कुरुक्त का रा प्त	" (मात्रसमाथ ठाकुत्र (शाधुद्दशाणा) :
्रि प्रसम्बद्धस्य । १	'' গোপালচন্ত্ৰ মলিক
ं काला १ ५०० सूट्यां भाभा	" রাজকুনার মলিক ১
कुछ निकारी एक वर्षी २.४०	^६ : मीनमाथ मङ्यमात
ं 🖰 जीवनाध्य भिक्र २	" माधवहास निद्दे
^{१६} रशिक्षकृतः तिर्ह २	" অভয়চরণ গুপ্ত ৮০
'' লাদৰত্তৰ যুখোপাতাল ২	" ভাগবভীচরধমোষ ়
ात्रः । भारत भिक्त	" दक्नांब्रनाथ त्रांग्र ।। ॰
^{६६} "ध्रमीथ ६म १८	a comple
र इत्राम् राज्यमति	
র্ণ বিশ্ববাচরণ বন্দ্যোগ্রেম্যান ১	নিঘণী প্র।
84./0	शुके।
্ মাসিক দ্বি	কলিকাত। ব্রাকাসনাচ্ছের বক্তা 💛 🕔
State and the state of the stat	উপাসনা ৬৬
শ্রীয়ুক্ত দিশান্তমদ বসু ২৫	ননোবিজ্ঞান
entisted sales	অञ्चोदनंत आवनाक्षण ११
" प्रारम्भ राप क्रोकृत ३६ १ समाध्यमान तात ३०	लश्योम
प स्वतिकास्य तरकाष्यासम्	आग्न राष्ट्रीतरावन ৮०
भ केश्रहास्य विश्वास्थात्र ।	
विश्वकृतिका विश्वविक्षा । विश्वविक्षा ।	তত্ত্বোৰ্থনী পত্ৰিকার মূল্য নিরূপণ ৷
ध नाग्रताचाच म्हें भ	
** (7) (C) (C) (C) (E) (E) (E) (E)	व्यक्षिम मुद्या (क्षिकाद्वांत्र करा)ः 👵 🚕
and the second s	্যক্ষেপ্তের জন্য)
नीलकमभ वटेन्स्यान्त्रीयस्था	्यकश्चरणत्र कमा) ०५० सर्गातक मृद्या
	स्वाहित क्या) ००० सामिक मुना । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।
नीलकन्य वरेन्द्राभाष्यात्र	্ষকঃপ্রলের কন্য) ৩৭০ নাসিক মূল্য এক পত্ত ক্ষিত্র বিশ্ব স্থানিক স্থানিক বিশ্ব ক্ষাৰ বেশক বিশ্ব স্থানিক বেশক বিশ্ব স্থানিক বেশক বিশ্ব স্থানিক বেশক বিশ্ব স্থানিক বিশ্ব স্থা স্থানিক বিশ্ব স্থা স্থানিক বিশ্ব স্থানিক
नीलकान वटनामिशियाः १३ छक्टर्यत्रं भाव	



তত্ত রোধিনীপ ণিকা

শ্রমবারক্ষিদমগ্রমানীয়ান্য কিক্সানাতি দিল সর্থান্ত তাদের নিডাং জানমনস্থানিক শতক্ষিরবারবারক্ষেক-বেবারিডীয়া সর্বব্যাপি সর্বানিয়াপ্ত সংবাহায়স্থাবিৎসর্বাদ্ধিমক বিশ্বপিত্যাতি মনিত। একন্য ডটসাবোপাসন্মা পার-ব্রিক্টমন্ত্রক প্রভাগবিত। তাদিন্ জাভিকস্য জিমকার্যাসাধনক তদপাসনামন।

বিপদ্কালে বন্ধ স্তোত।

হে পরমান্মন্! যে দিবস হইতে আমি এই পৃথিবীর আলোক দর্শন করিয়াছি সেই দিন হইডেই ভোমার করুণামৃত আ-মার প্রতি নিয়ত বর্ষিত হইতেছে। তুনি क्छ सूथ मन्त्राम बांगादक छेदम्झ कतिशाहः ছোমার বাহু প্রসারিত হইয়া কত উদাত विशासत आंग हरेएड आंगारक तका करि-রাছে-কিন্ত ভোমার কুপা-বলে অদ্যকার কটিন পরীকাতে যেন উত্তীর্ণ হইতে পারি। এই নম্বট সময়ে যদি ভোমার দর্শন পাই তবে আমি ছবল হইয়াও ভোমার বলে, কৃটিলভম ছরবস্থাকে প্রান্ত করিতে পারিব। नांच । जानि स्मित्तक विकृष्ट मुर्खि मिथिया **डीड हरेब्रोहि, छःटबंत क्याचाटड ख**रमन रहेन्नीह पूनि कात मुद्दा बालिश ना। चांबादक विश्वम अ श्रीम हीन व्यक्तिमा जहन नान-वामान्य निव्यक्ति कहिटलाह श्री गरिवार कर, विशव श्रेयतक अकारी affen carris aften 2 ard water ARCHINIA PRO PROPERTO

বিকল্পিত হইতেছে, তুমি আমার হস্ত ধা-রণ কর ৷ চিন্তার পর চিন্তাতে ভয়ের পর ভয়েতে আমার আলা ছিল্ল ভিল হইল. षांबि यांगा-विशेन लका-शैन ७ शिंज-शैन হ্ইলাম, এখন ভোমার শীতল হল্তে আমার মলিন মনকে স্পর্শ কর যে আমার সকলু যাতনা বিদুরিত হউক। এই কঞ্চা রটি বজ বিত্যাৎ আমার হৃদয়াকাশকে অন্ধকারে আন ক্ষকরিয়াছে ভূমি আমার নয়নের আলোক, আন্তার আশা, চির দিনের সরল, ভূমি আমার कीतत्वद कीवन, आमादक पर्मन पिता क्र-ভার্গ কর, আমি ভোমাকে দেখিবার জন্য ৰড় আকুল হইয়াছি। হে নাগ্ ভুনিই মেই স্থা ঘাঁহার আলোকে অনন্ত আ কাশের নক্ষত্র-পুঞ্জ শুভা ক্রণে অনুরঞ্জিত র্ছিয়াছে।

নাগ! অতীত কালে কত বার আমি
বিপদ্দলধিদলে ভাগিতে ভাগিতে ভোগিতে ভাগিতে ভাগিতে ভাগিতে ভাগিতে ভোগিতে ভাগিতে ভাগিত ভাগিত ভাগিত ভাগিত ভাগার ভাগার শোনের বিষমতর আঘাতে আমার মান্দ ভরণী চূর্ণ হইবার উপক্রম হইয়াছে পুনর্বার ভোমার আদেশে নিমেনে সকলি

निक्रम ध्रमान व्येताल, पृतिभाषात कवि भाषात (तके करूपा अर्थान कर ।

ा है। जनक नोस्क निरम्पन जिल्हा विकास ভোমার পুরুষ্ট্রা ক্রিদের সহিত ক্রমুখ पूर्व बाइक इंट्रेंट की उट्टेर नी, कामि অর পরার্ক্তরের প্রতি লক্ষ্য না রাথিয়া ভো মার আদেশ প্রতিপালন করিব। এই সময়ে তোমার নিকট কেবল প্রার্থনা যে শোকাতুর হৃদয়ে অঞ্চ পূর্ণ নয়নে ভোষার করুণার উপর নির্ভর করিতে যেন কথ্ন লজ্জিত বা বিশ্বত না হই এবং তোমার আক-পট পিতৃ-ক্ষেত্রে অতি আমাদের বেন-কোন সংশয় না থাকে। কত লোকে তো-মার নত্য প্রতিপালন করিবার জন্য প্রত্-निष्ण व्याप्र-मिथाप अहे वह यद्वत भतीत নিক্ষেপ করিতে ভিলার্দ্ধ সন্ধুচিত হন নাই। জোমার আতিই উহিদের এক মাত্র লক্ষ্য, দেই শ্রীভি অবলয়ন করিয়াই তাঁহারা পুথি-বীর কঠোর নিষ্ঠুরতা দহু করিয়াছিলেন, এবং এখন ভাঁহারা ভোঁমার প্রীভিতেই নিময় হইয়া সকল জেশের পুরস্কার লাভ করিতেছেন। আমার ভূর্বলতা ভোমার নি-কট অৰিদিত নাই, আমি তোমারই ছারের चिक्कुक इरेना এकांच विश्वत्व स्वत्त व्यार्थना করিকেছি আর যেন তোমা ছাড়া ইইয়া নিশাএল্ড ব্যক্তির নাায়, এই ভয়াবহ সংসারে বিচরণ না করি, ভুমি আমার মৃতপ্রার আত্মাতে ভীবনের সঞ্জাকর। ছংখ বিপদ্এ পৃথিবীতে নহা করিভেই ≑ংবে, ভাহা ভোমারই এেরিড, **ভাহা খ**-র্ম্মের পরীক্ষা, পর লোকের নোপান বরেই ছঃথ বিপদ্ ভার জোমার ভরম্ম চিন্ন জীক नरे नाथा मटक मखटक तस्त कहित, किक यथेन क्षणकोत्र एक महीक व्यवस्त स्वापा শরিআন্ত হইবে, ভরন যেন ভোমার কর্ম ছারার বিশ্বাস পাই।

छेशामना ।

গতবারের পতিকাতে প্রার্থনা কার্য্যের
নিষেধ্যর নিরাকৃত হইরাছে। প্রার্থনা
যে স্বাভাবিক, প্রার্থনা যে অটেকীদশ্পর,
প্রার্থনা যে ঈশ্বরের আদিই ও নির্মান্ত
কার্য্যা, প্রার্থনা বার্তাত যে আত্মার উন্নতি
সন্তাবিত নহে বোধ হয় তাহা একানে আনে
কেরই প্রতীতি হইয়া থাকিবে। অতএব
মুযুক্সু হইয়া ঘাঁহার। এত কাল একান্ত-তালাত
ভিত্তে ঈশ্বরের অমোঘ সাহায্য প্রার্থনা
করিয়াছেন অবশাই তাঁহাদিনের পরিক্র
সংকাপ নিজ হইয়াছে, অবশাই তাঁহারা
যথা-পরিমানে আত্মার উন্নতি সাধন করিব

কিন্ত বধাৰ্যই কি আমানিগের কান্তা উপযুক্ত উল্লিড লাভ কলিবাছে ? যথাৰ্থই কি প্ৰাৰ্থনা ঘালা আম্বা উল্লিছ চল্লব-ছালা লাভ করত আছোলভির সেম প্রকার প্রাপ্ত কইয়াছি : ধর্ম-জীবনের ইশানানকা-বার্থ ক্যান্তি ক্ষান্তা মিনানের মধ্যানাক বুকা কর্মে উল্লেখ ক্ষিত্রি স্থানিক

এই ৰূপ বিবেচনায় কন্ত কন্ত নির্বেশ্বরণ ব্যক্তি আত্মায় ও প্রার্থনার প্রকৃত তন্ত্ব না অবগত হইয়া উভয়ের প্রতিই উদাসীন হয়,এবং
পরিণামে উভয়েরই অগোরব সাধনে প্রবৃত্ত
হয়। প্রার্থনার সফলতার জন্য যে যে বিধি
পালন করা উচিত তাহা না পালন করিলে
ভাহাদিগের চেটা যে অকৃতকার্য্য হইবে
ভাহাতে আর সন্দেহ কি ? অভএব প্রার্থনাবিপক্ষ এবং প্রার্থনা-সাপক্ষ উভয় পক্ষের
বিবেচনার নিমিন্তই আমরা প্রার্থনা সম্বনীয়
নিশ্ব-লিখিত কভিপয় বিধি নিদ্র্শনে নি-

পূর্বেই কথিত হই গাছে যে অতাব
ভিন্ন প্রার্থনা অনন্তব, যাহার যে বিষয়ের
অতাব নাই তাহার সে বিষয়ের জনা প্রার্থনাও নাই। অতএব যদাপি অতাবই
প্রার্থনার আদি কারণ হর তবে কিনে আনাদিগের মনে খর্ম্বের অভাব ভবে, কিনে
আন্মারা আপনাদিশের সহজ্ঞ সহজ্ঞ পাপবিনম্ভা বৃত্তিত পারি, ইম্বরের নিকট মুভিরাজনা প্রার্থনা করিবার পূর্বে তাহা
ব্যাক্ত করে। ইম্বরের চেটা করা
কর্মকা করিবার প্রার্থনা করিবার প্রার্থনা
করিবার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার
ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার
ক্রিকার ক্রিকার
ক্রিকার ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক্রিকার
ক

কুলাৰ্ক শ্ৰহ্মনা ক্রিডেছি আ रमत कीतर्प कि केतृन छात नामच रहेत्रहर् शामार्थना कानीन कि बारानि-रक्षा भटन जनमा गमएश होत होत थ**ा** व क्षरमाय क्षांसक ब्रेशस्क, ध्वर क्षांश निषां किली फिड स्ट्रेंश कि शतिवादन करा আসরা ভাষার প্রসাধ অকাজকা করিয়াছি ১ व्यामा त्रिकात व्याच-विकास (काषा ? मनल निम मानादिव गारमातिक कार्या हम्ब मनदक নিযুক্ত করিয়া অবকাশ কালে আরামাও স্থবের অবেষণ করি; বন্নসাদিশের ঝিন্ধ শুং-দর্ম, জ্রী পরিবারের মধুরালাপ, আহার বিহার ইত্যাদিতে নিম্ম হইরা আখালুদ্-কান ও আভার অভাব সকল বিশৃত হই, **थरः व्यवना-कर्त्तवा कर्या ए। छेशांत्रका छा-**হাকে নিভান্ত ভারবহ জ্ঞান করিয়া ক্ষণ কাল শুলা-ছদরে শুনা বাক্য ভারা কপট প্রার্থনা নাঙ্গ করি। পরমেশ্বর অন্তর্যানী। কে কি ভাবে ভাহার সমীপে উপনীত হইভেছে, कि मदम कैंक्षित माद्या आर्थना क्रिएटह किनि विष्य करण फरमगर हे कानितक যদাপি হৃদরে ধর্মাভাব না বোধ করিয়া কেবল মৌখিক প্রার্থন ছারা কর্ত্তবা জ্ঞানকে পরিভূপ্ত করিয়া থাকি, ভবে কি আসরা ধর্ম লাভ করিবার উপাযুক্ত যে ঈ-শ্বর আমাদিগের সেই প্রার্থনা পূর্ণ করিবেন ? केश्वरतत व्यक्तरि, धरमात व्यक्तरि य वा। কুল হইরা জগৎকে অন্ধকার দেখে ঈশ্বর डार्शात धार्थना भूनं कदबन, य डाँहादक দেবিধার অভাব বোগ করিতে শিবেং দী তাঁহাকে লাভ করিবার তাহার অধিকার নাই। অভএব এত কাল আৰ্থনা ক্রিয়া যে আমরা ভাদুশ আআর উন্নতি লাভ ক-तिरङ शांति नाई हेश स्टब्ल जामानिद्यों बहे অপরাধ, বাত্তবিক একাল পর্যান্ত অমিরা बक्छ बद्ध आर्थनाई कति नाई। यु पिन

MATERIAL PROPERTY AND PROPERTY THE PROPERTY OF THE PROPERTY WITH fentre att guites fame arreste PH TARE CHARL PARCE MIREIR, TAR-**एके जाबा**त जाडादेश नाबात कारणे ব্যাকুল চিক্ত হইয়া তাহার এলাক জিকা क्रिकाम जारा हरेला का प्रिंत जामानि-त्त्रज्ञ इत्त्रज्ञ शिव कर्ष, व्योषि त्क-अब अबल इहेड, छान कमने स्माण्डिक হইত ! াকিছ উপাসনা কালীন অবাৰস্থিত विभिक्ष ७ छेमानीन किंड थाकि विनिग्नाई অন্য পর্যান্ত আমাদিনের একপ আন্তরিক प्रतर्काः। अड्यर धार्थमात धर्म विधि आख्राञ्च मकान । এবং আञ्चलका । याँहा-क्रिटंशत व्यार्थामात मकन्छ। मन्दर्भन कतियात অভিনাৰ আছে, প্ৰাৰ্থনা যে কি গুৰুতর কার্য্য : ভদ্মারা যে প্রতি মন্তুষ্যেরই কড মঞ্জ সাধ্য, ভাষা ইাছাদিগের জীবনে প্-রীকা করিবার ইচ্ছা আছে তাঁহারা চেকা করিয়া আপনাদিলের গড় অভাব দকল জ্ঞাত হটন এবং অকণট ভক্তিভাবে পরম পিজার নিকট প্রার্থনা করুন, এই আমাদি-মের অনুরোধ। এই একারে কড লোক পাপাক্ষকার হইতে মুক্ত হইয়া নঞ্ল-অন্প পরমেশ্বরের মুখ জ্যোতি দেখিয়াছে; এইং চিরকাল দেখিবে তাহার আর সংখ্যা নাই।

কিন্ত কেবল অভাব জানিলেই হইবে
না তাহার নিমিত্ত ব্যাকৃল হইয়া ভলিবারণ
চেন্টা পাইতে হইবে। অনেক ভ্রুক্তারী
ব্যক্তি আপনাদিলের ধর্মাভাবের বিষয় বিলকণ অবগত আছে,এবং তক্তনা সময়েসময়ে
অন্তর ক্লেণ্ড পায়, কিন্তু ক্লিণ্ড ভ্রুক্তার
নিনিত তাহাদিলের মনে কিছুমাত্র ব্যক্তিনী
বা চেন্টা জন্মে না তাহার প্রাক্তিনী
আছ নানি সত্তেও চির্কাল পালে কিন্তু
আছ নানি সত্তেও চির্কাল পালে কিন্তু
আছ নানি সত্তেও চির্কাল পালে কিন্তু

THE WAS PROPERTY OF THE PARTY. THE ARE SHOWN THE EXIT WITHOUT PLEASE BOOK AND AND THE CONTRACT AND MIN CATA FORTHWAIT AT A TATE OF COST टर्फानाव मदन नक्ष्मको स्र क्रांस क्रांस क्रा पट्ट नहर विकास सामाना किया करा कृद्य रामान वार्यमा पूर्व हरेटय, कृद्रम व टीरात बना धराख रीन दीन दूत कारादकर তিনি আছা দান করেন, তিনি অভি মতের धन, निजास चाकिकन ना कहिटल कार्राटक পাশু হওরা যার মা। প্রত্র প্রার্নার विकीत विधि वार्क्नका । त्यमन आमिनिटनेत्र অন্তর্ন্থিত পাপ-সমূহ অবগত হইতে চেকী করিতে হইবে, তেমনি তলিমিভ ব্যাকুলতা ও কাতরভাকে অবলয়ন করিতে হইবে। অভাব জানিয়া কাতরতা সহকারে যে তাঁ-হার নিকট প্রার্থনা করে তিনি ভাহার প্রা-र्थमा मकन कट्यम।

কিন্ত কেবল ব্যাকুনভাতেও সকল কাৰ্য্য শেষ হয় না। আপনার পাপের জনা যেমন वार्षिक रहेरक हरेरव एकमि व्यर्थना का-লীন ঈশ্বরের মঞ্জল ভাবের প্রতি বিশ্বাস রাখিতে হইবে। পাপ-ভারে ভগ্ন হইয়া শোকাকুল হৃদয়ে বৎকালে পরম পিতার নিকট আর্থনা করিবে ভর্ম যেন ভাঁহরি প্রতি একান্ত নির্ভয় ও তাঁহার মাতৃ-ভাবের প্ৰতি একান্ত বিশ্বাস থাকে। আমার প্রা-থনা-বাক্য আমার কাডবোক্তি পরম পিডা अनिटबन मा, यं किन कि को कहि मा रकाम कारणहे वार्षिक स्ट्रेट्ड शाहिय मा, खेळाळाडू जार रहेट गर्सनार बोबोर्क प्रकार त्रित्य । यथन (य व्याधन नमुख काद्य क्रिय-CER निक्क निट्यक कहिर्द विषय हिंदे र्शशाह राक्षण अक्षाना केतिरस । र प्रोक्षेत AND IN CONTRACT AND PARTIES

विकास करतम मा। यनि क्लामांत समस्य क्षामांकर साथ कार भाटक, मार कर नातर সরল চিত্তে তাঁহার নিক্ট স্বীয় শভাব क्षकान कतिया जीवन हरेटक हा व, भवना ह তিনি ভোমাকে রক্ষা করিবেন। হা। তা-হার অবহা কি শোচনীয় যে শোকভারভয় श्रुनदत्र शहर्निण नियदत्र निक्ठे व्यर्थना করিয়াও মনে করে শুনো রোদন করিলান, কেই স্বামার যন্ত্রণায় কর্নপাৎ করিল না, ঈশ্বর আমাকে দর্শন দিবেন না, আমি তাঁ-হার ভাল্য সম্ভান, চির্দিনই আমি ছুংখ-मार्वाधिदक मञ्जरहेरा! हाः भारे वाकि त्मी बागामील, त्म प्रत्य विश्वतम मञ्जल পরম পিতাকে নিকটে দেখিতে পায়, এবং তাঁহা হইতে নিজ প্রার্থনার সায় পাইয়া, ভক্তি রুজ্জত। বিশ্বাদে পূর্ব হয়। তগন ा मान करत या यनि अवामि नीन हुःशी, যদিও পাপে অপবিত্রভায় নিতান্ত মলিন, তত্তাচ় অন্থ নাথ প্রমেশ্বর আমার প্রার্থনা অহণ করিলেন, আমাকে চরণে স্থান দি-নেন, আমি চিরকাল তাঁহার প্রতি কুতত্ত থাতিব, চিরকাল ভাঁহার পদানত থাকিয়া कीवनदक मार्थक कतिव।

যাহার। ভ্রম ও কুসংকার বলতঃ তাঁহার
মঞ্জন তাবের প্রতি নির্ভর না করিতে পারে,
এবং টাঁহাকে তরস্ত রাক্ষন-সমান রোশপরবর্ম, বা অভিনান-যুক্ত মনে করে, তাহার।
দেবান্তর কংপনা করিয়া কল্পিত উপারে
তাঁহার নিকট অনুগৃহীত হইনার অভিনন্ধি
করে। অথবা এতালুক কুনংকার বিব্যক্তি ত
হইয়াও য়াহাবিকের আখনার প্রক্তি একান্ত
ভূমা নির্ভন ননে করে কর্মাই নীর আমার
ভিন্তি সম্ভাবিক নাই নেই ক্তার্মার
ভিন্তি সম্ভাবিক নাই নেই ক্তার্মার
বিশ্বিক বার্মার

পদার্পন করে। কিন্ত ভাষারাই তাম ঘাঁ-হার আপ্নাদিগের চুরবন্থা ও মলিনতা দেখিয়াও প্রাভিহত বিশ্বাদে প্রতিভ-পাৰনের পবিজ্ঞার প্রতি নির্ভন্ন করত দিবা নিশি কাতর-স্বরে তাঁছার নিকট প্রার্থন। करवन, এবং निश्मश्मात किरख (सह धार्थनात সকলতা প্রভ্যাশা করেন। 🕆 ঈশ্বরের ক্রোধ পরিতোষণের জন্য ঈশ্বরারভার অদৃষ্ট-পূর্ঝ মানবের আরাধনা করা তাঁহা-দিলের পক্ষে আবিশাক নহে, কারণ ঈশ্বর নর-দেহ গ্রহণ না করিয়াও দীন ছঃখীর হৃদয় কুটারে নিয়ত অবতীর্ণ রহিয়াচেন্ন,এবং কা হার দার। অনুক্রনা না হইয়াও তাহার রোগ শোক মুক্ত করিতেছেন। অতএব বিশাস, প্রার্থনার দক্ষতার প্রতি বিশ্বাদই প্রার্থনার ज्जीस विधि। यथन य विवदस्त अनः श्रा-র্থনা করিবে তথ্য ঈশ্বরের সাহায্যে সেই বিষয় নিজ হট্বে এনত বিশ্বাস করিবে; विश्वाम ना कतिहा व्यक्ति। तथा।

কিন্তু অন্তরের অভাব অবগত হইয়া ব্যাকুল হুদরে বিশ্বস্থ-মনে প্রার্থনা করিলেও কার্যা কালীন চেটা আবদাক। আমি যদি উপাদনার দময় আগ্রহ, নাকুলতা ও বিশ্বাস প্রদর্শন করি, অর্থচ কার্যাকালে অভাানগত পাপে ইছ: পূৰ্বক লিপ্ত হই, তবে আমার প্রার্থনার বিশ্বাদে ব। প্রীতিতে ।ক কল । শাশ ২২তে মুক্ত ন। হহবার হচ্ছ। সম্পূৰ্ণৰূপে আনার চরিত্র ছারা একাশিত হইতেছে। যথন আমার গৃঢ় ইচ্ছা পা-পেতেই ধাবিত इहेल, जेवत कि धामान মৌখিক অর্থনা ভাবণ করিয়া আমাকে পবিত করিবেন? कशनहे न।। नित्रांकतरणत कांत्रण श्रेश्वरतत निकंछ था-র্থনা করিবে, সেই পালের প্রলোভন উপ্ন व्हिष्ठ हरेटन श्रोत कियो बाता थानगरन सा-মাকে রক্ষা করিবে, এবং তাঁহার সাহাত্য

পুনঃ প্রার্থনা করিবে। তিনি সময়ে সময়ে लिए। अक्तिभारक धारमा जन्म गर्या শিক্ষেপ করিয়া তাহাদিপের সরবত। শ্রহ্ষা ও ধর্মান্ত্রাগ পরীক্ষা করেন,এবং ভত্নতীর্ণ ছই-বার জন্য যে একগুণ তেন্টা করে তাহাকে ডিনি সহস্রত্ব হল বিধান করেন, যে এক-छा महिमा आर्थन कटत डाइटिक महत्य छप সাহায়। প্রদান কংনে। প্রার্থনাও করিব অবচ পাপানুষ্টান্ত্র বিব এ উভয় এককালে मञ्चरत मा। आर्थनः चादात এए निगृष्ठ कार्यः। গে উপরে সমীলে এফবার ভাছে উচ্চারণ করিবে প্রান্তিলার করেছে ভবে হুৎকল্য इब्र, कथनरे ७ अडि अर्ड योग ना . অক্ত-ৰূপে প্রবিধা করিলে জীবন ক্ষেত্রে ভাষার চিত প্রামত হইবেই হ্ট্রে, গা-পের বিশানী সাল কাটা আইতবাই মার্তার সোল ৰল লাগন: জংকতত অনিজ্নসমূত হধনে এই জাৰ লাফিনত হয় ন) : চেন্টা প্ৰাৰ্থনয়ে নভ্য এবং শেষ বিধি । যে পরি**মাণে** প্রভ গ্ৰা গাহিত্য প্ৰকৃত ও আন্তাহিত সেই প্ৰ विशादन क्षीयम लायेज, मारे लेकिमारम পালের বিপরীকে চেন্টা বারিছ হয় हेश निश्चारमहरू भाजा। धर्मात खमन शृहासाव পাপেরও দেইবাপ। পাগ-অর্ভি একবার হ্রদাংকে অধিকার করিলে শীঘ তন্ত হওয়া অভাত ক্তিন। ঈশ্বরের প্রতি যথ। কথফিৎ ভক্তি থ কি:লঙ পাপের প্রতি অ-ধিক ভর ভঞ্জি থ কিছে পারে, স্করাং প্রা-প্রাও অ্থকত হইছে প্রি। कार्यमाह कठिन्डम विवि। इं**श्टेड प**ा-খান বস্থা ও নিপ্রহাতিশর হয়, কিন্তু ইহা ৮৪ম্৪ ক্থন **আত্মার প্রকৃত** উন্তি সম্ভা**বিত** ८८६। अतुम नार्तत्वाम **अत्रामध्याक क्वान** খনদ উপহার বা তাকা **উপহার দিলেই হ-**উবেনা, কিছ স্থীবনোপশার দিতে হ**ইতে**, জুমি গে পাপকে ঘূণা কর,এবং ভাঁহার পথে

গমন করিতে প্রতিক্ত হইয়াছ কার্যাধারা তাহা প্রদর্শন করিতে হইবে। তবে তিনি তোমার হন্ত ধারণ করিয়া ধর্মামূত-ধামে লইয়া ঘাইবেন, তবে তিনি ভোমার ক্ষ্র হৃদয়কে প্রশস্থ করিবেন, এবং ভোমার ম-নোবাঞ্জা পূর্ণ করিবেন। অভএব কেবল প্রার্থনা করিয়া কার্যাকালে উদাদীন থাকিও না, কিন্তু প্রাণগত চেকা ধারা স্থায় প্রার্থনা কে সম্পূর্ণ করিও। এই প্রকারে হৃদয় দারা, বাকা-দারা, কার্যা-দারা এবং চেকা-দারা প্রার্থনা করিলেই পরম-পিতার নিকট প্রার্থনা প্রান্থা হয়, নতুবা তাহা অকার্যা-

প্রাথনা কার্যের বিধি চতুঠর নির্দারিক গুইল। প্রথমতঃ আত্মচিন্তা ছালা হৃদদের আতার এবং লাপে গকল পরিকার কলো জা লিঙে হুইবে, ছিতীয়তঃ সরলভা,কাভরভা ও আগ্রেছাভিশয় সহকারে ঈশ্বরের নিক্ট দেই গকল অতার নিবেদন করিছে হুইবে, প্রত্যা-পর অতি বিশ্বস্থ বিনীত চিত্তে তাঁহার দা হা্যা প্রাথনা করিতে হুইবে, এবং প্রিশেবে চেন্টা ও কার্যা ছারা নির্দিন্ট পাপ্তে নথা সার্যা পরিভাগে করিতে হুইবে।

এই প্রার্থনা অতি কঠিন কার্যা, ইহারই
প্রতি আমাদের ধর্ম, ইহারই প্রতি আমাদের ধর্ম, ইহারই প্রতি আমাদের করিছেছে। সমরে সময়ে
এই প্রার্থনাকে শুনা ও বিফল দেখিয়া
আমরা প্রার্থনিকে শুনা দেখি এবং অসাকরিবার সামর্থ পুনর্বার ঈশ্বরই প্রেরণ করে। এককালেই যে প্রার্থনার করল ভাব
স্মাক কপে সকলের ক্লয়ে প্রস্কৃতিত হইলা
উঠিবে এমত আমরা প্রত্যালা করি না,
কিন্তু কালে ভবিষয়ে সকলেরই উম্বিভিও
উৎকর্মতা লাভ হইবে, এবং ভল্পারা সকলের প্রার্থনার করিল

দিণের বিশাস। প্রার্থনী মৃতি ছবং

রহ, আমরা ইশ্বরের সাক্ষাতে ব্রাক্ষধর্শের

নক্ষে নক্ষে সেই রত গ্রহণ করিয়াছি, তাঁ।

হাকেই সাক্ষী করিয়া মৃত্যু পর্যান্ত সেই

রত পালন করিব। প্রাণ সত্রে তাহার

কৃতি করিব না। বার্মার বিকল যত্ন ও হত
চেই হইলেও প্রার্থনা করিতে বিমুপ হইব

না; একবার নাপারি শতবার, শতবার না
পারি সহস্রবার তাঁহার প্রসাদ ভিক্ষা করিব,

কারণ আমরা বিশ্বাস করি যে হিনি নাপ্র

ইচ্ছার সিদ্ধি বিধান করিবেনই করিবেন।

তাকিকদিপের কুমন্ত্রণায়, নাস্তিকদিণের

প্রশেতনে আমরা ভুলিবার নাহ, করিণ

তাহা হইলে।

থতএব হে নির্মাণ চিত্ত সাপু বাজি:
গদি ভোনার এই সংসার-মোহ-কোলাহলে
নির্মার পাইবার শহিলাধ থাকে তবে জনাবাধ ঈশ্বরকে প্রার্থনা করিছে লাবস্ত কর;
সংলারের ক্ষনিতা বস্তু হুইতে সময়ে ননয়ে
বিরুত হুইয়া আন্মানুসকান কর। আন্মানোক কনা কাতর হুইয়া শীর্ন হৃদয়ে ভিক্তুকের
নায় প্রতি দিন তাঁহার ছারে উপানীত হও,
এবং সকল আমোন সকল সম্পদে জলাগুলি
দিয়া কেবল সংকর্ম সাধনেই যান্ত্র কর,
ভোমার আ্রা পূর্ব হুইবে।

কলিকাতা-ব্রাহ্মসমাজের বক্তা।

भवावन ११४८ महा

माण्यः शिष्णप्रदेशयः नाकायः ध्वाणक्रामयणाः । मञ्जा ध्वी निरंबरयणः गता नुबंब्धयण्यः ॥

গৃহী বাজি পিতা মাতাকে সাক্ষাৎ প্র-ভাক্ষ দেবতা সক্ষপ জানিয়া স্থা-প্রয়ত্ত্ব সর্বাদা তাঁহারদের সেবা করিবেন।

शत्रदमभदत्रवरे भारे तस्त्राव, जिनि रेरात

পরম পিতা। তাঁহার সন্তানগণের মধ্যে তিনি এক এক পরিবারে এক এক পিভাকে আ-পনার প্রতিনিধি-রপে নিযুক্ত করিয়া স্থানি-भूग खगानी शामन कतिरनमः अवर निरक्त मक्रव-चार्यत अधिक्रि ए स्वर् मम्ब তাহা জনক-জননীর বিকশিত স্পরে অর্পন করিলেন! এই রূপে তিনি প্রতি পরিবারে আপন প্রতিনিধির প্রতিষ্ঠা করিয়া তাঁহার এই বিশাল বিশ্ব-দংদার পালন করিতেছেন। (यमन नर्डाम धरन এक এक सूर्यारक व्यद-লগ্ন করিয়া এছ উপএছ-সকল প্রজ্বলিত রচিয়াছে, দেই ৰূপ এই সংসার-কেত্রে এক এক পিতার অধীনে থাকিয়া পুত্র কন্যার। জীবন ও সম্পদ্লাভ করিভেছে। সকল গুরুর মধ্যে মাতা পরম গুরু, মাত্রি সেচ ७ इ.टक अथरमरे वानक भांतरभावि इस । ইশ্বরেরই মঞ্ল-ভাব মৃত্রি ক্দলে সেং-ৰূপে, হুনে ছ্ম-ৰূপে প্রিণ্ড হ্ইয়াছে। मकदनत बनभी मकदनत शांतिकी व्य अहे शु-चिनी, भांका अहे शृचिनी अरशकाङ नहीं-য়দী। সাবার পিত। তাঁহা হইতেও ওক্তর। অভ্ৰে গৃহী ৰাজি পিতানতাকে সাক্ষাৎ দেবতা-স্বৰূপ কানিয়া, ঈশ্বরের একিনিধি-স্থবপ জানিয়া, সৰ্ব প্ৰমন্ত্ৰে উল্লেৱদেব সেৱা করিবেক। কুগ-পারন মহপুত ভাইরেদি-থের শ্ভিন্ত বাকা ক্রিকেক, ভাঁছারদের শিষ কার্যা করিবেক ও দক্ষণ আজাবস্ धाकिटबकः। मनमाद्वत् द्यम् निवयं भी , ८वर्-७।कार्रक स्थान मक्टन मर्टाने कटार । পশ্চির মধ্যে দেখা স্থেন-চুচি কেলন শ্বেলা, শাবক্ষিগ্ৰে ভাগায়া কেন্দ্ৰ স্নেহে কেন্দ্ৰ বঙ্গে গালন করে, কিন্তু পিতা মাতার প্রতি নেই পশু শাবকদিলের জ্বান্তাক্তি কোথায় ১ ভাক্তর ভার কেবল মনুসো। ভক্তির ভাব পশুতে নাই , ইয়া অভি উৎকৃষ্ট ভাষ্ক স্থ-

ভরাং আভি বিরল কি পিতামাতা সহজেই পুত্রবিগকে মেই করেন; কিন্তু ঘহিরে৷ সং-পুল-কুলপাবন সৎপুত্র, তাহারাই কেবল ।পভামাতাকে কর্ম্ব্যান্ত্র্যায়ী ভক্তি করে। যে পরিসানে ক্ষেহ, দে পরিমানে এখানে ভক্তি মাই। একটি যে নিউরের ভাব, দেই নিউরের ভারটি ভতি ভারতে উত্তে-জিত করে, মেট্জন। বাগকের বত দিন পিতার উপরে নিংস থাকে, ৩৩ দিন তার गदक भटक खाँक अ थाएक। किन विचार तक युना इकार्य, कथाकम ७ खाधीम रहेगा, হালার বৃদ্ধ পিল্লালাকে জাক্ত মংগারে रमया करतः, रमस् अह निकाम स्राप्तः। श्रेट-भाग भूदोद्रट्ड धनः दर्खभाग मापू भिर्यात कीदम-छतिएक अयस राज नाड एकी साथा पाटक ন্দে পিত্রে জন্ম চুলকর কর্মান কর্মীকার। क्वियार्ड, लिए। इस क्विने कार्याटनत महस्त फांडिमिक्। कार्य पंचियतम हेमाद अवधी স্থান বিশাহরণ আছে: প্রাম পিতা নতি-क्लिक्ष थां कि क्रिक व्येश विशासन स्य 'বৈছামানে যমেরে দিলাম ভাষন অন্ধারিকী ৰ্চিকেতা চিন্তা কাইচেড লাগিলেন যে পি গ यमि अझीकात्र करिशां अवशक्तरतार्थ आं-बारक धमख्दरन शार्शकेशाना सन, उत् ভাঁছার কথা মিখ্যা চইয়া উঠির সাংঘাতিক অনিট হট্যেক: অভএব তাঁহাকে ডিনি क्षे (वर-वाता भावन क्रिया नित्नन। "भ-भुभभागम, भूटम श्राडिशना छथा **भरत।** শ্বন্মিৰ মড়াঃ প্ৰচাতে শ্যানিৰাজায়তে भुका । " "भूकं भूकं भुक्र एकः वांश कतिया লিবাছেন, তারা অনুপ্রিন করিয়া দেখা; গাও এখনকার সাধু **নজ্জনেরা বে প্রাকা**র অভিবৰ কৰিত হতেন, হাহাও পেথ। শলোর नः व मन्या कीवं करेश भरत, व्यद्धि करमात साग नुस्यात जग हार्व करहा। अभन भ-निटा शन्मादा भिष्म कहितात धाराचन

কি? শত্রুব হৈ পিডঃ। তুমি আপনার
প্রতিক্ষা পালন কর, আমানে যম-সদনে
প্রেরণ কর।" দেখা তার কেমন পিতৃ-ভক্তি।
আপনাকে যমেরে দিয়াও পিতার ইউ-সাধনে তিনি তৎপর হইয়াছিলেন। আবার
যম মখন তাঁহার প্রতি সন্তুটি হইয়া তাঁহাকে
বর দিতে অভিলাষ করিলেন, তথন সর্বা
প্রথমেই তিনি বর চাহিলেন যে "লাস্তসংকংশঃ প্রনা যথা সাহি " আমাকে
তোমার নিফটে পাঠাইয়া পিতা অভিলায়
শোকাকার হইয়াছেন; অভএব মাহাতে
তিনি শান্ত-চিতা প্রমনা হন, তাহাই বিধান
কর।" কটেগনিমদের আখ্যামিকাতে সংপুলা লাভকোর লিতার প্রতি মনের ভিলিভাব কেমন প্রকাশ পাইতেছে।

প্ৰেফ লেও লেজ গৱাণণ ভইরা ঈশ্ববের অধিনি সন্মন্ত পিতাসা হাতে ভক্তি ব্যাই অ'লাধ্যের প্রথম উপদেশ। আমাদিগের ৰল-বীঘা যাহা কিছু সকলি পিতাহাত। ३-ইতে পাইয়াছি, পিডা মাতারই প্রতি ভক্তি হত্তি সৰ্ব্ব প্ৰথমে উপ্তিত ছউক। কুল-পাৰ্বন নংপুল মৰ্ক-প্ৰয়ত্ত্বে যেন পিতা মাতাকে মেবা करतम, गर्रवमः छ। हात्र एक खिन्न कार्या करतम अ आस्त्रोवर् पोदकन । खांचापदर्भ गींगादमत প্রদানাই, যাহারা ত্রাক্ষরের শাসন ও উপদেশ অবহেলা করেন, তাঁহার। হয়তো বিলার গৌরবে পিতা মাতাকে লঘু জ্ঞান करतन, व्यथन। धन मरम मख इरेत्रा छैडित-দিগকে অবহেলা করেন। হে প্রিয় ব্রান্ধ-সকল। ভোমরা কদাপি এমন গহিত কর্মা করিও না—তোমরা বিদ্যা-মদে বা ধন-মদে উমত্ত হইরা পিতৃ-ছেলন করিও না। তো-মরা পিভামাতার আ**ল্লরে থাকিয়াই বল** ৰীৰ্যা, বিদ্যা বুদ্ধি, উপাক্ষনি করিরাছ এবং ভাহারণের অসাদেই ধন মান অভিপত্তি ষাহা কিছু লাভ করিয়াহ; অভএব ভাঁহার: দিগকে অবহেলা বা পরিত্যাপ করিও না।
তোমরা বৃদ্ধ পিতামাতার যতি-অবপ হইরা
আমৃত্যু তাঁহারদিগকে বক্ষা করিবে; এই
মনাতন রোক্ষার্শের আনেশা। যদিও জোমারদের প্রতি তাঁহারা বিরক্ত হন, ও তাঁহাদের প্রেহ অক্ষা হয়, তথাপি তোমরা তাঁহার
প্রিয় আচরণ করিবে, তাঁহাকে সম্বিক্
ভবিদ করিবে। 'খং মাতাপিতরো ক্লেশং
দাহতে সম্ভবে নৃণাং। ন ক্ল্যা নিস্কৃতিঃ
কর্মা কর্ম্ব হর্মাত্রেপি।' সন্তান হইলে
প্রতামাতা দে ক্লেশ সহা করেন, শত বংশা
ব্যেপ ভাচার পরিবেশ্ব করিতে কেই শক্ত

খল হইতে পরিভাবেপর বিষয় আরি কি াবেজ বে ছঃগীল ও স্থাৰ্থয়ে পিতার দোষে भारतक भाग मध्यया करेटच छाछ द्रवेसाट्स, । এবং ভাঁষার দাসনে ও দুট্টান্তে ভাঁছর। वर्षात्मकु परिचयन कतित्व योवित इने-গ্ৰহ্ম ৷ কাল্ডৰ পুত্ৰ যদি ভাগ্য ক্ৰমে সৱল इहेन, महावांनी उभावताम् अञ्चलकांत्रन ব্ৰেছা হইল, তবে ভাঁহার চুংগোর ও কো-দের থার পরিংশণ পাতে না। ভিনি সেই অসংখ্য নিজপায় ্বলিককে দেব-মেবা ধর্ম-পথ হইতে অন্ধতম কৃটিশ্বতম পথে আনি-বার জন্য ভাঁগার আহতি নিরব্ধি নির্যাত্ম করিতে কিছুমাল তাটি করেন না। এমন পিতা কণাপি পিতাই নহেন, তিনি মঞ্ল-নিকেতন ঈশ্বরের প্রতিনিধি-পদ ধারণ ক-রিবার উপযুক্ত নহেন। যে পিতা সংমারে প্রতিগত্তি ছানের ভয়ে তাঁহার পুত্রের ধর্ম-পথে কণ্টক আরোপ করেন ও অধর্মা-চরণ করিতে শিক্ষা দেন, ডিনি তাহার ভক্তি-ट्विंडिटक अरक वादत गमूरन खुक करतन। পর্ত্তব্যাপহারী, নাস্তিক, শঠ, মিথাচারী, প্রবঞ্ক,বিশ্বাদ-ঘাতক, রুভদ্ন পুজের নিকট হইতে পিতাকি কদাপি স্বার্থহীন অজা

ভক্তি অত্যাশা করিতে পারেন? সে যদি কামোপভোগে মত্ত হইয়। তাঁহায় শিরং শ্ছ-मन मां कटत. उटत डिनि कीवन পारहेग्रा आख्वारिक जुङा कक्षम । मर्था मर्था कि এমন প্রবাদ ক্রান্ত হয় লা যে কোন পুলা মদ্য পানে উন্মন্ত হুইয়া ভাহার পিতাকে গর্না ত্রির সময়ে বাটী হইতে বৃহিষ্কৃত করিরাছে; কোন পুত্র বা ধন-গোলে ভয়কর পিতৃ হত্যা-পালে নিপভিত হ্ইয়া সক্ষোভাবে বিনকী स्वेतार्कः। भूष वर्गशैव स्वेटन लिखात वृक्त नगरमर तक न। इरेना मजने सरा। अन ভেত্র পিতা বলি ভোৱা আভিষ্য কর্মে ভাবে अभ्यं-म। बहुमाल धाना श विद्वाधी करें-रवम मा. चीत कर्रातात थाँछ । छत-मुख्य हाथित। छेपटनम ७ मुखेष्ट घोता भव्य- ध-মতের ভাষাকে জ্ঞান ধর্মের শিক্ষা বিবেন এবং ভাষার সন্ধান-দক্ষা উদ্ধাপন করিবেন। ভনেই পিভার গুলের প্রতি কর্নাকশ্ব मण्यत का. क्षेत्र, जन्य भुक्त आन गर्या स्थिकिक क्षेत्रा, कीवात धक्ति मद्दाबार् মধ্যেচিত ভিভি ও অনুৱাণ প্রকাশ করিবে।

क्ष्मित भवत निवक्ष कतिया निवाल, उन् क्षेत्रवे भवत निवक्ष कतिया निवाल, उन् केट्यरे भागमानाव रहेशा प्रकानकतिन, छे-करणा स्वाल मानावाद राज्या निवाल गति-विवर्ध स्वाल स्वाल काल घनस्य काल। वस-स्वाल स्वाल स्वाल घनस्य काल। वस-स्वाल स्वाल स्वाल घनस्य काल। वस-स्वाल स्वाल स्वाल स्वाल काल। केट्र स्वाल स्वाल क्ष्मित्व किल्ला काल। क्ष्मित्व स्वाल स्वाल क्ष्मित्व किल्ला क्ष्मित्व स्वाल स्वाल स्वाल क्ष्मित्व स्वाल स्व

ও একমেবাদিতীয়ং

মনে। বিজ্ঞান।

মনের অন্তর্কেশে প্রধেশ করিলা আজি-জ্ঞান সহকারে অনুসন্ধান করিলে তিন ध्वकांत्र छात्र यसुभू इह, छान्दरश्चक, হর্ষকোভবোধক এবং পেছে। ব্রেড। ন্নের যত প্রকার অবস্থা সংঘটিত ছইয়া चाटक जनमञ्जा^{नके} कडमारण रकाब मारकाब ८अनीत अञ्चल ४ ४३ हन् ३ ४४ हन । জ্ঞান, ভাহপারে ক্যান্দেশ্যন, চরিন্দোর্য স্থেত্য চ कि द्वकार जाकिया दिनोनन मध्यादा िण শিল্পত। মানবের স্থির-খন্ত্র সংগঠন ক বিচাত্তন ভাষে মান্তবর পরেক্ষ সমাক্ষাত্রে অনুধাৰন কৰিছে উঠা চংগাধা। নিজ ন क्षेत्रक्षकांत्र भटना, (क्षांटम कार्ब्ड ०५० ্ভিন্ন এবে কাটোর চড় পাবেশ ক্রিটিভ পারের मा, जारे प्रवेश कारबाहित काराची व्यवसाहित शक्त और विवन्तर्व ६० सम्भूताक भव्यविगण कति। েন ভাষাকে আললচনা কান্যা উঠিতে শাবে । যেন অনু শুক্ত প্রান্তা মান্তীয काम-अप हरीतः । है। शह अन् भ्य भा करको-্রনে আরুড কলিবরে জন্ট নিজ্ভাগত निस्तात क्राकार । योग वर्षातामा मध्यान নবিয়ালে নান বেধ গরার সংক্ষার বৃদ্ধির আন-জে নাম্তিত ২তের রচনা কৌশল এক কালে भभानः अत्।(अव।दल'या। वीक शहेदक (यमन জ্বল উহপুর তথা, ভুলার **হইতে যেমন ব**ারি উৎপন্ন হয়,ফাচনাপুর্ন শরীর দেইবাপে উৎ-পন হইয়াছে, এবং র্ফাদি অনিচা প-দাথের মত এক দিন ভূমিমাথ হইবে। কিন্তু জ্ঞান প্রতি পরিবজা, হর্ম ক্ষোভ স্বাধীনতা, চদত্যত মহান অবিনশ্ব জীবালা, এবং ভাষার ডেজ্বপুঞ্চ চেড্নামর নিয়মাদি কি প্র-কণ্ডে কাছার ছার্ভ কোন্দনতে সংরচিত হুট্ড ! যদাপি ঈপুর সেরপে ক্ষরতা দিতেন ভবে সদাঃ অস্ত শিশুর অন্তরে এবেশ ক-

রত বিজ্ঞানবিৎ মহাঝারা মনের রচনা প্রণালীকে হলাত করিয়া জগতের জ্ঞানকে উজ্জ্বল করিতেন। কিন্তু ভাঁহার ইচ্ছা অন্য প্রকার ভিনিরার ছিলিপ্ত-হৃদ্যে অলক্ষ্য ভাবে পর্মাণিতা স্বীর প্রতিক্রতি মুদ্রিত করিয়া চলিয়া যান,উণ্যুক্ত সময়ে ভাহা জ্ঞান প্রীতি ইচ্ছা দশের জীবাস্থা-জ্বপে প্রকাশিত হয়, এবং মানশ্লিকত স্থানহান কীর্তি সংস্থাপন প্রকাক মানব জ্বোর গোরব প্রচার করে।

আমাদিবের বিজ্ঞান ঈদুশ মান্দিক প্রিপক্ষাবহা ভিন্ন আরে কিছুই এইণ ক েতে পারে না। এবং কদনুষায়িকই আমর। বিচার করি ধ্যু মধ্যের মন সংক্রীয় দকল कार हे कान, वन-काल करा त्यका, कर লৈবিৰৰবেশ বিভক্ত। ইঞ্ছিবির মাধ্য ‰ানই মার্ড অধান, ভামপারে **মন্মাভ**, এবং প্রেশেলে থেছে।। মে কোন বিষয় সমুদ্রে इंडेक .कां ७ यः व्यास्तान गहेताः। भूतस्य ८म हे বিপ্রত্যু চারা বং মন ঘারং জ্বান-রেগালে কর-আন্তাক , এবং ভাষা অহণ বা পরিচাপে ক্ষিবার ইজা হই শার পু**র্বের ভল্ম্পনি** দর্মন কোড বল্লা অনুশাক: মনে কৰ আমি একটা অভি স্থানর পাণার্থ ধারলোকন করি লান, দেপিবার ভাষা আমার জ্ঞান-গোট্র হট্ল, এবং ভার-গোচর হট্রা**মাত্র ভারার** গৌন্দ্য জনিত আগার মনে হর্ষের উদ্রেক ছাংল, এবং অভঃপর মুক্তা দ্বা জন্ম বা অপর কোন উপারে তাহা এহণ করিতে ইচ্ছা **হইল।** পদার বস্তু নমকো যে ৰূপ কুংসিত পদার্থ तप्रदक्ष व सुन् सिंग रमहेक्षा वाड **এर छ्यान**-বিষয়ক ভাষ্টয় মন্ত্ৰোল আ**লাতে প্ৰথমে** জন্ম এ০ণ করে, জানের প্রকৃতি অমুযায়িক হণবা মেন্ডের ভাগ অভংপর আহার

মত্তৰ করে, এবং প্রি**লেষে মলের স্থান্ত বা**

ড়ংবের অবস্থানুযায়িক নলে তরিহিত ইচ্ছা

कट्य। याज्यसभारमा विकास आंद्रणांकमात्र छ-

র্ত হইয়া প্রথমতঃ আমাদিগকে জ্ঞান সম্ব লীয় ভাবৎভাব ও প্রবৃত্তি নিরূপণ করিতে হইবে। এক আত্তিভনা এবং আত্মজ্ঞানই আমাদিপের অবলম্বন, দেই কঠিন এবং ছুর্না-বছার্যা অন্ত ধারণ করিয়া আমবা অতি সাব-দানে বিজ্ঞান-ক্ষেত্রে উপনীত হইতেছি, ভ্রম-ক্ষপ অসথ কল লাভ না করিয়া যাহাতে প বিশ্রম ধারা দত্যের অমৃত ফল লাভ করিতে প্রায়ি ইচাই আমাদিগের উদ্দেশ্য।

राङ्ख्यां क्रिमी।

१,१८५ मा भाविकात हर श्रीति शहा

ল কলেজেল বাজর স্বল্পকাল স্থানী ভিল, উলোদ সহায় উজ্জিনীর অধিপতি লষ্ঠাক্ষ লো চ, স্থারিত হুইলেই প্রান্ধানকল ক্রিচার হুছি অমাস্থান প্রশান করিতে আ রার করিল। এবং তাহ'র। মুক্ত ভূপতির लक्षक के खता चिल्लीती । अवनदममदक व्या न्त्रांस कतिल । धारहरम्स रेमना मांग्छ मह-গ্রহপুর্বাক কাশ্মীরাভিদ্যতে গ্রহন করিলেন। মাত্র কু ক্ষায় রাজ্য রক্ষার্গ কোন উদ্যোগ ই। करवन संग्रे, जे हैं क्लाइ धारततमम कामाशाहर ও বিনাধুকে রাজাধিকার করিলেন। ম[া]-कुछल मिल्हामन्। छ हहेश दास्त्रमी श-মন করিলেন এবং ভগায় ধর্মা,চরণ ও ইন্ট-সাধনেই কালাভিপাত করিতে কাগিলেন। তিনি প্রায় পাঁচ বৎসর রাজত্ব করিয়াভিলেন। প্রবরদেন অতিশয় প্রজারঞ্জক ও বিক্রম-শালী নরপতি হইরাছিলেন, তিনি উজারিনী নগর আক্রমণ করেন, এবং তথাকার প্রাধ-পতি বিক্রমাণিড়াভনর শীলাদিভাবে যুক্ত প্রালয় করিয়াছিলেন। এই সময়ে তিনি উজ্জারনীর বিখ্যাত ছাত্রিংশৎ পুত্তিকাল-क्ञ भिश्शमन सीम ताक्षभानीटक वहेता शि য়াছিলেন। ভিনি শ্রীনগরকে নানা প্রকার

মুদ্র ও দুল্ন অনুনিকা হার। সংশোভত করিয়ানিলেন। প্রবাদেশ ৬৩ ব্রুমার করেন। জালান পর তালার জন্মার করেন। জালান পর তালার জন্মার জন্মার করেন। জালার জন্মার করেন। জালার জন্মার জন্মার করিয়ানিলের করিয়ানিলের করিয়ানিলের পর জালার জালার রাগানিলের করেলানিজার পর জালার জালার রাগানিলের করেনাল জন্মার জিলান জন্মার জিলান করেনাল জিলালার করেনালি করেনালার করিয়ানিলেন কর্মার করিয়ানিলেন ক্রালার করিয়ানিলেন ক্রালার করিয়ানিলেন ক্রালার করিয়ানিলেন ক্রালার করিয়ানিলেন ক্রালার করেনাল করেনালার করেনাল

हों। किया अस्तात् ग्रेक्ट विस्तान करा लिंधार वेलिशाम भारतक भारता क्रिक भी र्षेट्ड भित्रशृत, विक खाका व करता प्रदेश करा पः (तराकः। हानाविक्राचात्र रात कि. অম্বাধিকা দে স্বাধিদতা তাম কৰা। ১০ लोफिटा महाजनसंबोधीनोन ६ कुक महत्व र्रावयः विकासि (हाराज्ञः, रेपनि न में व क्षेत्रक देसम्बद्धारम्भ सम्बद्धिः । १८०० । अस्तर् ममुख्य होति । मान्य प्राथ्य विश्व कार्य । गान्न করিয়া ভ্রমণ আগ লাভিয় চিব সভ্ত अवस्था अला । महिली हरकार । बहुत দিক্তের অব্যাক্ত করণ ছবা, এবং বান গোমক জালের গোল স্পতিত চেলত , रेमन्का ५ । इस्ताहार्यसम्बद्धाः । **হা**তে অগলালয়ে, বলিয়াছিল, যে উটো প্রতিক্রমণর ক্রিটোভর বংগার ১৩১ का भौतिक विश्वनित्व स्थिति स्टब्स्क । ब्रोका क्षेत्र छित्राद बोकारण वार्थ करिस्त निमिक्त कीय क्षापटक क्षाप्तिक दर्भावः भाग । किछ रिम्बिनिवकार फूल छद्धित स মক এক জন ভূপতির প্রিয় সভাসদ ভূপ-ব্লোর মাতিশয় আহি-ভাজন হট্যাচিলেন,

এবং গোপনে তাঁহার পাণিএহণ করিয়া-ছিলেন। স্থতরাং রাজার মৃত্যু হইলে পর অধান কর্মচারিগণের মহায়তায় তিনিই রাজ্যাভিষ্টিক হইলেন।

छूर्ल छ-वर्षान कटकी है नार्शत वंश्तमास्वव ছিলেন। তিনি স্বয়ং ধর্মপ্রায়ণ জিলেন এবং প্রকাদিগের ধর্মোল্লভির প্রভি বিশেষ মনোবোগ করিছেন। ভিনি ৩৬ বৎসর রাহ্মত্ব করিয়াছিলেন। তাঁহার পর তৎপুল প্রতাপাদিতা রাজা হন। ইনি স্বীয় নামে এক নগর স্থাপন করিয়াছিলেন এই নগর অপ্প কলি মধ্যে অভিশয় সমৃদ্ধিশালী হল্-शুছিল। এই নগর মধ্যে নোনা নামক এক জন মহাধনাত। বণিশ্ বাদ করিত। এই ব্যক্তির মহিত রাজার প্রম বকুত্ব হই-য়াছিল। এক দিবদ বাণক নরপভিতে নিমন্ত্ৰণ ছাৰা সীয় গৃতে আভ্ৰান কৰিয়া রাজি কালে দ্বালোক পরিবর্তে রাশীরত হীরক হারা গৃহকে আলোকিত করিয়াছিল। রাজ: ইহা দেখিয়া আশ্রুয়া ও হর্ষে পুল-কিত হইয়াছিলেন, ইতার্মরে বণিকের এ-কটি প্রম কপ্রতী ভোগ্যা নারী অকস্মাৎ রাজার দুটি পরেণ পতিত হইবা মাত্র রাজা াল্য ক্ল লাবণ্যে একে বাবে বিমোহিত-(५% क्षेटलन। কিন্তু লজ্জা ও কলক ভারে স্বীয় মনের ভাব ব্যক্ত করিতে অবক্ত হুইয়া উপস্থিত মনে।বিকারকে দমন করি-লেন। পরস্ত ভাহাতে তদব্ধি তিনি বিষম রোগে আক্রান্ত হইয়া শ্যাগত হইয়া প-ড়িলেন, এবং ভীহার প্রাণ পর্যান্ত সংশয়া-পন হইয়া উঠিল। ইহাতে বণিক্রাজার মনেবিকারের ও পীড়ার কারণ অবগত **অবিলয়ে । तरे युव**ोदक न्-হ্ইব্যাত প্ৰদৰ্শন প্ৰেরণ ক্ষিলেন। কিন্তু মূপতি ধর্মভীত ছিলেন তিনি পর জ্রীকে এহণ করিতে অস্বীকার করিলেন। পরে ব্রিক্ ভূপতির সহিত্ত অনেক তর্ক বিভরের দারা णशिदक प्रयाहेदन शत, जिनि त्मरे माहीदक धार्व कतित्वम, अवर छाहात माम मदत्व-প্রভা রাখিলেন। এই জীর গভে রাজার माउपि मखान इरेशाहिल। इरुट्रपत भट्धा চক্রাপীড় ভারাপীড় এবং ললিভাদিত্য নামক তিন পুত্র রাজার মৃত্যু হইলে পর একাদিক্রমে রাজ্যাভিষ্তিক হইয়াছিলেন। ললিতাদিত্য অতিশয় বিখাতি ও বিক্রম-শালা নরপতি ছিলেন। তিনি স্বীয় বিজয়ী দৈনা সমভিব্যাহারে লইয়া প্রায় সমস্ত ভারতবর্ষ মধ্যে একাবিপত্য স্থাপন করি-বাছিলেন। প্রথমে তিনি অন্তর্কেনী নামক प्रशास्त्र करवन, **उ**०१८त यटणानमं नामक কানাকুজ নগরাধিপতির প্রতিকৃলে গামন করিয়া তাঁহাকে যুক্তে পরাস্ত রাজ্যচুত্ত कतिशाहित्वन। यदमावन्त्रं भक कन दि प्लांदमारी जूपिक **हिट**लन। हैं। तहा विश्व কবিবর ভবভূতি কবিবাসস্পতি এবং র্ জন্ম বাস করিতেন। ললিতাদিত। ভদনভুর গোড় ও কলিঙ্গ দেশাভিমুগে যাতা করি-লেন এবং তথায় স্বীয় জয়পতাকা উড্জীয়-মান করিয়া দফিলে কণাট দেশে প্রস্থান করিলেন, তথা হইতে পাশ্চম সমুদ্রতীর-বজী হইরা দারকার উপস্থিত হইলেন। খারকা হইতে নিগতি হইয়া বিজ্ঞাগিরি ল-ख्यन क्रिया चनखीनगदत व्यद्यम क्रिटलनः व्यवः वह तदल ममुनाय ভाরতবর্ষ क्रमकिन করিয়া ও বছ্ছর রাজগণকে পদানত করিয়া শ্বরালে। প্রভাগেমন ক্রিলেন। কাশ্মীরে আগমনামন্তর স্থীয় সেমাপতি ও व्यभान व्यभान कचाहाती मिश्राद्ध भूतकांत्र व-ৰূপ অধিকৃত ভিন্ন ভিন্ন প্ৰদেশের শাসন-কার্য্যের ভারাপণ করিলেন। কিছু ভিন श्रिक कांग दित्र शांकिए शार्त्रन नाहे," अत्र नाटच्य क्यांग डिट्ड विक स्टेम

রার হিমালমের উত্তর উত্তর কুরু নামক भूतान व्यक्तिक देननाजिम्दर्श याजा कतिदनन। এই স্থান কুবেরাস্থার রক্ষণিগের বাদতান विद्या शांख, देश मसुट्यात वर्गमा। किछ ললভাদিতা স্বীয় পৌরুষ বর্জনার্থ এই স্থানের অবেষ্ধণে হিমালব্যের অভ্যন্তরে প্রবেশ করিকেন। কিয়ন্দ্র গমনান্তর তিনি মহাক্রেশে পতিত ইইলেন, পথ অতিশার कुर्भम इहेश छिठित, এবং পর্বভ-বাদী বন্য জাতিরা নানা দিক হইতে তাঁলার দেনা গণকে নিহত করিতে লাগিল। এই প্রকার প্রমাদ দেখিয়া নুপতি পত্র দ্বারা দ্বীয় ম-স্ত্রীকে জ্ঞাপন করিলেন যে তাঁহার প্রতি-গমনের আশা নাই, তুরাকাজ্ফাই তাঁহার মূহার করিণ হইন, স্করাং যুবরাজ রাজ-সিংখাদনে অধিরোহণ করুন। রাজার মার কোন সংবাদ প্রাপ্ত হওয়া গেল না। ললিছাদিতোর জ্যেষ্ঠ পুত্র কুৰ-লয়াপীড় র'জা হইয়া, পাছে তাঁহার ক-নিষ্ঠ আভা রাজত্ব পাইবার জন্য বিদোহ উপত্তিত করে, এই আশকায় ভাহাকে শ্বথে কার্য়ন্দন্ধ করিলেন। পরে কিয়ৎ কাল রাজকার্য। নির্বাহ করিয়া তিনি উ-দাসচিত্ত হইলেন, এবং পুনরার স্বীয় ভাতা বন্ধাদিত্যকে কারাযুক্ত করণান্তর ভাহাকে রাজপদে স্থাপন করিয়া যোগ সাধনার্থ मनारमाञ्चम व्यवस्य कतित्वन, व्यवः वह बाल দুক-পূৰ্বমিক প্ৰতিভৱ এক গুছাতে বাস করিয়া জীবন অভিবাহিত করিতে লাগি-লেন। বন্ধানিতা অতি নিষ্ঠুর ও ইত্রিয়-পরায়ণ হইয়া উঠিলেন। ভিনি কেবল चीत्र ट्यांगा त्रमगीमिटगत दिन जुराटण्डे यमानात सुना कतिशाहित्सन, अवर जारर्थत विभिन्न याना अकारक ट्रमहिनदात निक्ष विक्य कतिर्देश। छात्राकरम वह रुगिक तास्त्र बागावाबमाव हिन । रज्।-

দিখের তিন পুত্র ক্রেম রাজন্ব করিয়াছি-লেন, তল্পধ্যে কনিষ্ঠ **জ**য়াপীড় যিনি শেষে সিংহাসনত হইয়াছিলেন তিনি **অনে**ক গুণালক্ত এব॰ সুথাভিতিত হইরাছিলেন। তিনিও অপরাপর বীর্যাবন্ত নরণতির ন্যায় অনেক দেশে স্থীয় জয়প তাকা লইয়া গিয়া-ছিলেন। অপর তিনি স্বদেশে সংক্ত भारत्व ठानगढ क्षा विस्थय मरनारयात्री ছইয়াছিলেন। তিনি আধ্যাবর্তের প্রায় সমুদায় অধান ও নিখাত পণ্ডিতগণকে স্বায় মভার আনিয়ন করিয়া রাখিয়াছিলেন। এই সকল পণ্ডিতের মধ্যে সকা প্রধান वाकिभिरशत नाम ७३ ७ मोरगोनतथ्व দন্ত, চাতক সন্ধীমান, এবং বামন,এই কএবং বাক্তির নাম প্রাপ্ত হওয়া যায়৷ এই প্র-কারে কিছু কাল রাজ্যের কুশল বর্দ্ধন করিয়। জয়াপীড় নেপাল রাজ্য আক্রমণ করিতে शिटलम। किन्नु এই मिटल व्यटनम करि-বার পতাদি তিনি জানিতেন না, স্কুতরাং কিয়দুর গমন করিয়া এক নদী পার হই বার সময়ে হঠাৎ নদীর জগ ও জ্রোত রদি হওয়াতে ভাঁছার সমুদায় দৈনা ভাগিয়া প कनमध इहेश (शन। ताकांत्र अहे काल প্রাণ্ডাণ্য হইত কিন্তু বিপক্ষ বৈদনার। ত্রীলাকে ভাগিতে দেখিয়া জল হইতে উদ্ধার করিয়াছিল। এবং নেপালরাল ভাঁহাকে नहेश शख्टीननी जीत्रष्ट এक हुन मर्पा तस्त्र कतिश होशिदलन। काम्बोदन गरे छ्य हैनात কথা শুনিবামাত অজাগণ মহাব্যাকুল হইল। প্রধান মন্ত্রী অপরাপর রাজকণ্মচারিদিগের মহিত পরামর্শ করিয়া আপনি কিছু দৈনা लहेश (नश्रांत तमम कतिरलमः) खवः তথাকার ভূপতির সহিত দক্ষি স্থাপনের কথা ধার্য্য করিয়া একবার তুর্গ রুদ্ধ কাশ্মীর রাজের সুহিত সাক্ষাৎ করিতে চাহিলেন।

তাহাতে নেপাল নরপতি সহজেই সমাত হ-ইলেম। পরে মন্ত্রিবর জয়াপীড়ের দহিত শাক্ষাৎ হইলে পর ভাঁহাকে পলায়নের भवामर्भ मिट्यम । বিস্তু রাজা কিন্সপে একাকী গণ্ডকী পার হইবেন তাহা কিছুই হির করিতে না পারিয়া প্রভুভক্ত মন্ত্রী কহিলেন যে মহারাজ আমি আপনার নিমিত্ত প্রাণত্যার করিতেছি, প্রাপনি সামার মৃ-তদেহ নদীতে ভাগাইয়া তদবলম্বনে পার হইতে পারিবেন। এই বলিয়া মন্ত্রী তুর্গ-আচীর হইতে আপনি পতিত হইয়া প্রাণ-ভ্যাগ করিলেন। এবং রাজা তাহার দেহা-বলম্বনে নদী পার হইয়া ছঅবেশে কাশ্মীরে প্রজ্যাগমন করিলেন তাহার কিছুকাল পরেই लाहात मृजूा शहेल।

অনুটানের আবিশাকত)।

(ত সংগ্রে পত্রিকার ১৮ প্রার গরে।

(আপ্রে)

প্রাক্ষানিখার সানুষ্ঠান কি কি এবং সেই সকল অনু-স্থান কভদুর কার্ট্যা ভাষা কর্পাক্ষণ আলোচিত ইইল, একংশ সেত্ত সম্ম বিষয়ে বে সকল আলোচিত উঠি-মানে তা প্রাক্তি থকন করিভেছি।

ংট আপত্তি এই যে ব্রাহ্মদিগের অনুষ্ঠান-সক ্রাণ পৌরুলিকদিরগর অনুষ্ঠানের ন্যায় বুন সংসাধ 🚧 জট্যা দাইবে। ইহার অর্থ আমি প্র-ফুড্রুপে বু, স্পারিভেড়ি না। **তবে ব্রাফো**রা কি শাস্ত্র ভাতৃত্ব কালে পৌ**ভলিকদিগের মত** १२४ - वरीह शका कतित्वय । कावात कि धमन · ' ভইতে ষণম শিলা একারের প্রকানা করিলে ব্ৰান্তিৰ অনুষ্ঠান সকল সম্পন্ন হইবে না ? ইহা এবন বিকাস করিব ও ঘলি এক **ঈশ্বের সকলেরই** : ৬০ বিশাস থাকে খাদি সকলেরই এ জ্ঞান **থাকে** अब क्षेत्री विभान खंदर कि अकादत . शूनकांत्र स्थी-'হ'লকভাৰ সংগ্ৰুম **হইছে.**? (भो खनिक मिन्न তাকতি চ বিদায়ে এবং **ধর্মা-বিধানে অক্সানভা,** মাত্রাট ভালাদিলের কিয়াতে কুসংক্ষার সকলারি-াল বৰে: ভাষায়া বিশ্বাস করে প্রিওদান ক-িতে পিলে পর্ব ইইডে ভোজেন করিয়া পরিত্র ইন টালরে) ব্যাভার সহিত **প্রিও দান**্**কার**; प्टार्शन विश्वाम करत शक्षात करने मञ्चरमात अहि पदमाब शन्तिक इस्टेन्ड म उदाब भार, काराता

मस्यादक श्रेष्टीत बोर्ड शहिम कहिटल मा भाहितक महा क्रिके ଓ फूंक इंग, काबारा दमन रमनीत पू-कारक शहर भन्न काम करत, बुखतार अनुक्रीम-কালে ভাহাদিগকে পূজা না করিয়া সুন্তির হইতে भारत ना । किन्हं वर्षने खोका पिरशत मन्भून दिल-রীত বিখাদ, যথন তাঁছারা গলাকে গেলী জ্ঞান करतन ना, जेसत जिन्न जात काशातक आहा करतन না, পিতা বৰ্ণ হইছে পিও ভোজন করেন ধর্মন তাঁহার। ইহা অম বলিয়া জানেন, তথন তাঁহাদের লিয়াতে কিরুপে পৌড়নিক কুসংকার দুট হইবে। ভবে হয়ত এমন জাভি থাকিতে পারে যাহাদের ভিভরে ভেমন বিদারি চালনা নাই, যাহাদের প্ৰাকৃতিক ঘটনাও অন্যান্য বিহয়ে অনেক কু-স°কার রহিয়াছে, অপচ ব্রাহ্মধর্মকে গ্রহণক-রিয়া ভদনুষ্ঠানে প্রবুত হ্টয়াছে। এরপ জাতির ক্রিয়াতে কুশংক্ষার দৃষ্ট হইখার নিজান্ত অণ্ডা-বনা নাই। কিন্তু ব্ৰাহ্মপৰ্ম গিয়া যে ভাষাদি গকে কুসংস্কারে জড়ীত্ত করিলাছে ভাহানতে, 💖 হাদের আহা বুদংস্কার জালে জড়িত পাকাভেট ব্রাহ্মধর্ম তথায় উজ্জ্বরূপে থেকাশ পাইডেচন নাই। ফল্ডঃ যে জাতি আপনার আগতে যত উন্নত করিবে, ভাষার মধ্যে ব্রাক্ষাধর্ম ভাগই সমুক্ষ্য বেশে প্রকাশিত হটনে, এবং বে জাভির আত্মা যত হীন অবস্থায় থাকিবে, ব্ৰাহ্মধৰ্ম্ম কেথানে ভত্তই মলিন রূপে আবিভূতি থাকিবে। অপিচ ইহা যেন खागोरभत खात्र भीत्र सारा प्राप्त खाला खाल्छोन खाला माहे प्रतिकृति है के अरखात अल्य व्यव गाव। कुनर-স্কারের অর্থ--জ্জানত।। অস্থানতা এক দিক मिशार्थि सा शीश असा मिक मिना वाहित इहेटवरे হইবে। মুসলমানেবা এ০ লগারকে বিশাস করি-য়াও অন্তানতা দশভ ভাগণাঁচত অনুষ্ঠান সকলে व्यद्भाद सं हहेश। थानिए भारत गाहे। कुनश्काद সকল দুৱ করিব নাঃ এখচ ত্রাধাখন্মের মুন্দর রূপ অনুষ্ঠান করিব ইহা মনে করা রুধা। একাণে হয়ত কেছ কেছ বলিবেন ভবে ব্রাহ্মরা ক্ষণ্ডো দেশের कुत्रः कात नकत पृत कतिया शद्र किन प्रमुक्तेन मक्स क्षत्र कि ना कदान ? ध कारमूद उत्ते धर्ट व, ব্রালেরা के এই দেশকে জানালোকে উজ্জুল ক্রিতে প্রত হন নাই ? তাঁহায়া ক্রনই বালক-मिर्शात सानिकार्य विमेशानस सानिक केंद्रिकार्रिकन, क्रमहे ना उँशिहा अख्यश्चार क्वीनिकात नित्रम क्षतिवृत्र कतिराज्ञात्र । दक्ष विविद्यम् देशहे कि मानामा हरेल, द्वारकाता नेपूना नामाना निर्माह कि गहारे वाकित्वनं ? मा, ब्रांट्साती देश कारमन व्य डीहात। डीहारम्ब हेक्कामक सक्त बार्ग समाधा कतिएक अमालि शाहने हरेक्स नाहै। जारोजी अज्ञता हर्शन उ जारकते। जानिक जीवादनंत्र यनि ভেমন সঞ্জতি কাৰিত, জানালোক প্ৰদান করিতে যাহা যাহা প্রয়োজন তাহা যদি ভাঁহারা বিশেষ রূপে সংগ্রহ করিতে নমর্ব হইতেন, তবে ওাঁহারা এ দেশকে মতাও জান রত্বে বিজ্যতি করিতেন সন্দেহ নাই। যাহারা এ দেশকে বিদ্যাধনে সন্পর করিতে, অজিলামী হয়েন, তাঁহার। ব্রাক্ষাদিণ্ডিক সাহায়া করিয়া দেখুন, দেখিতে পাইবেন এ বাকা কভ দুর মধার্থ। ঈশর করন যেন ব্রাক্ষেরা এ দেশকৈ দিন দিন জ্ঞানালোকে জালোকিত ক্রিতে পারেন।

অনুষ্ঠানের বিপক্ষে ছিতীয় আপত্তি এই যে ত-म्हादा टकरन व्यर्थ-बाग्र रग्न। जुला ताग्र कोर्हाटक वटन विज्ञा निष्ठ इट्रेन । अर्थ कि निभिष्ठ ? आमारनत গুয়োজন সাধনের নিমিত্তই কি মুদার প্রচলন नंदरी अनुष्ठीन जकन य आगःदमत कीवदनत महर उशकाती शृत्वह छ।। गिष्काश्व इहेशाए, মুত্রাং অনুষ্ঠান সকল কি আমাদের প্রয়োজনীয় বিষয়ের মধ্যে পরিগণিত হইবে ন।? ভাহা যদি আবশ্য হ ইল ভবে ভাহাতে অৰ্থ লাগে দিভেই হইবে। এ কথ! উপস্থিত হইতে পারে যে বিদ্যা মত দুর আবিশাক অনুষ্ঠান তত দুর আকশাক भरण। द्वारकात्रां विष्णारक अमापत मा कलम, কিন্ট্ ইহা কি সভা নহে কিলা অপেকা ধর্মেতে অপিকজর প্রয়োজন? এ কণা শুনিয়া কের কেল অবাক্ লটনেও পারেন, কিন্তু ইছা অমূলা শভা। তবে বোকে বর্দের জন্য অর্থ প্রয়েপ क्रिक्ट क्यारे काल्द्र स्टेख्य ? यमि वना बाग्न আংগাত্মিক অনুষ্ঠান করিলেই ধর্মা হইতে পারে, गरिक अबुर्शन मा कतिनाम ? किन्न आमि जिन গোলা করি অনুষ্ঠানের প্রাকৃত ফল আছে কি না ? व्यत्नदक बरलन नमाएक ना बाबरत कि धर्म हम ना। ইশ্বর মনুযোর প্রকৃতি এমন করিয়া দিয়াছেন বটে व विश्वादन डाकाममाज नाहे, विश्वादन अनुक्षेत দকল প্রচলিত নাই, ধেখানে মনুষোর তেমন সামাজিক চেন্টা নাই সেথান কার লেকেও ধ-র্মের উচ্ছের মুখ দর্শন করে। কিন্ত সে সভা ঈ-चत्त्रत अन्छ महिनाहै श्रकाम करत, अनुश्रीदनत अ-নাবশ্যকত। সপ্রমাণ করে না। বেথানকার লোকে আগার উন্ভি সাধনাথে সমবেত হইয়া চেটা দা করে, দেখানকার ধর্মোগ্রতি কখনই তভ শীস্ত্র সম্পাদিত হয় না। আমি অনেক সময় দেখিয়াছি या "मभाष्य ना बाहरल कि अर्था दम ना" अहे कूटक वाका भावा मजल युवानियांत मन युक्त घटेगा नगांक হইতে দুরে কাল বাপন করাজে ক্রমে ভাহারা অম ও व्यवस्थिति निम्तं इहेग्राशिग्राट्ड। त्यहे क्रेश व नकत जान अस्कोरन अस मूच स्ट्राट्डन, डीहा-রাও কংম পোভালিকভার দান হইয়া পড়িয়াছেন। যাহা হউক অনুষ্ঠানচয় ধখন মনুবোর খাভাবিক কিয়া এবং নছত্ব সাধন কারী বলিয়া ছিরীকৃত হইয়াচে, ভখন বাহারা অর্থ-বায়ভয়ে ভংপা-লনে বিরত্ত সন তাঁহারা নিভান্ত জনসকল যুক্তির অনুসরণ করেন। আর এক্লণে ইছাও লিজাসা করা ঘাইতে পারে, ব্রাক্লদিগের অনুষ্ঠানে অধিক অর্থ বায় হইবে ইহারই বা সন্থাবনা কি! পৌত-লিকদিশের অন্ঠানে দে অধিক অর্থ-সায় হয় তা-হার প্রভুত্ত কারণ আছে। ভাছাদের মন প্রায় ধর্মের দিকে বড় ছুফি করে না, ভাহারা অনু-ঠান কালে প্রায়ই যশং নান আমোদ প্রা-নোদ অভিমান ছারা উত্তেক্তিত হইয়া পাকে। ক্রমশং প্রকাশা।

নুতন পুস্ক আস্তি।

"কেটিল দৃত্ত কাসাং"। এই চাবা খানি কাঁকপরআদিরদ সংঘটিত, ভাগার্থ সম্বলিত সংস্কৃত কবিতার সমিটি। কবিতাগুলি স্থানে স্থান্ধ-পিপত ও সুন্দর, কিন্তু অপিকাংশই শকুন্ধলা পদাক্ষদৃত প্রেকৃতি সংস্কৃত কাব্যচয়ের অনুকরণ নার। বাহা হউক সংস্কৃত রচনার চেন্টাই মহং। লেখন মহাশয় বে হজু ও বায় সহকারে সংস্কৃত ভাষায় নিজ বিদ্যার এবং দেশীয় প্রাচীন ভা-যার উৎকর্ষ সাধন চেন্টা করিয়াছেন স্মামর। ভজনা ভাঁহাকে সাধুবাদ দিতেছি।

"চিন্তানালা"। এই ক্ষুদ্র পুত্তক থানি বিবিধ বিনয়ক কতকগুলি চিন্তা দ্বারা পরিপূর্ণ। শক্তের ঘণ্ণাতা নিবন্ধন সর্ব্বেই গ্রন্থকার মহাশায়ের চিন্তার্থ সংগ্রহ সাধা নহে, কিন্দু স্থানে ভাবে গ্রন্থ-ধানিতে উৎকৃষ্ট উৎকৃষ্ট সভা উল্লিখিত হই-য়াছে, ধ্যা মানব জীবন সমৃদ্ধে এক স্থলে কথিত ইইয়াছে,—

'মানবের ভাগ্য সর্জ্যাই চঞ্চল, কিন্তু চঞ্চল-ভাৰই মানবের ভীবনী শক্তি।'' প্রায়শ্চিত সমকো;—

"বর্গ আর নরক, আনন্দ আর বস্ত্রণা ভোগের ছইটা বিশেষ অবস্থা মাত। কক্ষানার বসন হইতে সেই ছই অবস্থাকে শ্না কর, আপন অন্তরেই ভাহরে আভাষ পাইনে।" পুনর্কার এক স্থানে কথিত আছে;—

''সতা, দয়া, কনা প্রভৃতি গুণ সমূহ পৃথক পৃথক নহে। সে সঙ্গল সেই নিরাকার জ্ঞানেরই শুণ দার, এবং সে জ্ঞানের ভাব অনস্ত এবং অ-থও। সুভ্রাহ ভাদুশ জ্ঞানই পর্য জ্ঞান "

"লোকে যদি পৃথক পৃথক রূপে সভা, জ্ঞান, দ্যা, ক্ষাং, উপাসক হইল; যদি আলোচনা ক-রিয়া ভাহার একটীকেও খেয় করিভে না প্যারিল,

এবং হদি ভাছার মধো একটীকেও ছাড়িয়। না ब्लिट्ड भातिन, ज्ञान काविमा देवथ देवीथ द्वारिक একরণে অন্ত, অথও,নির্বয়স, সভ্যক্ষপ শ্রবণ-चक्रण शदम व्हाटमद "छेशानक इंद्र कि मा ?".

''योशोब क्षा वर्ष 'अपूर्व, तम तमहे भारतिकास्तरक ভজ বিভাগ করিয়া ও অপূর্ণ ভাবিয়া উপাসনা ৰুৱে। কিন্তু গাঁহার আত্মা যত পূৰ্ণ, তিনি ডাঁ-হাকে ভত পূর্ণ ও অথও ভাবিয়া পূলা করিয়া भारकम्।"

পুলর্মার জ্ঞাপর এক স্থানে--

'अर्फाकिमानी वर्गस्टिय धर्मातकार्थाय ? हैनि পনাভিনানী ও বিদ্যাভিয়ানী অপেকাণ যুণিত। ইছা বুৰিয়া সাধুৱকে ৰাত্তিদিগতে সাবধান হওয়া कर्छभा 🖰

''মজি বাদ ধে নিষ্ঠুর সেও সময়ে সময়ে ধর্মের অভিযান করে। এতিনাল বিশ্বাসের হস্তকারক।¹¹ ঐক্য সময়ে কথিত হইগাছে।

"ঐকাই সংসারের জীবন, এবং ধর্মা সেই ঐক্যের বন্ধন ৷ ধর্মকে গরিভাগি লয়, একা मिथिल इटेट्टा खेका मिथिल इटेटल मरमात की-अस-जील इंडेरन ।"

আলর্ অবগভ হইলাগ বর্ণমান ব্রাহ্মসমত্তর কোন কৰাচাৱী ছাবা এই গ্ৰন্থানি প্ৰকাশিত इदेश[हा,गहा इडिक मगरा मनस बेहन अब औक]-भिष्ट १३८० (मार्मात प्रांतिक महाराज महाराजा ।

''প্রক্রোনেশ অম্বেন্ন' প্রাচানেশ, আগুরাকা (Revelution) वियरमध्य व्यक्तक-वर्गा ७ डेप्ल्मा वि-एर्डिश जना लहे शुस्त्रक्षांनि जन्ती कुन्दविमा जान ছালা বিল্ডিড হইয়াছে। ইংরি বিবয়ে মতানত अविमादक क्षाकामा कहा यहित्वक ।

"ৰোকত্ৰত্ব" নামা তক্থানি কুত্ৰ গুভক আন্ত্রা প্রাপ্ত এই প্রান্থ । ইন্যা বিষয়ে কোন মতা-ন্দু প্রকাশ কর, জাবশাক বোধ হইতেছে না।

বিজ্ঞাপন

বিবিধ উপালে ব্রাক্ত্য প্রচার ও ভার-ज्ववंद्र मधुनास द्वालानगारमंत्र भट्या थेका अ अ शन डेट्सर्ट अनामी १० कार्जिक इबि-बाह नक्षा १४० व्यक्तिम् नम्ब्र क्लिक्र अभागातकात चिकी व्यक्त वृद्ध अभिनिद्धत একটা 'প্রভিনিধি সভা" প্রভিত্তিত ইইবে। व्यक्ति नाथ। दाजामारमञ्जू मुक्तामा मिरान क्रिकामा ५०००।

वाकि निद्यम् देशः छोशात्र। मन्नोक मश्कार ব্রাক্ষিদের অভিমতামুগারে কলিকাতা-প্র-वागी (अवर्थ निवाशी) व्यान उपमध्य व्यक्तिपि नियुक्त के द्वा तारे तारे अवि-নিধির নাম নিম স্থাক্ষর কারির নিক্ট পাঠা-रेश (नन, এবং अ निवटम डेक मुखाय डेश-স্থিত থাকিতে তাঁহাদিগকে উপদেশ অদান করেন।

> শ্ৰী কেশবচন্দ্ৰ সেন। কলিকাতা ব্রাহ্মসমাজের मन्त्रापकः

১৪ই আখিন ১৭৮৩ শক।

বিজ্ঞাপন!

আগামী ২৩ সে আন্থিন গনিবার সন্ধাঃ পাত ঘণ্টার সমরে যোড়ার্ম'রেকান্ত এতি। হিক ব্রাক্ষসমাজের চতুর্থ দায়ংসাঞ্জ সভা হইবেক।

রতন সরকারের গাওেঁ चे कि. ११ **म**श्याक छवन ।

> জ্মতাগ্র**াদ চন্দ্র**! **छे भाग्या**।

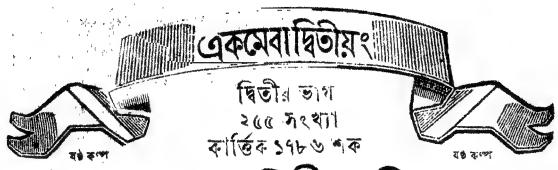
Recently Published.

THE RELIGIOUS PROSPECTS OF INDIA. To be lad at the CALCU TA BRAHMO SOMAJ.

Prof. Prof. Annas. By post 5 annas.

নিঘণ্ট পত

el .	श्रुष्ठा
বিপদ্যালে ব্ৰদ্ধ স্থোত	لا بنا ،
উপানা	b -2
কলিকভা ব্ৰাক্সনাজের হজুভা	164
मध्यातिक्षांन १००० विकास	3 •
द्राक्षध्रक्षिमी	***
अञ्चेत्रत आवभाक्षा ।	ე ≒ 8
মুদ্ৰৰ পুস্তৰ প্ৰাপ্তি	, \$4
हत्ते कर उपत्राहिता मेविक करिकार्ध मन	ट्य देवाका-
न कि कि अभिनेत्र के कि निर्माण के कि अभिनेत्र के कि जो कि ज	क्षेडियारम संद ३२२३



তত্রোধিনীপ্রতিকা

ত্রক্ষাএকমিলমগ্রসাসীল্লান্থ কিঞ্নাসীজনিলং সকাস্ক্রত। তদেও নিত্যং জানমনতং শিবং ত্তক্ষির্ব্যব্যাক-নেংবিতীয়ং সর্কার্যাপি সর্কানিয়ন্ত্র সর্কান্ত্র্যক্ষিত্র সর্কান্ত্র বিভাগ ক্রিকার্যক্ষিত্র প্রকাশ কর্মান্ত্র ক্রিকার্যক্ষিত্র প্রকাশ কর্মান্ত্র ক্রিকার্যক্ষিত্রক প্রক্রমতি তিলান প্রীতিজন্য প্রিয়কার্যক্ষিত্রক ততুপান্ত্র ।

কলিকাতা-ব্রাক্ষসমাজের বক্ততা।

১৬ কাজন ১৭৮৩ শক।

পাপকিস্তয়তে হৈব এনীতি চ করোতি চ। তদ্যবিশ্বে প্রবিষ্টান্য গুণানশ্যন্তি দাধবঃ।

যে ব্যক্তি পাপ-চিন্তা করে, পাপানাপ করে, পাপানুষ্ঠান করে, ভাছার সাধু গুণ-নক্স ন্ট হয়৷ যেমন অংপ ছিদ্ৰ পাইলে वृद्ध स्तोका**७ कटन मध इयुः (मई अ**कांत यनि গুণ-সন্ধিপাতে একটা দোষকেও পোষণ করা বায়, ভবে ভাছা মনুবোর সমুদায় ভাবকেই কলক্ষিত করে। "ইক্রিয়াণাম্ভ দর্বেবাং যদোকং ক্ষরতীন্ত্রিয়ং। তেনাস্থ ক্ষরতি क्षका पुरुः भाजामिरवानकः।" যেমন বালু-কণা পড়িলে তাহা তথন সার উত্তম-ৰূপে দেখিতে পায় না, সেই প্রকার অন্তরে পাপ-রেণু প্রবিষ্ট হইলে তাহার क्यान प्रमुख बात भूतिय महावटक महान করিতে পারে না—ভাহার বে সকল সাধু सन, छोरा कदम करन दिनान नाम। अउ-वर वीकाका आन्द्राक्षणित्व भूग-क्वांचिटक क्यांकियान व्यक्तिक हाटकन कें। हाडा किन

षानाश कतिवात गमरत भाभानाश नः करतन, पतुष्ठीत्मद ममत्य भाभाभूष्ठीन ना कदत्रम । এই रहेन निरम्ब वांका, आंत्र विधि कि, অনুজ্ঞা কি, না, ইহার যাহা বিপরীত, তাহাই কলাগ-চিন্থা করি-আচরণ করিবেক। (वक, कलाांग-कथां किं€ देवक, कलाांग-अञ्च-छोन कतिदवक। यिनि এই একার উপদে-শানুষায়ী কর্ম করেন, তাঁহার সাধু গুণ নিয়তই উদ্দীপ্ত থাকে। পাপ ভো এই ভিন প্রকার, পাপ্টিভা, পাপালাপ, পাপানুষ্ঠান। কিন্তু এই ত্রিবিধ পাপের মূল কোণা ু মূল (সই মনেতে—প্রথমে পাপ-চিন্তা উপস্থিত হয়, পরে জিহবা তাহা ব্যক্ত করে, পরে আচরণে তাহা প্রকাশ পার : যে বাক্তি একাকী নিজ্জনে মনে মনে পাপ চিন্তা করে, দে একত হইয়াও পাপালাপ পাপানুষ্ঠান করিতে চাহে; অতএব পাপকে মনেতে কদাপি চিন্তা করিবেক ন। যেমন शां भाग माना का का विकास का कि का ছাকে মন হটতে উৎপাটন করিয়া তাহার भूटनोटक्षम कतिदवक। य वाक्ति क्वन लाक-उद्य शांभाषां भागामुकान मा करतः दम कथन माथू नहें जानादक विश्वाम मारे।

निक्क न यान शाहरल है उरक्षार म गृष् পালে প্রব্রুত হইবে, সে কখনই পাপের প্রলোভন অভিক্রম করিছে পারিবেন।। পাপের হস্ত চইচে প্রযুক্ত হইতে হইলে অত্যে পাপ-চিন্তাকে বিদূরিত করিতে হয়, মনকে পবিত্র করিভে হয়। যেমন কোন পুরাতন অট্রালিকাকে অশ্বথ-মূল আবেকীন করিলে কেবল তাহার উপরের শাখা পল্লব কর্ত্তন পারা সে গৃংহর রক্ষা হয় না ; কিন্তু যে তাহার মূলকে বিনাশ করে, দেই তা-হাকে রক্ষা করে - ভজাপ পাপের মূলকে रय मके करत, रय मरमज मरधा পां भरक आ-मिटल ना (नज़, भिष्टे तका शांता यनि কাহারো অন্তরে গাপ-মূল বন্ধ গাকে; আর यानि स्म शांश कथा नाउ करह, वांहाक शा-পানুষ্ঠান নাও করে; তথাপি জানা যায় যে মে কেবল কপট বানহার করিতেছে, তা-খার রোবের কারণ সম্পূর্ণ রহিয়াছে – যদিও মর এথনো ভালার শরীরে প্রকাশ পায় गहि, (म जन्म (त मन्न इक्टल्ट्—म পাপ কেবল লোকের ভয়ে ডাহার মনের ছুর্গের নধ্যে প্রতিষ্টি হইয়া আছে; ধথন रम मिश्रिय (य जोनात नाहिरतत महोत ज्ञाल, অমনি দোনি ক্ষে ভাহার সকল শরীরকে আক্রমণ করিবে, পাপ-ব্যাধি ভাছার সকল অপেতে ফুট্ডা উঠিবে। কিন্তু পাপ থা-ংতে এপ্রকার বল প্রকা**শ করিতে না পারে**, (में जिंदमा क्रमणीयम श्राद्ध तिया करा প্রকার কৌশল নিশ্মাণ করিয়াছেন। প্র-থনে দেখ পাপের সজে সজে তক্ষন এ-কটি ঘূণা, একটি গ্লামি, আদিয়া উপস্থিত হয়। সেই যে এক পাপের প্রতি বুণা, ভাছা আমার্রদিগকে কেমন রক্ষা করে। যেমন পাপের ভাব মনে উদয় হয়, আমনি ভূগা ও আঅ-প্রানি আলিয়া তাহাকে দ্বাইকরিয়া करन। स योशा अकृष्टिक बारक, स

আত্মাতে কি পাপ কণ কালের জনাও ভি-ষ্ঠিতে পারে; পাপ উদয় হইবা মাত্র স্থা ও আক্ত প্লানি আসিয়া তাহাকে দূর করিয়া দের। যথন মনের ভাব আর কেচ্ই জা-নিতেছে না, কেবল এক ঈশ্বরই জানিতে-ছেন ; সেই সময়ে যাদ ঘৃণা ও আজ-মানি আদিয়া পাপকে পরাস্ত করিতে গারে; তবে আমারদের পরম সৌভাগ্য। কিন্ত যদি দেই মৃণা-দেতুকে পাপ-প্লাবন আ-गिशं थावन व्यवन पाठिकम करत, ज्रा তাল ভালতে লজ্মন না করিতে করিতেই আর এক সেতু আদিয়া তাহাকে গ্রোধ করে নেই দেতুটি লজ্জা-দেতু। যথন ৄগার উ-পরে আর নির্ভর না রহিল, প্রথম নেডু য-খন ভগ্ৰহইয়া গেল, তখন দেই দিভীয় দেতু লজ্জা আ**দিয়া উপস্থিত হয়—তথ**ন নে আত্মীয় পরিবার গুরু-জনের লজ্জাতে প্রকাশ্যরূপে আর পাপ্রাচরণ করিতে পারে না। দেখ ঘূণা অভিক্রেন করিয়াও দে ল জ্ঞার শাদনে পাপ হইতে নিবারিত *২ইল*। কিন্তু পাপের উচ্ছাদ যদি এত অধিক হয় যে দে এ ছয়ের আর কিছুই মানে না, দে উদ্ধন্ত ভাবে হৃদয়ের কবাট ভেদ করিয়া শরীরময় ব্যাপ্ত হয়, ও মনের আর আর দকল র্ত্তিকে বৃশীভূত করিয়া কেলে; জ-খন দে পাপকি।**ন্ত মনুষ্য উন্মাদগ্রন্ত হ**য়। যখন পাপত্রোত উচ্চু সিত হইয়া ছুণা লক্ষা উভয় দেডুকেই ভয় করিল, তথন অবশিষ্ট **কি রহিল, না ভয়দেতু। পাছে**। গুরু লোকেরা প্রহার করে, বিষয় হইতে ব্যাঞ্চ করে; পাছে শান্তি-রক্তকরা দণ্ড प्तिय, कार्यागादत वक तार्थ-अर धिकांत চিন্তা আসিয়া সেই পাপান্ধার পাপ গঞ্জিকে वाधा मिनात छेशात लिटब । हेरांटक छ य-थन त्म व्यक्तिक कटत, उध्यम त्म त्रीन-পুরুষদিনের হতে পতিত হয়, উপবৃক্ত

দণ্ডোপভোগ করে। সে লোকের ছারা পরিতাক্ত ইয়, গুরু জন কর্তৃক অবমানিত इसा पृगालका जा अहे विविध लोह দেতুই যথন ভগ্ন হট্য়া গেল, তথন কি সেই ঘোর পাপীর পরিত্রাণের জন্য আর किछूरे छेशांत दिल ना ? यथन गकल লোকৈর ছুণা-দৃষ্টি তাহার উপর পড়ে, যথন পরিবারেরা ভাষাকে গৃহ হইতে দূর করিয়া দেয়, যথন রাজ পুরুষেরা তাহাকে দও বিধান করে; তথন ঈশ্বরও কি ভাগকে পরিভাগি করেন ১ তথন ভাহার কি কেইই পরিতাতা থাকে না? যথন সকল সেতুই পালের নিকট পরাস্ত হইল, তথন সেই পাপীর পরিত্রাণের নিনিত্ত স্বরং ঈশ্বর গিয়া উপস্থিত হন। যথন আর আর সকলেই তাহাকে হেয়ৰূপে পরিত্যাগ করে, যথন তার নাম মাত্র শ্রুত হইলেও ননেতে ঘুণার छेनस इस; उथन এकमाज ঈश्वत्हे ठाहात সহায় পাকেন। যথন আর আর সকর মেতুই ভয় ছইয়া গেল, তথন তিনি নিজে পরম দেতু ৰূপে দেই ঘোর পাপার নিকটে অবতীর্ণ হন। পাপের কি কখন এ প্রকার প্রবল উচ্ছৃাদ হইতে পারে যে দেই পরম দেতুকেও উল্লন্সন করে? এ প্রকার কথ-**নই হইতে পারে ন। "সদেতু**র্বিধৃতিরেষাং লোকনামসন্তেদায় "। তিনি লোক-ভঙ্গ নিবারণার্থে সেতু-স্বরূপ হইয়া এই সমুদয় ধারণ করিতেছেন। তিনি তাঁহার রুক্ত মূর্তি অকাশ করেন, ভয় দেখান এবং সাভ্না করেন। এই থকারে কত কত ঘোর পাপীরাও পাপ হইতে পরিতাণ পাইয়া শ্বনের উপর জয় লাভ করিয়াছে, ঈশ্ব-रतत स्नीकन जानिकन वाश करेताए, যুক্তির গৃহে প্রবেশ করিয়াছে। কিন্তু খা-मोबद्देश याम अक वात्र डाहात सम मूर्जि प्रविद्य नो इस्ते । यहन कतिसा दक कात

পিতার নিকট হইতে তিরক্ষার থাইতে অতিলান করে। অতএব আমরা যেন কথ-নই ভাঁহার আজ্ঞা অবহেলা না করি, আমরা যেন পাপ চিস্তাকে মনে কথনই আদিতে না দিই; কিয়া যথনি তাহা মনে উদয় হয়, তৎক্ষণাৎ তাহাকে উৎপাটন করিয়া কেলি। আমারদের পাপের জনা ফুণা যেন নিয়তই থাকে, লক্ষ্ণা দেন নিয়তই থাকে, ভয় বেন নিয়তই থাকে এবং সকল হইতে পরম সেতু যে তিনি, তাহাব পাবত্র দৃষ্টি দেখিয়া যেন পাপ হইতে সহাদাই বিরত থাকি।

হে পরমায়ন্! আনি বখন ভোমার মঞ্ল-মূর্ভি প্রত্যক্ষ করি, তখন শ্রীর মনউত্ত खिङ इय, वाका-मकल आंफ्रें हहेया भट्छ । যুখন এখানে উপবেশন করিয়া পরলোকের বিষয় ব্যক্ত করিতাম, তখনো তাহার মধ্যে তোমার করুণাই দেখিতাম। আবার এখন যথন তোমার নিয়মিত ধর্ম-দাধন বিষয়েরও আলোচনা করিতেচি, তথনো ভোমারই করুণা প্রত্যক্ষ করিতেছি। তোমার দ**ন্মুথে** যা কিছু আলোচনা করি, ভাহাতে ভোমা-রই করুণা দেখি। বলিতে যাই অমুঠান, মনে হর ভোমার করুণা। গগন পাপী-দিনের উপর তোমার ধর্মানত্তের কথা ক-হিতে থাই, নে সময়েও ভোমার করুণার ভাব একাশ পায়। হে পরমাত্মন্। তুমি আমারদিগকে পাপ হইতে নিষ্ঠি দাও; আমারদের রক্ষার নিমিত্ত তুমি যে সকল দেতু নির্মাণ করিয়াছ, ভাষা যেন আদর**া** কদাচ উল্লন্থন না করি। আনরা যেন পাপ-চিম্ভা না করি, পাপ-কথা না কহি, পাপায়-ন না করি--পাপের সঞ্চিত সংস্পর্ম যেন সম্পর্ণ রূপে পরিত্যাগ করি,নিম্পাপ নির্মাল-চিত্ত ও তোমার সভাতে নিংসংশয় হইয়া বেন ভোমার উপাদনাতেই নিযুক্ত থাকি।

ওঁ একমেবা বিভীয়ং

নিবাধই চতুর্দশ্ সাম্বৎসরিক ব্রাহ্মসমাজের বক্তৃতা।

२৮ आधिन ३१४७ भक।

যাঁহাকে লইয়া আমাদিগের অদ্যকার এই মহোৎসব, আজি কি আমরা উহোর অপার প্রেমদাগরে নিময় হইখা সমুদার ক্ৰ্দয় মৰ শীতল কারৰ না ? অসীম আকাশ भौशादक व्यवनम्य कविशः चार्ट्, व्यवस् कांग মাহার জোড়ে জীড়া করিতেছে, ভিনি আমাদিগের ক্ষুদ্র আত্মান্তেও পূর্ণকাণে বি-রাজ করিকেছেন ; আ্মরং কি ভাঁচার শুরু-ভাব অনুভব কারত না ? আজি টাছাকে হৃদরভারা স্পর্শ করব, জালার অনুত গামনদ-तम पक्छार्थादत श्राम कहित এह अनाहे তিনি আমাদিশকে সন্মিলিও কাঞাছেন। তিনি আমাদের সম্ভৱে কুধার সঞ্চার করি-তেছেন, আমরা বত চাহিতেছি, তিনি নুজ-श्राष्ठ केक हे जाहात ध्यम ध्यवाहिक क्रिएक-.ছন। আসাদের জীবন কি প্রিক স্থ্রাময় হইতেছে ৷ দেই পূর্ণ পরিশুক্ত মহান্পু-রুষকে প্রত্যক্ষ করিয়া আজি হৃদয়ের ঘা সকল কেমন উন্দুজ ছইতেছে—প্ৰদ্ধা, ভঞ্জি, প্রীতি, ক্রডক্ততা আপনা হইতে তাঁহাকে জালিকন করিতে উচ্চুদিত **इ**३८७८५ । थना क्लाने मा ধনা ভোষার মহিমা! ধন্য ভোমার কর্ণা ! তুমি ধলিধ্ধরিত মলিন কীটাদিগকে এৰপ বিমলানদে ক্লডাৰ্থ ক-রিতেছ।

আহা। এই পবিত্র ব্রন্ধানন্দের আশ্বাদ প্রিবীর আর কোন জীবই পায় না— মসু-নাই ইহার অধিকারী। কিন্তু কি আশ্বর্যা। আমরা কত সময় ইতর ইন্দ্রিয় সুধে প্রশ্নুত্র হাইয়া পশুদিশের পশ্চাদ্বর্তী কইতেছি। নামৰ ক্ষম বিকল করিডেছি। সংসারের অনিত্য সুখ সকল কি আশ্বাকে ভুক্ত করিছে পারে? তাহাতে পশু এরতি চরিতার্থ হয়,
কিন্তু আত্মার গভীর কুষার শান্তি হয় না।
এই জনাই পূর্বে কালের স্থক্তদর্শী ধৃতর্ত্ত
অথিগণ বিরল অরণ্যে গিরা জীবন পাত করিতেন। তাঁহারা সেথানে আত্মার তৃত্তিকর দেই সতাং জ্লানমনন্তং ব্রহ্মকে লাভ
করিয়া নিতাানন্দে ময় গাকিতেন, আর
কিছুরই প্রার্থনা করিতেন না।

যিনি একমাত্র সকল স্থাংথর নিকেতন এবং যাঁহার সহিত আমাদিলের চিরদম্বন, তাঁহা হইতে যক দিন আলৱা বিভিন্ন থাকি ভত দিনই আমাদিগের মৃত্যু-তিহাকে পা-हेटल हे अमृत्र इ वा ७ रहा। द्वां आपर्य जाया-मिशदक এই मामाद्र शांकिशारे भारे मिछ। मन्त्रात् वार्डत शथ अपर्नन कतिहार्डन। मञुद्दात ऋषदत रा वर्त्यात वीक विक्रिक ছিল, ভাষা এত দিন স্কারণ ৰাপে বার্দ্ধিত হইয়া অমৃতারমান ফল-দকল প্রদান করিতে পারে নাই। মানব জাতির উল্ভির সংখ্ मदक रमधे दीक चक्रुतिक ब्हेश विविध শাথা প্রণাথা বিনির্গত করিয়াছে, কিন্তু তাল কুত্রিম পাত্রে স্থাপিত এবং কম্পিত আবরণে নিরুদ্ধ হইয়া আপনার প্রভাব প্রকাশ করিভে পারে নাই। ব্রাহ্মধর্ম্ম সে সকল বাগা কপ্পনা দুরীভূত করিয়া স্থা-শস্ত মানগদেত ইহার ভিত্তিভূমি এবং অবারিত অন্য আকাশ ইহার উন্নতির আর-তন করিয়াছেন। এথন ধর্ম আর ভান-বিশেষ, কলেবিশেষ, ব্যক্তিবিশেষ, ক্ৰি-विटमय ना भूजकविटमटय वस्त नारे। लाहे मङ। सुम्पत सकत चन्ना भारमाहार विक माठ जामर्भ कतिया जाजा कीरात शहर ক্ষেশ অগ্ৰসর হইর। মুক্তি ও শবিত অনিক वां कतिद्य । जाबादमत विवक्तीयम क्ये-त्यात शर्थ **धक्छाएक खेला हैक कहेर**ना लग वात्र वाजवा अर्थन क्रीय: वास बर

স্থান হইয়া পালে পড়িব; কিন্তু নেই প্রভিত্তপারনকৈ আত্রার করিলে তিনি আবার
আমাদিগকে উন্ধার করিয়া তাঁহার পথে
চলিতে বলীয়ান করিবেন। তাঁহাকে প্রতি
করিয়া এবং তাঁহার প্রির কার্য্য সাধন করিয়া
যত চলিতে পারিব, ভতই আমাদিনের চিরকল্যাণ লাভ হইবে।

ব্রাহ্মধর্মা স্বর্গের জ্যোতি মর্ত্তা লোকে আনম্ন করিয়াছেন—দেবভোগ্য অমূতে मनूरगत आंद्रांटक जिंह छ विनष्ठं कति-८८८इमां आमदा এই গাঢ় गংস।त शक्-কারের মধ্যে যে এ ৰূপ ধর্মজ্যোতি লভে করিয়াছি ইছা আমাদিগের সামান্য সৌ-ভাগোর বিষয় নয়। কিন্তু এই জ্যোতিতে কি আমাদিণের সমুদার জীবন জ্যোতি-श्रांत इरेटवक नः ? यथन (महे आण वार्मा-দিবের একমাত্র লক্ষা, ভাষাভেই আমা-দিগের নিভোৎসব,তথন আমরা কি সমুদায় জীবন তাঁহার মেবায় অপণ করিব নাঁ? আমরা শ্রীর মন, ধন জ্বন মকলই যেনন তাঁহার নিকট হইতে পাইয়াছি—সকলই অদক্ষ্টিত্টিতে তাঁহাকে প্রতার্পণ করিব ইহাতে আর আপতি কি? তাঁহার থ-দত্ত শক্তিতে তাঁহার কার্যা করিব ইগতে আর বাধা কি? কিন্তু কেমন দারুণ আ-মানিগের মোহ! আমরা আপনানিগকে चन्न , এ रे कीवन क निठा এवर गारगातिक धन मान सूथ मन्भि किएक मर्सन्य मदन करें। किन्छ এक मृत्रा पानिया आर्गानित्वत खास्त्रि कि नर्यामा व्यवनं कतारेया मिटवट्ट ना ? শানাদিগের নাার কত লোক এই মর্ত্তা **बादक लीमा क**िशांছिल, करू धन अेश्वर्यात व्यशेषत्र क्रिका । किन्छ । कोशात्र , कोशात्र , णांत रक्षांबाह्य छोक्। विद्यात এই পार्थिव भविकात-मक्षा । जामानिरशत दिवसामा ও विषयभक्त क्रिका भुजा वितरन बाह्य कति-

তেছে। বস্তু । যাহা আত্মার সহগামী হইবে না, ভাহাকে আপনার সর্বস্থ ননে করা কি উপহাসজনক নয় ?

বিষয়ে আত্মার লাভ নাই কিন্তু বিল-কণ ক্ষতি! একত ভাষাতে জীবন এবং সমুবায় শাঁক িরথক নউ হইতেছে;-আবার তাহার উপর পাপ সঞ্জন। স্বার্থ-পরতায়ত এবল হইতেছে, তত্ই হৃদ্য় কুটিন হইটেচেচ্, আবার কভ কটেট ভা-ছাকে দরল করিতে হইবে। পশুপ্রবৃত্তি-সকল যতই চরিতার্থ কইডেছে, আয়ো ত-তই মলিন হইতেছে— লাবার ভাল সমূহ यद्व धकांत्रन कवित्व इवेत्तः, विश्य-धः (मां अटम गुड हे सनदक चांकू छे कहिर एट ह ভত্ত সামার স্বাধীনতা বিন্ট চ্টতেচে, ভাহা উদ্ধার কর। সামান্য সংগ্রামের কার্য্য নয়। এই সকলত আন্তরিক অপকার: এতদ্ভিন্ন বাহ্যিক অনিউ রাশি রাশি আছে। যাচাকে স্থাবলিয়া গ্রহণ করিতে যাই, তাহাই হয়ত তঃথৰপে পরিণত হয়, নে খানে পুরক্ষারের আশা করি, দেইখানেই হয়ত ভিরস্কার লাভ হয়। এই ৰূপ একে আন্তরে আম্মানিৰূপ চল্চ নরক ভোগ, তাহার উপর চারি দিকে বিহাদ ও নিরশে। : मःगांदी लांदक कर्केटल शांदल जारन শোকে মোহে জর্জরত হট্য়া অবশেষে व्याण्य सञ्ज्ञात पक्ष इस् ।

যাঁহারা সাংশারিক জীবনকে বলিদান
দিয়া ধর্মজীবন লাভ করিয়াছেন, তাঁহারা
সংসারের সমুনার ভয়,তাপ, ও নোহ শোক
হইতে মুক্ত হইয়াছেন। তাঁহাদের নেত্রে
সংসার এক অভিনব মধুর বেশ ধারণ করে।
তাঁহারা সর্বরেই সেই পরম পিতার ক্রোড়
প্রসারিত দেখেন, সকল জগৎ তাঁহার প্রেমে
অনুরঞ্জিত দেখেন, এবং সকল ঘটনায় তাঁহার মঙ্গলস্ক্র সঞ্চারিত দেখিতে পান। তাঁ-

হারা অনুতর্ম পান করিতেছেন, 'বিপদ রাশি ছুঃখ দারিদ্রে" কিছুই করিতে পারে मा २ इहाई छ। हामिटनत तल, कांशिमरनत আশা ও উৎসাহ, এবং চির কালের উপ-জীবা। সভোব, ধৈৰ্যা, ভিতিকা তাঁহা-भित्रत अप्तिय मधी रहा। এই गकत ४-র্মাপুরেরা সংসারের মহিত—পাপের সহিত ঘোরতর সংখান করেন; আক্রণ্ট হাদরে मकन ठाएमा राजना महा करतनः, मृङ्गारक ७ আনক্ষের সহিত আলিজন করেন, তথাপি ঈশ্বরের মহিমাকে মণীয়ান করিতে—তাঁ-হার জয়পভাকাকে উড্ডীয়ম ন করিতে নি-रखक इरश्न न।। "मछारमन कार्ड मा-নৃতং "আনন্ধ ব্ৰহ্মণো বিছান নবিভেতি कुछ "हमः" ' (स्वाहर नाभुछ। गाए किमहर ভেন কুৰ্যাংং ' এই সকল মহাবাকা ভাইা-দিশের কণ্ঠ হইতে মর্মানাই নিংহত হয়। 'भिष्याति कोट्स की इंक स्मिट्स (य श्राप), ছাড়ি যাৰ অনায়ানে তাঁতো করিব দান' এই ঠাঁহ। দলের প্রতিজ্ঞা। 'ধন মান চাহি না তোম। হতে, দেও এই আবিকার, নিয়ত নিয়ত যেন সভচর অনুচর ধাকি তোমার" এই छीइए भिट्यत अधिना। योहाता क्रूज নংলারের দাস, তাহারাই ধর্মা রক্ষা অসাধ্য মনে করেন, কিন্তু একপ ব্যক্তিরা তাহা অ-नाशामनामा (पश्चिट्ड शान। এই गांपू-वांके प्रवटा — इंग्लंड एक कीवरनरे मू-ক্তির দোপানে আরোগণ করিয়াছেন—অ-ब इ लाटक के कि मिर्टांत करा ' योगारफ, थ्यम् नम् ७ **डाकानत्मव हे**०म छे०मातिष র হলতে ।

হে সংসারপাশবন্ধ নত্তাগণ । তোমরা হস্তকাটের নাার আর কঠ কাল আপেনাদের কণ্পনা-স্তার আপনার। জড়িত থাকিবে ? অন্য আকাশে থাগীন রূপে বিহার করিন বার জনা যে স্বর্মীর পক্ষে ভূষিত হ্ইয়াই; ভাহা কি এক বারও সঞ্চালন করিবে না? এই মৃত্যুর পালে যত দিন আবন্ধ থাকিবে. তত দিন হাজার বিষয় বিভব, যান ঐশ্বহ্যা गर्धक कर गक्तके शख्यम नक्तके व নবিধাদের কারণ কইবে। কিন্তু এক বার এ বন্ধন কাটিভে পারিলে আনন্দনর লোকে বিচরণ করিবে, প্রভেক নিঃশালে অন্তর हरेट मभूमात मृधिक छात विमृतिक करें दब, अदः क्षत्र निमन हिल्लाटन भूने हहेटनं, छ-খন সমুদায় আত্মা আনন্দত্যোতে ভাসমান হইতে থাকিবে. ভ্ৰান উজ্জুল হইয়া সেই সতা স্বৰূপকে ধারণ করিবেক, **শ্রীতি শ্রশস্ত** হইয়া তাঁহার মঙ্গল ভাবের অমুকরণ করি-टिक, এবং ইচ্ছা পবিত ও সবল হইয়া মু-ক্তভাবে তাঁহারই সঙ্গণ ইচ্ছা সম্পন্ন করিছে ধাকিবেক;—তথন তাঁহার সহিত সমুদায় বিমল কামনা উপভোগ করিতে পারিবে; সংগার পবিত্র ধর্মক্ষেত্র এবং আনন্দ্রধান হইবেক।

নেই জগৎপিতার প্রমাদে এই অজ্ঞা-नाक পान-धभीरिक वस मार्ग शरिक আক্ষধর্মের প্রভা দিন দিন বিকীণ হই-তেছে। যেখানে ইহার আনি**ভাব হই**-তেছে, দেই স্থানই অপবিত্র ভাবসকল ম্বত মুক্ত হইয়া পবিত্র মঙ্গল ভাবে পূর্ব হইতেছে। মৌভাগাক্রমে চতুর্দ্দশ বর্ষ প-র্যান্ত এই নিবাধই আমে যে ই**হাঁর শীতল** ছারা প্রাপ্ত হ্ইরাছেন, ওজ্জনা সকলে সেই क्सनामग्रदक धनावाम माछ । हेर्हाहरू देन-নাদে মপ্তাতে সপ্তাতে যে কতিপায় আৰু কির্থ কালের জন্যও সংসারশাশ হইতে মৃত্য হইয়া ঈশ্বরের আমন্দরস পান করি-বার জন্য এখানে একতিত হন, ইহাও স্থাপ পরিতোবের বিষয় নয় কিন্ত তাল্পদর্মর বেৰপ এভাব ভাহাতে এভ বালিক কালে कि देश करनका बनिक कर्त नारका क

ভাগা করা যায় না ? এখানে ত্রাক্ষটীবনের কেন এক ভাব দেখা যার ? ধর্ম কি কে-বল বাকোতে বন্ধ থাকিবেক, না কণকা-লের চিন্তাতেই পর্যাবাদত হইবেক ? ই-হাতে কি আমাদিগের হুদন্ন অগ্রিময়, আত্মা উত্তেশিত এবং সমুদায় অল প্রভাল প্র-সারিত হইবেক না ? ইচাতে কি দেশের সর্ব্য প্রকার অকল্যাণ বিশ্বংস এবং মঙ্গল উংপান করিবেক না ? আমরা যদি সেই সংসাবেরই উপাদক রহিলাম, যদি প্রতি নিমিষে প্রতি মুহুর্ত্তি প্রতি কার্যো ঈশ্বরের মহিমা অধিকতর রূপে প্রতার করিতে না

াম, তবে আর এ স্থগীয় সন্তিন ধর্ম অবলয়ন করিবার গৌরব কি ?।

চে প্রমাগন্। তোমার অনুথহে অদা त्म व्यामत्। এই महाध्मनहकारक व्यामिस। আমার অপার আনন্দ লাভ করিলান, ত-ব্দুন্য ভোমাতে একান্ত হৃদয়ে বার বার প্র-ণিপাত করি। তুমিত দকলই দেখিতেছ, সকলেরই প্রতি তোমার খেমদৃটি বিস্তা-রিত রাখিয়াছ, আমাদিগকে তোমার প্রতি আকর্ষণ কর। তেঃমার এই ছুর্বল সন্তা-নলণকে তোমার বল অদান কর, আমরা সম্পূর্ণ রূপে তোমার আশ্রয় গ্রহণ করি। একাল পর্যান্ত তোমার কার্য্যে আমাদিলের र्य व्यमः शा अम व्यमान ও व्यश्तां इरेशांट्ड ভালা মার্জন। কর; যেন পর বংলর অধি-কতর উৎসাহ ও আনন্দের সহিত তোমার महम्यम शांन कतिए शांति। अरे धारमत र्यातान बुक्त वनिष्टा मकटलबर्टे ऋनदब 🔄-মার সভা আবিষ্ট ছউক, ইহার পরিবার স-কল ভোমার প্রিয় পরিবার ইউক এবং এ-বানকার জাতা ভলিনীগণ, লকল বাজ্য-खनीत महिक अक्षित उन्हें त्रा क्षित्र महन **ভবি প্রচার क्रम्म । নাথ । अभाकांत्र य-**व्याप्तित विक स्वाप्ति भाग ना हुत, किन्छ त्य

অমৃতভোজে আমরা বলিষ্ঠ চইলাম. তাহাতে মামাদিগের প্রভোকের জীবন যেন
তোমার সহিত দৃঢ় সহস্ধানিবন্ধ করিতে দমর্থ হয়। তাহা হউলো প্রতিদেন আমাদিগের মহোসবের দিন হইবে এবং নিতা
কাল আনন্দনয় হইবে।

ওঁ শান্তিঃ শানিঃ শানিঃ হরিং ।।

রাজ-তরঙ্গিনী।

২৫৪ সংখ্যা পত্রিকার ৯৪ পৃঠাব পর।

জ্যাপীছের পুত্র ললিতাপীড় রাম্যাভি-विक इडेशा (कदन में) ह अ अगर मरगर्भ এবং অতি কুখনিত আমোদে প্রকৃত্ত হইয়া কালাভিপাত করিতে লাগিলেন। ভাঁছার পিতার মঞ্চিত রাজভাণ্ডারস্থ ধনরাশি তিনি স্বীয় পারিষদ ও ভোগা। রমণীগণের মধ্যে মুক্ত হল্তে বিভরণ করিতে লাগিলেন, প্রাচীন রাজকর্মচারিগণ তাঁহার কুচরিত দেখিয়া ক্র<mark>েম</mark> ভাঁহাকে পরিভাগি করিয়া যাইতে লাগিল, কিন্তু এই চুরাচারী নরপতির রাজস্ব অধিক কাল স্থায়ী হয় নাই; তিনি দাদশ বৎসর রাজ্য ভোগ করিয়াই লোকাশ্বরিত হুইলেন। তাহার পাঃ তাঁহার ভাতা সংগ্রামাপীড় রাজা হইয়াছিলেন, ইাহার রাজত্ব সাত বৎদর ছিল.পরে চিপাতজয় নামক ললিভাপীড়ের এক জারজ পুত্র রাজ্যাভিষিক্ত হইলেন। এই নরপতি স্বত্যাক ছিলেন, এই নিমিত্ত তাঁখার পাঁচ মাতুল মিলিত চইয়া রাজকার্যোর ভার গ্রহণ করিল। বাল্ডবিক তাহারাই আপনাদিবের নধ্যে সনুদ্রি রাজা বিভাগ করিয়া লইয়া সম্পূর্ণ র**পে আধি**-পত্য করিতে লাগিল। পরে চিপা**তজয় वतः शांख रुरेश शीत रुटख ताका ভात नहे-**বার মান্য প্রকাশ করিলে, তাঁহার মাতুলগণ পরামর্শ করিয়া গোপনে ভাঁছার আৰু বধ করিল, এবং তৎপরিবর্ট্ডে ত্রিভুবনাপীড় না

মক নলিতাপীড়ের একটি পৌজকে সিংহা-मत्त अालन कतिन, ७ भूसीवर ममछ ताल-কার্যা আপনারাই নির্বাহ করিতে লাগিল। এই প্রকারে তাহারা নির্বিবাদে ও অভিশয় পর্বাক্রমের সাহত ৩৬ বৎদর ব্যাপিয়া ত্রিভু-বনাপীড়ের নামে রাজা করিয়াছিল। ভাহা**দের প্রস্পারের** মত্থ্যই **ঈর্ষাও দ্বেদভা**ব উৎপদ্ম হইয়া উঠিল, এবং পরস্পরে যুদ্ধ ্আরস্ত করিল,তাহাতে এক জন নিহত হই লে অপর চারি ভাত। পুনর্য থিলিত হইয়া ত্রিভূবনাপীড়কে রাজাচাত করিয়া ইচ্ছামত রাজবংশীয় অপর এক ব্যক্তিকে সিংহাস-নাভিষিক্ত করিল। এবং তদবধি ভাহার। অনেক কাল পর্যান্ত এক একটি কার্ছের পুত্তলিকা স্বৰূপ নাম মাত্ৰ বাজাকে সিংহা-সনে বসাইয়। নিবিবেরে ধেরাজাত্ব করিয়াছিল। এই চারি ভারির মূত্যু ধ্ইলে পর,ডাগদের राजुहत्रशन এक व हरेश। र्हाटारत मरना छे९-পল নামক এক ভ্রাভার পৌত্র অবস্থিবর্মাকে बाद्यमम अनान कतिनः, अहे नात्र करकीं বংশ রাজাচাত হইল।

অবন্ধিনর্দানি হোসনত্ত হইলে অনেকেই
শক্র হইয়া তাঁহার প্রতিকূলে অন্ত ধারণ
করিল, তাঁহার আপন আত্গণও ঈর্যাপরবশ হইয়া তাঁহাকে রাজাচাত করিবার চেন্টা
হরিকে লাগিল। কিন্তু তিনি স্বয়ং বিক্রমশালী ও অভিশয় বৃদ্ধিমান হিলেন, এবং
তাঁহার স্বর নামক অতি বিচক্ষণ মন্ত্রীও
তাঁহার সহায়তা করিয়া উভয়ে বলে ও কৌশলে অপ্পকাল মধ্যে শক্রা দমন করিলেন।
শরে রাজা স্বরবর্দা নামক এক জাতাকে
যুবরাজ করিয়া ছই জনে মিলিত হইয়া কুশলে রাজ্য শানন করিছে লাগিলেন। ন্পতি ও যুবরাজ উভয়েই আপনাদিনের
উদার ভাব ও বদান্তাগুণে প্রজাগনের অতিশয় প্রাতিভাজন হইয়াছিলেন। ভাঁহারণ

जाभागितरक अपूर्व कर्य नान कहिएका आवर স্থানে স্থানে দেবমন্দির অন্তত করিয়াছি-लान। जानत, जूनकिम उद्यक्त मुक्केरबात अनुगायी हरेश। ताक्रमजी अ रह्मित महास ত্বারা বিখাত হইয়াছিলেন,ভিনি শ্বয়ং শ্বর-পুর নামক এক নগর স্থাপন করিয়াছিলেন, এবং স্তরেশ্বরীক্ষেত্রে এক শিবমন্দির ও অতিথিশালা নিশ্মাণ করিয়া দিয়াছিলেন। অপর,তিনি পণ্ডিত ও অধ্যাপকগণের শ্রতি-পাগন, ও শাস্ত্রালোচনার প্রতি বিশেষ উৎ-माङ् अमान क्रिएजन। अहे मगरत रा म-কল পণ্ডিত কাশ্মীরে ছিলেন তাঁহাদের मद्या मूक्क काल, भिवश्वामी, श्रानन्हदर्शन, ब्र-ত্রাকর এবং রামজ এই করেক ব্যক্তির নাম ইচিহাদে খ্যাত আছে। অবজিবর্মার भागनाथीन अकांशन कुमारल ও एक्क्काहिएड বাস করিতেছিল, কিন্তু তুজাগ্যক্রমে কোন নৈসর্গিক কারণ বশত বিভক্তা নদী উদ্বে-रुरेश काशीदत कनक्षावन रहेन, मगा (कञ्च मकल नक्षे इहेशा (अन এবং छ।-হাতে ভয়ানক তুর্ভিক্ষ উপস্থিত হইল। এই ৰূপে বারয়ার জলপ্লাবন দারা কিছু কাল भरमारिशामन এरक वादा निवाति ७ इहेन। প্রজা সকল অন্নাভাবে প্রাণ্ড্যাগ করিছে লাগিল এবং গোধুনাদি শ্লোর এইকার ছ-র্মাল্য হইয়াছিল যে এক আড়ক পরিমিত नगा गरुख मीनाह(>) बाता की ७ **२३८७ ला**-গিল। ভুপতি এই বিপদ্ হইতে উজাতর্র কোন উপায় চিস্তা করিতে না পারিয়া হতা-শান হইরাছিলেন। পরে **স্কানামক এক** জন দামান্য ব্যক্তি ভাঁছার সমিখানে আ-দিয়া কহিল যে মহারাজ, অনুমতি **হুইতে** यामि এই प्रक्रिक, केन्नमारमंत्र केन्नां करिके। করিতে পারি। রাজা ভাষার কথার বি-

⁽⁾⁾ शीनात ।—नुर्वा कारतत कारतिक सूजा, व सहस्र दर्शव वय देश कांत्र स्था वस्तिक ।

শ্বাস করিয়া ভাষার অভি এই ছবহ কার্যোর ভারার্পণ ইরিলেন। স্থজ্য রাজ ভাঙার হইতে অচুৱাৰ লইয়া এক নৌকা করিয়া एलिटलम अवर जनशायम एक्जू रग रव काटन গভীর জল জমিয়াছিল তথার তিনি এক এক মুদ্রা পরিপূর্ণ কুয় নিকেপ করিছে वात्रितन, ভाशांट लोक मकन त्यरे मृजा পাইবার জন্য ব্যব্ধ হইয়া নদীর দিকে প্রস্তরের ছারা বাঁধ প্রস্তুত করিয়া জল দি-পুন করিতে লাগিল, ভাগতে ক্রমে ক্রমে জনপ্লাবিত ভূমিও কেত্ৰ সকল জল প্ৰাও শুড় হইরা আদিল। পরে পুনরায় নদী উচ্ছু-দিত হুইয়া জলপ্লাবন না হুইতে পারে ভা-**ার জন্য দেই সুকৌশলকারী ব্যক্তি** फा**ल्योत मरश** हरू**९ हरू श्रील काण्**या पि-লেন এবং বিভস্তার ভীরে উচ্চ নাঁধ নির্মাণ **এই मकल डेপा**रा ক রি**লেন।** পূর্বাদেশকা অধিকতর উবরো হইরা প্রচুর শস্য উৎপাদন করিতে লাগিল। রাজা এুজোর প্রতি পরম সমুক্ট হট্যা ভাহাকে বছবিধ পুরস্কার থাদান করিলেন এবং ড:-হার কীর্ত্তি স্মরণার্থ বিহস্তার তীরবর্তি স্বজ্ঞা-পুর নামক এক নগর স্থাপিত করিলেন। এই ঘটনার কিছু কাল পরে রাজার মৃত্যু হইল, ও ভাঁহার পুত্র শঙ্করবর্মা সিংফাদনস্থ হইলেন। ইহাতে অসম্ভব্ত হইয়া কতিপন্ন প্রধান কর্মচারী রাজবংশীর অপর এক वाक्तिदक तोना कतिन, अवश मकतवर्मादक পদচাত করিবার নিমিত্ত অস্ত্রধারণ করিল। কিন্ত পরিশেকে তাহার। পরাজিত হইরা প্ৰায়ন করিতে বাধ্য হইয়াছিল। শক্ষরশ্রী আপন রাজ্যে শান্তি সংস্থাপন केत्रिश पिथिकतः क्रिटेंड अर्थ हरेटन्न। ভাষাতে অপর তুই তিন রাজাও ভাষার সহিত দলিলিভ হুইলেন এবং তিনি চারি नक नगाविक वक शक शवादाकी ও তিন শত হন্তী সমভিবাংহারে লইয়। কা-শ্বীর হইতে বহির্গমন করিলেন।

ভূপতি প্রথমে কৈগর্জনাল পৃথিবীচন্দ্র-কে(२) পরাভূত করিলেন। পরে গুজ্জরাবিপ-ভিররজে অবেশ করিয়া যুদ্ধে তাঁহার সমস্ত দৈন। নিহ্ত করিলেন, এবং ভাষাকে একটি ক্ষা দেশ প্রদান করিব। ছার্ছার মহন্ত ব্যক্ত। ও রাজভাণ্ডার অদিকার করিয়া লইলেন। পরে শঙ্রবর্কা ভারত-বিখ্যাত মহাধ্রতা-পশালী ভোজনাজের দর্প চুণ করিয়া প-শিচমে গমন করিলেন। তথার বলপত দরং ও তুরস্করাজ্ঞ প্রের (চ্লিফ্ট ক্র গ্রন্থ कतियां च्याहणा आडाजिड व्येट्सा । ७०० পরে স্থনামে এক নগ্য স্থাপন করিলেন। मक्तवर्षा व्यक्तिमा धनदना है। हिद्दनन, अतः वक्टविध উপায়ে প্রজাগেণকে निष्णीएन ग-রিয়া তাহাদিগের অর্য শোষণ করিতেন। তিনি প্রচলিত রাজস্ব ও শুক্ক গুরুতর মা-ত্রায় প্রদণ করিতে আরম্ভ করিলেন, এবং ভূমির উৎপন্নের যে নিক্পিত অংশ রাজায় প্রাপা, ভাষার অধিক গইতে লাগিলেন। অপর তিনি দেব দেবার্থে প্রদত্ত ভূমি সকল বদ-পূব্ৰক স্বরং অধিকার করিরা ভোগ ক রিতেন; এবং চন্দ্র কাষ্ঠ, স্থা দ্ধা দ্রব্য, তৈল ও অপরাপর বাণিজ্য জবং বিক্রন্থ করিবার দাধারণের অধিকার রহিত করিয়া, কেবল বিশেষ বিশেষ ব্যক্তিকে ভালা প্রবান ক-রিতে লাগিলেন। রাজা এই দকল নিহুর নিয়ম ও গুরুতর কর স্থাপন বিষয়ে কতিপর কারত্ব কর্মাচারীর পরামর্শ গ্রহণ তলিতেন। এবং তাহাদের ভারাই সমস্ত কার্যা নিৰ্বাহ করিভেন। এই সকল কর্মচারীর মধ্যে লবত নামক ব্যক্তিই সর্বাহ্মধান ছিল; রার্ক্স ভাহাকে ৩০০০ দীনার বেডন দিতেন। অ-

⁽२) देवतर्ज--गर्डमान नार्टश्रह ।

^(॰) ৰাম্মীতের উত্তর পশ্চিমে আন্তাপি জর্ম ন্মুমক জাতি আছে।

পর রাজসভান্ত পণ্ডিত, অধ্যাপক ও কবি-গণরাত্ত অভাবে অভাত্ত ক্লেশে পতিত কইগ্রাছিলেন। শকরবর্ণার এইরপ নিষ্ঠুর শাননে ও অন্যার বাবহারে প্রভাগণ অ-তিশয় জুংখাপর ও কতির ছওয়াছে, রাজ-মন্ত্রী ও রাজপুত্র ভূপতিকে তাহা জ্ঞাপন বারিলেন। কিন্তু ভূপতি পুত্রকে এই নাত্র উত্তর দিলেন, যত কাল তুমি না **হ**য়° রাজা ষ্ট্র ৮৬ দিন অপেক্ষা কর,তাহার পর তো-মার ইচ্ছা হয় প্রকাগণের জংখমোচন ক রিও। শঙ্করবর্মা। কিছু কাল অর্থ সঞ্চয় ক-तिभा भूनतीय रेमना अरेशा छे छत्रा जिप्रदेश अबन करितन, मिक्नुनभी डीहरखी प्रमान-ফল জয় করিয়। দিরস দেশে (৪) প্রবেশ করিলেন: কিন্তু এই ত্রে পর্বাদ্যা এক বক্তের বংগে বিজ হট্যা ছিনি অপিসাগি ফ রলেন: ভিঞ্জি মেন^{্নী}গণ ভাষার মৃত্যু मध्याम (पाश्रम कर्तिश सङ्ग्रह देगना बाहेश স্তুদেশে প্রভ্যাগমন করিল, এবং কাশ্মারের নিকটবভী হটয়া রাজার মৃত দেহ এক আভি উচ্চ চিত্রে প্রস্তুত করিয়া দাই করিল ; তাহার সহিত রাজার তিন রাণী ও জয় দিংক নামক একজন পণ্ডিত সহমূত হইলেন!

শক্ষরবন্ধার পর তৎপুত্র গোপালবন্ধা রাজ হুইলেন। গোপালবন্ধা নিতান্ত শিশু ছিলেন, এই হেডু তাঁহার মাতা রাণী দুগলা রাজ প্রতি নাধ হুইয়া সমস্ত, রাজ কার্নির ভার প্রহণ কবিলেন। কিন্তু রাণী নিবির ছিলেন, এবং প্রভাকর দেব না-নক মন্ত্রীহার প্রিয় পাত্র হুইয়া সকল ব্যা প্রভাব করিতে লাগিল। গোপা-না সভ্যালগ্র মন্ত্রী ছিল। কথিত নাজ থে বালাবর মন্ত্রী মন্ত্র প্রভাবে তাঁ- হার প্রাণ নাশ করিয়াছিল। তৎপরে গোপালবর্মার এক ভ্রাতা রাজা হন, ইনিও কিছু
দিন পরে অকালে মৃত্যুহন্তে পতিত হওয়াতে রাণী স্থান্ধা সিংহাসনতা হইলেন।
কিন্তু ছুই বৎসর রাজত্ব করিয়া রাণী রাজপদ পরিত্যাগ করিতে বাধ্য হইয়াছিলেন
এবং তৎপরিবর্তে সুরবর্মার পৌত্র নির্জিতবর্মা ভূপতি-পদে অতিবিক্ত হইলেন।

ইয়া উঠিয়াছিল। ততি ও একা**ক্ষ নামক ছুই** एल बाजरमना महाप्रकान हरेश शांधीन-जाव ধারণ করিয়া আপিনদের স্বেক্ষামত ব্যক্তিকে রাজপদে স্থাপন করিয়া দেশ লুগন ও প্র-জাদিগের নান। গুকারে প্রীড়ন করিতে আ तक क्रिन। अहे छशे रेमना निकां श्रीय कि না ভাহার কোন উল্লেখ নাই: বোধ হয় ভাহারা তাতার ও আফ্রান জাতীয় হইবেক, কারণ ইমারাই সচরাচর বেভনভোগী সুইয়া বিদে-শীয় তাঁজাদিগের দেনা হইয়া থাকে। যাহা **ল্টক অনেক দিন প্রাপ্ত ইহারাই অভ্যস্ত** পরাক্রান্ড ও স্বেচ্ছাচারী হইয়া কাশ্মীরে আধিপত্য করিয়াছিল, এবং এক ভূপতির পর অপর ভুপতিকে আপনাদিগের স্থবিধা ও স্বেচ্ছামত সিংহাসনত্ত অথবা সিংহাসন-চ্যুত করিয়াছিল। এই **প্রকারে নির্জিত**-বর্মার পর তৎপুত্র পার্গ, ত**ৎপরে পুনরায়** রাণী স্থায়া, পরে চক্রবর্মা, তদনভর স্থা-বর্মা ও শঙ্করবর্দ্ধন, ইহারা অপ্প কাল মধ্যে একাদিক্রমে শিংহাসনে উপিত ও তথা হইতে পুনশ্চ দুরীকৃত হইয়া**ছিলেন। ইহ**াঁ-দিগের মধ্যে চক্রবর্মা রাজচ্যুত হইলে পর প্রাণ ভাষে পালায়ন করিয়া ভাষর শামক পর্বভবাদী এক বর্বর জাতীয় রাজার আ-ভার লইরাছিলেন; এবং ডামর রাজ তাঁহাকে পুনরার সিংহাসনে স্থাপনার্থ বছসংখ্যক প্রভীয় লোক একত করিয়া ভারতির

সহিত কাশ্মীরে গনন করিয়া অপ্রতিহত ভাবে এনগর পর্যাদ প্রবেশ করিল। ত্রা-হাতে শঙ্কাবর্জন বিক্রান্ত তত্তি দেনাগণকে लहेबा व्याक्रमणकांती छामत टेमनाटक शब-भूत निकटि युक्त ध्वनान कतिरनन। এই যুদ্ধে তত্তি দেনাগণ সম্পূৰ্ণৰূপে প্ৰাজিত ও ছিন্ন ভিন্ন চইল এবং তাহাদের অবি-काश्मारे निरुष रहेल। नकत्वर्षान् मनतः ক্ষেত্রে প্রাণভ্যাগ ক্রিয়াছিলেন। চক্রবর্ম। স্বীয় বিজ্ঞানী ডামর দৈনা লইয়া অতি নমা-রোছ পূর্বক রাজধানী মধ্যে প্রবেশ করিয়া निकितादण ताणच शक्त कतिदलन। किन्छ তিনি সীয় নীচ প্রবৃত্তি হেতু শীঘ্রই প্রজা-দিগের অঞ্প্রিয় হট্যাছিলেন। একদা তিনি ত্তইটি জোভ (ভোম) জাভীয় স্থাদরী ন-র্ত্তকীকে দেখিয়া ভাহাদিগকে আপনার भूतजो करिएनमः अतः अत्य जामारमत अ প্রকার বশীভূত হট্যাছিলেন যে সমস্ত কার্যাই ভাহাদের অনুমতি ক্রমে করিতেন ! অপর তিনি আপনার মাহা্যাকরো ভানর **দেনাগণকেও সম্পূ**ৰ্ণ ৰূপে বিশ্বত হইয়া গিয়াছিলেন; ভাঙাতে কতিপয় ডামৰ একত্ৰ ইইয়া রাজি কালে তাঁহরি শরনাগারে প্র-বেশ করত তাঁহার পাণ বধ করিল। তদন-ন্তর উন্মন্তিবর্ত্তি নামক পার্থের এক পুত্র রাজ্যাভিষিক্ত হইলেন। এই রাজার চরিত্র অতিশয় স্থাজনক ওনিঠ্র ছিল। ইনি নৃতা গীত ও জ্রীদংদর্গেই সমস্ত সময় অভিবা-হিত করিতেন, পক্ষিযুদ্ধ ও বন্য জন্তদিগের যুক্ত দেখিতে ভাঁছার বিশেষ আমোদ ছিল। অপর পাছে পরে কোন বিদ্রোহ উপস্থিত হয়, এই আনকায় যে যে ব্যক্তির প্রতি ঠা-হার বিপক্ষ বলিয়া সম্পেহ ছিল তাহাদি-গকে নিহত করিতে আজা দিলেন; তিনি षा पन खाजादक अक प्रकारति गाउत सक করিয়া নিরাহারে বধ করিলেন; এবং তাঁহার পিতা পার্থকেও কভিপয় অস্ত্রধারী ঘারা নিহত করিয়াছিলেন। কিন্তু এই শো-ণিতপিপাত্ম নরপতি ইহাতেও দস্তফী হন नारे, जिन की शृंदर्थ धदः श्रद्ध निकादर्थ স্বয়ং অনি ধারণ করিয়া আপন অনুচরগণের मञ्जरक्षम्। এবং নারীগণের স্বনচ্ছেদন করিতেন। অপর রক্ষদ নামক ভামর দেন।-পতি তাঁহাৰ মন্ত্ৰী হইয়। প্ৰজাদিলের দৰ্বস্থ वल भूरतक अभवत्व कविराव लागित। এই ৰূপ নিজ্ব শাসন তুই বংগর মাত্র ছিল, ভাগর গবেই এই জুরাচার রাজার মৃত্যু হইল এবং ভাধার পুত্র স্থ্রবর্ম। ৭ নিংহা-নম্ভ হইরা স্বন্দে কাল মধ্যে লোক্তির প্রাপ্ত इरेल। इराट्य ताक्षकपानाती अगाँ अञ्चल একত্র হইয়া বৃশক্ষরদেব নামক এক জন দামান্য ব্যক্তিকে বাজপদে স্থাপন করিল। যশকর পিশাচপুর বাদী কামদেব নামক এক ব্যক্তির পুত্র ছিলেন। তিনি বাল্য কা-লাবধি অসামানা বুদ্ধি শক্তির পরিচয় দিয়াছিলেন এবং ভাহাতে যেরুবর্দন নামক এक রাজমন্ত্রীর বিশেষ অনুগ্রহসংজন হই-য়াছিলেন ও তৎকর্ত্ত শক্ষরক্ষার রাজ্য कांद्र प्रश्लाधिकांचा (१) भए आश्र इड्या ছিলেন। যশকর পভাবত যেমন বৃদ্ধিমান ছিলেন, দেই ৰূপ তিনি বাজকাৰ্য্যেও বি-শেষ দক্ষত। প্রকাশ করিয়াছিলেন। ভিনি রাজা নগো প্রথমে স্থানিয়ম ও শাস্তি ভাপন করিয়া চৌর্যাও দস্তারত্তি নিবারণ করিলেন। উহার সময়েরক্ষেপথ দকল ভয়পুনা ২-ইয়াছিল এবং বিনা প্রহ্রী সমস্ত রাত্রি দো-কান দকল মুক্ত-দার পাকিস; এক জাতি অপর জাতির বাবসায় গ্রহণ করিছে পা-রিভ না এবং প্রজা সকলে রান্ধার নায়ে-গুণ ও স্থানিচারে পরম সম্ভূষ্ট হইয়াছিল। কিন্তু একটি ছুৰ্ টনা উপস্থিত হুইয়া যুশক্ষ-

⁽a) दैमना मः क्यांच भन।

রের সমত জীবনই ছাথাবছ ও রাজত্বের প্ৰতি বাাঘাত চইয়াছিল। ভাঁচার এক ত্রী ছুম্চরিত্রা হইয়া বাহ্মবাটীর এক নীচ জাভীয় एट छात्र थेडि थांगङ इरेश हिल ; এरे বিষয় তিনি ভলত হইয়া দুঃখ ও লক্জায় অভিভূত হইলেন ; এবং এই কলস্ক অপ্-নয়নার্থ প্রায় ভিডে করিয়া রোক্ষণ পণ্ডিত-श्राप्तक विल्तत् अर्थ मान कति दलन, 'अर्थ अ-किंग विश्व किंद्र किंद्र किंद्र केंद्रित मन इहेटक धारे कलक मुत्रीक्छ बहेब ना। তিনি তদ্বিষয়ের চিভার নিরভর বিমাশ-ভাবে থাকিতেন:এবং পরিশেষে গ্রাক্তা ভাগ করিয়া আপনার প্রভিত্তিত সঠে প্রবেশ করিয়া গোপনে জীবনের অংশেউ ভাগ অভিবাহিত করিলেন। তিনি ।-খন রাজগদ পরিত্যাগ করিয়া বুন ত খন তাহাৰ এক পুতা ছিল, কিন্দু এই পুত্রের জ্যোর গ্রাভ উহোর সন্দেহ তিল, এই চেডু মনিবর্গকে আহ্বান করিয়া তা-হার এক জ্ঞাতি বণাট নামক ব্যাক্তিকে দিং-श्रामन अनाम कविटल किशांशिटलन। किन्न মশকরের পূত্র সংগ্রামদেব নিভান্ত শিশ্ ছিল এই (रुष्ट्र मञ्जिपन डीहांत तांक व सरेटन মস্পূর্ণ আধিপতা করিতে পারিবেক এই আংশায় সংগ্রামদেবকেই রাজা করিল। ध हे करण व्यथान कर्मानातिका ममस्य कम्मर्था অাপ্ত হইয়া কিছু কাল সংখ্যই পরস্পার विवास बावज कतिन, अवः डांशेरम्ब गर्या পার্বপ্রথমক মন্ত্রী কতিপর লোক সং-আহ করিয়া এক বিদ্রোর উপস্থিত করিল, श्तर (महे शोनरयाटन ताकाटक ७ ठीवांत নপ্ৰক বাজিদিগকে নিহত করিয়া আপনি নাহন পূৰ্ব্যক নিজেবিত ভরবাদ্ধি ধারণ ক-রিয়া সিংহাদনে আরোছণ করিল, আর তা-ভার অনুচরগণ ও ভর্যুক্ত আন্দারণ তাহাকে तका मस्याध्या व्यवस्य कतिल। किन्न भा-

ৰ্বান্তঃ ক্ষমতা অধিক দিন ছিল না, তাহার প্রতিপক্ষেরা পুনরায় প্রবল হইয়া ভাষাকে পদ্যাত ও নিহত করিল, ভাহাতে তৎপুত্র কেমগুপ্ত ব্ৰাজা হইবেন। কেমগুপ্ত অভিশয় ইন্দিয়পরায়ণ ও ভোগত্থামক্ত ছিলেন স্তরাং তিনি রাজকার্যের আভি किছू मांखरे मत्नारमांश कतिरंडन ना, रेशरंड দেশমধ্যে রাজশাসন নিতান্ত শিথিল হই-য়াছিল, এবং প্রভবাদী বর্ষরগণ আদিয়া नशवामि लुकेन उ वोक्यमित्रव विश्वंत সক্ষাদ্ধা করিয়া দিতে লাগিল। বাজা লাহোবাধিপতি সিংহরাক্টের দিন্দা নামী কন্যাকে বিবাহ করিয়া আপনার চরিত্র कि। १९९८ म ९८ माध्य कतिए । शांति शांकिएन म, এবং ভদবধি অপর সকল বাসন পরিতাপি করিয়া মুগনাতে প্রকৃত্ত হইলেন কিন্তু ইছ'-তেই হাঁছার অকাল মৃত্যু হইল। তদনন্তর তাঁদার পুল অভিমন্তা রাজা হইলেন, কিন্তু <u> फिला तोनी समछ ताक कार्या खतः निकार</u> ক্রিতেন এবং প্রায় সকলকেই আপনার ক্ষ্যতাপীন করিয়াছিলেন। ইহাতে হা-ন্তুন নামক প্রধান মন্ত্রী নিতান্ত অসম্ভূষ্ট হইয়া এক বিদ্রোহ উপস্থিত করিল; কিন্তু নরবাহন নামক রাণীর এক বিশ্বাসী অসুচর দৈন্য দংগ্রহ করিয়া উক্ত নন্ত্রীকে পরাজয় करिल। এই कट्ट नवर्याह्य आविष्ठ धकरी বিদ্রোহদমন করিয়াছিল। অভঃপর অ-ভিমন্তা বাজা লোকান্তরিত হইলেন, এবং ভদববি দিন্দা রাণী এক একটা শিশুকে রাজ বিংহাসনে স্থাপন করিয়া আপনিই রাজত্ব করিতে লাগিলেন।

আমাদিনের ইতির্ত্ত লেখক কছন প্র-প্রিত এই পর্যান্ত লিখিয়া দ্বীর এক সমাপ্ত করিয়াছেন স্তরাং তাঁহার ইভিনান ১৯৯ শকাদা (ইং১০২৭) পর্যান্ত জানীত হই-য়াছে। তাঁহার পর লপ্রাপর গ্রাক্ষণন ভৎশরবর্জা সময়ের ইতির্ভ প্রকৃতি করিরাছেন: কিন্তু ভাষার অনুধাবন করিবার
আর প্রয়েজন নাই, কারণ এই সময়েব
কিছু কাল পরেই কাশ্মীর মুসলমানদিগের
অধিকারভুক্ত হইরাছিল। স্তরাং হিন্দু
রাজত্ব কালীন কাশ্মারের ইতিহাস ও অব
ভার সংক্ষেপ বিবরণ উল্লেখ করাই আমাদিগের যে উদ্দেশ্য ভাষা এক প্রকার সংসাধিত হইল।

উদ্ধৃত।

ভবানীপুৰ जन्म-বিদ্যালয়।

প্রধান আচানের উপদেশ। প্রথম সংখ্যা। ৮ টেন্ত ১৭৮৫ শঙ্ক।

ইহা অভান্ত আহলাদের বিষয় যে ভিন বংসর পতে পুনর্বার এই ভ্রানীপুরের ব্রহ্ম-বিদ্যালযে ন্ধানরা শুক শিধ্যে, পিডা পুরে, দন্মিলিভ হই-রাছি। ইহারমধ্যে পরিচিত অসল মুখ অসলো-कन कतिया आभात क्षप्र प्यानतम जैर्यन कहे-ভেচে, আবার মুডন উৎসাহ-পূর্ণ ব্রহ্ম জিলামুকে উপস্থিত দেখিয়া আশার অভীত ফললাভ করি-তেছি। এ ভিন বৎপরের নগে। কত প্রকার পরি-বৰ্ত্তন হইয়া গিয়াছে, কিন্তু ব্ৰহ্মাগ্লি ভেমনি জাজ-नामान बुध्याद्य। याशाद्य त्यानावरमत् कामर्य পৰিত্র ঈশরকে ধারণ করিতে পার, বাহাতে জানের উলভি-সহকারে প্রীতির উলভি হয়, যাহাতে গন্ম-बल्ग (जामहा बनीग्राम् २७---शाधीन इंदेगा विनगी হও, এই আমার লক্ষ্য। এখানে মাসের মগ্যে क्विम छूडे घती काम उभटमध अनिवाह कना উপদেশ নয়। বাহাতে তোমরা শাস্ত দান্ত উপ-इड जिक्किक मगोरिङ हहेगा उक्कपारम जेशनीज **रहेटल পात्र, ध**हे आयात लका। ट्यामदा हित् জীবন ধর্ম্মের উন্নক্ত পথে ঈশ্বরের সহচর অনুচর হইয়া থাকিবে, এই শুকুতর অভিপ্রায় সিদ্ধ করি-बात निविष छिन वदमत शदत खामातरमत अधारन निमानसः आनम् मत्न विमन क्षारम् यक हेकू नाथा नार्थाया कतिएक काञ्चल व्यक्ति। टकामात्रदमत ज के कार्य मारकत मिनिएड व अकात बच्च, का अव The state of the s

श्रदेश य मकन डेशरमण मिशा हिनाम, फारा किछूहे वार्थ इस मारे। त्लाम'त्रामत जात्वरकत स्मट्य ব্রাহ্মপর্যের মধুরাচা প্রবেশ করিবাচে এবং ব্রহ্মকে আহের। বিশেষ ক্রণে জ্বানিবার নিমিন্তে জোমার-भित्र क्याचीमां अधिया। ८६ : जेशव अधीय विद्यात स्मार्के প্রোথন। সিল্ফ ককন্। কেট নিভা অমুভ **অভর** कृष्टेच अवन अन्य भारतम्यस्त्र अर्थी व्हेगाडे अवारम ভেগ্রা সমাগত হটছাল, ইহালে ব্রাক্ষপর্কের फिश्टपम बका कवियोक--- ¹¹ जिल्लानार्थर म शक्राम-वा जिनायकः । ্যাথনা ৰাজীত শুক মঙ্গল পুলাধের অমুভ্নন ভার একাশ পায় না ভাঁচ'তে জানিবাৰ যাঁচ র ইক্ষা ইইলাচে, জিনিই অভাব মৰুদাধা ব্ৰহ্ম কাম লাভ কবিতে পাৰে**ন** । ব্ৰদ্যকানেৰ ভাগন লোপান প্ৰাথনা : দিভীয় মোপান যমুও চেটা। তোলবা গাঁত বৃতকারী इंड्रेटल ५ फ, फर्टर केंग्यद्वर नाज्ञवा लग्नेगा जनमा सना इहेगा यक श्रास्क अत्यात केश्रामदर्भत सधी সকল প্রেণিপান কর। প্রান-প্রকারেশ, নিনিবের ভোমারদের নিজের অনুকার ওমছেন্টনর মত নির্ভর করে, আমার উপদেশের উপদ ওঞ নহে। ভেমবা বিদ্যালয়ে যে ভারে বিদ্যা শি-থিতে যাও,যে ভাবে বকুড়া ক্ষিতে যাও ্ लाहे छाटा कि वंशास्त्र कामिगाइ ? स्में है छाटा যদি আসিয়াপাক, ভবে ভালা উচ্ছ হয় নাই। এখানে প্রিছ ভ বে আংশিতে হইবে। যে ঈশা रवंद क्रमा केल लिएक खेतुरणा खेतुरणा क्रमण कर्दि য়াড়ে, অথচ উলিকে পায় নাই; কছ কন্ত দার্শনিকেরা ভর্ক-জাল বিস্তার করিয়া থাকালে জানিতে বিয়া অবসম হইয়া ফিরিম আবাসমতে , कैं इ वि निष्ठ है व है बाद करा अशास्त्र आरिष्य है। প্রমেশ্রের নিকটে যাইতে সহলে প্রিত্ত হলতে मदल ऋभरप्रयाहराम करेरता । दयस्य मलिस द्वरण खन्न भवादक पालेटक वृत्तिक इन्टेटक इस, ट्यम माधु-रमादक व्यविनय-वस्थाव वर्कदत्त्व नाम्य जैलदर শন করা যায় না : তেমনি পরিত্র-ধরপের সলি ধানে অপ্ৰিত্ত ইইয়া যাওয়া যায় না। কেমন করিয়। অপবিত্র চক্ষু ভাঁহার চক্ষুর প্রতি অর্পন করিবে? পাপে রভ থাকিয়। কি প্রকারে সেই পর্মেশরের পবিত মুখ দর্শন করিবে ? বিশুদ্ধ-ভাবে প্রাদ্ধা-ভাবে সেই প্রম পিডার নিকটে উ-পশ্বিভ হইভে হইবে। তিনি আমারদের পশ্নম পিডা, আমরা দকলেই উহোর সম্ভান : তিনি ष्यागावरम्य अध्यु, ष्यागद्या नकदल है जिलाब कुछा ; তিনি আমারদের রাজাধিরাজ, আমরা সকলেই তাঁহার প্রজা, ভিনি ''একোবনী,'' আমরা সকলেই তাঁহার বশে রহিয়াছি। আইস আম্রা হত্তে ছত ধারণ করিয়া, ক্ষেক্ষ ক্ষেক্ষ মিলিড হইয়া, সেই

क्रेबारहड़ म'हरादम हिश्मीक शहे-- मालहत्मह পার সোপানে আরেছিং করিয়া উভ্যুথে সেই (भन-१भटनह भिष्का्महमय सिक्टेनड^{के} रहे। फर्न-ন্ধে উন্ন কবিয়া সভাকে লাভ প্ৰিতে ইঞা করু, আগ্রিক সহকারে সভ্রোর অবুক্তান জারা হাদ-লকে প্রিক্ত করে, ভাষে পালের করুপ এথনাই আপুনি। क्षिक के हैं दबस । श्रीम क्षिम्श करहे हो है है। स्मान নেখের আবিবনে ভারি নলিন হয় তারে সেই পৰিত ৰপ্ৰকাশ স্থানৰ কিন্তুনকৈ নেয়ে। নথা দিয়া कि ध्वकार्व भवान कविरत । शमम शक्ता के सिया-भरयस्य धच्चभीतः इटग्रम, उध्यम त्रकारहोता त्राच-প্রালমে তৎপর গ্রাকেন্ সেই প্রকার কেমারদের ্ত্র-সহকারে ত্রাক্ষ-থর্ম্ম ব্রন্ত প্রধান করেছে হটবে। এখনি কি ভোগারদের থালত ১ইলে ইন্ডা চইন ÷ছে না? জেৰে প্ৰকাৰণি চান্ত্ৰ সংয় কৰিয়া ानिक कडेश। कथाएम नामितः, हडीत, जिल्ला श्र-ोगल शांकरण शकु कहिरन । अति म जिल्ला इकेटन ? ্দির নায়ে ইন্দ্রিয় সংখ্যা করা তারে প্রিণ হইবে। ों। स्थ-संभव कि १ न् ए १, चेश्युक काल है जिस्स দিপত্তে সম্মাস্থ্যে বিধেরণে করা 🕒 যেন্দ্র অস্থারাচ अन्यत्क सिराप्तां करते । तत्र्यां से हैं किस्सिप्तां के सिरस्स र्राजित्र । । सीनिए।क ० का। इ.गुनाक्ष्र कदा गर्द। ক্ষু শক্তি দার, সংখা তিনে, ভাইটি অপ্রি-· कार विकास की स्मारीय नाइ के या व्यक्तास अव्यव করিব ন্হাজে বকাদ্র প্রকৃদি হয়, আগা। প্ৰিড ও জানন ২য়। হানিন্দ্নিগ্ৰ প্ৰকৃত্যুগে কেয়েপি করার ই শুল্ল সংগ্র করা ৷ মৃহাজে শরীর পুদ্র বি, মন বিলিক'ন চন্দ্র আরো সভ ক ােশ্র চট্টা জন্ধবের পিয়ে আ্রাস্মান লয়, সেই এক হৈ দি জন্মদি গ্রেক ন্যান করিছে। প্রথম সাধ্য-क्किंग ब्रिवारक क्यांनिहाड अब्देश महन्त्र ध्यार्थना । है, भारत रहेड आयान, शिक्षत मिलाए राष्ट्र एकि। গ্ৰহ্ম ১৯ লেখিছে লিছেলি ক্ষিত্ৰ ১ জাগুনাকে ্ৰিম কহিব ও নিমিছে। কি প্ৰকারে আপনাকে तर कवित्व १ विकास म अम द्वांता कि धकाद्व প্ৰায় সংখ্যা কৰিছে। তিন্তু তথ্য স্থানিক ভিন্তু তথ্য কৰিছে। ারিণ পার্মার পালে ইভিয়নিগকোনারোগ করিয়া। া ৬টলে সহলে সেহ ভূমা আকাশে যেমন ७३ १०क में लाह, तमरे कुल (सल्लाल यसमील) ি দৰেৰ অভিযাত ইম্বল্ল প্ৰকাশ পাই**ৰেন। উ**[-াব খাটে ক নাম-কূপ মুইজে প্রজাপ্তির বিক্ষালিক বিংনগাত ব্টানে, নিত্রাধ স্থিত্র রুপনা ক্টানে মধ্যম 若利 南部山山山山 海灣 數甲化學 ভূমি ছইলে সাধি-पण न्यान विकेश र लिए ए वर्षा, इष्ट वर्षा हेल्से व्यक्त पालितीय पार्विकार भग । ७ केंग्या **प्रशिक्ष केंग्यह**ा प्रति । अवता अवत क्यान जोशनिक को निष्मत िर दर्शितिमियदक संधानायी निवस में स्व अहेगा।

यावेटनम । अक कार्छ सम्मन चाह्य मण्डवादना च्याटहा महन-सार्ग्य हर, इड (य) दमत श्रीविक खाखा श्रीविकः স্তরপের সংযোগে সেইরূপ আরো পরিত্র-স্বরূপের আবাদের যোগ্য হইবে ! ত্রান্ম হইয়া যদি বি-শেষ-কপে ব্ৰহ্মকে আনিতে ইচ্ছা কর : ভবে উ-थान कह, जाश्रद इस, जेदकरे आहार्याह महि-भारत गमन कहा अमारत्व मिश्रह्मस अभीम जा-কালে প্রতিষ্ঠিত রহিয়াড়ে, বাহ্য বিষয়ে সর্বাত্র फिनि पीषि शाहै छिएकंन, फिनि मक्त घष्टेनादक যথাযোগ্য-রূপে চিন্ন কাল নিয়মিত করিতেছেন, हेश (क न! कारन ? किन्हु ख:यापर्या बरनन "७-দিলি ভাষর' উহোকে বিশেষ-কপে জানিতে ইকা কর। তাঁহাকে উপরে উপরে জানিলে হইবে ন। ; প্রামাধর্মের আত্রা নইয়াছ, সভএর সকলের অ-স্থারে প্রবেশ করিয়া তাঁহাকে বিশেষ রূপে জানিতে। ইক্ষাকর। কি সভা জাতি, কি বনা জাতি, भक्रान्त्रहे मान भिष्ठे भक्षता भौ भक्षक भक्षभिक्र-মানের সভাতে বিশাস আছে: কিন্তু তোমার-দিগকৈ সকলের মধ্যে প্রবেশ করিয়া, সকলেভে निभन्न बरेगा, विल्लंघकरण है। इ.स.क का निरन्त बर्डेस्त । উশ্বেৰ মহিনা বাহা বিষ্যায় যে প্ৰেকার প্ৰাশিক মহিয়াছে, ভবানীপুরের এই বিদ্যালয়ে ভিন বং-সর প্রকো ভাষা বলা কইয়াছে; এ কলে কথবের নির্চ ভত্ত-সকল জোমরা অনন্যম্ম। ইইয়া গ্রীয় অন্তরে সীয় আমেতে অনুসন্ধান কর, ভবে বি শেষ কপে জিহাকে জামিতে পারিদে। ৰলা হটয়াড়ে যে জগতে যাগ্ৰিছ আছে, যাহা কিন্তু কইন্ডেচে : মেট প্রাণ-স্করণের অপিঠানে : ভিনি ও কার-প্রাতপাদা, তিনি সৃষ্টি-বিভান্ত প-ল্য-কার্ড্য। তিন বংশর পুরের এ সকল উপচেষ হট্যা পিয়াছে: এখন পাচা ধলিয়, ভাছা সীয় আহাতে নিময় ইট্যা দীনত কান হারা, মুনা-জিজ বৃদ্ধি ছাবা, পৰিক হাল্য ছালা জানিতে क्रिय-एकः ও क्रिय महकार्य क्यांनरक हहेरह। वधम ताकि कारल सक्क मस्त जिम्ह इस, यथम युपाकत युपा-जावा जाखीर्व करत्रम ; ख्यम स्मर्टे শোলার মধো শুক্তিত হইয়া ঈশবৈর আবিতাব मिथिए प्रकि। यथन छेवा काटन स्था छमग्र হয় তথ্য স্থুদায় আকাশে উচ্চারি মহিমা ভাষ-लाकत कर्ता अर्थक भिष्ठत, विकाशास, भग-কেতেও, সেই স্থাকেই মনে হয়। মেখে বিস্তাকে বলন্ধানতে উত্তারি শক্তি প্রকাশ পায়। বিশ্ব ल्डाटन (कांकि रकांकि को क्रांगृह्म स्थल-रको भने रमिश्रा রচনা-কর্তার বিচিত্র শক্তি অনুভ্র করি; জাবার श्रीरशते माध्य व्यवस्य जिमा संस्टानात सुल्यात स्रोटनः डाराज कामारमाफ अमानिस पानि । अर्थन अपने धर्म अस्त कवित्राहि, जनमना जनमि । गर्क नर्म-。 "我们就会的一个大概是一个

वर्गाणी नर्सनिष्ठका निर्माकिमान् पूर्व पुरु वह দত্তাতে বিশ্বাস করিয়াছি। এথন হস্ত ধারণ ক-ব্রিয়া ভোমারদিগকে ধীয় ধীয় আয়ার অভাস্তরে, জন্মরের অন্তঃপুরে, দহরে ব্রহাপরে, লইয়া যাইব। বেখানে এখন অক্ষ্যার দেখিতেছ, দেখানে পরে ज्यादशांक दम्बिटेव।' ज्यालमात मतीत दम्बिटा ७५, ইহাও অন্ধ্রার । আত্মার আবাদ-তান এই দেচ-পিঞ্জর ভ্রমসারভ। রক্ষের ভাব েরপে, শরীবের ভারও গেই কপ। এই শরীরের অন্তরে নিমগ্র হইরা সীয় আত্মাকে নেখ। আত্মার কিরণে হ-গাঁর আলোক প্রকাশ পাইভেছে। যদি আয়া मा भोदक, एउटन एक दम्बिटक शांत ! अंबीटबुब मटला আত্মার প্রভাব দেখ, তাহার অন্তর্ভন প্রদেশে शत्रमाधारक दंगिषदञ्ज शाहित्य। तम अवका छित प्रमुख । এक समग्र बंदीत अन्तिक कहेरन, उधन শ্র'র এটাভে আ'লা অবসুত হটল। লোচংস্তরে গ্যন করিবে। খেন এট চক্ষু গেল, তথন স্থা কোথায় বৈ অন্তর্গাধোকে সুলোব আন্তার ज्ञथन कि श्रक दिव का नत । यथन गर्म वर्ग क्लान করিকে না পারিলান, নে স্মীরণের মধ্যে জাঁ-হাকে ক শ্কোরে জন্ত করিব সু যথন প্রাণ-পাত্তি भाकिरतर नो, छशन काछाक 'रक्षक पुरुष्यी मगदनत मुश्राप्त है।शास्त्र कि ध्यकारन डिशालीका करिन है प्रमिख अपा थाकिरत, अमेर्द्रश अनाहिक इन्द्रिन, প্রক্রোদান নিয়ত গল্প দান করিবে: কিন্তু মুভ प्राप्टर मध्दक्ष बैकान किछूके बोकियक मा। खबरना তে। সামানিকাণ চটবেক না। আলার অলা-ন্তরে অন্তর্গালের দেখিছেই প্রাটন। নাহিন্তের महम मंतिरत्त रा मधका, कि'। महंगारन आहь. ानन्य ভবিষাতে **পাকিবেক না. ইছা সকলেই** জा নেন : কিন্ত আত্মার সঙ্গে পর্যাত্মার যে চিয় স-দক্ষ, ভাষা ভোমার্রিপকে বিশেষ করিয়। জানিতে इहेटव । भथन मगुनास वाका विषय निक्वीत है জিয় হইতে ডিয়োহিত হইবে, তথনো আহার अञास्तरत चामूमसाम कतित्व भार्याद्यातक पार्थ তের পাইর। এই প্রকার প্রমান্তার সঙ্গে অ'-মারদের আঁফার চির কালের সমন্ত্রী एगा চ-ल्फात मटक व्यामायरमय विस्कृत क्रेट्र, किस् भ यमा बाह्य महिल्ल कमालि विटब्हन इंटेटवरू ना। मधन महाध्वत मरचा व्याच्याटक प्रचित् उचन मार्वीहरक कारोत आवाम-श्रीम खान वतः यंथम महे अः খাতে আবার পদ্মাতাকে দেখি, তথন 'এই শ-तीत शाविक रमय-माम्मद्र इस । मन्नीद-माम्बर्द वाजा-वानदन ठीकाटक वानीन दर्शाको, उत्हादक जाचात्र व्यक्तित्व अभ्येष-केटले जानित्व लीविया 五名 金属 [1]

निरुद्धा सं व्यक्ति हैना बदक किन्छ , नांत्रप-

সারের পবিত্র শভাবের পূর্ণ রহিয়াডে। এই স্মু माश्र कन्नः (भेडे श्रेत्र) गटक्नेरत्ते आवाम-स्रोम : এই निश्व-मस्मित्र मिहे (मन-एमरवित्र निश्चन्त्र मस्मित्र) দদি জোমার। ৩৬ট মন্দিবের বাতিরে পাকিয়া দুর হুইজে তাঁহাকে প্রণাম করিছে চাও, ভবে জোমা-রদের উন্নত ব্রাহ্মপর্যাকে আনুশ্র করিবার সকল ফল প্রিবেন।। পদি জোমর। ইচ্ছা কর, জবে ব্রাহ্মধর্ম্ম ভোমারদের এট এন্দিরের অন্তঃপুরে হস্ত পার্থ করিলা লইলা খাইবেন, মেথানে ভাহার অবিষ্ঠাত্তী নেব্ডার সাক্ষাৎ পরিচয় প্রাপ্ত ইউয়া ভোমর। কুভার্গ হুইরে। এই বিশ্ব-মন্দিরের অ-क्षा त्रुव सव-स्थातीय आधा , परे आ आहि क्रेक्सदत्व छै-क्किन इसेने दकान, धरे आहेत एकडे उनडे एका छ है जिल त्मरेक्"रेरे तत्त्र (मन्ज्रीटक देलिकिए । मॉनगा मद-ষার-পাত্র এই শ রক্ষালামের নেতুল 😁 করিব। निदीक्षण कविष्ठा रहेका, भोतौरहाई समस्य भक्त होते. আগ্নার জেমনি ভিনটি দ্র নেধিকে প্টেবে গেই ^{চিত্ৰ} দ্বার দিয়া ঈশবের জ্যোতি অস্তবে *আ*-বিক্ট হই কেছে। ত্রকটি স্বার আমার জান, একটি দার সাহার প্রতিত আর একটি দার আহার পর্যা জান স্বারা ভূত কাল-সিদ্ধ স্কা স্ক্রপঞ্ नर्गम कति, वर्ज्यादम औरित छ।त. छ।त मक्क-य-রূপের অফ্রন: করি, ভ'বী কালে কর্ত্তরা পর্ণোব অনুষ্ঠান দ্বি) শুদ্ধ অপাথানিদ্ধ পরিত ধকপের मिन्निकर्म अञ्चय कवि । वाष्ट्रा कार्ट्यः सम्बे भिन्न বস্তু, সভা বস্তকে, ভান স্থার। জানিজে পারি। ভাঁহাকে বর্তমান কানিয়া প্রাণি ছার ভাঁহার অ-স্ক্রা করি। ভখন খারক আমারদের পরস্প হয় একং প্রাণ্ঠ,ম ভাষারচদ্র জাকন জাল भर्पा त्थी। कत मध्या धनि चकतित्व क जान वस करा আমর। উপরের পাণে। ও রসর। ত্রিত পানে না । 两河 强制 作员 计信息信息 测量点 利 行電。 配子 কাহার প্রাণ ভাতি প্রকাশ কবিব গৈদি প্রাণ ভিক্তি দ্বালা উপাসনা না করি, জবে ঈশরণে কর-कत-नान्ध भागनकतः जानियाहे व! कि b टेटव ? याम जीकादत क्यों के डॉक्स क्यांग्या के हैं। इस सान भग लालम् ना कति, खात केवक त्यात जीखिल भाषात्यादम करन करम निर्माण हरेप। शहर । मकल ममप्रते हैं। होटक लक्षा अधियहम । हेटन । कि डेन्ध-প্ৰায়ে প্ৰথম, কি সাধিসালোক কামেটিয়া সময়। আৰ-ৰ্ম্মাচরণ ক'ৱব'র ভো ক'ব'ছি । কেই। যাহা কিছু ধর্ম-কাল্য করিবে। কাহাও ঈশ্বরের মঙ্গে নাগে রা-चिश्र क्यिएक इष्टेरव । याप्र अध्यक्त न। अका করিয়া কার্যা করি, ভবে আপনার কার্যা চটল ; यांत ने सद्भाव का का किया का मां कित, उत्वहें के-পরের প্রিয় কার্যা হইল। ব্রাহ্মপর্মের উপদেশ এই ; বিশুদ্ধ জ্ঞান ছারা তাঁহাকে দর্শন করিবে,

মিশাল প্রাতি ছারা ভাঁছার পূজা করিবে, পর্মানু-के म काता छात्रात्र कारमण शालम कतिरव । त-माम करन रहा याहरक बाद्य, काम-श्रीकि-अबू-क्षेत्र-खांब पिया श्वयाचारक व्याशामात व्यवस्त (प-चित्र हैं। हाब श्रुका का हरून करिता । यह जाक পর্ম্মে জানের বিষয় জানস্ত-স্বরূপ, প্রীক্তির বিষয় মন্ত্রা সাধ্যার করে প্রির্বি धर्मावर भवरमभव। धमन धरे द्वाराभमा नतन পর্মা ছইলে উংক্রট : জেমান কোষার্মিগকে সকল धर्मावनशो भटनंत्र मरभा ः आत्रे स्टेटल क्टेंटर । यथम ভোনার এই সভাবয়র সম্পন্ন ব্রাহ্মপর্না এইণ করি-গাছ: ভখন ভোষার্দিগকে সমুদ্ধি তাঞ্চে সম্পন্ন হইতে চইবে--শ্বীৰ্মন সাথা তিনেৱি উছতি माधम कविराज हरेटा. क्यांटाच कार्याटा ভाराटा मर्ख आकारत है अक एश्टल कहेरत. त्लामातरमंत्र की-ৰমে এই ব্রাহ্মগর্মের মাহাত্র। প্রকাশী করিছে হ ইবে। আখার এই হস্তবিভ প্রিক্ত রাহ্মপর্য গ্রন্থ ব্রহ্মবিদ্যাব জ্যোতি-রূপ অনুগ্রা মৃক্ষ্য-মণি-সকল ইভস্কঃ রাশীকৃত বিশিষ্প হট্যা বহিষাছে : তে ম্বাইহা হইতে এক একটি মুক্তা বাছিয়া লইখা আ-পানার মানোজপ কৃত ছাবা ভালার মাল। গ্রিয়া বৈপের প্রক্রীয় সকলের স্তব্নীয় ব্রন্ধের এরণে অ-প্ৰক্ৰা

বিজ্ঞাপন

ভাল্যমাজ-গৃহ সংস্কারের প্রয়োজন ক্ইরাছে। যে অব্ধি ইহার সংস্কার সম্পন্ন না হয়, সেই অব্ধি এখানে ব্রশ্নোপাসনা স্থাত থানিবেক। অত্থব সাধারণ সজ্জ-নকে অব্যত করা যাইতেছে, প্রীযুক্ত দেবে-জনাথ ঠাকুর মহাশরের ভবনে প্রতি বুধ-থারে সায়ং কালে ব্রশ্নোপাসনা হইবেক। ঘাঁহারা মানসকরেন, তথায় ঘাইয়া উপাসনা ক্রিবেন।

की जानसहस्र दमाखवातीम।

বিজ্ঞাপন।

আগানী ৩০ কার্জিক সোম বার সন্ধান ৭০০ ঘন্টার সময়ে বেহালা প্রামের একাদশ সায়ৎসরিক ব্রাহ্মসনাজ হইবেক, ব্রাহ্ম মহা-শরেরা ভংকালে ভথাকার ব্রাহ্মসমাজে উপস্থিত হইয়া ব্রহ্মাপাসনা করিবেন।

> ত্রী জগচন্দ্র চট্টোপাধায়। সম্পাদক।

Recently Published.

"THE RELIGIOUS PROSPECTS OF INDIA '
To be 'd at the
CALCUTTA B HMO SOMAL.

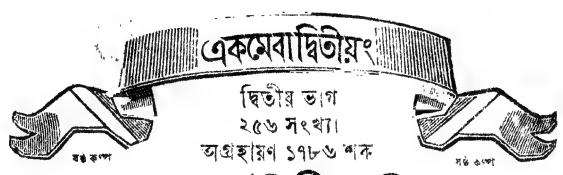
82" PRICE 4 ANNOL. BY POST 5 ANNAS.

নিঘ'ণ্ট পত্ত।

পৃষ্ঠ।

কলিকাভা ব্রাহ্মসমান্তের বক্ত, ভা	P 6				
নিবাগই চতুদিশ সাধংসরিক ব্রাক্ষাসমাজের					
বন্ধ্তা	5 * *				
त्राक्षचत्रक्रनी	200				
ভবানী পুর ত্রন্ধবিদানয়ের উপদেশ	۵°۵				
gal purply of control of \$1.50 to \$5.00 to \$1.00	Z 24,000 B 102, 1 2				
তত্ত্বোধিনী পত্তিকার মূলা নিৰ	পণ।				
তত্ত্ববোধিনী পত্তিকার মূলা নিৰ অতিম মূলা (কলিকাতার জন্য)	প্ৰ। গ্				
•	_				
জাগ্রিম মূল্য (কলিকা ডার জন্য)	9)				
জাগ্রিম মূল্য (কলিকান্তার জন্য) (' (মফঃখলের জন্য)	ত) তাৰ্				

প্ৰক্ৰী এই তত্ত্বোৰিনী পত্ৰিকা কলিকাতা সগৱে বোগা-সাঁকোহিত প্ৰাক্ষসমান্তের টুক্তিবিগের ক্ষমতাসুখারে আতি মানে প্ৰকাশিত। হয়। ১৮ই কার্তিক ব্যক্ষবার কথাও ১৯২১ ক্ষিপতাকা ৬২৬৫।



তভাবোধিনীপ্রতিকা

ব্রংখনা এক মিলম প্রজ্ঞানী স্থান্ত ক্রিক ন স্বীল্লিক কর্মেণ্ড কর্ম তি তেওঁ নি কর্মেণ্ড কর্মির ক্রিক কর্মির ক্রিক কর্মির ক্রিক ক্রেক ক্রিক ক্রেক ক্রিক ক্রেক ক্রিক ক্রিক ক্রিক ক্রিক ক্রিক ক্রেক ক্রিক ক্রিক ক্রিক ক্রিক ক্রিক ক্রিক ক্রিক ক্রিক ক্রেক ক্রিক ক্রিক ক্রিক ক্রিক ক্রিক ক্রেক ক্রিক ক্রেক ক্রিক ক্রিক ক্রেক ক্রিক

ঈশরের সহিত জগতের সম্বন্ধ।

এই জগৎ পু: ব্য কিছুই দিল না। ঈশ্বর ইহাকে উৎপন্ন করিয়াছেন, একানেও জিনি জগৎ হইতে বিভিন্ন চইয়া অবাস্থতি ক্রিতেছেন না, সেতু স্বৰূপ হইয়। ইলাকে ধারণ করিলা আছেন। যেমন জীবারা শরীরের অনলমন কইয়া আছে; নেই ৰূপা তিনি সমুশার জগভের আত্মা ইইরা সমুদা য়কে অবলয়ন করিয়া রা গৈয়াছেন। যেমন জীবাত্মার অভাবে শরীর নিস্পান্দ হয়, সেই ৰূপ প্রমালার সহিত বিচ্ছিন্ন হইলে জগৎ উৎসন্ন इहेता यात्र। यमन औराचात हेन्छ। ক্রমে এই শরীর পরিচালিত হইতেছে, দেই ৰূপ প্রমান্তার ইচ্ছামুসারেই ভূষা উরাপ দিতেছে,অগ্নি প্রজ্ঞালিত হইতেছে, মেঘ বারি বর্ষণ করিতেছে, সমুদায় জগৎ স্থ কর্মে নিরন্তর নিযুক্ত রহিয়াছে।

আমরা কাহারও জীবাত্মাকে দেখিতে পাই না, কিন্তু মনুষোর শরীর দেখিয়া জী-বাহ্মাকে উপলব্ধি করি। যথন মনুযা শেবিভাছে, শুনিভাছে, কথা কহিভেছে,

গমন করিতেছে, তথন কেহ তামকে আজন হইতে বিভিন্ন বলিয়া বিশান করেনা। নেই ৰূপ দ্দিও প্রমায়া সকল ইন্দ্রিরের অগোচর, কিন্তু জ্ঞানের অগোচর নাইন: महीद्वत भद्धा छीताभात मांच क्यार व আত্মা জ্ঞান-গোচর পরমেশ্বরকে সাক্তরই প্রতীতি কর। যায়। অভিনেতি ধীরের। স্থয়া-কিনুৰে ভাষারি জ্যোতি স্পনি করেন: भून हरक छै। इन्ति काँचि छे भना ब करतम. क्रमक्रिक उँविधि वस विधिव धान , নিজু-দলিলে ভাগারি গাড়ায়া প্রভীভিক त्तन, वितिनंभवत्त हैं।शति व्योक्धा ११० করেন: পিতামাতার স্লেহে ভাঁচারি করুণা অনুভৰ করেন: পভিত্রভার খেনে ভালারি র্থাত মাস্বাদন করেন। ভাঁহার। সম্ভার জগতে তাঁহাকেই ওত্রপ্রেড ভাবে ব্যাপ্ত (परश्न।

আগনাদের আত্মানে মনে করিয়া দেখা।
বিদিও আছা ক্ষ, ভুনাল, ও আর এক
মর্কাশক্তি প্রবের ইচ্ছার পরতক্ত ; ভখাপি
ইছার শরীরে ইছার শা ন কছ দূর প্রচাহিত্ত
ছইতেছে। আত্মা শরীর ও তে যদিও দংপার্শ বিভিন্ন, তথাপি আত্মা যথন যে প্রবার ইচ্ছা করিছেছে, অবংব-সকল স্থচতুর ভূতোর নামি লেন বুদ্ধি পূর্বেক সেই ইচ্ছা সম্পন্ন করি-ছেছে। ভাজা যখন দেখিতে ইচ্ছা করে, চম্মু- তখনই উদ্ধালিত হয়; আলা যখন চলিতে ইচ্ছা করে, পদ তখনই তাঁহার অভি-শ্রেড স্থানে ধাবিত হয়; আলা যখন ধাবিত হয়; আলা যখন ধাবিত হয়; আলা যখন ধাবিত হয়; আলা যখন ধাবিত হয়। আলাভের ক্ত আলার যত্টুকু শক্তি, গেনেই পরেল দের ক্ত আলার যত্টুকু শক্তি, গেনেই পরেল দেবল শরীরকে পরিচালিত করি-ভেছে। এই দুন্টান্ত দেবিয়া জগতের সহিত তাঁহার দল্ল মন্ত্র আলাবিত করি; এই আলীন আলাবিত করি লাহার আলাবিত করি। তিনি মন্ত্র শল্পান করিছেল। তিনি বিত্তি করি ইছার আলাবিত হিনি ইছার স্থালিত হিনি ইছার স্থানিক হিন ইছার স্থানিক হিনি ই

কিন্তু আ্নানের আ্লা বেমন কুদ্র, তিনি সেরপ কৃদ্র নংন তিনি মহান্ আ্লা তিনি ব্রক্ত, তিনি নিরাহশর মহান্। আ্নান্দের আ্লা ব্যমন শরীরের সহিত এরপ পর্যার যে, শরীরের স্পত্তের সে প্রক্রি হয়; তাঁহার স্থরপ সেরপ নহে; তিনি নির্জিপ্ত, তিনি অসক্ষ, তিনি অপারিবর্তীয় আনন্দ স্থরপ। আ্নাদের আ্লা বেমন তাঁহার ইচ্ছার পরেছয়, তিনি সেরপ কাছারও পরতার হছার পরেছয়, তিনি স্বত্রার, তিনি সেরপ নহেন। তাঁহানিত্য শাখতোয়ং পুরাবং।"

অনেকে মনে করিয়া থাকেন, "গৃহ
নিশাণের সমরেই নিশাতার সহিত গৃহের
যোগ থাকে, নিশাণ কার্য্য সম্পার হইকে
আর ভোহার সহিত যোগ থাকিবার আক
শাক্তা নাই। মেই কপ কৃতির সময়েই
শেকার মহিত ইহার বোগ ছিল, এ ক্লেণ

আর যোগ নাই, যোগ থাকিবার আবেশ্য-কতাও নাই; সেই স্বাশক্তিমান্ পুরুষ যা-হাকে যে প্রকার স্বভাব-বিশিষ্ট করিয়া স্থা করিরাছেন, সে সেই স্থভাৰ অমুসারেই স্থ স্থ নিয়মিত কার্যা সম্পন্ন করিতেছে।" ধাঁহারা এৰূপ বলেন, হুটি ও নিৰ্দ্ধাণ এই উভয়গতু रेवलका जैहारमत क्षमशक्रम रहा नाहे: উভর ক্রিরাকেই ভাঁহার৷ একবিধ করিয়া ভাবেন। সনুদার উপকরণ বিদ্যমান **আছে**, বেবল সংযোগ বিভাগ প্রভৃতি প্রক্রিয়া ঘারা ভাষার অবস্থান্তর প্রতিপা**দন করাই** নির্মাণ; স্কুতরাং নির্মাণ ক্রিয়া সম্পন্ন হইরা গেলে নির্মাতার নহিত যোগ থাকিবার আবশ্যকত। নাই। কিন্তু স্থলী ক্ৰিয়া সে ৰূপ নতে। একেবারে অভাবের অবস্থা হুইতে বস্তঃক উদ্ভাবন করার নাম স্বাফী—ভাটার ইচ্ছা মূর্তিনতী হওয়ার নামই কৃষ্টি —ফ্রন্টার শ্জিবাজ হওয়ার নামট ফ্টি; স্বতরাং गिरे देष्टा या मिलित अगस्ति र अग्रेड যাহা, স্ফির অসদ্ভাব হওয়াও তাই। অত-এব স্ফি ইইডে ঈশ্বকে পৃথক্করা আরু ঈশ্বরের ইচ্ছা বা শক্তি হইতে ঈশ্বরকে পৃথক্ করা, উভয়ই সমান। किন্তু ইছা কাহার বিশ্বাস যোগ্য হইতে পারে ১ অভ-এব আত্বা ছইতে পৃথক্ হইলে শরীর যে ৰূপ বিনক্ট হয়, সেই ৰূপ প্রমান্তা ছইতে পৃথক্ रुरेटन ममूनांग्र स्टिं विलीन रुरेग्रा शांत्र।

আমাদের আশ্বা জগতেরই এক অংশ, সূত্রাং অন্যান্য জগতের ন্যায় আশ্বাও উহার ক্ষ ও আল্রিড; কিন্তু অন্যান্য জগত বেমন বস্ত্র ক্ষপ্ত আল্বা সেবল নহে। আল্বার সহিত ভারার সহস্কা জনাবিধ। , মেন, বায়ু অভৃতি কড় জগতকে

्रथ्य, यायू व्यक्षाक कड़ कगरतक रिम पृथक काम एम नारे, व्यानमान्नरे पूर्व कोटन कार्शामगरक नामारेटकरहन; यहे करा काराज कित कांग व्याह-करन কার্যা করিয়া আসিতেতছে। আত্মাকে ভিনি পৃথক্ জ্ঞান দিয়াছেন। তড় জগৎকে তিনি পৃথক্ ইচ্ছা প্রদাম করেন নাই, ভাঁহার অ-পরিবর্ত্তনীয় ইচ্ছা উহারদিগকে কার্যা করা-रेटल्ट्ड ; अरे झना छेश्वरणत कार्या कथन অবসম হয় না। কিন্তু আত্মাকে তিনি পৃথক ্ইচ্ছা প্রাণান করিয়াছেন। আত্মার এই যে পৃথক্জান ও পৃথক্ইজা; ইহা প্রতি আত্মাই প্রতীতি করিতেছে, সন্দেহ নাই। এই পৃথক্ জান ও পৃথক্ ইচ্ছা প্ৰাপ্ত হইয়াছি বলিয়াই আমহা আত্মা শব্দে. পুরুষ শব্দে উক্ত হইয়াছি—স্বাধীন হই-খ্ ছ—ধর্মের অধিকারী হইয়াছি এবং দণ্ড পুরস্কার লাভ করিতেছি। স্থতরাং অ-ন্যান্য জগতের ন্যায় আত্মা তাঁহার যন্ত্র নয়। ত্রন্টার মহিত ক্ষির্যে নমন্ধ এবং আত্রের সহিত আভিতের যে সহকা, তাহ। চেতনা-চেত্র সকল জগতের সঙ্গে সমার থাকিয়াও আছা ও পর্যাছা উভয়ের মধ্যে আরি এক ধর্ম সম্বন্ধ দীপামান রহিয়াছে। তেমন আর একটিও সম্বন্ধ দেখিতে পাওরা হার ना, याशांत महफ मिश्रे मश्रक्तत जूनना ए-ইতে পারে। সংক্ষেপে বলিতে হইলে আ-নরা আত্মা, ডিনি পরমাত্মা; কিছু স্পান্ট করিয়া বলিতে গেলে এই মাত্র বলা যায় যে তিনি সামাদের পিডা মাতা সধা স্ক্রাজা থ চু. আমরা ভাঁহার পুত্র ও পদানত বকু এবং প্ৰকা ও ছতা।

পিরোভোর পার কররের পত্তা

থিটোডোর পার কর বেটিনের ক প্রিগেসনাল নাক্ষ সভাতে ৰে পত্র বেথেন জামরা ভাষা স-কলন করিয়া আকাশ করিছেছি।

व्यक्ति वर्षन वरणत्त्रक वालक हिलाम, रमहे व्यवहि वर्षनावदकत्र भग व्यवहान করিতে আমার অন্ত করণে একান্ত যত্ন ও উৎসাহ সঞার হইয়াছিল। ঐ কার্য্য অভি-শর প্রশস্ত ও বিস্তীর্ণ। এ কণে আমার বোধ হইতেছে আমার প্রকৃতিই বল-পূর্বক আ-মাকে ঐ বিষয়ে প্রবর্তিত করে।

অনা লোকে এচুর অর্থ বায় করিয়া বি-দ্যাভ্যাস করিয়া থাকে, কিন্তু সৌভাগ্যক্রমে শৈশব্বিস্থায় আমাকে সেত্রপ করিতে হয় নাই। আমি পিতা মাতা ভাতা ভগী-গণের আদেশ ও উপদেশানুসারে শিক্ষা-প্রণালী স্থম্পেট অবগত চট্ডাছিলাম। আমিনিরবচ্ছিন্ন স্থিরভাবে কোন ২স্তুর ८कवल प्रकृष्णी-मधा नितीकन न। कहिली ভাহার প্রকৃতি পর্যাবেলাচনা করিভাম। যে-মন মাধ্যাকর্ষণ শক্তি সকল বস্তু অস্থালি-বিত ভাবে ধারণ করিতেছে, আমার স্মরণ শক্তিও ভদ্ৰপ ছিল। আমি ষাহা বাহ শুনিতাম তৎসমুদায় অবিরুত ভাবে স্মরণ করিয়া রাখিতাম এবং স্বেচ্ছাক্রমে সম্পূর্ণ-ৰূপে লোকের নিকট ব্যক্ত করিতে পারি-ভাম। বিচারশক্তি ও কম্পনাশক্তি উন্নত করিতেও আমার গাঢ়তর অধ্যবসায় ছিল। এই বৃষ্ণত ব্যতিরেকে আমি নীতি ও ধ-র্মান্ত্রশীলনে অভিশন যত্ন করিভাম। শৈ-শ্বাবস্থাতেই আখ্রার স্বাভাবিক সংস্কারকে केचटरत आफ्रिम विवशः ममामत् ७ मन्यान করিজম। অকপটে সভা বাবহার, নার্য়-পরতায় প্রীতি, পদমর্যাদা এবং সম্ভমের প্রতি দৃষ্টিপাত না করিয়া গুণামুগারে সক লের সমাদর করিভাম। প্রম অস্ত্রাস্পদ দিখনে বিশাস ও ভাঁধার প্রতি প্রীতি স্থা-পন করাই সর্বাপেকা আমার মুখা উ-দেশ্য ছিল। আমি সকলেধান মহার।-জের দারি ভাঁহার আবির্ভাব লক্ষ্য করিতাম না; প্রত্যুত্ত ডিনি দম্পূর্ণ নাগরপর ও পরিপূর্ণ প্রীতির অকের প্রম পুজা পিডার নার

সাধারণের অতি তুলা দৃষ্টি বিতরণ করিছেছেন বলিয়া বোধ করিতাম। সকল বিষয়ে
আপনার প্রতি নিভর করিয়া নীতি ও বুদিরুতি অনুসারে কার্যানুষ্ঠনে ও অচকে
সমস্ত বস্তু অনুসন্ধান করিতাম। ধর্মন অন্
মার বিশ্বাস ও মত নাায়ালুনত বলিয়া বোধ
হইত, তাহার রক্ষা বিধানার্থ দৃত্তা অভাসি
করিতাম। এই রূপে আমার অনুসন্ধান
সকল বিষয়েই উত্তেজিত হইতে লাগিল।

ण्यांग भिन्ने ममरशत **अरमक** वित्रान्त अ অদক্ত ধর্মামত গ্রহণ করিয়াছিলাম ; কিন্তু বেধে করি আমিদির দেশের তথমকরি ধা শিককুনদন্তপর অপে লোকেই মেৰপ অপে কুনংস্কার শিক্ষা করিয়াছিল। নীতি-ও ধর্মপ্রকৃতি যে প্রকৃতিমূলক, ত্রিষয়ে বিশ্বাদ সাপনের নিমিত্ত কেন্ট্র যন্ত্রীল ছি-লেন মা। আমার পিত, মাতা লোকের ধর্ম-প্রবৃত্তি স্বভাবসিদ্ধ বলিয়ে প্রতিপাদন ক-রিভেন, স্তরাং তাঁহাদিলেরই সন্তান বলিয়া আমলেও ঐ নিশা্য অনাধানে উৎপন্ন হইয়া ছিল: কিন্তু ই শাদিগেরই প্রধন্তে আমার ঐ বিশ্বাস হই গ্রাছিল বলিয়া আনি ঐ নিয়য়ে কিছুই আপনার গুণগর্বন করিতে পারি না। আমি শুনিরাছি, তীহার। মনুষোর চরিত্র ও বিশ্বাদের সবিশেষ পরীক্ষা করিতেন; কিন্তু কালারও চরিতা বিশানের অনুরূপ না হইলো ঠাংকা এৰপ লোকের প্রতি কদাচ অন্মা-শের বাক। প্ররোগ করিতে**ন না।**

আমি শারীরিক পরিশ্রনের ন্যায় মান্সিক
পরিশ্রম সহজে আয়ন্ত করিয়া লইলাম এবং
যথন গাড়তর অভিনিবেশ সহকারে কোন
বিষয় পর্যাংলোচনা করিভাম, বাহ্য পদার্থ
কিছুতেই আমার প্রভিবন্ধকভাচরণ করিতে
সমর্থ হইত না। অধিক কি, যথন শ্বহতে
কার্যা সাধনে প্রবৃত্ত হইতাম,তথনও শ্বেজ্বান
মতে অন্য বিষয় চিত্তা করিতে পারিভাম।

আমি বাল্যকালেই উপযুক্ত শিক্ষকের
নাল্যা উৎরুষ্ট পুস্তক সকল অধারন করিরাছিলাম। ইংলগুরি পশুন্ত দিগের গদ্য ও
পদ্যে প্রণীত স্থলনিত গ্রন্থ, বাইবল এবং
প্রীক ও রোমকাদণের দর্বোৎকৃষ্ট স্থলে
পুস্তক সকল অনুশীলন করিতাম। কিন্তু
আমি দর্বোগ্রে ঐ সমস্ত পুস্তকের অনুশাদ
মাত্র পাঠ করি: পরে অন্তিকাল মধ্যে মূল
গ্রন্থের সন্তিও সম্পূর্ণ পরিচিত ইইয়াছিলাম। এক নার যাহা পাঠ করিতাম, তালা
মাত্র আয়ন্ত ও স্থলাস্ক্র না করিয়া ক্ষান্ত
ইইতাম না। যদিচ বাল্যাবন্ধার যে সমস্ত
পুস্তক অবারন করিয়াছিলাম, তালার সংখ্যা
অতি অংশ; তথাপি তৎ সমুদার মারবৎ
ও ফ্লোপথারক ছিল তালার সন্দেহনাই।

পদার্থ বিদ্যা ও মনো-বিজ্ঞান অমুণীলন করিবার নিমিত্ত আনার অসাধারণ যত্ন ও অনুরাণ ছিল; উহা শৈশবাস্থাতেই আমার অন্তরে প্রীতিকর উহণাহ সঞ্চার করিয়াছিল এবং আমার পিতার স্থান্ত ও বিচারপটু ও স্থান্তর মনো, তির গতি ঐ বিষয়ে থাকাতে আমি তাঁহা হইতেও যথেন্ট সাহাব্য লাভ করিয়াছিলান। প্রকৃতির রাজ্য আমার চতু-দিকেই বিস্তীণ রহিয়াছিল, আমি স্বিশ্বেষ অভিনিবেশ সহকারে উহার সৌন্দর্যা সন্দর্শন ও উপযোগিতা অমুধানন করিটাম এবং বালাকালেই স্বদেশের কীট পাত্রস্থান্তর ও ফলচর

জীর কর সকল এবং পুশা কল অভৃতি ইন্টিৰ প্লাহেন্দ্র সবিলোধ প্রিয়ম গাল করিয়াছি-লাম। আফুডিক ইতিহ্নতের কমেক থানি উৎকৃতি পুজার এই নিমমে আলাকে যথেত সাহায়া প্রদান করিয়াছিল।

्करे बद्धः चारात्रः तिमाचित्रभीवनः क्रमन **উब्र**क, **रहेट्य**ः वृत्वमात्र-विद्यमयः व्यवस्य করিবার অক্লুভ সময় উপস্থিত হইল। তথন আমি ধ্রমধাজকদিবের বিষয় বিশেষ অমু-স্থান করিয়া দেখিলাম, তাঁহারা সকলেই আয় বিষান বৃদ্ধিনান ধার্মিক ও স্থীল এবং ভাঁছাদিলের চরিত্রও অকলক্ষিত। কিন্তু ভাঁখাদিগের ব্যবসায় কিছুতেই আমার চিত্ত थाकर्षण कतिएक ममर्थ इहेल ना। নার আড়েয়র, উপদেশের দরিক্রতা ও নির-ৰ্থকতা, ঐশিক অভ্ৰাস্ত প্ৰত্যাদেশ বিষয়ক^{*} মতের অনৈদর্গিকতা ও অভিরতা, দামাজিক অার্থনার নির্জাবত। এবং উপাদক,দিগের অ-मत्नार्यां शंडी मर्भन कदित्व धर्मयाक्रत्कत পদ অবলম্ব করিতে বিচক্ষণ বাজি স্বভা-বতই পরাজা খ হইয়া থাকেন। এতদ্ভিন্ন षारमतिकात वर्षमाञ्चरकता त्यारकत्र मीकि, বৃদ্ধির্তি ও ধর্মপ্রবৃত্তির উন্নতি সাধন ক-রিকে হাদুশ যত্নবান নহেন। যদিও ঠাহারা তবিবয়ে সচেটিত হন, তাহা কেবল বাহ্যিক মাত্র। আমি যধন অপেবয়ক ছিলাম, তংকালে এক ব্যক্তি আমাকে বিজ্ঞানা করিয়াছিল ধর্মধাক্তব্রো কি জ্যোত্গণের প্রকৃত দেবের করা উল্লেখ করিছে পারেন? ''यामि कहिलाम्'' जामि त्याञ्चटशन् ताम पुङक्क छुद्भार कविद्र शावि"। महाजा रेगार्गन् त्याञ्गारनत् त्याच मर्गन् कविता केष्ट्रिक्ष्यत्र निक्षे, भारतत्र धार्ग कृतिहा-बिद्रान्। , जाङाब है।। निः , न्याद्रमञ्जूत भक्तगालक निरम्ब मह्या अवान हिस्सन धर्ः मार्थात सदय दिनिके ग्रासीद लक्ष्या वस्त्र हा।

করিরাছেন। আমার বন্ধু বাজ্ববেরা ধর্মযালকতা অতি সামানা কার্যা এবং উহাতে
নুম্ধিক উপকার সাধনের সন্তাবনা নাই
এই বলিয়া তাত্ত্বতে আমাকে বারংবার
করিতান উহাই অতি বিস্তাব কার্যান করিতান
এবং লোক সকলকে সংপ্রে আন্যান কনিবার অভিনীয় অবলয়ন।

রাজনীতি সংক্রান্ত কার্যো নানাঞ্চকার व्यत्ना उन चार्छ । এই वायमात्री त्नारकत्र मरवा व्यत्नदक्रे উচ্চ-পদ্ध ও রাজনীতিজ্ঞ दनिया मापादर्शद मन्यान-जारून इटेस था-কেন এবং ধণায়।জকদিগের অপেকা উহঁ। দের সমধিক স্থাধীনতাও দৃটিলোচর হইরা थांदक। এই ममस পर्यादनावना क्रिना আমি রাজনীতি সংক্রাস্ত কার্যা অবলয়নে এकान्छ व्यक्तिभी करेशा डेशह व्यक्तीलन क्रिंडि नोजिनामः; किन्छ প्रांत्रामाय थे वा-ব্যাব্যের দোষ অনুসন্ধানে প্রবৃত্ত হইয়া मिश्रिलाम, वावकातांकीवीमिटणत धर्मश्रद्धां इ নিভাস্ত অকিঞিৎকর। তদ্দর্শনে আমি ঐ-ৰূপ প্ৰলোভনে আকৃষ্ট না চইবার নিমিত্ত मेश्रद्धत माहाया श्रार्थना कदिलाम । य वि-मर्ह्यो स्था विलेश क्षां ज्ञान हरेट एट. তাহা কিৰুপে সমৰ্থন করিব এবং কিৰ্কুলেই ৰা আভিবাকদিগকে ভাষেত্ৰে অন্থুমোদন ক্রাইতে দাধ্যানুদারে চেকী৷ করিব ৷ এ-कमा এक वाक्ति वर्ष आहेशस्यत वाका छक्त করিয়া কহিয়া ছিলেন 'মিথ্যাকে সভাৰতে व्यक्तिभाषन कतिएकं ना शांतिएक (कर वाव-হারাজীবী বলিয়া পরিগণিত হইতে পারেন ना"। आमि भारतीय स्मान स्मान द्वाक **बहे वादमादत्र अञ्चल हरे** हो योहा मकलका বলিয়া অনুমান করেন, আমার বিবেচনায় তাহাই বিশাশ। নির্দেষ লোকের ধনস-ম্পাছ, স্বাধীনুতা, ও জীবন বিন্ট করা অ-

भिक्रा निरुक्त कार्या चांत्र कि ए*वेटक शाहता*य **এই गमक**्शर्यगढनाः कतिहाः चाकिः व यायमात्रः अपनवदनः मण्यूनं भवाषाः वर्षः लाम अवद अर्फ्रवाक्टकक्र कार्या निटकीय वि-বেচনা করিয়া ভাহাতেই জীবন অভিবাহিত করিতে মনোনীত করিলাম। তথন আ-मात्र मदमामदधा এই छिन्छि अन् छेशव्हिङ হইল। আমি কি কোন সম্প্রদায়বিশে-বের দিকান্ত বাক্যে অভিভূত লা হইয়া প্র-ক্লুছ পতা অনুসন্ধান করিতে পারি এবং উচা माधार ८ १ व नामृष्ठ ७ व्यवति गृही ७ इरेटन ७ कन-नमारक मूजकर्थ चौकात कतिरक मनर्थ হই ? আমি কছিলাম হাঁ ইহা আমার স-ল্পুণ স্থ্যায়ত্ত। আমি কি স্থাকের বিরুদ্ধ, রাক্ষনিয়দের বিরুদ্ধ ও খ্রীটীর ধর্মের বি-ক্লক এরত অধিকার অনুসন্ধান পুর্বাক ত-শিষয়ে দাধারণকে প্রবর্ত্তিত করিতে পারি ? आमि कड़िलाम हैं। ऐका आमात मन्त्रुर्ग সাধায়ত। আমি কি প্রত্তসভাও প্রকৃত ष्यधिकात खग्नः जवनध्य क्रिट्ड ममर्थ हरे अदः वाका स्थादक छेलालन पिया शांकि ভাষা কি স্থাং কার্যো পরিণত করিতে পারি ? ভখন আমি এই বিষয়ের প্রত্যুত্তর श्रांदन मिन्स स्ट्रेनाम। छेशरमभासूनश ব্যবহার করা বড় সহজ ব্যাপার নহে। কিন্তু আমি কহিলাম আমি ভবিষয়ে যত্ন ও অধ্যবসায় এদর্শন করিতে পারি।

এই তিন্টি প্রশ্নে ধ্রুপ ছ্রবগাই ও গভীর ভাব অভিব্যক্ত ইইভেছে,আমি তথ-কালে উহা অভি অংশই বুরিয়াছিলাম; কিন্তু একাণে অপেকাক্ত সম্মিক ক্রম্পন্ন করিয়াছি।

এই সমস্ত পর্যালোচনা করির। আদি ধর্মধানক পদে প্রতিষ্ঠিত হইকে অন্যবসা-াক্ত হইলাম। মনুবাদিসকে সীবকের বাধান উদ্দেশ্য ধর্মোপার্কনে সাহায্য অধান

अविश्व क्यांका रमस्त्री स्टेटक जालिया कर्मन जानि एव विश्वी क्षेत्र वर्ष निका ক্টতে-বাতর, লাভত্ত উত্তৰ্কালয় কৰিছে मस्तीनस्य शत्रक व्यवस्य । अवस्य ही-क्षित पर्ट्यात मर्चा चासून्। वस कतिया कि विशेष्यः, তাহাতে আমার বিশ্বস্থ সংলয় উপস্থিত रहेन। **उपारा कडक्छन्। बक**ेकारनाहे क বীকার করিলাম এবং কডকগুলি বখালধ-ঞিৎ সিদ্ধান্ত করিয়া লইলাম। আমি **ই**শ শ্ববিশ্বতেই শান্ত-স্বৰূপ ঈশ্বরে ক্রোধ-প্রবৃত্তির আরোপ এবং অনস্ত কলি ভয়কর নরক-বস্ত্রণা ভোগ বিষয়ে সম্পূর্ণ: অবজ্ঞাও অপ্রজা প্রদর্শন করিতাল। বধন আলার বয়ঃক্রম সাভ বৎসর, তথনও ঈশ্বর ভয়ের কারণ বলিয়া আমার বিশ্বাস ছিল না স্কুডরাং তাঁহা হইতে আমার অন্তঃকরণে কদাচ কিছু-মাত্র ভর সঞ্চর হইতনা। প্রভুত তিনি চির বিশ্বাস ও স্থির আঁতির আধার বলিয়। " অবগত হইয়াছিলাম।

দেবত্রয়বাদী প্রি**ডী**য়ানদিবের মত নিভাস্ক অমূলক,উহা কিছুতেই যুক্তি ও বিচার দিছ বলিয়া প্রতিপাদন করা বাইতে পারে না। यमि अपामि अक-मेश्वत्रांनी हे डेनिटि विहान् বিষ্টীরান সম্প্রদারের মধ্যে কব্যহণ করিয়া-ছিলাম,ভথাচ এক বংসর কাল আমেরিকার অটেস্টাণ্ট ধর্মাজক ডাক্তর *লিমান* ৰীচারের উপদেশ আবণ করি। তিনি 🐃 ৰলমিত ধর্মের মত অদ্রান্ত নলিয়া ভাষাতেই সিকান্ত বুদ্ধি করিয়াছিলেন। ঐ মহান্তা ইউনিটেরিয়ান, ইউনিবার্সলিক, পোর্শ-मकानदी ও नाजिकमिटनत महिक धर्मा मेर ক্রান্ত মহতেদ নিবকাৰ ছোৱালয়: বিভিন্ত করিতেন। আমি উহিছ সংস্থাসিক স-कार भगत श्रुक्त छेरगांच मन्त्रम बार्कि मिरगत अधिवेद गटकक बोको अध्यक्त कि गरमन, महीक उ बार्चन विश्व केडियान।

আনি ভাষার বৃদ্ধি, যন্ত্র ও অধ্যমসাংক্রর
ক্ষিত্র আন্তর্গালাক বি ি তিনি আনাম ও
লারিকান জীকার পূর্মক আনাকে ধর্মণাত্রে
শিকান আনার করিটা ছিলেন ক্ষিত্র কোন
করিতে সমর্থ হন নাই। আনি ভাষার
করিতার সমর্থানন করিতান, তত্ই উহা
আসমত, ভ্নিত ও অধ্যাতানিক বলিয়া প্রভিশার হইত।

বিশুলীকৌর অনৈসর্গিক জন্ম-বিষয়ে বিশাস বজমূল করিবার নিমিত আনি কোন বিশেষ শ্রমান প্রাপ্ত হই নাই। বাইবলে যে ৰূপ শ্রমান প্রাপ্ত হওরা যার, তাহা নি-ভাত অসকত ও অমূলক। তাঁহার জননী মেরি এবং তিনি স্বয়ংও এই বিষয়ে কিছুই শ্রহাশ করেন নাই।

মূতন ও প্রাচীন বাইবলে নানা প্রকার
অন্নোকিক ক্রিয়া কীর্ত্তিত আছে; কিন্তু তৎসমূদার নিভান্ত অবিশ্বাস্য ও অক্রেজের।
ঐ সমস্ত অলৌকিক কার্যোর মধ্যে কতকশুলি সম্পূর্ণ অসন্তব, কতকশুলি একান্ত
উপহাসাম্পদ্ এবং কএকটি নিভান্ত ক্রের।
এই সমস্ত কারণে আমি অধিকাংশ এককালে অবিশ্বাস করিলাম এবং অবনিষ্ট
সামান্য-রূপ সিন্ধান্তের উপর নির্ভর করিয়া
অনুমোদন করিলাম। অগদীরার যে প্রাকৃতিক নিরুল অতিক্রেম করিবেন, ইছা কবন্ধই যুক্তি ও অনুভব সিন্ধা হইতে পারে
না। স্তর্গাং বাইবল-প্রনীত ঐ সমস্ত অলৌকিক করি। স্বর্গ-নির্দ্তিত প্রস্তুর পারের
নায় বিতাত্তি অসক্রত সন্দেহ কাই।

वाहेरण जन्म व आजात ७ जनदात्र गाकार आजादल्य दनित्रा स्थान कटमरे वीतात कडिल गातिना धरर करात जटनी-क्रिके क्रीकाटिनेस विस्टत विशेकर जटनार भारतंत्र मात्र-भव्यात मण्युन विक्रम । म्यान विक्रम । विक्रम ।

ডুইড মত ৷

ইউরোপের অন্তপাতী গাল, কর্ণনি ও বিটেন বীপে খ্রীক ধর্ম প্রচারের পুর্বে যে প্রকার ধর্ম প্রচলত ছিল তাহাই ডুইড্ মত বলিরা পরিগৃহীত হইভেছে। এই ধর্ম সংক্রান্ত যাবতীয় কাথা ডুইড্দিগেরই হস্তায়ন্ত ছিল এই নিমন্তই ইহা ডুইড্মত বলিয়া প্রসিদ্ধ হইয়া আছে।

पुरेष नाम कर्गी युष्य काणि कान काला विमान हिल ना। क लिला यमन कर्षाणां विमान हिल ना। क लिला यमन कर्षाणां विमान हिल ना। क लिला यमन कर्षाणां विमान क्षित्र कर्षा विमान क्षित्र कर्षा विमान कर्षाणां कर्षा कर्षा विमान क्षित्र कर्षा विमान क्षित्र कर्षा कर्षाणां कर्षाणा

जेक नगरत चात्रक्रवर्ष डाक्ररन्त्राह

সক্ষেদকা ছিলেন; সদ্যাপি ভাষার ছালা ৰৰ্জমান আছে। ক্ষত্ৰিয়ের। রাজা ছিল বটে; কিন্তু ত্রাক্ষণেরাই ব্যবস্থা অণয়ন করিডেন, বিচার করিভেন, 'পৌরোহিত্য' করিতেন, এবং আচার্যা হইতেন। কেবল যুদ্ধকেরে রাজাদিগ**কে রাজা** বলিয়া বোধ **হইত।** ডুই-্ডদিগের অধিকারও দেই ৰূপ ছিল।ূএক এক রাজে এক এক জন অধিপতি ছিল, ভাহারা কেবল যুদ্ধ-ক্ষেত্রে দৈনাগণের অধ্য-ক্ষতা করিভ, অন্যান্য যাবতীয় ক্ষমতা ভ্টডগণের হস্তগত ছিল। ভাঁহারা বাবস্থা অধ্য়ন করিছেন, ব্যবস্থা অচার করিছেন, मकल विनास माथि अनु। व विष्ठांत कतिएउन, मखोक्टक मध निर्देश, अर्परम जानान-দিগের মভানুদারে না চলিলে বেমন সমা-জ-চ্যুত কইতে হয়,দেই ৰূপ খাহারা ভুইড দিরের দণ্ড বিধান অমান্য করিত, জুইডেরুরা ভালান্দিকে যজ্জ কাৰ্যো আদিতে দিতেন सा, काशह सजित्यांश सञ्जाश स्टेट; धवर লোকে তাহাদিগকে ছাভশপ্ত ও অপবিত্র বোধ কার্য়া ভাছার ্মুণ্মর্গ পরিভাগে # 35 I

ভূইভেরা লয়মান শাশ্য ও মন্তবে অ
বীঘ কেল ধারণ করিতেন, সচরাচর প্রশস্ত পরিচ্ছদ ও ধর্মাকর্মের সমরে শুল্র পরিচ্ছদ পরিচ্ছদ ও ধর্মাকর্মের সমরে শারাদও নামে একটা দও ধারণ করিতেন। তাঁহারদর গলে একটা করিয়া প্রশমর মাছলী থাকিছ; তাঁ-হারা তাহা প্রশাহ্যাদিত সর্প-ডিম্ব বুলিরা লোক্দিগকে বুঝাইগা দিতেন এবং এই কপ প্রচার করিয়াছিলেন দে, অনুক্র কর্মা প্রহার নিশ্বালে জাকালে উপিত হয়। তিয়াঘা বাজি জনতগানী অন্যে জালেন্দ্র প্রক থ ভির পুনরার ভূতবে না প্রিক্ত পাতৃতেই উহা গ্রহণ করিয়া প্রশানক ক্রিড,

ভাষাতে নৰ্পন্নও কুল হইনা তাঁহার লাভাতে বাবলান হইছ কত কৰা কৰা বে কোন বোৰ না পড়িব, ছক কৰা নচৰ্ত্তা ভাজ হইছ না কাকত ডিছ অৰ্থাক্টানিক ক্লবিয়া লাভাতি কেপ কবিলে আনিকে ভালিতে ক্লোভেন বিপরীতে শমন করে। উহায় বিশেষ অৰ এই যে, উহা অৰ্থান্ডত কবিয়া ধানণ কলিছে কেহ বিচারে পরাক্ত কবিয়া ধানণ কলিছে ধনশালী পথাকাৰ লোকের ক্লীতি ভাজন হওয়া যায়।

জুইডেরা হিন শ্রেণীতে, বিভক্ত ছিলনে। এক শ্রেণী এদেশের বন্দীদিধের ন্যার লোকের বংশোপাধান ও ব্যারগণের বীর-কার্যা বর্ণনা করিভেন, আর এক শ্রেণী ভবিষ্যৎ গগনা কান্যা রচনা এবং ধর্মা কার্থার সময়ে গান ও বাদ্য করিভেন। তৃতীয় শ্রেণীর ভুইডেরাই ধর্মা সংক্রান্ত কর্মা যকক শ্রেণীর ভুইডেরাই শ্রেণীর প্রাক্রিক শ্রেণীর শ্

ভূইভেরা একেশ্বরন্দী ছিলেন এবং ওক বৃক্ষকে তাঁহার প্রিয় আবাস মনে করিয়া ওক বৃক্ষের স্বিশেষ সম্মান করিতেন; এমন কি, ওক বৃক্ষ কণে লিশ্বরের পূজা করাই জাঁহা-দের প্রধান উপাসনা ছিল। এ ছেলের বিলপ্তা ও তুলসী পরের নাার, এক সার বাত্তিরকে তাঁহাদের কোন পূজা ও কোন শ্ মানুষ্ঠান সম্পন্ন হইত না। তাঁহারা ওক বৃত্তক বাহা কিছু উৎপদ্ধ হয়, তাহা ক্ষার মুক্তর কালা করিয়া মিনিল্টো নামক পর্বাহা এক বৃত্তক উৎপদ্ধ হইলে ক্ষান্ত স্থান ক্ষান্ত উৎপদ্ধ হলৈ ক্ষান্ত স্থান ক্ষান্ত ভূইভেরা স্বাহ্রেই প্রাক্ত ক্ষান্ত ক্ষিত্ত ভূইভেরা স্বাহ্রেই প্রাক্ত ক্ষান্ত ক্ষিত্ত ছই শৃলে ওক রুকে বন্ধন করিতেন। তথপরে শ্বান ডুইড শ্বেড বন্ধ পরিধান করিয়া
খা ছুরিকা হতে লইয়া রুক্ষারোহণ পূর্যক
মিনিল্টো ছেন্দন করিতেন; আর এক জন
ডুইড রুক্ষতলে শুক্র বন্ধ পাতিয়া রাখিতেন,
এবং ছেদিত মিনিল্টো ভালার উপর পতিছ
হইলে কুড়াইয়া স্থবর্ণ পাতে সংস্থাপন করিছেন। তথপরে নানাবিধ বলিদান করিয়া উৎসব করিতেন। এক সময়ে পার্মা
লেশেও মিনিল্টো পরগাছার অভান্ত মমাপর ছিল।

जु वेटफर्डा अटकश्वत्रवांगी किटनन वट**े**. किस कानकरम छन् स्र्या सक्क मर्भ প্রভৃতি ক্ট বস্ত্র এবং মনঃ কম্পিত নানা रनव रमवीतः । जेशामना कतिर्देशन । चेशिष् দেবতার উদ্দেশে অগ্নিতে আছ্তি দান এবং পশু ও মনুষাকে বলিদান তাঁহাদের উ-পাসনার প্রধান অঞ্ছিল। জাঁহারা এই দকল ধর্ম-জিয়া সম্পাদন করিবার নিনিস্ক বনের মধ্যে কতক ভূমি পরিস্কৃত করিয়া বৃহৎ বৃহৎ ধান্তর ঘারা ভাষার চতুদিক বেউন করিতেন; ভাহার মধ্যে প্রথমে তুথানি শ্রস্তর দিয়া বেনী করিছেন। এই বেদীতে ভাঁহাদের ছোম ও বলিদান ক্রিয়া সম্পল क्रेड; य म वाक्ति जाहांत्र मर्था अरवन করিছে পারিত না। যালার। ভুইডদিগের উপর সম্পূর্ণ নির্ভরের চিক্ত স্বৰূপ এক প্র-কার শৃষ্ণল ধারণ করিয়া আসিড, ডুইডেরা (करन क्रांशिविष्ठ थे थितन क्रिंड नि-(छन। फुइछन्टिशंत वार्षिक मट्शंष्त्रवानिछ এই একার স্থানে অসুষ্ঠিত হইত। ডুইড গণ-**क्या अर्था**षित विशेषान समस्य कोहात अञ्च गक्त मर्भव कब्रिया खित्रार क्राम् छ श्वाम क्तिरकत। बहु बलिइ समस्त्र बलि श्वन प्रसू-য্যের ৰক্ষঃস্থলে এড্গাঘাত করিয়া সেই रवजांशा कि धारादि कुष्टल शिष्ट रह,

কোন্দিকে ভাহার রক্তপারা নিঃস্ত হয় जवर कि बाल रम खक्र विस्कर्भ करत छ-ব্দুটে ভাষী শুভাশুভের অবধারণ করিছ। 'कवल निर्मातिङ मगराङ (भ विल्मान इरेड़), ভাহ: নছে। কেছ বুদ্ধকৈতে অভাস্থ বিপালে পাতিত অথবা ঘোরতর রোগে আ क्रांच इंडेटन, अटकड शतिवर्ड छश्रतत व्यान मान ना कातरल (नवशन धगन क्रेट्रन না, এই ভাবিয়া নর বলি দিত অথবা তৎ-क्रमां इके बद वांच वा जिया । अनगरनंद निक्षे নর বলি দিবার অঞ্চীকার করিত 🗀 ভিন্ন আর এক প্রকার ভয়কর নরবলিয় थथां अध्यव्यव्यव्यव्याच्या विष्या अ ঘটনা বিশেষে লতা নিৰ্মিত মনুষ্টাকাৰ এক পিঞ্চ শন্তত করিত এবং রাজ বিচারে যে দকল বাক্তি পোষী বলিয়া স্থির চইত, তাহাদিগকে ওদ্মধে। প্রবিষ্ট ক রিয়া শিত ; ভাহার মধ্যে নানা বিধ গশুও থা কিছ। যদি অপরাধিগণে নেই পিঞ্জর পরি-পুৰ্ণ ৰা হটত, তালা কইলো নিভান্ত নিৰ্দোদী ব্যক্তিকেও দেই অপরাধীদিগের মন্দ্রী হ-हैट हरें । बहें थकांदत महें शिक्षत পরিপূর্ব ছইলে ভস্মদাৎ করা ছইত।

ভুইডিদিগের চারিটি মাহাৎসর ছিল।
মার্ক মাদের প্রথম ভাগের (১০ই অথবা
তাগার চুই এক দিন অগ্র পশ্চাৎ.) যে দিনে
ষটা তিথি শাড়িক, সেই দিন নব বর্ষ নিবন্ধন
মহোৎসর হইত। দিতীয় মহোৎসর সে
মাদের প্রথম দিবসে হইত। এই উৎসবের
পূর্বে দক্ষায় মকলের গুহে যাবতীয় আমি
নির্বাণ করা যাইত এবং পর দিন দেবমাদেরের চির-প্রজ্জ লিভ অগ্নি গ্রহণ করিয়া
নিক্ষ নিজ গৃহে লইয়া যাইতে হইত। জুন
মাদের একবিঃশাদিবদের পূর্বাহেল ভাঁছাদের
ভূতীয় মহোৎসর ও জক্টোবর মাদের
দেব দিনে চতুর্য মহোৎসর হইত

কালের করাল হন্তে সংসারের সমুদায়ই পরিবর্তিত হইতেছে, কিন্তু আআর সাভাবিক বিশ্বাসের উপর ভাষার কিছু
মাত্র অধিকার নাই। ভুইতেরা প্রার সকল
বিষয়েই জনাচ্ছর হইয়াও আল্লার অমরন্ত বিষয়ে দৃঢ় বিশ্বাস করিতেন এবং হিল্ফুদিগের ন্যায় আ্লার জ্ঞান্তর অঞ্চীকার করিতেন। ইহা দারা একটি বিলক্ষণ উপকার
ইয়া ছিল। যোদ্ধারা এই জ্লান্তরবিষয়ক
উপদেশে মুহাকে ভুচ্ছ জ্ঞান করিয়া যুদ্ধক্ষত্রে অসাধ্রেণ সংহস প্রকাশ করিত।

ভূইডেরা মৃত বাজির সমাধি প্রদান ক-রিভ এবং পর-জ্ঞাে উপকারী হইবে বলিয়া বহু মূলা অলঙ্কার, বিবিধ অস্ত্র শস্ত্র, ধুনচী, পান-পাঞ্জ কখন কখন কুকুর প্রভৃতি জন্ত-দিগকেও শবের স্ভিত একতা করিয়া মু'র্ভ-কার সধাে প্রোধিত করিত।

জুইড়াদ্বের ধর্মা-শাস্ত্র কেবল পরমার্থ বিষয়ক ছিল না; নীতি স্তি,কানা জ্যোতিদ ও আয়ুর্বেদও ধর্ম শাস্ত্রের অন্তর্গত ছিল ! ভীছার জোতিরিশার কোন কোন অংশ ও চাক্তমাদ গণনা করিবার রীতি অবগত ছিলেন: কেন না চাত্র দিন অমুসারে তাঁহা-(मत उँ ५ मद मदल अनुष्ठिंड इड्ड, यछी তিথি আরন্ত করিয়া মাস ও বৎসর গণনা **১ই**ন্ড এবং এই অনুসারে তিশ বৎসর অন্তর ভাগদের এক এক জ্যোতিষিক মহা-एक मल्लान करेख। ब्लाइंडिर्वनाश पृष्टि ना थांकिएल अक्षेत्र कहेवांत महायना नाहै। अ-ভদিন্ন আনত প্রমাণ আছে। আয়লতিও রক্ত ভাষ্ নিজ্ঞিত একটি চক্রপাওয়া গি-রাচে। ভাহার নেমিভাগে চন্দ্রের কক নি-क्षिके बार्ट अ हस्तकतात इति अन-র্শনের নিমিত্ত ভাষ্তে আটটি অকুরীরক সংযুক্ত আছে এবং ছাহার আভান্তর ভাগে পৃথিবীর কক্ষ অদর্শনের নিমিত্ত আর এ-

কটি কুদ্র চক্র অবশ্বিত আছে। বোধ হয় ইহা ডুইড জ্যোতির্বেজাদিগেরই ব্যবহার্থা ছিল, আয়ল থ্যে ও ওয়েল ম দেশে কতক গুলি চক্রাকার রহথ রহৎ প্রস্তর, অদ্যাপি ভূমিতে প্রোধিত আছে, বহুকাল অবধি উহা জ্যোতির্বিদ্দিগের চক্র বলিয়া কিংবাদন্তী আছে।

शूर्व डेक इरेबाइ य, हिनिरमा শাস্ত্রও ভূইডদিগের ধর্মশাক্ষের অন্তর্গত কিন্দ চিকিৎসা বিদ্যাতে উচ্চানের কি ৰূপ অভিজ্ঞাছিল, ভাই নিশ্চয় বলা যায় না, ভীহোরা সামান্য সামানা ঔষধ প্রস্তুত করিতে পারিতেন ভাষার সনেদ্র নাই। ভাষার: ঔষধ সেবন কালে নানাবিধ গণনা ছাত্র: ভাষী শুভাশুভ নিয়ারণ করিছেন এব: রোপোপশ্মের নিনিক্ত হিন্তুদিবের ন্যায় বিবিধ দৈব ক্রিয়ার অন্তর্ভান করিভেন। তাঁহারা ঔষধের নিমিত্ত যে সকল উদ্বিক্ত ন্যবহার করিতেন তাহা সংগ্রহ করিবার বিশেষ বিশেষ নিয়ম ছিল। তদনুসারে रम मकन मध्यम् ना कतिरन (केवन साध्य-বিক গুণে আরোগাকর হইবে বলিয়া তাঁ-হাদের বোধ ছিল না।

শিক্ষা কার্য্যের ভার ডুইডদিনের হস্তেই
সমর্পিত ছিল। যাহারা উত্তর কালে ডুইড হইবে, ভাহারা কেবল ভাহাদিগকেই
শিক্ষা দান করিতেন। শিক্ষা দিবার নিমিজ নিবিড় অরণা মধ্যে তাঁহাদিগের চতুম্পাসী ছিল, তথার ছাত্রেরা কথন কথন
বিংশতি বংশর পর্যান্ত শিক্ষা গ্রহণ করিত। তাঁহারা বিষয় কর্মের সমন্ত্রে পত্র লিখিতেন কিন্তু শিক্ষা দিবার শুক্রের লিখন পঠন ব্যবহার ছিল না ি ছাত্রা দিপতে কতক্ত্রি লোক মুক্তের্ত্র আর্থি none could invent the outline portrait of Jesus, no difficulty appears in the way of a theory, that the moral sentiment of the church has cast a soft halo over a character perhaps rather sterm and ambitious, than discriminating, wise, or tender.

We cannot recover tost history. Into the narratives and discourses of Jeans so much of legendary error has crept that we may write or wrangle shout him for ever: Paul is a palpable and positive certainty. In what single moral or religious quality Jeans was superior to Paul, I find myself unable to say. Is it really a duty incumbent on each of us to decide such questions? Why must the task of awarding the palm of spiritual greatness among men be forsted into

religion f

It is a fact on the surface of history, that Paul, more than any one else, overthrew ceremonialism. Hereisy he founded a religion more expansive than that of Isaiah, and, in his fund belief, expansive as the human race, as the children of God. He was not the first Jew to propound the nullity of corecasses. If time allowed, that topic might a into instructive amphibiation. The controversy equinst ceremonies was inevitable, and, with or without him, must have been fought out. What be effected, let us thankfully record; but God does not allow us to owe our souls to any one mun, as though he were a fountain of life. It is an evil thing to call ourselves a man's followers, to express devotion to him, and blazon forth his name. Every seacher is largely the product of his age; whatever light and truth he imparts, the glory of it is due to the Father of Light alone, from whom cometh down every good and perfect gift. Any glory for it would be inexpressibly painful to a true-hearted prophet; I mean, for instance, to and true hearted as Paul. He had no wish to be alled Master, Master. He could not bear to whom yo have believed ?" What! when a man behaves himself to be the channel by which at has pleased the Unseen Lord to pour out sum postion of hidden truth for the feedings of huntry souls, can such a one hear to be praised and thanked for his ministrations ? Nay, in properson as he knows himself to speak God's truth by the impulse of God's spirit, in the same properson he feels his own personality to be annihilaid, and he broathes out an intense desire that God in him may be glorified, but the man be for-gotten. Fary then; fet not us thwart and countoract such gearnings of the simple-hearted instanctor. Hear Paul himself further on this matter, "Let no was glory in men; for all things are yours; whather Paul and Apollos or Gaphas, or the world or life or death, or things present or things to come all not pours. Homeans that the collective children of God are the end, for whom God lies provided beaches as took and instruments. But this is set all. Is proportion as the teachers are elevated, the taught become unable to judge of their relativement in honour. Paul therefore for bad the attempt, mill deprecated praise. "With me," he continues, "it is a very small thing that l'abandétheinged on you or of near judgment you. Judge and controlle pulpe pothing perfect in the both. Therefore judge pothing perfect the both which is the controlle pulpe pothing perfect to light has hidden things of deviances and only make manifest the controller of deviances and only make manifest the controller of beauty and the shall make manifest the controller of beauty and the shall make manifest the controller of beauty and the shall make manifest the controller of beauty and the shall make manifest the controller of beauty and the shall make the controller of the controller of the shall make the controller of the co What else did he mean to say but: Think not to distribute awards among those to whom you look up. To graduate the claims of equals and inferiors is generally more than a sufficient task. Leave God to pass his awards on those who are spiritually above you; who possibly, like Paul, may rereive your praise as painful, and be wholly unconcerned at your blame. The glorifying of religious teachers has hitherto never borne any fruit but canonizations and deifications, "vokuntary humility and worshipping of messengers," vain competitions and rival seets; stagmation in the letter, quenching of the Spirit.

By Francis W. Newman.

কলিকাতা ব্রাহ্মদমাজের ১৭৮**৬ শকের ভাতে,** কান্মিন, কার্তিক ও অগ্রহায়ণ মা**ংসর** আয় ব্যয় বিষয়ণ।

আয়			•	× 60	\$	
र्श्य क	র হিড		•	393		
				२ ४ २	0/0	
ৰ্যয়		• •		7.34	540/50	
मन्त्रीव	কের হত্তে		. •	*	219/20	
		fest			, Pa	
বালাল	वगटक	est .		•	or t	
८काद र	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	• •	• •	_		
ব্ৰাপ	দিগের প্রতিজ্ঞা	उ म	इ ९ म	李帝 "	श्व ।	
D) g or	রুষণীমোছন চৌধু	बी		:	e C	
44	चिव्यस्य एक			•	5 R	
#:	कालिकामाम मख			• •	¢	
"	त्थाविक ह से भेड	• •			ŧ	
66	व्रायकामाङ त्मम				*	
46	व्यासनाव प्रम मान				•	
44	त्रामहरू भाग	4 +		• •	ર	
. 64	नीतमाधव भिक्र		4.4		₹.	
a	श्चिमाथ मान				ર	
£;	গ্রাসগরুমার দক্ত			414	ર '	
74	মণিলাল মলিক			• •	*	
66	वमेखकूगाङ मन्ड				ર	
"	প্রজাপচন্দ্র খোষ				5	
418	मदश्याना मिक		***	a ly	5	
	নেপালচন্দ্র মলি	₹			7	
et.	खातकगाच मख				\$	
100	मध्यम धाउँ।			,	5	
ú	इतिहासारम् तात्र				5	
6,,	व्यक्तिसम्बद्धाः विद्य				5	
, 4 ,	अभवनाथ गारा	*1 **1			15	
	可受到神(年				5	
		3 K	** 4	,	5	
	অসমকুশার বিশা		***		11.0	
No.	কার্ত্তিক চন্দ্র ব্যৱ	4 : '		• • •	Mary Mary	
	कूर्यन्तरम् स्व	वयात्रि	a na ja		Share,	

	भागिक मान।					
Bye	द्राका नकार्भद्रश कांचाल	a				
\$c	कि, धन, शक्नेनिवाच	8.8				
F (त्माणीतमाध्य त्यांच	२ ०				
**	जुवात्वातान स्रोध	44				
66	समगीरमाञ्चन कोधूती	58				
64	অক্সাচরণ ক্ষ	ند				
\$ (मेश्रद्रक्त विवासागर	ь				
c.	श्रंका आजनगृहायम् श्राप्तः	> 2				
u	देवकुर्कनाथ तमन	9				
1.6	केल्श्यत्मार्क श्रेत्र	b				
46	भारतत्वमाथ राष्ट्रः	3				
66	क्षार्गालान (मन	œ				
fs	মদনমোহন দেন	৩				
**	श्रीपाठल व्योगांग	\				
"	माभवनात मस	ŧ				
6.6	नीनकमन बदकाशिशाव	*				
	গুভকর্মের দান।	225				
. Silv street	म् द्रम्यसमाय ठाकूत	¢ o				
16	জীয়াম পালিত	9				
+6	इस्यत् याष्ट्रकः	30				
68	তুৰ্গাচৰণ বলভ	>				
16	कालीनाथ भक्त	\$				
	46,4464,484	0610				
এককালীন দান।						
श्रीपुर		£				
n	कि, भार, वि					
4 1	किरनाहम् वय	5				
"	वलसीकास करो हारा	1+				
		910				
भागाः	ादत मान थ्यां	0h/30				

বিজ্ঞাপন ৷

কলিকাতা ব্রাক্ষণমান্তের কার্যোর ভার ভাষার টুকী প্রীযুক্ত দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর মহা-শর হয়: গ্রহণ করাতে তৎসংক্রান্ত সম্পত্তির সহিত আমারদের সম্বন্ধ অদ্যাবধি শেষ হইব।

角 তারকনাথ দত।

এ উদাদাৰ ভব।

व्यथाक।

🗐 क्लिंबरुक्ष (गर्म।

. 7 19174

> পৌষ >৭৮৬ শক। विकाशनास सम्बद्धातः। सन्दर्भाते जन्नापस क्षिकांका आक्रममारकत है के किछ जानु-याती के भागना कार्या ने ने निर्माण देशक करना की पुष्ट पिरकासनाय के क्षित्रेटक फायात मन्धा-मनीय कार्या नियुक्त करा राज्य अपर याति है। ऐके-गण्यांक कार्या वर्ष करा ।

কলিকাভা ব্রাক্ষণমাজের ^{গ্}নৃম্পান্তিরর সহায়ভার নিমিত্ত শ্রীযুক্ত, অব্যোদ্ধানাধ পাকড়াশী মহাশয়কে সহকারী সম্পাদক্ষের পাদে নিযুক্ত করিলাম।

कि तिरविक्षनाथ ठाकुत । क्विकाण डाक्षनगरमञ्जूष्टिकः

ব্রাক্ষধর্ম প্রচার উদ্দেশে কলিকাড়া ব্রাক্ষদমাজের দান সংগ্রাহের জার প্রীনুক্ত প্রতাপচন্দ্র মজুমদার মহাশয়ের থাতে অপিত হইল। তিনি দাতাদিশের অভিনান গান্ধ ব্রাক্ষধর্মের প্রচার কার্যো ভাচা বায় করি-বেন। ঘাঁহারা ব্রাক্ষসমাজে উপাসনা কং-র্যোব বায় নিকাছ নিমিন্ত দান করিতে ইজ্ঞা করেন,সেই দান ভাঁচারা শ্রীযুক্ত বিভে দানাথ ঠাকুরের নিকটে প্রেরণ করিবেন।

> ची (एटवल्नांथ ठांकुव। क्रिकाण बाक्तवास्कृत है 🖥।

আগামী ১১ মাঘ সোম বার অপরাক্ত ৭ ঘটকার সময়ে কলিক,তা পঞ্চতিংশ সাম্বদারিক ব্রাক্ষসমাজ হইবেক। ব্রাক্ষগণ এখান আচার্যা প্রীযুক্ত দেবেন্দ্রনাথ সাক্র মাহাশরের ভবনে আগমন করিয়া ব্রক্ষোপা-সনা করিবেন।

> ত্রী বিজেজনাথ ঠাকুর। সদ্পাদক।

বাঁহারা ব্রাক্ষণমাজের পুস্তকালয়ে বিজয়ার্থ পুশুক রাখিয়াছেন, উাহাদিশকে বিজ্ঞাপন দেওয়া
বাইতেছে বে, আগামী ১লা মাম আবধি নেই সকল
পুস্তক বিক্রনের মূল্য হইতে চতুর্বাংশ কমিশানু লতয়া বাইবে। বাঁহারা অস্কুবিধা বোধ করেন, বর্তীনান পৌব নাগের মধ্যে অস্কুবিধারাক্ষিপাক্ষ্যামী।

राध्यातामः भाक्ष्याम् । महस्राही मन्नामकः।

भागांनी >> त्नीय इतियाद वंदशयक्त जान रामारकेत नाम नाहित रूपा केत्रवका रामारकेत जामानाको । विकास क्रिकेट वर्ष २म्डक्टराज जीकामांकि । विकास क्रिकेट छ छ छ । ज्यामी भूत जन्म विन्यानतः।

: গ্রহার আচার্যের উপদেশ। দ্বিতীয় সংখ্যা।

/>० देवमांच २१७७ मक।

द्धांका धरमीत धार्यम वारकात छोरशर्राटकरे धरे चारिक त्व मकरलंद्र आ चारिक है जिल्ला बान छ-मन्त-ভার ক্লিনখন জকরে লিখিত আছে। খীয় খীয় আত্মাতে অনুশক্ষান করিলেই অনস্ত-প্রপ্রকল-থকপ ইম্বরের পরিচয় প্রাপ্ত হটবে ৷ ছাতএৰ অন্তন্ন থি স্বারা নীয় আত্মাতে ক্রয়ে দেখ। সাধারণ মনুধা জাভির মধ্যেই আত্মাজান আছে। আমি বে আছি, এ কান মনুষ্য মাতেরই আছে। আছা-ফান থাকাতেই আজার কান্তিত বুঝিতে পারিতেছি। আমি কিছুই নহি, এই বাফ বিষয়-मकबारे ভाব॰, ভবে ইহার্দিগকে দেখিভেছে কে ? स्य रम्बिटकट्ड, ७ वांश्ट्रक रम्बिटक्डि, हेशता পরস্পর অভান্ত ভিন্ন। বে দেখিতেছে, সে আমি ; ष्ट्रांत याद्यांटर्के दम्भिटलिं , तम कहे व्यापीत । त्य कार्शमादक ना कादन, त्म शतुरक कि ' ध्वकादत का-मिर्द १ शहरक कानियांद्र मटक मटक है जालनारक জানা বায়। আহার সহক্ষে এই শ্রীরও প্র। আত্মা यथन এই मंद्रीय हहें एक प्रेंटकमन करत, खबन এই শরীরেভে আর এই প্রাচীরেভে বিশেব কি থাকে ণু ভখন এই শরীরও আচীরের নাায় নি-শুক হুইয়া যায়। শরীরে নিমগ্ন হুইয়া প্রথমে ৰীয় আত্মাতে দেখ, সকল সভোর মূল পদ্ধন দে খিতে পাইৰে; ভাহাতে প্রনামার উজ্ব-মঙ্গল-ন্দ্ৰি দেখিতে পাইৰে। <u>কেন-ক্ৰান-ক্ৰ</u>প যে খণীয় অগ্নি নকলের জ্বয়ে নিহিত আছে, দেই অগ্নিই আত্মার ক্যোতি। সেই আত্মার ক্যোতিতে অন্ত-র্ঘটি বারা বীয় স্পাত্মাকে দেখিলে ভাষাতে পর-मध्यात अस्य-यक्षक-काव व्यक्षिटक शाहरव। त्यहे क्षत्र विकास का विकास का का विकास का पार्टि बालाइ सन्द-मङ्गा-स्वाव स्विन्धद सकद निथित जारक, मक्टनबर्डे क्नरब जन्म-कान-क्रथ वर्गीत जीत जास्त्र जाद निरिष्ठ जारे ; जिल्ह-र्वाट्य विकासन् कार्याद्र कार्याच्या वाहा व्याह जाग्रिक जाकतिक कवित्वहै जाकारक श्रेत्रगांकात चविनचत्र-महत्त्र-मुर्खिः (छामान्यस्त्र कान-स्तरका विकास रहेरव । त्र आलंबाह आक्रांटल नहेबाआह शतिका ना भावन आ बाता क्यांटक जार कि उक्तिरव । व्यक्ति अस्तिक अस्तिक अस्तिरक

आचारक श्रमायात क्रमह कार शार्र कतिएक আমি ভোমারদের নিকটে আত্মার আ-প্রার পর্যাত্মার পরিচয় করিয়া দিজে ডেন্টা করি-ভেছি: ভোদরা নিম্পে নিজে দীয় আন্থাতে তা-মার পারিচয় না লইয়া কেবল আমার কথার উপরে নিষ্ঠর করিবে নাঃ বখন নিবিণ্ট হইয়া আয়ো ছারা আহাতে দেখি, তথন দেখি, গেনে পরিমিত ष्योद्या, त्म अभन्न এक षानिर्द्धिना भूतः (५व निग्नर्यन् পরভন্ত হট্য়া কর্মা করিডেছে। কোন আয়া কিছু আপনি সংকল্প করিয়া এ পুথিবীতে আইসে नार्ड, न्याह्न काल बचाटन चाकियात हैका कवि-লেও শভ ৰৎশরের অধিক পাকিতে পায় না। বিনি আযারদিগকে কুখা তৃক্যা দিবার পুর্কো অল পানের বিধান কবিয়াছেন, যিনি চকু দিবার পুরেই মুর্যা চলেকে অফোরাতের প্রদীপ করিয়াছেন, ভিনি জন্ম বিহীৰ মহানু জাবা।। সেই অনস্ত পূৰ্পু ক্ষের কুপাতে আমরা জীবন পাইয়া ভাঁহারই আঞ্জে নিয়ত বাস করিতেছি। ভাঁহরেই শা-দনে আমরা পুণা পাপের বধা উপযুক্ত দণ্ড পুর-কার লাভ করিয়া দিন দিন সমুখত হটতেছি। যিনি জানেতে পরিপূর্ণ, তিনিই জামারদের পরিমিত আয়াতে জান প্রেরণ করিভেছেন; যিনি পূর্ণ মঙ্গল-খরূপ, তিনিই আমারদের আ-থাতে ধর্ম-ভাষ, পুণ্য ভাষ, দাধু-ভাষ, প্রেরণ করিজেছেন। সর্কাজিদান পুরুষই আমারদের আত্মাতে এখানকার কর্মোপধোণী শক্তি সংযুক্ত করিয়াছেন। এই আংকারে আমরা আপেনার আন্-আতে পরিমিত জান, পরিমিত শক্তি, পরিমিত সাধু ভাৰ দেখিয়া সেই অপরিমিত মন্ত্রময় পূর্ পুরুষকে উপলব্ধি করি। এই পরিমিত জাগা এক শময়ে ছিল না; কিন্তু জন্ম-বিহীন প্রমায়। সকল সময়েই আছেন। ঘিনি এই আআকে প্রকাশ করিয়াছেন, ডিনি নিজে পপ্রকাশ। যিনি আ चारक अप्रे नः माइ धरमा निरम्ना कविमार्टन, তিনি সাণানি কাহারে। কর্ত্তক নিয়োঞ্চিত হন্ ' নচাসা কশিচকজনিতে। ন চাগিপঃ।" ' ইহাঁর কেই জনকও নাই এবং অধিপত্তিও নাই।" হিনি আত্মার শুটা, পাভা, নিয়ন্তা, জিনি পরিনাআ। বেশন কুদ্রর*বিলা*খরের সহজে পরমেশ্বর, বেমন ঐহিক পিডার সমক্ষে পর্ম পিভা, ভেমনি আত্মার দহক্ষে প্রশাসা। আত্মা জ্ঞানেতে পরিমিত, প্রধায়া জানেতে অনস্ত; আত্মা শক্তিতে পরিমিত, পর্যাত্মা শক্তিতে পূর্ণ; আত্মা সাধু ভাবে পরিমিভ, পরমাত্মা পর্যাবহ धरे अकारत পরিমিত আআ খন্তল-সক্রপ | **হইতে অপ**রিমিত **আত্মার পরিচয় প্রাপ্ত হই।** वयन है कि विनाम व आधा जानिक ७ शहिमक,

ज्यम हे जावति, सहित्य अम्ब क्रिस् काम-वक्कण आध्यम-माजान मर व्यास दम्भिक्षाम । आञ्चादक अध्यम क्रिया काश्चिक वंधरमा वाकिएन गाँदन मार खाध्यिएका महिक काल्यरम् क्रिस मनस महिन् गार्ट्ड । अपन्य ज्ञयम क्रिस्त, बैशन मन्न मिन्छ दम मारमाज्ञा क्रिया (ब्रुविटन रव अहे श्रांतिमिक का-मान अख्यामी क्रमक बक्कण श्रिमाचा कि मा।

্"ভিনি আপনার বিশুদ্ধ নজন-বন্ধপ এই कार्यं एकोलिक लेक्नाटकं अवर मनुद्रमात भागम-शहते রুজিত করিয়া রাখিয়াছেন।" কিন্তু ভাষা দে-ৰিজে পাল কে ? ভাহান পাচক ও অপোডা কে रहेट७ ना मह-माहीत आह्या है स्वाहे সঙ্গল-প্রাপকে আত্মা কাহার জোভিতে দেখিলে: পায় ? ভাষার কাপনার জ্যোভিচেই, আত্ম জৌ-ভিডেই দেখিতে পার। দেই আত্ম-জ্যোতি দে কোথা হইছে পাইল গু এক ঈশর-প্রসাদান ; ঈ-শ্বর জাবালে জ্ঞান-জ্যোতি দিয়া পৃথিরীয় ভারৎ भीत इटेरल छम्ड कदिशास्त्रमा । 'एमरे सेधत-আবাস্ত জ্ঞান-জ্যোতি নির্মাণ হয় কিলে ? পাপা-চরণ ছারা, অসম্ভাব ভারা, কুভর্ক ভাষা ৷ সেই मंभीम अर्जुत-त्थाकि श्रकान रश किरमे द्वितिक. ভাষকে, চরিত্রণে সেই ফ'নের অস্কুচর করিলে। यमि तुन्धिः, चानः, ५ हिल्ला रमधे महत्र महास्टब्हा स्थानः र्ग करत, फरव रिन्हें महक कान चाराज फिन फिन 🕏 জন্ম ও সড়েজ হইগা, ৰুদ্ধিশ ভাৰ ও চরিজকে यांकिक के स्थ में १ देश विक् कि है। श्री के स्थान शास्या पिन पिन छान, वृश्चि: कुर्डा, कार्गा; भा-महींगा जीव शाहर काछ, अतर इर्मण मन महीहे अभोख-खादन नगरवर्क क्षेत्र, आधादक भावम ज्ञाला স্বানে উল্লেড করিভে থাকে। প্রম ভা*ষাবা*ন্ সম্ভিন্নপান নিজাণে বড়শীল নহাঝারা অনস্ত-करानी शक्का करून श्रेद्रश्यक्रद्रा कीय क्षेत्र क्ष আবাতের শাকাৎ প্রভৌতি করিয়া এবং সক্লেব भव्या जै। दश्त अभाव अभाव विकास अञ्चलकारी रूत । ''जुकाबिर के जक्ताको इंडेगांत करना दक्षा-যিলোক কি কাল-বিদেশ কি জাজি-বিশে**ন**েমর আজি शिका महि। अक्ष क्ष्मीय अञ्चलको हिर्मा है अ খা-বিষয়ে উপদেশ দিবার অধিকার আছে।" **ভা**-রভবর্ধের পুরুতন প্রজাবাদীদিবের জান-রুত্ব আন-नादामञ**्रह्य**शिकाद ; कामसा **चर्य-वियम्**क **्रेशक्ष्**र भाग भागे। उसके भाग व्यामा श्रामक भोत्रमा अस्य अस्य । कारा व्याजा आयोग्रहमत्र शिक् भूतम हतेरक थ-প্ৰাণ্ড কাভ কৰিবাঢ়ি; ভাষা অৰা বৃশ্বৰি সাং िल्ल सिक्ट अर्था जिला अहिंदक प्रदेश से । क्ये 'अविकास करकेत आहिम, काम के **टेविन्ड** अक्सीके नाव प्रकारन शर्म जात्र (काम दशेली, क्षेत्र काल वालिटक नारे। श्रविद्योग्ड अवस् देवतिक इन

त्यंत्रहे ज्यानिकात्। अविद्यान महस्त्राधु समग्र व्हेट्ड व व्यक्तिया गुडी कारम व्यक्त-व्यक्त-व्यक विनिर्वे बहेशाहिक; त्म क्षिप्रिक कांब्र क्षेत्रक रम्ब चकान-चर्चकारत चाइक किन । हरमूत ब्रह्मा अ-वर्ष करे जातजनविशे हम, कार के बेरमरे तिहे পথিত রচনা ধর্ম-ফল-দাভা উস্পরের চরণেই অ-र्शिं रहा। नेयत जाक्कान्कृतिहरू धटर्मात जाकतः স্থান করিয়াছেন, ভাছার অগণা রসু রাজি এখনো निः व्यविष्ठ इत मार्डे। रामेन छेखत स्मानस छी-রত ভূমির, বেশন দক্ষিণ লালর ভারত-ভূমির, বে মন গলানদী ভারত ভূমির: ভেমলি বেন জিলা-নিষদও ভারত ভূমির, তেমনি পুরাণ উপপুরালন নারত ভূমির। ধর্ম বইয়া ভারতবর্ষে বঙ আ-ন্দোলন হইরা লিয়াছে, এক আরু কোবাও হয় দাই। ভারতবাদীদিগের ধর্মা-বিষয়ে খাজাবিক অনুর্গি। এখানকার সকলে ধর্মক *ধে*মন প্রির্ ভাবে দেখিকে পার, লে পরিষাণে আর কোন (मरचंत्र व्यारक्षे भाषा मा—पर्व्याटक व्यव काषा, नेश्वरत्रक अमन निर्फत्न, ब्यात्र काथान नाहे। छा-रात्रा भ्रमे अधिक्षे करूक, रखरे नम्न कक्षक, কোন হানেই বা গদন ককক, সিঞ্চিদ্যাতা, স্থি-থাতা পুরুষকে করের অরণ করিয়া সকল কর্ম আ इंड करत्। **कारांत्रा मामाना भव विधिनाह भूरक्** श्रीज्ञरक विष्या ७ इर ना ; श्रेत्रंद्र नाव निविद्या পরে পত্র লিখিতে জারছ করে। বে দেশে খ-म्मित कृत अधिक लाहे, खाशामा हैशत मन् कि-छूरे वृत्तिटल शांदर नाम् दरपंत्र आधिय अवसा ষ্ঠতে এই অকার ধর্মের জাব চলিয়া জাগিতেছে। धक अक विवयत अक अक क्यांचि अना इत ; कहू যুদ্ধে, কেই ৰাণিজ্যে, কেই শিল্পান্দায়ে, কেই ৰা থর্ম-ভারে। ভারতবর্ষের বদি আর কিছুই মা थात्क, छथांशि व भर्म छः त्व मकत्मद्र अपने हहे-"प्रायक् । काम्रक्तर्यवर्गिननी क्षीमिद्रभन्ने संस्कृत क स्-তীত্ব ইহার অধিকতর প্রমাণ সিজেছে। यना कांचित बिक्ठे, बहेटच ब्राक्षकांट्रांब, बिल्य-मोटअन, वानिकाबाबमादम्स, न्याक्रीक्षांक्र केटक्रक भिका नाम कतिएक शांति, विकासमिनिकास नि कोत्र निनिर्क अभिन्न कोलिन नामेश्वराज्य क्रिक्क काक अभागानी कविद्वा अवसंवित्रहरू हर वक्षा बन्धा की व स जाया-ब्राह्माय कि व महिला कि व शंद्रकम, छाराचे भामका क्रम असिका मानि करे जाराहे जो कामार्कात कारण वर्ष कामान्य र-THE PARTY AND ADDRESS OF THE DE MALE | AND LOSANDE WAS THE MALE AND AND TICS MICEN PRICES WHILE THE MENTER W

भूत त्याचा त्यांच्या भागतम उरक्त व्हेत्य अवेश नेचत्रत प्रमुख क्षेत्र संशोधन वृद्धि थावित्य।

THE VOICE OF GOD IN THE SOUL OF MAN.

There is something sublime in that trusting faith which reaches us through all ages and from all nations, asserting God's positive presence and controlling power. "The ford spake unto me." "The Lord commanded me," see of God has spring from no external faith, but from an interior recognition of a power within the soul, that was superior to all external commands. It was the sign of the divine life expressing the divine presence.

Philosophy and reason have both come and questioned this faith. What! is God the Infinite speaking to man the finite? Is there any possibility that the life of worlds and universes of worlds individualizes itself, and interferes with the trivial affairs of so insignificant an atom as a man, and with his relations to his fellow man? But philosophy an I reason in anestioning as do not entirely silence the interior sense of a life, a presence, a power a openess in and of what is termed that. Sometimes the spirit in its moments of expltation recognizes its part and presence within the infinite, and thus knows itself closer to God than to any individual spirit in the unverse; but these moments do not satisfy the heart, which calls upon reason and upon philosophy to bring the positive presence of God before the spirit, either as a life or an interior power, or an ontward agent individual and supreme.

There is within man a sorse, if we may so term it, or a spiritual consciousness, of the divine. It is sometimes scarcely active, but it is always existent. It is a feeling through the myriad channels of life, a bond, a union, a reception of that universal life and that infinite presence which it terms God.

From the highest to the lowest, in living threads of light the presence extends, and man speaks within himself to God, and yet that inward voice reaches through all space and time, for it is life within well to life without that impels the thought, and that thought vibrates as it goes out, and is an actual power in the universe.

Then prayer to God is an aspiration, an inward sense of an apward destiny. It is the heart's testimony of immortality, of an analying life and an eternal progress. But prayer for special good must have finite means of answer, and thus every aspiration teaches some spirit that with loving thought endeavors to respond, and to poor back not only in answer of life, but so to change the printing of man to man that the good stripped shell be gained.

This answer comes as an evidence of infinite love and so the heart says, " God hears me, "I know that I have a Father who is close by my side." It is this inward recognition of spiritual aid that has given to the world such proofs of an actual God-that the idea often becomes individualized and limited. The religious world places Christ hetween the Infinite and the tinite, and he becomes an ever-prsent individual, so that God is only a name but not a necessity. The irreligious world puts the interior self-head as the only power of existence and Gold is not much cared for. The Spiritualist places the spirit-world as the active agency of life and makes God as au incomprehousible infinity, that need not be sought and cannot be recognized. The mediation or com. ing between the highest and lowest of some positive presence has been made necessary because of the intellectual conception of God as intmitely high, infinitely pure and holy, and thus impproachable. But the wisest of intelfigences can never fully satisfy the spiritual life within man. It knows itself like every other son! except in degree, and it turns from highest Christ and from most explied anget to that which Christ and angel also turn unta. It is then positively affirmed by the aspiration of the spirit itself that it individually holds its close bond to God, and receives in its inner life testimony of him, oven as do the higher intelligences of heaven.

We must then seek God in our own souls, because it is within ourselves that we find the termination, in our individual consciousness, of those threads of divine life that reach our and bind us to the infinite universe and to the infinite God.

Theodore Parker says of himself, "When a little boy in politicoate in my fourth year, one fine day in spring my father ted me by the hand to a distant part of the farm, but were sent me home alone. On the way I had to pass a little pond-hole, then spreadone its waters wide; rholora in full becom--a rare flower in my neighborhood, and which grew only in that locality-attracted my attention and drew me to the spot. I saw a little apot-tel tortoise maning himself in the shallow water at the root of the flaming shrab. I lifted the stock I had in my hand to strike the barmless reptile; for though I had never killed may empitize, yet I had seen other hoys out of sport destroy birds, squirrels, and the like, and I felt a disposition to follow their wicked example. But all at once comething checked my little arm, and a votee within me said clear and loud, 'It is wrong', I held my nplifted stick in wonder at the new emotion—the consciousness of an involuntary but inward check upon my actions--until the tortoise and the rhodora both vanished from my sight. I hastened home and told my mother, and nasted what was it that told me it was wrong. Sho wiped a tear from her eye with her aproughed taking me in her arms, said: 'Some mon 'enl' it conscience, but I prefer to call it the woice

of God in the soul of man. If you listen and obey it, then it will speak clearer, and clearer, and always guide you right; but if you turn a deaf car or disobey then it will fade out little by little, and leave you all in the dark and without a guide. Your life depends on heeding this little voice. She went her way, careful and troubled always many things, but doubtless pondered them in her motherly heart; while I went off to wonder and think it over in my poor childish way. But I am sure no event in my life has made so deep and lasting an impression on me."

The "voice of field in the soul of men" is proof of the divine life that awaits every spirit. It is the recognition of a destiny that can never be achieved antil purity, and right; and holmess shall prevail.—From the Herald of Progress.

বিজ্ঞাপন।

পর্যান্তন্ত্র-নারী মাসিক পত্তিকার প্রথম সংখ্যা প্রেচারিত ইইয়াছে। গর্ফানীতি; ধর্মান্তর; সানাজিক উন্নতি , বাজিগর্জ আখ্যাত্রিকা; সাধুদিকার জীবন; বেদ পুরাণ বাইবল কোরাণ প্রকৃতি পর্যা পুরুক ইইছে সভ্যা প্রাক্তি পাদক লোক; এই সমুদান এ পত্তিকার লেখ্য বিষয়। দিছার অগ্রিম মূল্য বার্থিক হাতে জীবন। নির্দানিক হাত এক টাকা চারি আনা নির্দানিক ইয়াছে। প্রতি সংখ্যার মূল্য।০ আনা। নির্দানকলন্থ গ্রাহক দিগনে ভাকের মান্তল দিতে ইইবে। গ্রহণেক মহাল্যের। কলিকাছা ব্রাহ্মান্ত অনুসন্ধান করিলে অথবা নিয়া-লিখিত শিন্রানাম্য দিয়া প্র লিখিলে প্রাপ্ত ইইবেন।

ধর্মান্তভ্ব সম্পাদক। গী কলিকাত। ব্রাক্ষসমাজ ।

প্রকার।

নিয় লিখিত প্রবন্ধ রচনার জন্য, রোহিল গণ্ডের অন্তর্গত বেরিলীর মিউনিসিপাল কমিটি ভিন শত টাকা পুরস্কাব দিবেন এই প্রবন্ধ ইং-বাকী অথবা কোন ভারতবর্য প্রচলিত ভাষায় বিশিত ইইবেশ।

: dien :

তার করমীর বানিকাগণের বিদ্যাশিকা এবং ভাছার সমুদ্ধতি ও প্রোৎসাহের উপকৃষ্ট উপার। ?'
পারস্ক প্রথমে নিজ নাম সাকর না করিবা বনাম
চিক্তমাল লিখিতে ইইবেক। এবং প্রেম্বর্গ কর্মার
উক্ত চিক্ত সম্বলিভ এক স্মৃত্তিক আবর্গে রচনিক্ষার
নাম ও খানের পার্চয় প্রকাশ করিছে ইইবেক

ध्वक नक्य कागाती 3 जो गांक जीतित्वत शृत्तं, जात्कर गास्क नित्तं, त्वांक्ति स्टब्स अवर्गे त्वकि नीत निकेशिंगनीन अधिकि त्यक्रिती निके भौतिक करेत

(प्रतिमी

७० व जानके । ३ ७ ७ ६ वृह

कर्मानक, तम क्षत्रकार न नवनर बाह्य-५ मा क्रिक्स ।

আগামী ১৩ ই জগ্রহায়ণ রবিরার জ্লারত ৪ মটিকার সময় কলিকভা ব্রাজাননাটের বিভীয় তল গুলে সধারণ প্রতিনিধি সভার বিভীয় ক্রাটেরেশন হইবেক। প্রতিনিধি মহাশারের ভৎকারে সভায় উপত্তিত হইয়া কাষ্যা সম্পন্ন করিবেন।

কলিকাজ: ৪ অগ্রহায়ণ ২৭৮৩ গ্রী কেশবচন্দ্র গেন প্রতিমিধি সভার

जन्मभाव ।

সাধারণ প্রতিনিধি সভার জন্য-কল্লিকাতা বালাসমাজের প্রতিনিধি নিযুক্ত করণোদেশে আগামী
১৩ ই অগ্রহায়ণ রবিবার অপরাক্ত ও ঘটিকার
সময় কলিকাতা ব্রাহ্মসমাজের ছিতীয়ন্তল গহে
বিশেষ সভা হইবে। ব্রাহ্মমহাশ্রেরা তৎ কালে
সভায় উপস্থিত থাকিয়া উল্লেকাগ্রা সম্পন্ন করিবেন।
কলিকাতা ব্রাহ্মসমাজ ক্রিকোতা ব্রাহ্মসমাজের
৪ অগ্রহায়ণ ১৭৮৬ ক্লিকাতা ব্রাহ্মসমাজের

मन्त्रीपुर ।

নিঘণ্ট পত্ত।	
	পৃষ্ঠা
नेश्वरत्त महिल क्यार्ड्ड मधक्	550
থিয়োডোর পার্করের পাস	22¢
দুইড মভ	222
तामण्यविभी	, ১৯৩
रिवर्षा	25.00
कतानी पुत्र अभाविमान्यस्त्र उत्पटन	4 >4¢
हेश्त्रीकि	389
ভত্বোধনী পতিকার মূলা	নিৰূপণ।
অগ্রিণ মূলা (কলিকাভার জনা)	ر و
'' (गकश्चरवद कमा)	26 miles 1
गानिक भूता	- Colombia
08 40	100

প্রাক্তিক প্রাক্তিক ক্ষিত্র ক্ষিত্র বাছাক ক্রিক্তিক বাজন্দ্র বিশ্ব ক্রিক্তিক ক্ষিত্র ক্ষিত



ব্ৰহ্বাএকমিদমগ্ৰহ্মানীছানাৎ কিফনানীডিনিদং সৰ্ক্ষমগৃত্ৰৎ। তদেব নিতাং জানমন্তং শিবং সভক্ষির্বয়ব্যমক মেবাৰিডীয়ং দৰ্ক্ষবালি দৰ্ক্ষিয়ন্ত্ সৰ্কালয়সৰ্ক্ষিৎসৰ্ক্ষণন্তিমজ্ব সম্পূৰ্বমঞ্জিমন্ত ওক্ষাত তটুস্যবোপাসন্মা পার-ব্রিক্টমেজিকক্ষ প্রভাৱবৃতি। তদ্মিন আীজিকস্য থিয়েকার্ছ্যন্তিমক তদুপাসন্মেব।

স্যাক্সন্ শত।

বল্টিক সাগর, উত্তর সাগর ও রাইন
নদীর তীরে জুটস্ প্রভৃতি ক চকগুলি জাতি
বাস করিত; সাাক্সন জাতি ভাহাদিগের
অন্যতম। ইহারা কালক্রমে ইংলগ্রেরও
অধিবাসী হইয়াছিল। এই স্যাক্সন জাতি ও
তৎকালের ইংলগ্রীর জাতি মিল্রিত হইয়া
বর্তমান ইংরাজ জাতিকে উৎপন্ন করিয়াছে!

ইংদিগের মতে এক অনাদি অনন্ত পরমেশ্বর সকলে দেবতা সকল লোক বিন্তী হইবে, তথানও তিনি বিলামান থাকিবেন। ইলা ভিন্ন ইহারো আপনাদের স্বভাবের অনুরূপ কতগুলি লেব দেবীর কম্পনা করিও। ইংদের ক্ষেতারা পুরাভব রোমক ও একি, দিশের দেবতার আন্ত নিতার কায়ক ও ক্রান্তা ছিলেন না বতে, কিন্তু সেই, সকল দেবতার সহিত সাহিস্ক ক্ষেত্রার সহিত সাহিস্ক ক্ষেত্রার মহিত সাহিস্ক ক্ষেত্রার মহিত সাহিস্ক ক্ষেত্রার মহিত সাহিসক দেবতার মহিকা দেবতানিগের স্বভাব সাহিসক দিবতানিগের স্বভাব সাহিসক দেবতানিগের স্বভাব সাহিসক দিবতানিগের স্বভাব সাহিসক দিবতানি স

মাাক্সনদিপের প্রধান দেবভার নাম ওডিন, ই হার আকার অতি প্রকাণ্ড; বাম हर्स्ट मङ्की कृष हत्क उ मिकन हर्स्ट अक নিচোষ খড়্গ থাকিত। ইনি সমুদায় দেবতার জনক বলিয়া কীর্ত্তি হইয়াছেন এবং নিভাস্ত ভীষণ, রক্তপাতপ্রিয়, রণোৎ-সাহদাতা, জয় দাতা, যুদ্ধে মৃত ব্যক্তিদিগের নিয়ন্তা ও যুদ্ধের অধিষ্ঠাতা ছিলেন, সমর সায়ী বাক্তিরা ইহঁরে স্থময় ধাম প্রাপ্ত ইছারই নামানুসারে সুগ বারের নাম ওতেনদ্ভে বা ওয়েডনেদভে হই-ब्राट्ड। इंश्लेख थाकृष्ठि प्लटन देहाँ इ नर्टम অনেক স্থান ও প্রানিক্ত আছে। কুইগা वा रक्त्रा नारम देहाँद अक अञ्जी हिटलन। হিচ্ছুশান্ত্রে কামদেধের পত্নী রতির যেৰূপ বৰ্ণনা আছে, ফুেয়াও প্ৰায় সেই ৰূপ हिटलन।

হিন্দুদিগের পবন দেবের মারি ধর নামে

লগেক্সনদিগের এক দেবতা ছিলেন; ইমি

বাত্যা ও জলোজ্যুদের কর্তা। ইহঁরে মন্
ভক্তে নক্ষত্র চক্ত থাকিত, ইনি আনাদের

কুন্দের নায় গদাধর ও ইন্দের নায় বক্ত্রধরও ছিলেন। ইহার গদা এমন গুরুতর ও

বৃহৎ যে, দশ জনের ন্যুনে তাহা বহন করা এই গদা সদা প্রজ্বত অন-ষাইত না। লের নায়ি উত্তপ্ত থাকিত। একদা ধর দেব নিদার অভিভূত হইরা আছেন, এমন স-মটার অস্তরগণ সেই গদা আপছরণ পূর্ববক স্বদেশে লইয়া গিয়া মৃত্তিকার চারি ক্রোশ নিষে লুকাইয়া রাখিল। দেবগণ ভাষা জানিতে পারিরা তাহার পুনঃথাপ্তি বিষয়ে "অননাগতি হইয়া কেয়। দেবীর সহিত এ-ধান অস্তবের বিবাহের প্রস্তাব করিয়ীঅ-স্থ্রদিগকে কছিলেন, সেই অপজ্ত গদা কন্যার পণ স্বৰূপ-প্রদান করিতে হইবে। অস্থরেরা ভাষ্তে সমত হইল। ব্যমন অমৃত বিভাগের সময়ে বিজু মোহিনীর বেশ ধারণ করিয়া অস্ত্রগণকে মোহিত করিয়াছিলেন, দেন কপ ধর দেব কের। দে-বীর বেশ ধারণ করিয়া বিবাহ সভায় উপ-**স্থিভ হইলেন। অনন্তর ভোজনের আরো**-জন হইল। কপট ফে্য়া নেবী একটি রুঘভ ७ आ हे हि इहर दृहर १९मा अनासारम छन-তদৰ্শনে অসুরগণ রসাৎ করিলেন। স।তিশর চুমধ্রত কটরা উঠিল। অভপের অস্থরপতি পাণিএহণের অভিলাবে বর বেৰে ফুেয়া দেবীর সলিধানে উপস্থিত হই-লেন, কিন্তু কন্যার ভংকর ঘুর্ণমাণ লোচন ছয় দেখিয়া ভৱে পশ্চাৎ ভারে **অপস্**ত অধনি ধর দেব নিজ মুর্জি क्षेत्रस्थ 🗓 बादन कड़िमा **ध्**मा लाहेग्रा भ**छोत घटत व्यञ्ज**-গণকে আক্রমণ পূকাক সংহার করিলেন 1 থর দেবের মদা পানের শক্তিও অভি মদ্ভ ে অস্তরগণের এক**টা অভি রুহৎ ও** অভি গভীর পান পাল ছিল। একদা ভাষারা নেই পাত্র নটেন্ন পূর্ব করিয়া থর प्तरक श्री भूतक शार किति**देव किला।** পর দেব ভাষার কিঞ্জিয়াত পরি করিয়াই क्रांड हरेशा পरित्वन, मामीसुमीत (हर्के।

করিয়াও সমুদার নিঃশেষ করিতে পারিলেন
না, ভাহাতে তিনি অভিযান্ত অধাতিত
ইইলৈনী পরিশেষে অকালিত ইইল যে
অন্তরেরা ঐ পান পালের নিম কেনে। ছিল্ল
করিয়া ভাহার সহিত সমুদ্রের যোগ করিয়া
দিরাছিল। থর দেখা কেবলা যে ঐ পানপালের সমুদার মদা নিঃশেষ করিয়াছিলেন
এমত নয়, সমুদ্রের লবণায় ও কতিপর হস্ত
পর্যান্ত পান করিয়াছিলেন। পূর্বের উলিথিত হইয়াছে যে থরদের বন্ধুধরও ছিলেন।
এই নিমিত্ত ভাহার নামান্ত্রসালেই বজ্বের
নাম থনর বা থণ্ডর বলিয়া শ্রদিক হইয়াছে।
এবং ভাহারই নামান্ত্রসালের সপ্তাতের প্রথম
দিবদের নাম থস তে হইয়াছে।

ওডিন ও থর ভিন্ন আরও নয় জন দে-বতা ছিলেন। বাল্ডর আলোকের দেবতা, টীর বারগণের দেবতা, ত্রাগ্কবি ও বাগী-দিগের দেবতাও **ং**মঁডাল স্বৰ্গ **ছারের** ও ইন্দ্রর দেবতা ছিলেন। স্লাক্সনের। এই একাদশ দেব ও ইছাদের পাত্রী একাদশ দেবীর উপাসনা করিত। এতদ্ভিন্ন অনেক উপদেবতাও ছিলেন। মনুষ্যের দৌভাগা, ছর্ভাগ্য ও মৃত্যুকাল নির্ণয়ের ভার তিনটি উপদেবীর উপর সমর্পিত ছিল। বাল্কিরি নামে ভিনটি উপদেবী স্বর্গের পরিচারিক। ছিলেন; ইহাঁরা ওডিন দেবের আজা-ক্রম যুদ্ধ-হুলে যোদ্ধাদিপের জয় পরাজয় দান ও প্রাণ রক্ষা বা এাণ হরণ করিতেন। পাপের অবিঠাত্রী দেবতা লক, তাঁহার সাভিশয় मोन्मरी हिल किन्छ खडिनाइमुर्क, हिस्मान-রবশ দেব ও মানবগণের প্রতিক্রটারী ও নিতান্ত অবাধ্য বলিয়া ভাহাকে নেবগাৰীক शितिश्र होत्र अस्त क्रिया द्वालियाहित्यम। नतरकद अधिष्ठाकी होना रमदी, दक्षाह न नामस तुक्, व्यक्षा कर्न ७ व्यक्तिगाउ भाभभूमवर्गितात मध्या श्रीतर्गान्य विद्यान ।

मार्कमनमिद्रश्च खरशं द्रामा बालशाला। श्वादकः युवालुकाती माक्मत्मता युक्रत्कर পরম স্থান বলিয়া জ্ঞান করিত। স্থ-ভরাং ভাহাদের স্থাও দেই প্রকার স্থেই পরিপূর্ণ ছিল। ভাছার। মনে করিত, বাল-ছালা-গত বীরগণ দিবা ভাগে ঘোরতর স্মুক ক্রিয়া প্রস্পার আঘাতে প্রস্পারকে ক্ষত বিক্ষত করে, দিবাবসালে সহসা সেই সকল ক্ষত শুদ্ধ ইইয়া বায়। তৎপরে তাহারী কিনুম্নর নামক অক্ষয় বরাহমাংস ভোজন ও শক্রগণের মন্তক্নির্মিত প্রসাত্তে মদ্য প। ম করত প্রমানন্দ সম্ভোগ করিতে থাকে। স্যাক্রনদিগের নরকের নাম নিফ্লাইন; পাতালবাদিনী ছিলা দেবী তাহার অংধিষ্ঠাত্রী; উ।হার আকার ও দৃষ্টিকেপ অতি ছঃস্কর, তদ্দর্শনেই সকলের হৃৎকম্প উপস্থিত ইয়। জলপ্রপাত স্বারা সেই নরকে শ্রবেশ করিতে হয়। তথাকরি গৃহ-সকল পরিতাপনয়, বিপণি দকল চুক্তিক্ষময় এবং পরিচারকগণ নিতাত দাঘ সূতী ছিল।

এই স্বৰ্গ নরকের স্থখা চুঃখ বুঁচরস্থানী নয়। অনংখা বৎসরের পুরে মহাপ্রলয় উপস্থিত 'হইবে : স্বর্গে ও পূঁথিনীতে ভী-वन नकन-मकन मृखे ह्हेटक वाकित्व; পাপায়ারা মুক্তি লাভ করিবে; তাহাদিগের षां जन्मर्ग किल्या (नवक) विनुष्ठे इहेरनन, কতকগুলি দেবতা সরম্পর আহত হইয়া कालधादन भटवन कतिर्दमः (प्रवर्गातव क्रमक ও অধিপতি "ওডিন দেবও পঞ্ত পাইবেন। अक अव अवन अवनिष्ठ इंडेग्रेन फेडिटव ; ভদ্বোপালহালা, নিল্লাইম প্রভৃতি সমু-माम् अन्तर ज्यानस्य इरेटवं है है बन्दन त्महे अनामि अनक श्रीतरमध्य वर्षकान ্রীকিবেন। অভাপর বাল ছালা অংপেকা महस्रक हरक्षे कर सुहत वर्ग क नक नाइम म्हलका महत्त्वका करायन नाम

ট্রাণ্ডি নামক এক মূতন নরক স্থ ইইবে। তথন মানব জাতি স্ব স্ব কর্মামুসারে স্থর্গে বা নরকে নিক্ষিপ্ত হইবে।

पिरकोमिट शत था । खर थ कें ज्ञिमिट शत निकर्ण विनान गाक्मनिष्ट्रात खेलामना ছিল। উপাসকদিগের গাতে উৎস্ফ ব-লিররক্ত প্রোক্ষণ করা হইত। সময় বিশেষে নর বলিদানের অথাও প্রবর্ত্তি ছিল। সাধা-রণের শুভেচিদ্দেশে বছসংখ্যক বনদীও দাস-কে বলিদান করা হইত। রাজারা যুক্তের সময় জর লাভ বারোগের্ সময় আনরোগা লাভ করিবার নিমিত্ত নিজ নিজ সন্থানকে বলিদান করিছেন। স্যাক্সনদিপের এই প্রাকার গাঢ় সংকার ছিল যে, নরবলি প্রদান না ক-রিলে মৃত্যুর পর স্বর্গ-লাভের সম্ভাবনা ন:ই। এই নিমিত্ত তাহারা ছুজাগা বন্দীকে বলি-দান দিয়া স্বর্গের দার উক্ষাটিত রাখিত। আল্মা ও ভীরুতা স্যাক্দন্দিগের একান্ত বিষিষ্ট ছিল; ঐ ছটীকে ভাহারা উৎকট পাপ বলিয়া গণনা করিত। তাহাদের বি-সাসে ছিলি, কাপুরংষেও অলস ব∺্জিকখ-নই স্বৰ্গ প্ৰাপ্ত হইৰে না, প্ৰত্যুত, নিৱয়গামী হুইরা নির্ভিশয় যন্ত্রণ ভোগ করিবে।

অস্তারণ ও অন্তারোহণ করিলে বিশুদ্ধতা বিন্দী হলবৈ এই অভিপ্রারে স্যাক্যন যাজকাদণের উহা অভ্যন্ত নিষিদ্ধ
ভিলা ব্রীলোকেরা দৈববানীপ্রকাশক বলিয়া স্যাক্দনের ভাহাদের সবিশেষ সন্ধান
করিত। কথন কথন রাজকুনারীরা ধর্মধাজিকা হইতেন ও লোকদিগকে দৈববানী অবগত করিতেন। এনেশের অনেক লোকে বেমন সপ্রের মন্তে, ভূতের মন্তে ও তাকিনীর
মন্তে অদাশি বিশ্বাস করিছা প্রাক্তে, স্থাকসনেরা সেইবপ মন্তের প্রতি স্থিতিক সাক্তি
প্রদর্শন করিত। ভাহাহা বোধ করিত, সন্ত্র

বাইন্দে পারে। কর্মকরের। কর্মকার। বর্ম নির্মাণ কালে বিশেষ বিলের বস্ত্রা পাঠ কর্ রিলেনেই থাকের আবাত ক্ষনিবার্যণত লেই বর্ম নিতান্ত অভেন্য হয়। কোন মত্ত্রে বাত্যা ও ক্ষরেক্ত্রান এবল ও কোন নত্তে তাহা নি-বারিত হয়, এই সংস্থার থাকাতে ন্যান সমের। যোরতর কটিকার লময়েও পোতারোহণ পূর্মক দেশ লুকন প্রভৃতি দহার্তি করিত। ভাকিনী আছে বলিয়াও তাহাদের অত্যন্ত বিশ্বান হিল। অদ্যাপি ইউরোপের হানে হানে ভাকিনী বিশ্বানের কথা গুনিতে

ন্যাক্সনেরা বালুর গতি আকাশের নপ, পক্ষিগণের গমন ও শক্ষ এবং উৎস্কীব-লির অন্ত দিরীক্ষণ থারা ভাবী শুভাশুভ নির্ণয় করিত; সমাধি ক্ষেত্রে মৃত ব্যক্তি-দিগকে স্থোধন করিয়া অভিল্যিত বিষয় ক্ষিত্রাসা করিত এবং গুরুতর বিষয়ের ভাষী কল জানিতে স্থলে কোন হভভাগাকে খুলামাত বা জলে নিক্ষেপ করিয়া, ঐ খু-জাহত ব্যক্তির রক্তধারা কি নপে নিঃস্থত হয় অধরা ঐ জল-নিক্ষিপ্ত ব্যক্তি কিনপে নিমন্ত্র হয়, ভাহা দেখিয়া ভাবী শুভাশুভ অবধারণ করিত।

থিয়োডোর পার্করের পত্ত। ২৫৬ সংখ্যক পত্রিকার ১১৯ গৃঠার পর।

জনন্তর আমি ধর্ম-বিজ্ঞান অনুশীলন করিবার নিমিত প্রকৃত সময়ে কেম্বিজের এক বিলালয়ে প্রবিষ্ট হইলাম। ছৎ-কালে উন্নতাশয় ইউনিটেরিয়ান্ সম্প্রাণায়ই উহার ভত্তাবধান করিতেন। আমি এ বিষয়া-লয়ে প্রবিষ্ট হইছা দেখিলাম, তথার ধর্ম-বিক্ষান অনুশীলন করিবার নিম্নাক্তর ক্র

त्रांशाम बहेबरियदक बाक्रफ वर्ष व कतिएक सर्वके चाकीनचा जानान महिला-चारकनः चालना प्रत्यत शतकताचा बीकाड ক্ষিতে কাহাকেই পীত্ৰন করেন না। शता धर्म-विकारमत विषय दय बर्श कानिस्कर. मक भटि काशांतरे जैनेटनम् अवान क्रिन (छन । जामनामिश्रदक मर्काछ कदर जार्थ-মাদিগের মত অভাব বলিয়া কদাচ একি-পাদন করিতেন না। তাঁহারা সকলেই मर्परचत्र निराक्षे हिर्दान ; व्यनाचा मुख्य-দায় অপেক। অধিকতর বিভগ্তাবাদ করি-তেন না। তাঁহারা ধর্ম-বিজ্ঞানে অভিজ্ঞত। লাভ করিয়াছেন বলিয়া অন্যের নিকট আ-চার্য্যকতার ভান করিতে একান্ত পরাত্মুপ हिल्लम। प्रिलाम थे विमालिए श्रृक्षां कर এস্থকারণিধের সঙ্গবিত ভূরি ভূরি এস্থ স্পাছে. কিন্ত তুর্ভাগ্য-ক্রমে তল্পধাে কর্মনির পণ্ডিত দিগের ভূতন একখানিও ধর্মবিজ্ঞান দৃষ্টি-গোচর হইল না। আমি ঐ বিদ্যালয়ে প্রবেশ করিয়া ধর্মাসুসন্ধানের প্রচুব স্বাধী-नडा ७ व्यवदान आख इहेनाम अवर यमा-ধারণ যত্ন ও পরিশ্রাম সহকারে ধর্ম-বিজ্ঞান অমুশী-ন করিতে লাগিলাম। ধর্মোপদেশকের আসন গ্রহণ করা অভি সহজ বাণিার ছিল, কিন্তু দেখিলাম যে ম-মস্ত এলাক ধৰ্ম-যালকতা পূদে প্ৰতিষ্ঠিত ছিলেন, চ্যানিঙই ভাষারদের মকল অপ্রেক্ষা সম্ধিক আধান্য লাভ করেন।

অনন্তর আমি ধর্ম বিষয়ক বিশৈষ মাভাব পরিপূর্ণ করিবার বিশিক্ষ শহন্তর করে।
নানা প্রকার পুস্তক পাঠ করিতে প্রবৃত্ত হইলাম। একানে আমি সহকেই বাক্ত করিতে
পারি যে ভংকালে উদ্দেশ্য না লাকিয়া
কি শ্রকার চেকা করিয়াহিলাম এবং ধর্ম
নাজ্যকর প্রত্যাহণ করিয়াহিলাম

আমি প্রথমত অভিনিবেশ পূর্বক বা-देवन शांठ क्रिट्ड बहुख इहनाम-वाहेदन কি, এবং কোন্ কোন্ পুস্তক ও কোন্ কোন্ खोबा लहेजा छेका मकलिंड इहेग्राट्ड, वाहेव-(बाद उएमगाई वा कि बाप, এই ममस विवा পর্য্যালোচনা করিতে আরম্ভ করিলাম। এই बार्थ छन प्रारवंद्र नविदमव भरीका कतिहा মূল ভাষার বাইবল অনুশীলন করিতে লাগি-লাম। উহার বিশেষ বিশেষ অংশের আদিম ভন্ন ভন্ন করিয়া পাঠ করি-রচনাগুলি লাম। ঐ সমস্ত আদিম রচনার মর্ম্ম বোধ করিবার নিমিত্ত ইছদি ধর্ম-যাক্ষকদিগের প্র-<u>শীত পুরাতন বাইবলের টীকা এবং থটিয়ান্</u> আচার্যাদিগের প্রণীত পুরাতন ও ভূতন বাই-বলের টাকা অনুশীলন করিতে লাগিলাম। এবং জন্মন্ গ্রন্তার দেগের রচিত বাইবলের গুণদোষ-বিচারক গ্রন্থ ও টীকাও পাঠ করি-এই সমস্ত প্রালেচনা করিয়া দেখিলাম, বাইবল বিভিন্ন প্রকার গ্রন্থ হ-हेट मक्तिए इरेशेटहा धे ममस् अञ् ए, कान मगरत कि करन कारा कर्ज़क थ-ণীত হয়, ভাছার কিছুই নির্দেশ নাই। যদিও কোন কোন এত্তে প্রণেভার নাম নির্দিন্ট দেখিতে পাওয়া যায়, তাহাও কোন ক্রমে বিশ্বাস-বোগ্য হইতে পারে না। याहाहे इंडेक, थे ममल भूलक श्रष्ट्-श्रवाहरमत চির-পরিচিত প্রণালী পরিত্যাগ পূর্বক व्यवाविष्ठ कटल व्यवीठ इहेस्ट्रा वंत महत्रम काटन ये मकत थातिन श्राट्य মধ্যে কে কি নিমিন্ত কোন খানি পরি-গৃহীত ও কোন খানি পরিতাক হইল, তাহা নির্ণয় করা নিভান্ত হুরুঠিন। বাই-वरणत रकाम रकाम चर्दम मरजूत मन्त्र म বিসয়াদিতা বিকিত হইয়া থাকে ৷ উপুত্ৰতিন वारेयण त्य जान वर्ष जिल्लाने क्षिप्रकृष्ट गुरुव ता रेन्टम काशांत्र अकास विमतीक मुक्ति त्रा-

চর হয়। তৃতন ৰাইবলে প্রণেতাদিগের কেবল রচনা-প্রণালী ও ভাবগড় বৈলক্ষণা লক্ষিত হয় না কিন্তু ভাঁহাদিগের মত-বৈষমা ও অভিপ্রায়-গত ভারতমাও দৃষ্ট হইয়া থাকে।

অনন্তর আমি বাইবলের প্রত্যাদেশ ও অলৌকিক কার্যোর বিষয় পর্য্যালোচনা করিতে লাগিলাম। দেখিলাম, इछिनि ७ शृधियोगीनेदगत मत्याहे नाना अ-কার অলৌকিক কাণ্ড ঘটিয়াছিল 🕨 অন্যান্য সম্প্রদায় যে কি নিমিত্ত উহার ফল ভোগে ব্যাঞ্চ রহিল, ভদিবয়ে ঐতিহানিক বা অন্য কোন ৰূপ থমাণ প্ৰাপ্ত হওয়া যায় না। ভথাত এই প্রাক্তিক-নিয়ম-বিরোগী অলৌ-কিক কার্যে। সর্বণক্তিনান্ ঈশ্বরের সাক্ষাৎ হস্তক্ষেপ বিষয়ে আমি অপ্রসন্নমনে বিশাস করিলাম। আমি ভৎকালে ইতিহাদ-ঘটিত অমাণের অণালী আুলোচনা করি নাই এবং माका विषदा किंबा वसूमकान कहिए इस, তাহাও জানিতাম না, এই নিমিন্ত ঐ অলৌ-किक घरेना गकल आभारक निराम स-প্রভাবেশ-বিষয়ক মন্ত ন্ত শ্ৰ করিল। সিন্ধান্ত করিয়া লইলাম--জড় কথপ্ৰিং জগৎ ও মনুষা উভরেই ঈশ্ব আবির্ভ এই দ্বিধ পদাপে তাঁ-ছইয়া অ{ছেন। হারই কার্যা। তিনি এই কড় জগৎ ও মনুষাকে আপনার শক্তি জারা পরিচালিত করিতেছেন; স্থভরাং যাহার যেৰূপ ক্ষমতা এবং যে गिरे कमडोड़ प् शकात वावस्त করিতে সমর্থ হয়, তাহাকে তত দুর অ-जामिक तला गारेटक शांदतः मछाहे युद्धि-वृक्ति এवः नाशि नीजि-वृक्ति क्षकारमन-विषयक विरम्य ध्यमान एता विवाह बनाउ छ-লিখিত-ৰূপ প্ৰতাদেশ বাতীত অন্য প্ৰকার रहेट अादत ना असर डेरांट रे अतिमादन गज्ञ-ध नाव निवलिक बाटर, तारे गाइ মাণেই উহাকে প্রত্যাদিই বলিয়া স্থীকার করিতে পারি। এনন কি, উহার কোন স্থলই অভান্ত ঐশিক বাক্য বলিয়া হৃদয়স্থল হয় না; কেবল এই মাত্র বলিয়াই পারি বে নকল মতাই ঈশ্বরের বাক্য।

অনশ্বর 'আমি ইছদি ও " খৃষ্টিয় ন্দি-নৌর ধর্মা ও ধর্ম-বিজ্ঞানের যেরূপ উল্লিভ হইয়াছিল, তাহারও ইতিহাস অনুশীলন করিলাম। দেখিলাম, যাহা এক্ষণে পৃথিবী-মধ্যে অঞ্ভিহত শ্ৰহাবে আবিপত্য স্থাপন कतिशारष्ट, जे माख्यमातिक मटरक कमाने নুতন মূতন প্রিরুর্ত্ত মহা করিতে হইয়াছিল। বাইবলকে যেনন মৃন্ধুদ্য-ক্লডবলিয়া প্রতীতি অবিল, রন স্করণ খৃষ্টিয়ান্দিলের উপাদ-নার স্থান ইংরাজ-রাজা, ওলনদার্জনিগের আপণ ও ক্লাকের শদা কেতা অপেক্ষা অ-ধিকতর পুণাস্থান বলিয়ু নির্দেশ করিতে সমর্থ হইলাম না। কল্ড আনি বাইবল ও ভল্লনালয়ের বিষয় গভ্রু অভিনিবেশ পূর্বক অফুসন্ধান করিতে লাগিলাম,ভতই উহাদের অলৌকিকতাও মস্রান্তল আনার অন্তর ছইতে ডিবেছিত কইতে লাগিল। আরও ধৃটিয়ান্দিগের ধর্মবিজ্ঞানে যেৰূপ ধর্ম নিদেশ করিতে ছি, ই ভিহাস ভাষার সমাক্ বিপরীত।

আমি কেবল যে ইছনি ও খুকিয়ান দিলের ধর্ম-বিজ্ঞান ও ধর্মের উন্নতি-বিষয়ক ইতিহাস আলোচনা করিরাছিলান একপ নহে; হিন্দু, বৌদ্ধ মুসলনান, গ্রীক্ ও রোমক প্রভৃতি ভানানা মন্তালারের ধর্ম ও ধর্ম-বিজ্ঞানের য ক্রার উর্লিভ ইইমা-ছিল,ভালারও অক্লান্তানিক ইতিহ লাগিলান। আমি বিশ্বস টিকালার্মিলের সাকারে। ভ্রমান ক্রার ভালার ক্রার্মিলার নাম মুল ভালার পার ক্রিনাম। হওয়া যার না; কজাই জীক্ত রেজকনিনের
কারা ও দর্শনি লাজ আলোচনা করিব। নেই
আভাব পরিপূর্ণ করিলান। আদি অসভাও
বর্ষর জাতিদিপেরও ধর্মের মর্মাববর্ষা
করিতে লাগিলান এবং হন্দারা ছুল্ক বিষয়ের
দিদ্ধান্ত করিবার জনেক সাহায্য প্রাপ্ত হইলাম। দেখিলাম, বাহাদিপের বাঝা-ক্ষুর্জি
করিবার সামর্থা আছে, পৃথিবী মধ্যে এমন
কোন সম্পুদারই ধর্মের শৃক্ষণ হইতে উন্মুক্ত নহে।

অনন্তর আমি বত্ন সহকারে মনোবিজ্ঞান ও আত্মতত্ত্ব আলোচনা করিতে লাগিলাম। দেখিলাম, ধর্মাজ্ঞান মনুষ্য জাভির সাধারণ ভাবিকার। সভাই কি ধর্মজ্ঞান মনুষোর স্বাভাবিক ? উহ। কি মনুষোর আত্মাতে অবিভিন্ন ৰূপে বিদ্যান বহিয়াছে? এবং মনুষোর উন্নতির সহিত কি উহার উন্নতি হয় না? আমি অন্তর্ফি (বারা দেখিলাম ধর্মাক্তান স্বভংগিয়াও ছ্রপনেয়। তবে আ মার নাার দকল মন্ত্র্যাই কি অন্তদুটি ছার। ধর্মা-জ্যানকে স্বতঃসৈদ্ধ ও অপরিহার্য্য বলিয়া অঙ্গাকার করে? বাইবল ও খৃঞ্জান্সমাজ क्रे ब्राट्यात डेखत थानात्म क्रान्त व्यममर्थ। क्र জন্য আমি মন্তুষোর সভাব স্থান কাপে পারী-काश अबुङ इड्लाम এवः त्य छेशांगांन इडेटड আমার ও অনাানা মনুষোর অস্তরে ধর্মজ্ঞান প্রাচ্ছুত হইল থাকে, আত্মবিজ্ঞান বারা ভুকা উদ্ভাবন করিতে চেফিড ক্ইলাম—্য কারণ অবলয়ন করিয়া পরীকা ও অভিজ্ঞতা ঘারা কোন বিষয়াসিখাত করিতে হয়, গেই কারণ অবলয়ন করিয়া, ধর্মজ্ঞান কোন খান म्हेट्ड छर्भम हस्ट्रह्, खानात वर्ष्ट्र गमान করিছে বারিলাম । স্কৃতি প্রতিষ্ঠ লামান্ত मानाना शक्त अधारणाइना क तरक व विवर ल विज्ये रहेका बाद मा । अस् स्व THE PROPERTY OF THE BE

हर्ग, नाटकंति, श्लिम, श्रीत धरः कडा-निम् करु रानीता याराटक माना व्यक्तांत পরিপোষণ করিয়াছেন এবং রিড ও ট্রাড যাহাকে বিস্তৃত করিয়া গিয়াছেন, তাহা इहेटड सर्किशिष माहाया आहा हहेनाम। এই বাছা দশনি আমার ধর্ম-বিষয়ক সহজ শ্রনা উৎপন্ন করিতে পারে নাই, অথবা মানৰ জাতির অন্তঃকরণে কিৰপে ধর্মভাব প্রাতুর্ভ ত হইল, ভাহারও কোন ইতিহাস क्षप्रभीन क्रिटिंग नमर्थ इस ना। असन कि, যাহারা সহজ্ঞ জ্ঞানকে ধর্মের পত্তন ভূমি वित्रा विश्वांग करत्र ना, अरे मक गिरे जि-টিন্জাতির উপরেও আধিপতা ভাপন ক-রিতে পারে নাই। ক্লার্ক ও বট্লরের ন্যায় বিচক্ষণ, কডওয়ার্থ ও বারোর ন্যায় বিদ্যান্ ধর্মণান্ত-প্রণেতাগণও এই জটিল ভাবের সিদ্ধান্ত করিতে সমর্থ হন নাই। যেমন ভু-গর্জ-নিহিত লৌহ চুয়কের নির্দ্ধ গতি প্রতিরোধ করে, দেই ৰূপ অণ্প বা অধিকই হউক নিগ্রু শাতের শালন উহাঁ-দিপের বিচার-শাক্তির স্বাধীনত। অপহরণ করিয়া থাকে। ফরাদিস্দর্শনকার কু-জিন, যে উজ্জুল দর্শন শাস্ত্র প্রচার করিয়া-ংছন, তদ্মারা বিস্তর উপকার দর্শে, কিন্তু উহা ভাদৃশ প্রীভিকর নহে। চিন্তা-শক্তিতে व्यक्तिश हेमानुद्रम कालि कर्मान मरवाउ নিতাত্ত নিকৃষ্ট লেখক ছিলেন; ভিনি যদিও এসন কোন বিক্ষান্ত করিছে পারেন নাই, বাহাতে আমার ভূঞি হইতে পারে, তথাচ আমাকে বিশুদ্ধ প্রধানী ও অভ্নত भव श्रामित करियाद्वत ।

আমি দেখিলান মনুষ্যের কতকগুলি আত্ত্বার আছে। ঐ সমস্ত আত্ম প্রভাগ মনুষ্যের আভাবিক সংকার হইতে সমুৎপল, ভাৰত তির বিষয়। তৎ সমুদায় মুক্তি ও ভারত উলার নিত্র করিভেছে না। কামি धक्रदर्भ मध्या छ जिन्छि भावनाक विषेत्र উল্লেখ করিতে প্রবৃত্ত হইলাম।

প্রথমত ঈশ্বর বিষয়ক সহজ্ব জ্ঞান—

ঈশ্বরের অন্তিজে বিশ্বাস সহজ্ব জ্ঞান প্রভাবেই উৎপন্ন হয়।

দ্বিতীয়ত ন্যায় বিষয়ক সহজ জাব— আমাদিনের ইচ্ছার একান্ত অনায়ত, অবশা-পালনীয় নীতির অন্তিত্বে বিশাস সহজ জান অভাবেই উৎপন্ন হয়।

তৃতীয়ত আত্ম-বিষয়ক সহজ্ঞ জ্ঞান— স্বাহস্ত্রা জ্ঞানের মূল কারণ সমুযোর আত্মা অবিনয়র ইয়াও সহজ জ্ঞান প্রভাবেই উৎপন্ন হট্যা থাকে।

মানব প্রকৃতিতেই ধর্মের ভিত্তিমূল নিবন্ধ রহিয়াছে। নাজিক বা উগ্রন্থভাব গোঢ়ারা অস্বাকার বা স্বমত-সমর্থন করিবার নিমিত্ত যত ই কেন বিভগু। করুন না,কিছুভেই ইহ। খণ্ডন করিতে পারিবেন নঃ। আমি সফলভার আশা ও বিফলভার ভয়ের বিষয়ে বাক্যক্তি না করিয়া আধ্যাত্মিক পরীক্ষা कतिए अतुष इहेलाम। आमि भोजातः ক্রনে ভিন্টি সভঃ মনোবিজ্ঞান বলে সংস্থাপন পুর্বক অভিশয় মন্ত্রী হইলাম এবং এই রূপ একটি প্রণালী উদ্ভাবন করিলাম, যন্থারা স্থ-শিক্ষিত ব্যক্তি বৰ্গের মনে ঐ তিন্টি সভা श्चनतत्रम कतिएक ममर्थ इंडेव ; कांत्रग भूजी-ভুত স্বাভাবিক সংস্কার-দকল আপনা रहेट इरे माधातगढक थे मडाछिल अन्। করিতেতে 🗄

আনত্তর আমি ঈশ্ব নীতি, ও আশ্বার অবিনশ্বত্ব বিষয়ক আত্মপ্রতায়কে উজ্জ্বল করিতে সভা দৃঢ়াভুত এবং ঈশ্বরের স্বরূপ, নীতির স্বরূপ ও অনস্ত জীবনের গতি অমুস্ক শ্বান করিতে শ্বত্ত হইলাম। এই স্কল্ম বিষয়া দিল্লান্ত করিতে আমাকে ছুই প্রকার প্রবাদীন অবলয়ন করিতে স্ট্রাছিল। প্রথম কার্ন দারা কার্যা নিরপণ, বিভীয় কার্যা বারা কারণ নিরপণ।

প্রথমত আমি সভা অসভা, স্থানিকিত অশিফিত, সকল প্রকার জাতির ইতির্ভ হইতে ঈশ্বর্নীতি ও শ্বর্নরকের বিষয়ে কি ৰূপ অভিপ্ৰায় বাক্ত হইয়াছে ভাহা সং-গ্রহ করিলাম এবং যে প্রকার মত প্রাপ্ত ङ्डेलाम, **उपसुमारित्र** भि मसुमाहारक এक≪-कात टानीवन कतिया नहेनाम, किन्छ छ-হাতে আমার ভাদুৰ প্রীতি জন্মিল মা,কারণ ঈশ্বরের সরূপ, নীভির প্রকৃতি এবং অ-নস্থ জীবনের গভি বিষয়ে সর্ববাদি-সম্মত কোন সভ্য উচা হইতে উপলক্ষ হইল না। কেবল কতককলৈ লোক এই সমস্ত বিশয় কিৰপ অনুভৰ কৰিমাছিল, ভাষাই এক প্রকার অবগত হই সাম। তথাত ইহা দার। তংকালে আদার বিস্তর উপকার দশিয়া-ছিল, তালার আর জোন সংশয় নাই।

দিতীয়ত আমি আশ্ব প্রভায়-সিদ্ধ অস্ত-দৃষ্টির মূল বিষয় হণতে ঈশ্বর, নীতি ও পর কান বিষয়ক জ্ঞান সংগ্রন্থ করিতে চেন্টা করিলাম। এই কপে যুখন মনুযোর অ-কুতি হইতে মতা সংগ্রহ করিতে প্রবৃত্ত হইলাম, তথন আর মানব জাতির সংকীর্ণ ইতিহাস আমার প্রতিবন্ধকতাচরণ করিতে गमर्थ करेल ना। किन्नु এই नमछ विषय যে কি পর্যান্ত কঠিন এবং ভদ্ধানুসন্ধায়ী मञ्चा विश्वकतीन मधा अञ्चनस्राटन अद्व হুইয়া যে কভ দুর ভ্রমে নিপ্তিত হন, তৎ-कांटल आिम छोड़ा विटमस अवगढ इड्ट्ड পারি নাই কিন্তু এ ক্ষণে অপেকারত ममिक इत्पशक्त कतिशाहि। এक दिन् রাওকায় আমার তারকা ভাম হইয়াছে কি না ভাষার পরীক্ষা করা বিচক্ষণ ব্যক্তির मन्भू र्व व्यायक मटनार नाहे।

थामि करन किम् किन का कि

শাস্ত্ৰ, ধৰ্ম সংক্ৰাৰ কাৰ্য ও পৰী কাৰের माहाका अवववन कविता आधालिक देखि मकर्म अर्गात्नावमात्र अतुत्व हरे माहै; किस যাঁহার यक्ष-मध्यत्, यक्ष, विवादानी, ভবিষাৎ গণনা, देन्द्रवानी, जाकिनी, जूक ও ইন্দ্রজাল প্রভৃতি বিষয়ে হস্তক্ষেপ করি-য়াছেন, আমাকে তাঁছাদিগের মংকলিত অত্তরও আশায় গ্রহণ করিতে হইরাছিল। ধর্মবিজ্ঞানের প্রকৃত পদ্ধতি ছইতে প্র-রিচাত বিখাতি ই**ছদি ও খৃটিয়ানদিলের** বলিয়া প্রথিত অথক্ত পুত্তক, পুরাতন বাইবলের অমূলক সন্দর্ভ ও মূতন বাইব-লের সন্দির্গ্ধ মত এবং নিয়োলেটেনিই ও নফিকন সম্প্রদায়ের অন্ত কম্পনা পাঠ कतिनाम। यनिও তৎकारम छेरक्के धर्मा গ্রন্থ সমুদায়ই পর্যালোচনা করিতে আরম্ভ করিয়াছিলাম, ভণাচ মিটিক সম্প্রদায়ের मक्षणिङ क्षरका जनूगीलन कतिएङ ज्यरजाः वी व्यवका अनर्भन कति नारे।" गाँशता ধর্ম-বিজ্ঞান সঙ্গত অনুষ্ঠান, জ্ঞান-শিক্ষা ও অন্যান্য নীতি প্ৰতিপালন না করিয়া কেবল পরোপকার দাধনে যত্নীল হইয়া থাকেন, আমি তাঁহাদিগের ও বিষয় সবিদেষ পর্য্যা-লোচন। করিতে লাগিলাম। আমি এই প্রণালী অবলম্বন করিয়া আত্মার অঞ্চক্ত কাৰ্যা সকল শিক্ষা, যাহা সভা ধলিয়া অচ্চ বিত হইয়াছে এই ৰূপ অমূলক কণ্ণাৰ বিষয় পরীক্ষা এবং যাহা অপপ্রতিহত বেগে: সহস্র সহস্র বৎসর অভিক্রম করিয়াছে: **এই क्षेत्र अलीक मटनाइटधेत विषये आदिका** চনা করিয়া সাধারণের অপরিক্তাভ সভা नकल नकलन कतिश लहेकीय।

উন্ধ তা

ভবানীপুর ব্রন্ধ-বিদ্যালয়

প্রধান আচার্যের উপদেশ। ভূতীয় সংখ্যা। ৬ জৈচে ১৭৮২ শক।

खार्क ध्वरमञ्ज मुखक डेशिनियरमञ्ज धार्थरम आहरू যে মহাশাল শৌনক অন্তিরাকে জিজানা করি-লেন "কশ্মিল জগবোকিজাতে নৰ্মমিদং বি-জ্ঞাতং ভবতি "কাহাকে জামিলে হে তপ্ৰন্! সকল জানা যার ? "ডেকৈম সহোবাচ" অজিরা ভীছাকে বলিলেন। ভূমি যে বিদ্যার এক করি-८७७, 'त्र विभा कि मा "यहा उपक्रवमधिनमाटि" যালার ভারা সেই অক্য় পুরুষকে জানা যায় সেই ব্রহ্ম-জ্ঞানেতে সামান্য-রূপে আর সকল জানা যায়। নর্ব-জ্রন্টা ও সর্বাজ্রয় পর্যেশরকে জানিলে যাৰজীয় সৃষ্ট ও আশ্ৰিত বন্তুর সহিত ভাঁহার যে এক সামান। সম্বন্ধ, ভাহা অবপত হওয়া যায়। পরা বিদ্যা এই ব্রহ্ম-বিদ্যা; ভদ্তির ঋক্ষজ্ঞ नाम रवम, देशांत्र। नकलि प्रत्यार्थ विमा। शहा विमा। गरून विमादि श्री छिष्ठे। यमन जरूरनद भूज जका, त्कमिन नकन विष्यात मृतीकृष्ठ जका विष्या । ৰেমৰ ব্ৰহ্ম সকল বস্তুতে ওড়প্ৰেড়াত হটয়া আছেন, তেমনি ব্ৰহ্ম-বিদা৷ সকল বিদ্যাতেই দীন্তি পাই-ভেছে। বে কোন বিদ্যা হউক, ভাহার ছারা ত্র-का-विमा वाक कड़ा यात्र। कि बाहीब-विधान, कि छु-छब्, कि मत्ना-विकान, कि ब्लाडिसिमा, সকল বিদাহি ভাঁহার জ্ঞান শক্তি মঙ্গল-ভাবের निका (मग्न) अकारक लका त्राचित्र। बाहा आंदला-চনা করি, সকল হইভেই ভাঁহার উপদেশ পাই। व्यासता उभाग्यस्य त्याना स्टेटल, नमी मानत, রক পদ্র, অচেডন নিস্তব্ধ বস্তু ছইডেও টোহার উপদেশ পাই। आमत्र मेचात बंदना-निदयमं क-রিয়া জ্ঞান-গর্ক বে কোন শুস্তক পড়ি, ভারা हरेटलरे जमा-विमा। जाल कति। बात्रीत-विधान পড়, দেহের অন্তুত কৌপলের মধ্যে দেই জান-বরপকে প্রভাক করিবে। ভূ-ভব পাঠ কর, ভূ-गट्डिंत व्यारम्पामत्मत्र मट्डी डीहात्र मह्डी मेख्नित প্রায়ের পাইবে । আত্ম-তত্ত আলোচনা কর, णाशास्त्र के कार्यात निवर्तमा शोहरव। हे-ভিহান পুরাত্ত অধান্তন কর, নেই নকল বিচিত্র यहेनात मरधा छारा त महन-रख क्विस्क नारेद्व । त विला अध्याम करा, आची स्ट्रेटन स्मर विनाह त्वानाव्य जन्म मान विचत्र क्रिकेश वन्तिवार

बाह्य जामहा भई जिस्सा शाहरणहि स्व श्रव श्रोक বভাকে আঞ্চর করিয়া সমুদায় জগৎ রক্ষিত ই-रेटलट्ड ; क्रेस्ट्ररे अरु मात मूल मना, चात मधून्य সভা তাঁৰ। হইতে নিংস্ভ হট্যাছে। সেই ভূল সভ্যকে জানিলে আর সকল সভ্যের অর্থ বোধ হয়, ভাহা না কানিতে পারিলে আমাদের অঞ্জান ন-অন্তব্য আর কিছুডেই ধার দা। যানস্তরে বর্ত্তমানাবয়ং ধীরাং প্রতিত্ত মনামানার। मक्कमामानाः পরিपश्चि मृष्टाश्चरक्रारेन्दः नीव्रमानाः যথান্ধাঃ। (কঠোপনিষদ্) বাহার। ঈশরকে না জানিয়া অবিদার মধ্যে বর্ত্তমান পাকিয়া আপ-নাকে ধীর ও পণ্ডিভ বলিয়। মনে করে,. দেই সূদ্েরা অহা কর্তিক নীয়মান অহের ন্যায় স্তাল-মামান হইয়া ইভক্তভঃ পরিভ্রমণ করে; জানের গদ্য স্থান দেখিতে পায় না। অভ এব সকল বি-माति व्यक्तिश्री, मकत विमाति मूल, द्वक्तविमाहि পরা বিদ্যা ; "যয়া তদকর্মপিপমাতে" বাহার বারা সেই অক্ষর পুরুষকে জান। যায়।

এ দেশের লোকের এই একটা সংস্কার আছে, বেন ভারত কর্ষে কথনই মডের পরিকর্ত্তন হয় নাই; কিন্তু ৰাস্তবিক এ সংস্কার অভীব অমুলক। ''ভতাহপরাক্তেগুদোযকুকেদঃ সাম্তরদোহথক্তেদঃ শিক। কম্পো ব্যাকরণং নিরুক্তণ ছদ্দে। ব্রোভি-ৰ্মিভি। অথ প্রাষ্য়াভদকর্ম্বিগ্যাভে''। कर्णम यक्रुर्र्सम नाम रवम अवसं रवम भिका कला वाकित्रभ निकास इन्ह स्वाः छिय, य अगूमश व्यद्धि है विमा। वाहात चाता व्यक्त शूक्रमक काम। बाग्न. ভाষাই (अर्थ विमा। भूतं कात देविषक ভारबत् যে কভ পরিবর্ত্ত হইয়াছিল, ভাষা মুওক উপনি-यरमञ्ज धङ बारकारक रे कान। बाहेरक छ। झेचरत्र सम्बद्धिकीय द्रांटका श्रीवर्स्ड इट्टेंटवरे इटेंटव। स्व সময়ে আত্ম-জ্ঞানের ও ব্রহ্ম-জ্ঞানের জিজ্ঞান। श्रीमाहिल, त्र ममत्ता देवनिक कर्मा-काटखद छेश्रद অনেকেরই অপ্রজা হইয়াচিল; তথ্য আর ইঞ্চ মিত বরণ প্রভৃতির উপাসনা ছারা তাঁহাদের স-নের তুর্ত্তি ইইত না। এক সময়ে বৈদিক মতা পরমোৎকৃষ্ট ও বেদোন্ড যাগ যক্ত নিভান্ত 🖼 नूरकेश बनिशा नकरनंत्र त्वाध हिन, भरत छभनि-वरम् त मभरत प्रमिट्ड शास्त्रा यात्र उरकारमञ्ज জানবান্ পণ্ডিতের৷ বেদোক্ত কিয়া-কল্লাপে পু-र्बत नाव जनारान् हिलन ना। अञ्चल ही-হারা কক্যজুং দাম প্রভৃতি সমুদ্দ বেদকে নি-कृषे विमा, क्वत उम्म-विमारकरे शता विमा विनिया व्यक्तिभन कतिया नियादक्त । त्वरमञ्ज सर्वा নংহিভার পর ব্রাহ্মণ, ব্রাহ্মণের ভোগ ভাগ नियम् त्य नगरम् आविक् छ इहेन, तम नमग्रकाम् পরিবর্তন অপা পরিবর্তন নছে। উপানিবদেই

বৈদিক কর্মা-কাণ্ডের নিন্দা-কাছ , আবছে । পার্কা-হোতে অচুচাবক্ররণা অটাদনো জনবরং বেছু কর্মা এডকে রো বেই ভিনন্দান্ত সূচাকরামুভ্যান্তে পুর-রেব' পয়ন্তি'। এই কছ-রূপ অঞ্জেষ্ঠ কর্মা-নকর অ-স্থামী ও অনুচ, মাহা অটাদশ ক্ষিক্ ছারা সম্পন্ন হয়; যে মুচ্চেরা ইহাকে গ্রেম বলিয়া অভিনন্দন করে, ভাহার। পুনঃ পুনঃ জরামৃত্যুকে প্রাপ্ত

रेविनिक समस्यत स्थित। जेबातरक स्काल नाहा বিষয়ে দেখিতেল, উপনিষদের সময়ে ভাঁহারা ভাঁহাকে আয়াতে অনুসন্ধান করিতে শিকাক-রিয়াছিলেন। যত দিন প্যা**স্ত ভাহারদের বা**-হিরেভেই মনের অভিনিবেশ ছিল, ভভ দিন তাঁ-হারা ঈশবের দীপামান মঙ্গল ভাবকে খণ্ড-খণ্ড-কপে দেখিয়াই তৃপ্ত হইতেন। ভাঁহারা নবীন নেত্রে অগ্নির আভা, ভূর্বেরে প্রভা, উহার সৌ-স্দর্যা, মেঘের কান্তি দেখিয়া হর্বে উংফ্রেও আন-महर्षा भाषिक वहेरकम अवः नेमात्रत साथै मकल অন্তভ কার্যোর মধ্যে ঈশ্বকেই প্রভাক্ষ করিভেন। অন্ত ঈশ্বরটে পরিমিত ভাবে সকলেতেই দে থিজেন। ভাঁহার। অগ্নির অধিদেবভাকে শ্বভম্ব দেখিত্যন, বাঘর অধিনেবতাকে সভক্ত দেখিভেন, নেংখন আপ্রেবভাকে স্বভন্ত দেখিভেন্। বেমন্ রাজপুরুযদিগের এক এক বিষয়ে অধিকার থাকে, তেমনি উলহার৷ প্রভোক দেবভার এক এক বি-যয়ে অধিকার মনে করিজেন। যিনি ভ্রিভ ধ-রাকে জল সিঞ্চন স্থারা তৃপ্র করেন, তাঁহার বায় সঞ্চালনের উপর কোন অধিকার নাই। যিনি मभीद्राग्द्र माध्या थाकिया मभीद्रगत्क द्रश्चद्रग करद्रमः, ভাঁহার সমুদ্রের উপর কোন কর্ত্ত নাই। যিনি সমুদ্রের ভরঙ্গ-কোলাহলে বিরাফ করেম, ভিমি नमोत नहतीर ख की ए। करतन ना। यिनि कारमत অপিষ্ঠাতী নেবভা, ভিনি ধন পানের নহেন। এই প্রকারে পূর্ব্ব কালে উভার। সেই এক ঈশরতে মানা ভাবে পূজা করিভেন। ভাঁহারা অথও সফিদানন্দ পরব্রহ্মকে পুথক্ পুথক্ দেবতা-রূপে পরিমিত ভাবে ভার্জন। করিভেন। ভাঁহার। ক-বিভারণে রুশান্তিভ ক্দরে জাগ্লি বার্ , আদিভো नेश्वरतत कोवल भक्षण-भृष्टि आह्राभ कृतिया म-দ্যুতে সাধুভাবে ভাঁছারদের প্রজা করিভেন। প্র-তের নিমিত্তে, পশুর নিমিত্তে শক্তিদিপের, উপুরে अप-लाट्डब निर्मिदक नेपादब निकटके जिल्लाहरण्य "वार्वि । छिन । मरमाद्वत भटक भटक छै| छात्र जिल्ला इ এবা ভাজ প্রবাহিত হইড, সংসারের অন্তীত व्यम् । भारम उपराद्य व्यामा उपन्य विश्वकार्य

त्यमन कर्रास्ट ने बरहर ने का सन । आकृष्ण

शाम, त्यमि स्पन्न हरेत्वक शास व्याचक कवित र्य। क्षाप्तरक बीचितक निकासिक वरेना कार्य-इत्मत निकरके मेखारक केला कतिया खेलाने करते। जान व जांव श्रेडलात श्रेडलात्कान मानावा कर्याः জ্ঞান অধিক হইলে ভাবকে পরিভুদ্ধ করে, জ্ঞার अधिक रहेरत सामादेक नगुक्क करहे । शृथियोह भागिम व्यवस्थात्र खाटमञ्ज छ्रिता, व्यक्तिक विश्व मान ক্ষমই বাছবা রূপে কার্যা করিত। ভারত বর্মের পূৰ্বতন কৰিয়া আবাৰ আজি-ছায় দিখাই ইশ্ব-রের মঙ্গলা ভাষা দেখিতেন া ভৌতারদের দর্শ क्षारम नकति की तस छ। एवं आका भिक्त के हैं के । আমরা বেমন কুর্যাকে অচেতন দেখি, ভাঁছারা डाशांदक टम करना दर्भाष्ट्रकम मा। स्था तथम कीवल शुक्रम, निनि भीग्न हैकारण किन्नगं सामः क-রিয়া জগতের মঙ্গল সাধন করিভে**ছেন** ৷ "আদ্রা বেমন মেঘকে বাস্প্রাশি বলিয়া ভাহাতে ঈশ্রের कोशन डेलनका कति, डीशना व्ययक दम श्रकादन দেখিতেন না; ভাঁগারা গন্ধীর বজু বিস্থাতের মধ্যে স্তান্তিত হইয়া বায়ু-চালিত মেৰে জীবন আৱেশপ করিডেন, মেঘ বেন জানিয়া শুনিয়া জাল বর্ষণে भिनिमोदक भी जल क्रिट्खंटछ । देवनिक क्षेत्रिका ভত্ত-জ্ঞান অভাবে কেবল জ্দন্যের ভাবে এই এ-কারে কশ্পিত দেবতার পূজা করিতে**ন। ভীছার**। সেই সকল দেবভাদিগের ভৃত্তির জনা ঋণে দ হইতে স্থোত্ৰ পাঠ বজ্ঞান প্ৰণীত বাগ বজের অনুষ্ঠান এবং গাম বেদের মঙ্গীত ছারা উছিরেদের পুজা করিতেন। পরে বধন তাঁহারা বাহিছের বিষয় হইতে ইভিনয়দিগকে, শিক্কত্ত করিয়া শীয় অংথাকে দেখিতে পাইলেন, তথ্য সেই আতার নজে পরমাত্মার যোগ বুঝিতে পারিলেন—সেই अविभ विमास-विकादनव आत्नाहना आहु इरेन। व्यक्तिक जाचा भक्त व्यम विद्रम, छेशनियम ভেমনি আগাত্মিক বিদ্যাতে পরিপূর্ব। বাহিরের বিষয় বেমন খণ্ড খণ্ড, অন্তরের আত্মা জেমনি अथेखा वाहिएतत विषय देविषय मन यक मिन निविक्ते हिन, वर्ष मिन छै। हात्रा आधारक दम्बिट्ड পান নাই; ডড দিন সুৰ্যা অগ্নি বায়ু আন্ধৃতি সুষ্ট বস্তুতে ইশরের মঙ্গল ভাবের আর্চনা করিভেন। যথন তাঁহারা আগ্নাকে অস্তর্যুক্তি ছারা দেখিতে भाहेरनम, एवन छ।हारक अवहे समिस्नम। छै।-হারা আমি বলিয়া বাহাতে লানিলেন, ভাহা ক-थनरे हरे नरह; जामि अकरे। तिरे जासात अद्धद आवार गर्यन **शहमायादक एवं विद्राम, कर्यन**े मकरनद्र अवर्गमी मेगद्रक अकर अविकीत विविधा क्षामिटलन। जनन कमिनिटलई काइन हरिक al महावाका जिल्लाहिक स्ट्रेंज के नवस्ताहर शुक्रत्य वन्त्र वाचावावावाचा म अवत् !! (देखा ब्यार्ट्स)

लिहरू । त्यरे धेरे विति शुक्रात, धेरे देव है विति आविएका, किति धेरे। धेरे खेलादि कादम कादम दान दिन है देव खेलादि कादम कादम दिन है देव खेलादि कादम है है कि स्वाप धेरे कावल शुक्रात्व खाम धेरे कावल वर्ष खानिक है है म

জান্তি পুরা কালে ভারত কর্বে বৈদিক ধর্মের व्यादनाच्या व्यात् इहेब्रा त्यहे ख्व व्हेट डेशन-वरम्त्र नमदम् देव कि कत्र कतियादछ, छारा এই न्युटका नुसा बाहिट्डिट्ड। "मर्यकावः शुक्रस्य सम्हा-• লাবাদিত্তা ল একঃ।^{প্রে} সেই এই যিনি পুরুষে এই দেই বিনি আদিতে জিনি এক ট বিনি আমার এই আত্মাতে আছেন, তিনি মেই সুর্গেতে আ-ছেন, ডিনি এক। সুর্গোর অধিদেবতা ভিন্ন আরু আত্মার স্থিদেরতা ভিষ, এমত নহে: কিন্তু বিনি সেই ভূর্যোর অন্তর্যামী, ও বিনি এই আহাার অন্তর্যামী, ভিনি একই। ''একো বশী সর্বা ভভা-ন্তরাত্মা" ডিনি এক, সকলের ষশী এবং সর্বা ভূতের অস্তরাত্মা। ভারত ভ্নির ধর্ম বীজ এই দেশের দোকের যড়েই প্রক্তিত হইয়াছিল, অন্য रमरमञ्जल मिश्रम द्वारा इय नाहे। जेशद्ररक শ্বীয় আড়োতে দেখ, ইহা উপনিদদের আদেশ। "এক্ষেৰাছভীয়ং" উপনিষ্দেই প্ৰকাশিত হই-য়াছিল: এন্দোর যে অনস্ত মঙ্গলা ভার, সে উপনি-यरमञ्जू ভाব। "मखार खानमनस्र जन्म" धीरे लंक नर्क खान वहारक धारे कारन स महानाटन नकरणत कर्ष प्रारम्भ कतिएडएइ, हेड्। अना काम ক্ষাতির আশ্রেয়ে উৎপর হয় নাই। যে গর্মোর ভাব ভারত ভ্মিতে নিহিত ছিল, তাহাই আলো-চনা ভারা প্রকৃটিভ হইয়াছে। যথন ঋষিয়া व्यक्तिकाम हदेश " अक्टमवाद्वीय: " এই वाका উচ্চারণ করিলেন, তথন এই ভারত বর্ষের দৌভাগ্য ৰলিভে হইবে। ভাঁহারা পরব্রহ্মকে অখণ্ড-স-किमानम-क्रांभ आंख हरेगा कान-कृत हरेकन। '' সং প্রাইপানমূৰখোঞ্জান কুপ্তাঃ কুতা আনোবী-ভরাগাঃ,প্রশাদ্ধাঃ। ^{১১}, কিন্তু তথ্নকার ভয়কর ज्ञकान-कननाइक लाक-नमारकत करका प्रिया छै। होत्री माधातर्गेत मरधा रम छान्। ध्वाना कतिरक उरमाही इरेटलन ना । .. डीहाता भारे नामक्रमा छ।-প্ৰ করিলেন। যাহার। ঘহী থাকিবে ভাহার। যাগ যজ ফিয়া-কলালে পরিষিত দেবভার উপাসনা बाह्य नम्य बालन क्रिट्टक । कि कुर्वदम्बद्ध क-क्तिति किकीविटक्ष्यक् तमाहः। अवर क्षि माना-त्त्रदेशिक म कर्मा निलाहक मद्दा । (बाक्रमदम्ब-मश्रदाकानाम) हैर कार्ट सांसे वस्तानि कर्य-तकत अपनेति कहे व्यक्त विशेष शाबित्व हेव। बहितक। अ अवाह राज्यात पुरि PINICS STRICT WAS SEE FOR A SERVICE

আর অকারান্তর নাই। শাঁহারা এক্স-জান লগত করিবেন, তাঁহারা সংসার পরিভাগে করিবা অরপ্রেন প্রতিগাল করিবা অরপ্রেন প্রতিগাল করিবা সনাতে রভ থাকিবেন। '' তে হ ক্ম পুর্বৈষণায়াক্ষ্য বিভিন্ন গাঁহারা বেক্ষ্য প্রতিষ্ঠা চরতির।' (রহদারণাকোপনিষদ) যাঁহারা বেক্ষকে আনিয়াছেন, তাঁহারা পুত্-কামনা, বিভ-কামনা ও লোক-কামনা হইতে নির্ভ হইয়া ভিক্ষাহ্যা অবশ্লহন করেন।

व्य काटन उपनियदम्त्र ताका चाह्य हरेन, नेपद्रकृष्याम आविक्ष कहेत. त कारत अभा लारकरे खारा कानिवाद उभयुक फिलम। मार्था-त्रांश्व यापा रमें छ्वान ध्वातमें कतिएक शादिल मा, কত্তিপয় উন্নত-ভাৰ-বিশিক্ত লোকেই উপনিষদের যশ্ম গ্রহণ করিলেন। খাঁছার। সমুদায় সমাজের एए।- बक्रम, डीशांद्रप्रदेशे मर्गा छार्। मन्द्र दहिल । জন-সমাজের সেই নিবিড় অন্ধকার ভেদ করিয়া জ্ঞান-সূর্য্য প্রবেশ করিছে পারিল না ৰাসী সম্যাসীরাই উপনিয়দের অধিকারী হটলেন। मांभाद्रांत्र मध्या स्मन यात्र यक श्राह्मक दिन, ভাহাই থাকিল। মুত্রাৎ উপনিষদের দারা লাধারণের যে উপকার হওয়া, ভাঁচা হইল না। ঘাঁহারা উপনিষদের অধিকারী হইলেন, উভারা বরং বিবাদ ভঞ্জনের নিমিক সামগ্রস্য ভাগান ক-রিলেন। ধাহারা একমেরাদ্বিতীয়ং প্রস্থাকে না জানিবে, তাহার। যাগ বঞ করুক। হারা সভা জানিতেছে, ভাহারা নেমন ভাহা কি প্রকারে প্রচার করিবে, ভাবিয়া ভাকুল হয় ; ভা-হারদের সে উৎদাহ ছিল না। তাঁহারা মতা লাভ করিয়া আপনারাই তৃপ্ত হইছেন, আপনারাই ঈশ্বরের গাান ধারণায় নিযুক্ত থাকিতেন। এই क्रमा উপনিষদের নাম আরেণ্যক । ইহা অরণ্যের ফল, গৃহী বাজির ইহাতে অধিকার নাই। আ-মরা বে সকল মতা দেখিয়া আশ্চর্যা হইভেছি, সেইটি উছোরা অতি যত্নে সাধারণ লোকের নিকট ছইতে রক্ষা করিতেন। উপানিষদ কেবল ভারণো ৰ্ষিয়াই পড়িতে হইবে, গুহুত্বের অব্লে ডাই৷ প-ড়িতে নাই। ''সরণো ভদধীয়ীত" (সামুনাচার্চ্চা পুত) অর্ণো ভাষা পড়িবেড। জনশুনা হি-মালয়ের চৃড়াভে রত্বর্জি নিহিত থাকিলে, **হে** क्रण इष, मनामीमिटगत इटल्ड केलिमिटमन सम्ब व्यक्ति कार किल। এक नमत्य अधिता बाद्य बिंब-য়ের শোভা সৌন্দর্য্যে অভিভূত ছিলেন, স্বায় আদিতাকেই পূজা করিভেন, বাহ্যিক আদৃদ্ধ দ্বারা ঈশবের প্রতি ভক্তি প্রকাশ করিছেন। करम करम छै। हात्रा बाह्य विवय हहेटल श्राहित्त्र हु हरेया अवह कि बाबा और आसारक नहा बक्क পারনার্যাকে দেখিলেন, কিছু ব হারা সেই কভা জানিলেন, ভাষা তীহারদেরই মধ্যে আকার হিল। আনরা এখন সেই দ্রেজ-জান ধারা সমু-দায় সংসারকে তেন করিয়া ব্রেজের পভাষা উ-ড্রীন করিতে চেটা করিডেছি।

म्बर्ध व्यक्तिय कान क्ष्रेद्ध व कान शर्याह देव-पिक धर्मा करम **उन्न**ड दहेगा जान्मधर्मा करले था-কাশিত হইয়াছে। পূর্ব্য পুরুষদিগের অধিকারে व्यामता व्यथिकाती, वह व्यामात्रस्य मोचामा। ভারত কর্ষে পর্যোর কাঠা-ভাষ। এখানকার প্র-पर शक् रहम ; काहा धरमीत कमा, हेमरहत कमा, অর্থ-কির্ণের ন্যায় উবিত হইয়াছিল; ভাহা হইতেই কমে কমে জান রূপ সূর্গের প্রভা আ-মারদের ক্ষাতাতে প্রকাশিত হইতেছে। সেই ध्रुव। कारणत श्रुक्त श्रुक्तयितात्र त्वरमत मधा इंडेर्ड যে সকল সভা পাইভেছি, ভাহা অতীব আদরণীয়। পূর্ব্ব পুরুবদিগের পরিশ্রেম আমরা বার্ধ করিতে চাহি না ; উহারদিগের পরিপ্রমের ফলের আ-মরা অধিকারী, ভাহ। আমরা এহণ করিষ। আ। মরা কিছু স্তন ধর্ম প্রচার করিতেছি না। তির কলি ইইতে যে ধর্ম উল্লভ ইইয়া চলিয়া আ সিভেডে, তাহাই ব্রাহ্ম ধর্ম। ক্ল্যোভিবিদ্যা কি আজি প্ৰকাশিত হইল ? না চিকিংসা-বিদ্যা श्रांक रहिंछ रहेन ? हिंद कानहे या विभाग हिन्सी আসিভেছে, ভাহাই উন্নত ভাবে অদা দণ্ডায়মান হইয়াছে। তেমনি ভারত ভূমিতে যে ধর্মা চির কাল চলিয়া আসিভেচে, ভাষাই আজ উন্নত হইয়া ত্রাক্ষধর্ম নামে পরিণত হইয়াছে। আ-মরা কি পূর্মকার আচার্গাদিগতে পরিকাণে ক-রিরা আপনারদের জয় হোষণা করিতেচি ? আ-ৰরা আরো নভ হইরা বলিভেছি যে বদি উপনি-বদের মধ্যে এমন স্থায়ি মহাবাক্য সকল না পা-ইতাম, ভাষা হইলে ব্রাক্ষধন্মের এ অকার আ-গাাঘাক উন্নত ভাব হইতে পারিভন।। এফ नगरः जैसद गडा ध्यकानं कदिग्रास्त्रम, चाद धक नगरप करत्रन नाहै, धमन रका नरह। धहै পুৰিবীর অবস্থানুসারে ভিনি চির কাল সভা এ-কাশ করিয়া আসিতেছেন। প্রথিবীর উদ্ভিত্তর महामान भरमात्र । एमलि इहेरलाइ। दक्ष्म दान हरेए व डाकाधार्मात महाया भारे एक हि, अमस्मा भटर . नक्य जान हटेट में होया शाहित्वहा यक धर्म कारह, मक्त धर्म इदेख माहांग शाहिश कोशहरमत छेशहत जाकाममा ऋशिक इहेशाएछ। বেদেতে পরিমিত দেবভার উপাসরা ছিল্ উপা-नियम धकरमवाचित्रीग्रस्य जिलागमा रवेदल च-ताला अंतरण रहेल, धर्मन स्मेह केलीमना जिनाबुद প্রসাদে প্রতি গৃহে প্রতিতিত করা ইইডেছে।

स्ति त्मिष्य शृक्ष कात्मक स्वित्रा मेखा स्वित्र क्षेत्र रहेशाहित्मम, त्मेरे स्वत्रम्य स्वत्रम्य स्वत्रम्य रक्षम क्षिमा स्वत्रक्ष मेखानिक्षम स्वत्रम्य क्षेत्रस्य स्टेटन, धारे स्वामात्रत्मक सक्तम्य । निक्किमाखा वि-धाला स्वामात्रत्मक धारे मध्यम्य निक्क स्वत्रम्य

रमगन यनि मध्या कार्य हरेटा स्पूर्क उद्योत করিতে হয়, ব্রম্মি বেদ বৈদান্ত মহাজারত শু-রাগ হইতে রত্ব বাছিয়া ক্রিডে ছইবে। রক্ষা বে গ্রহণ করিজে হইবে ভাষাত সহয়; সকলিংগ পরিভাগ করিতে হইবে, ভাষাত নতে। বেদ विमास मराजातजानि भूकंडण भाष-मक्न जात्ना-চনা করিলে দেখিতে পাই, থার্মের সকল ওপ্তই ভাষতে ইতন্তঃ বিকিপ্ত হইয়া বহিনাছে। স্থা-বার যেমন ভারত ভৃষিতে সকল প্রকার পুস্তক অপেকা ধর্মের পুক্তক অধিক, তেমনি প্রতি জনের ভাব আলোচন। করিয়া দেখিলে খর্মের ভাব অধিক দেশিতে পাই। আমরা বদি দেশীয় ধর্মা ভার রক্ষা করিয়া দেশের উরতি লাগন করি, जाहा हरेताहे प्रत्नेत्र मक्त हरेताः यमि प्यका प्र-শের আমুরিক ভাব এ দেশে আরোপ করিতে ধাই, তাহা হইলে দিন দিন আরো ইচার অধোণভিই হইবে। ভদ্রভাবিনয় প্রীতি দয়া প্রভৃতি হাদ-বের ভাব বত আমারদের মধ্যে নিহিত আছে, এমত আর কোন দেশেই নাই। আমারদের বে দকল সভ্যভার ভাব, পৰিত্রভার ভাব, ভাহা রক্ষা করিয়া যদি আপনার্মিগকে উন্নত্ত করিবার অভি-লাব করি, ভালা হইলেই আমরা ক্রডকার্য হইব। जना त्मरणंत्र छात । त्मरणं चार्त्रां भगं नं क्रिया ष्याभागतत्ववर क्षारयव मध्य छाटव देशास्त्र छ-मक क्य, नर्स ध्यक्तित स्मामंत्र महल व्हेरव । अ-থিনীর মধ্যে বল ভূমির প্রতি নকলেরই জনাদর, वेदादक देकहरे आनंत करत ना। यमि मेखा भरमी ইছাকে উমত্ত করিতে পারি, বদি ক্রার-প্রসাদে ব্রাহ্মধর্মা এখানে সুপ্রতিষ্ঠিত হয়, ভবে এই বস ভূমি আবার সকলেরই আদরণীয় হইবে,টালচ-क्ष रह छड विश्वकत वस्तानीता दिलामता कर ব্রাহ্মধর্মতে অবহেলা করিও না, এই প্রিফ ব্রাহ্ম ধর্মকে অবহেলা করিও না।

DISCOURSE

AGAINST'

ERO-MAKING IN RELIGION.

For more than twenty years we have been made familiar with the phrase Hero-Worship. It has been applied not only in the regions of politics and literature, but in religion, as the phrase itself strictly claims. We have been told, from very opposite quarters that the excellence, as well as the characteristic that the excellence, as well as the characteristic that the excellence of the excel We have been told, from very opposite cristic, of the Christian religion turns on its venorating a personal here in Jesus of Nazareth. Many whe egard flests as a more man, yet insist upon inscribing themselves his servants and followers, and on so wedding their honour for him with their adorstion to God most high, as systematically to incorporate the two. Nay, some who utterly disown allegiance to Jesus—who think him to have taught many things erroneously, and to have had nothing supernatural in his character, in his powers, in his knowledge, in his virtue, in his birth, or in his compounications with God—still maintain that he is fitty called the Regenerator of mankind, and ought to receive-I know not what, acknowledgement-us our Saviour. It appears then not superfluous to bestow a little space on the treatment of this question.

I need hardly observe that personal qualities alone in to case constitute a hero. Action and success must be added; and action cannot succeed until the times are upe. No one knows this better than the True hero. True genius is modest in self-appreciation and is fully awars how many other men could have schieved the same results if the same vare conjuncture of circumstances had presented itself to them Men of genius are fewer than common men, but they are no accident. God has provided for their regular and continuous recurrence; their birth is ordinary and certain in every nation which is counted by millions. The same is true in every firm: of mental pre-eminence, whether capacity for leadership, or genius for science, or religious and moral susceptibility. Religiou, separate from morals, is, of course, only fanaticism. We venerate ruligion only when built upon pure morals. Mural religion is notoriously a historic growth. and has depended on traditional culture at least as much as what is specially called science; and its progress is not more wayward and arbitrary than that of sciouce, if the whole of human history be surveyed. The present is ever growing out of the past, with a vigour and a certainty which never allow the fortunes of the race to be seriously dependent on any individual. Each of us is, morally as well as physically, a hirth out of antecedents. From childhood we are tubered in right and wrong, not only by professed beachers, but by all cider persons who are around us. Improper deeds or words of a child are reproved by a servant, or by an elder brother, or even by a stranger, as well as by a parent or a pricet. We imbibe moral sentiment, as parent or a pricet, we immos moral sentiment, as it were at every rose of our moral nature; nor do we often know from whom we learned to abhor this course of certains and to love that. Hence no wise men will stain originality for his moral judgments or religious sentiments. A foolish dogma, a fanciful tenet, may easily be original; but a pure sound truth is more likely to have been ofd. To prove its morally is moralided and certainly could not recomnovelty is impossible, and certainly osuld not recom-

mand it; on the contrary, the older we can prese to have been the greater its estensible authority. For these reasons, in the theory of morals and religion, a claim of originality can seldom or never be surfaired; in this whole field the question is less what a true has taught, than what he has persuaded others. Hundreds of us may have said, truly and wisely to It is a great pity that Mahomedans, Jaws, and Christians of every sect will not unlearn their dissensions, and Llend into one religious community.' The sentiment must once have been even new; yet its atterance could never have earned praise and distinction. But if any one devoted his life to bring about such union, and succeeded in it, we should undoubtedly regard him as a moral hero; though (as just said) no one could succeed, until the fulness of time arrived and the crisis was seized

judiciously.

Thus, in discussing the claims put forth for special and indeed exclusive honour to the name of Jeria we have to consider, not so much what he said, or is said to have said, as what he effected, what impression he actually produced by his life and teaching; what great, noble, abiding a sults his energies originated and bequeathed. The moment we ask, What are the facts? we seem to be plunged into waves of most uncertain controversy; info discussions of literature unsuitable for short oral treatment. Yet, before the present audience, I may with full propriety claim as admitted that which greatly clears our way I presume you to know familiarly, that the picture of Jesus in the fourth gospel is essentially irreconcilable with that in the three which precede, and is neither trustworthy nor credible. The three first gospels, taken by themselves, do present a character, a moral picture, sufficiently celf-consistent and in telligible to reason about. But our present question (allow me carefully to maist) is nor, Do we see in Josus a remarkable man, a gifted peasant, a dogmetist by whom we may profit, whose noble sentiments we may admire or appland? but rather, Do we find one who dwarfs all others before and after lami? one to whose high superiority sages and prophets must bow; before whom it is reacoughle and healthful for those who have a hundredfold of his knowledge and breadth of thought to take the place of little children? Or, at least, Mas Europe and the world (as a fact) learned from him what it was not likely to learn without him? Is that THUE which is dinned into our ears, that Christendom has on bibed from him a pure spectual, large-hearted, uni-versal religion, adapted to man as more, cereorting mankind as a family and empobling the individual by a new and living Spirit, waknown to the philosophies, unknown to the priesthoods, untaught by the prophets, before him?

Even if we had no insight, as to the comparative value of the several grapels, one broad certainty affords solid ground to plant the foot upon. The positive institutions and active spirit of the first Christana church are notorious and indubitable. learning what the Apostles established in their Master's name within a few weeks of his death, we know with full certainty what they had understood him to teach, what impression he actually produced, what was the real not result of his life and preach. ing and this, in fact, is our main question. Now. it is true beyond dispulse-it is conveded by every sect of Christians—that in the first Christian church the Levitical ceremonies were maintained with scalous rigour, and that its only visible religious peculiarity consisted in community of goods. The candidate for baptism professed no other creed buff

that deans was Messiah and the obsciones of the discrete to the Masiar was practically manifested in the sudden renunciation of private projectly. This ordinance was not, in theory, compaisors, but, while the fervour of faith was near it was enforced by the public opinion of the church as sharply, as to tempt the richer disciples to hypocriss. The story of Ananias and Sapphira is full of instruction. They did not wish to alignate all their goods though the did not wish to alienate all their goods, though they were willing to be very liberal. In deference to the prevailing sentiment, they sold property and gave largely to the church; yet were guilty of keeping back a part for themselves secretly. For this fraud (according to the legend) they were both struck dead at the voice of Peter! Such a legend could not have arison, except in a church which regarded absolute Communism as the characteristic Christian virtue. Higher proof is not needed that Jesus established this duty as the touchstone of discipleship; has, in fast, the account in the three gospels tallies herewith perfectly. Jesus there mourns over a rich young man, as refusing the law of ren-FECTION because he hesitates to cell all his goods, give them; to the poor, and become a mendicant friar. When his des cles, commenting on the young man's failure to fulfil the test, say: "Lo" we have left all and followed thee, what shall we have therefore?" dosus in reply promises, that, in reward for having sacrificed to him the gains of their industry and abandoning their polatives, they shall sit upon thrones, and judge the twelve tribes of Israel passing I remark, that the idea of such a reward for such a deed is shocking to a Paulin Christian)

. ar 17 19 19 48 47 2 48 1 2 3 48 1 5 1 m.

The Jerusalest church was, alone of all churches, founded by the chosen representatives of Jesus on the doctrine of Jesus himself, while the remembrance of that doctrine was fresh. It was a special community, not unlike a 'religious order' of modern Europe; and could not be discriminated, by Jews any more than by Romans, from a Jewish sect. In the next century, those who seem to have been its direct successors were called Ebionite heretics by the Gentile Christians When Paul, who estentiatiously refused to learn anything from the actual heavers of Jerus, had put forth what he calls "his own" gospol namely, "the mystery that Gentiles were to be fellow-heirs" without Levitiosl purity - he brought on himself animosity and violent opposition from the Christians of forusalem, who were the historical fruit of Jesus' own planting. When Paul was in Jerusalem, one of the leaders called his attention to the fact that while many thousands of Jews were believers, they were " all zealous of the law;" he therefore advised hun to pacify their misgivings and suspicions of him, by performing publicly certain Judaical coromonies. l'aul obeyed him: nevertheless, no such conformities could atone for his offence in teaching that Gentiles, white free from the law, were equal to the lows before God; and Paul to his last day uxperienced enmity from the zealous members of that whereh. His relations to the other Apostles we know by his own account to have been certainly cold: the serms to be personally pointed at in the Epistle of James, as " s vam man," who presches faith without works; while he himself (as he tells us) publicly attacked Peter at Antioch as a dissembler and weak truckler to Jerusalem bigotry. When, from tirst to last, the doctrino of the church at Jorusalem was stormly Levitical, it is quite incredible that Jesus over taught his disciples the religious mullity of Levitical ceremonies and the equality of Goutiles with Jews before God. But

why need I array about this when it is distinctly clear on the 1000 of the naviative, in the 1000 of the naviative, in the 1000 of Acts the idea that "Bod is no respective persons"—or of national breaks upon the suid of Peter as a new relation, and is said to have been imparted by a special vision. It is not present that Jesus had taught it; nor does Paul, in any of his controversice against Judaism, dare to appeal to the authority and doctrine of the earthly Jesus as on his side. In fact, in the Sermon on the Mount, as also in a passage of Luke (xvr. 17), fesus declares that he is not come to destroy the law; and that "Rather shall heaven and earth has away, than shall one tittle of the law, fail." I am, of course, aware that Christian theologians would have us believe that luke is here defective, and that the words in Matthew, "Until all be fulfilled," mean "Until my death shall fulfil all the types." But this would make Jesus purposely to deceive his disciples by a riddle. This is indeed worse than triffing, and a gratuitous imputation on the teacher's truthfulness. He must have known how he was understood. They supposed him to mean that Levitism was eternal; and he did not correct the inquestion. It was then the very impression which he designed to make simply and truthfully; and the disciples, one and all, rightly understood him, and knew it well.

The verse which follows in Matthew clenches the areament, although (I see I must in candour add) I do not believe that Jeans spoke it in maetly this form. Nevertheless, it emphatically shows how the writer interpreted the verse preceding has no makes Jesus to add. "Wherefore, who soever shall break one of these least commandments. and shall teach me so, he shall be called the least in the kingdom of heaven but whosoever shall do and teach them, the same shall be called great in the kingdom of heaven." I find myself unable to doubt that these words were written to mean : "Wherefore, one like Pun!, who breaks the Levitical ceremonies, and teaches the Gentiles to break then, is least in my kingdom; but James, and the Apostles in Jerusalem, who do and teach them, are great in my kingdom." The intensity of feeling on this subject was such, that the Jewish Christians easily believed Jesus to have prophetically warned them against Paul's error. Be this as it may, the formula, " break one of these least conmandmenta, and teach men to break it." is in contrast to "fulfilling the law," and distinctly shows that " fulfilling the law" refers to doing and enforcing even the least commandments

The Jerusalem church was the product (and as in as we know, the only direct product) of the teachings of Jerus. Of its sentiment we have an interesting exhibition in the epistle of James; in whom we see a high and severe moralist, pure and exacting, full of righteous indignation against the oppression of the poor by the rich, and against all haughtiness of wealth. He does not treat all private property as unchristian that only large property. Evidently no rich man opuld have seemed venerable to the chief saints in that Church. He assumes the goalt of all rich men, and announces missey about one on thom, as does Jesus in the parable of Lazarus; nevertheless, in him all the harshest parts of Jesus' precepts have been softened by the trial of practical life. In fact, this opistle is much in the tone of the very noblest of the Mebasis prophets. As with them, so in him, the moral element is wholly predominant, and authing core monial obtraces itself. New what is really ac-

marketle, he calls his doctrine the perfect law of liberty; so little did those gerenouses oppress him to which from childhood he had been accustomed. Let due honour be given to this specimen of the first and only genuine Christianity; yet it is difficult to find anything that morally distinguishes it from the teachings of an Isaiah or a Joel. There is certainly a diversity for the political elements of thought have disappeared, which under the Hebrew monarchy were prominent. The great day of the Lord was no longer expected to glorify the royalty of Terusalem and its national laws; and in this diversity lay the germ of great changes.

It would be absurd to censure an epistle because it is that a ritual, or to demand in it the fervours of spirituality found in this or that pealm. Nevertheless, in the present connection. I must claim attention to the fact that neither the three Gospels nor the epistic of James have ever been in high favour with that Calvinistic or Augustinian school which most nearly represents Paul to the moderns. To oring out the argument in hand more clearly, allow me to make a short digression. Morality requires both action and sentiment. No reasonable teacher can undervalue either: yet some moral teachers ress more on action, and are said to preach duty and rock, and even make a duty of sentiment, laying town as a command that we shall love God, love our neighbours, love not ease, love not self. Other eachers endeavour to exerte, foster, and develop just entiment, and trust that it will generate just acion, possibly they even run into the error of shansing definite instruction as to what action is good. finite and one-sided as we are, two schools naturally row up among terehers, who may be classed as the reachers of duty and the preachers or sentiment: ut perhaps, if the question be distinctly proposed the ablest men of either school, " Do we learn rtion from sentiment, or sentiment from action?" hey would alike reply (as in substance does Aristhe) that both processes necessarily co-exist. From aildhood upward, right action promotes right feelog, and right feeling generates or heightens right tion. There is no real or just collision of the two hools. Nevertheless, as a fact of human history silv explained, the preaching of duty and of outard setion gains everywhere an early and undue scendency, perhaps especially where morals and recion are taught by law, which deals in command id threat. The rule man and the child are substed to rule more or less arbitrary; and it is only aen intellect rises in a nation or in an individual at the spiritual side of morals receives its propormate attention. In Greek history, we know the t in the philosophy of Socrates and Plato. mong the Hebrews, a secular increase of spiritual r in the highest teachers will probably be con-ted by critics of every school to have gone on in the time of the judge Samuel to the writer m whom came the last twenty-soven chapters of iah. The characteristic difference of the Greek i the Hebrew is this: that, however spiritual the eek morality might be, it seldom blended with igion; and (with exceptions perhaps only to be ad under Hebrow influences, as at Alexandria) s moral affections found no place in religion at all, w it has been recoully asserted by a Theist, that s to I nave that we own that regeneration of relip, which makes it begin and grow from within.
is not (it is said) is mare beacher of pure
ies; but his work has been in the heart. He transformed the lies into bine trospel. He has nged the boudage of the then for the liberty of

the sons of God. He was glorified virtue into holiness, religion into piety, and duty into love. Hence it is inforred that "his canfing was to the life of humanity what regorderation is to the life of the individual."

Deep as is my sympathy with the writer from whom I quote, I am constrained to say that every part of the statement appears to me historically incorrect. It does, in the first place, vielent injustice to the Hebrews who preceded Jesus. Did he first "glorify virtue into heliness"? Nay, from the very beginning of Hebraism this was done to least as early as Samuel. Did he first "place" for the 22nd Psalm? In the 63rd? in the 27th? in the 22nd? Nay, I might ask; from what utterance of Jesus can piety be leavned by the man who caunot learn it from the Psalms? Holiness and piety appear to me to have been taught as since. Surely in the religion of the psalmists riety dominated, as much as in Fencion of the psalmists riety dominated, as much as in Fencion of in the poet Cowper. But finally I have to ask, "Did Jesus glerify inty into love"? And, in order to reply, I turn to the three gospels, as containing our best account of what he taught.

A phenomenon there very remarkable is the save. rity with which Jesus enforces as duty the most painful renunciations; and the contempt with which he rejects anything short of manediate obedience to his arbitrary domands. I know not whether the narrators have overcoloured him; but they give us, on the one side, examples of prompt obedience to the command, "Follow me." inst, in Andrew and Peter; next, in James and John; who "immediately left the ship and their father, and followed him This is afterwards praised as highly meritorious On the other side when Jesus says to a man, "Follow me," and receives the reply, "Lord suffer me first to go and burn my father," Jesus reterts. "Let the dead bury their dead, but go thou and preach the kingdom of tind. Another also said, Lord. I will follow thee, but let me first go and but them furewell which are nt home in my house. And Jesus said unto him, No man, having put his hand to the plough and looking lack, is fit for the kingdom of God " The peremptory command to thundon their parents, not bury a dead father and not even say a word of farewell to the living is perhaps a credulous exaggeration of the writer; yet is in close harmony with the whole account, and with the declaration, "He that hateth not his father and mother, and wife and children, cannot be my discrple:" for evidently the following of Jesus, as interpreted and enforced by himself, involved an aban-donment (perhaps to starvation) of these near relatives. It is not my purpose to dwell now on the right or wrong of such precepts but on the imperious tone in which they are unposed from without, not the slightest attempt being made to recommend them to the heart or understanding. Again, in perfect harmony with the same is the reply, already addiced, of Jesus to the rich coming man, who comes to ask. "What shall I do that I may inherit eternal life?" The opportunity was excellent to set forth that no outward actions could

[•] I quote from the striking treatise of my friend Miss-Cobbe, called Broken Lights." The whole protest against M. Renau, of which the words above are the summary, should be read to understand their relation. I am authorized to say that she has not even the remotest wish to make honour to Jesus part of religion: she intended to write as a historian only.

bring eternal life, but that such life was in interior and divine state, to be sought by love and faithful-ness. Instead of spiritual instruction, Jesus gives a crushing arbitrary command: If then wilt be perfect, go, sell that then hast, and give to the poor and thou shalt have treasure in heaven; and come and follow me. Hoes such a teacher build from within by implanting Love? Does he act upon those at all, or rather on selfish ambition. He deals in hard duty and fierce threat; commands too high, and motives too low; thoughts of reward; promises of power; salvation by work; investment of money for returns beyond the grave; prudential adoption of virtue, which may soften judgment, we promotion, deliver from prospective prison and hell fire topics which at best arc elements of Law, as opposed to Gospel. In the opinion of an increasing fraction of the most enlightened Christians, the most noxious element in the popular croed is the internal field; stronghold of this district is in the discourses of Jesus. But what of Fuith? If Paith be a purely spritual movement, which electes to Goodness and Tenth for its own sake, and without regard to selfish interest, it is hard to say in what part of the three gospels it is found. In the mind of desis all actions seem to stand in the closest relation to the thoughts of punishment or reward on a great future day. To . lose one's soul means, to be sentenced when that day shall come, cutting off a sin means, escaping nintillated from a future bell. In a religion practically monided on these discourses, cale latten of white we shall hereafter get by present chedience inheres as a primary essence. The only thith which Jesus extals, is, faith to work innacles, and faith that he is Messah and can work them Inquiry is frowned down and sighed over as unbehef. Power to lorgive rin is claimed by him; and, when this is reproved as impious in a human teacher, the claim is marvellously justified by identifying forgit mess with oure of bodily disease. Add to this the grant of initiaculous powers to the Soventy, and a delization of power to lorgive is made out at which Protestants may well studder. In another place (Lake vii 4,5) Josus declares forgiveness of sm to be carned by personal affection to hin,self; but I am bound to add that, on special* grounds. I do not believe the account.

The narrative in Luke vii 37—50 seems to be an inassurate duplicate of that in Matt. xxvi, 6. Mark xiv. 8, John xii. 3; which nearly agree as to lime and place—viz., it was in Berhan), a little before the last Passover. Muithew and Mark say, it was in the house of Simon the leper: Luke says, of Simon the Pharisco. John calls the woman Mary of Bethany, sater of lazarus and of Martha: looks says, a woman notorious tor sin. I will here remark, that discussion on the behaviour of Joses to woman of ill famo, which is called "delignt" beautiful," "characteristic," &c., uppears to me wholly without basis of fact. Those a healton as bistorical character to the discourses in John will not quote John iv 16—19, nor John viii. 1—11, against this remark: and mething remains but Luke vii. 37—50. the fair imme of Mary Magdaine has been almost by believing this story in Luke, and then the discourse for with the woman.

I will add that many who must know seem to forget, that no fired philosopher—neither an Anaxagoras nor Zone, to say nothing of Socrates. Plato, Aristotle, Chorn, more would ever have this reads or unjust energy towards a woman's fault. If haplish sentiment amotions appear barshagains woman she have made a trade of themselves, is, it not because the which use mainful rothe sinter are more investment, and more partial gious than one which impoverial him.

Loke has fragame parts affect define combine to lesus, and green a two fire gardies which it is secured in that the partition and offers treat, while they retail so many that are fitted process; but even take. I seek in vain for anything estealed by implant in the heart a sense of freedom; to exist willing out vice; or to chemistic spiritual desire, gratisully and tranquil love, careless of other reward than love tranquil love, careless of other revised than love itself. In fact, Luke is sometimes harder than Matthew. Thus in vi. 26, "Blessed by a part for yours is the kingdom of God. Blessed at the fact hanger now, for yo shall be filled. But wor unto you that are rich; for we have realized your consolution. Were unto you that are fully for yo shall hunger. Were unto you that lough upon for ye shall mourn and weep. Be indirectioning and thoughtless are divotees, that such doctring meets with the came theoretic glorification, as the essentially different version of Matthews. "Bissend are the poor in spirit. . Blessed are to who sunger and thirst after rightcounces." If Matthew be correct and Luke wrong, Luke has footed open desus curses against rich and mirthful, men in contrast to the blossings on poverty and weeping; but if the curses came from the lips of Jesus, Luke gives the opposite clauses justly; in which case Ataithew has improved monkish into spiritual sentiment. It would be a hard task to prove lackes version out of harmony with the constant ductibus of To borrow Calvinistic phrasedogy, and (if my memory serves me) the very words of a Pauline spiritualist." The three gospels may be read in the churches till domnsdat, without converting a single soul." The spiritual side of Christianity, inherited from the Hebrew psalmists, not from desur was diffused beyond Judas first by the Jewish synanogues, next by the school of Paul to home the school of desirs was in fixed opposition, preaching works and the las, while Paul preaches the Spirit and faith "Ti ough I give all my good to feed the poor, says Paul, "and give my hody to be burnt, and have not charity, I am nothing." How vast the contrast hear to the doctrine of Jesus: Every one that bath forsaken houses, or brethren, or sisters, or father, or mother, or wife, or children, or lands for my name's sake, shall receive a hundredfold, and shall inherit eternal tife" To make ascetie sacrifice for the honor of Josus was indeed a surpassing morit in his ayes, unless the most important discourses, even in these three gospels extravagantly belie han. I amounable to discover on what just ground the opinion stands that the character of Jesus is less harsh, and his procepts less sourly austers than those of John the Baptist Lattle as we are fold of the latter (all of which is honourable), the two must have had close similarities. Let it be remembered that Apollor is sycken of in the Acts of the Apostles, as 'instructed in the way of the Lard, and torrent in spirit, and teaching diligently the things of the Lord," while he " knew only the baptism of John." So also Paul falls in with " certain disciples " at ? Ephesus, who par as Christians, yet he presently discovers that they also know only John haption. It seems therefore evident, that the consensation had nothing essential to divide them; and were had nothing essential to divide them, and were intunctely alike. When, castle other, hand, the sharp opposition of the Pauline decreme to that of James and the church of Jesus as James and the church of Jesus as James and the church of John the Baltist with become less notrue if changed as follows: I had not Jesus baptize you with water times the pure ty, but Paulished baptize you with the pure ty, but Paulished baptize your with the pure ty, but Paulished baptize your with the pure ty, but Paulished baptize your with the pure ty, but the pure ty is the pure ty i

Spirit and with fire." Be that as it may give as little weight as you please to Paul's strong points of which came the worst part of Calvinism—the fact remains, that Jeeus did not teach Christianity to the Gentiles, or declare them admissible to his church without observing Mosaism; and that to the Jews themselves he preached merely severe precepts, ethical or monkish, with a minimum of what can be called Gospel;—precepts, on which a religious order might be founded, but totally un-

suitable for a world-wide religion.

When people calmly tell me that Jesus first established the brotherhood of man, the equality of races, the nullity of ceremonies; that he overthrew the narrowness of Judaism; that he found a national, but left a universal religion; found a narrow-minded ceremonial, and originated a spiritual principle ;- I can do nothing but reply that every one of these statements is groundless and contrary to fact. What his disciples never understood him to teach, he certainly did not teach effectually. It is childish to reply that the fault lay in the stupidity of the twelve Apostles. What ! could not Jesus speak as plainly as Paul did? Surely, the more stupid the hearer, the more plainly the teacher is bound to speak. If Jesus had so spoken, never could want of spirituality in the hearer have made the words unintelligible. Did only the spiritual understand Paul when he pro-claimed the overthrow of ceremonies? Could the most stupid of mortals have failed to understand Jesus also, if he had avowed that the Levitical oridnances were a nullity and Gentiles the religious equals of Jews? I may seem to insult men's intellect by pressing these questions; but do not they rather insult our intellect? For they would have us believe Jesus to have originated doctrines which are the very opposite of all that his actual hearers and authorized expounders established as his, before there was time for his teaching to fade from their memory and to be modified by novelties aupervening.

I have called the primitive church of Jerusalem the only direct product of Jesus. Do I deny that Jesus bore any part at all in setting up the creed known in Europe as Christianism? I wish I could wholly deny it. Gladly would I relieve his memory of all responsibility for dogmas, whence proceed far more darkness and weakness of mind, confusion. bitterness, and untractable enmities, than his moral teaching can ever dispel; dogmas which as effectually break up good men into hostile sects, with fixed walls of partition between them, as ever did the ceremonialism which he is falsely imagined to have destroyed. But, hard as it is to know how much of the gospels is historical, I suppose that no one for three centuries at least has doubted that Josus avowed himself to be MESSIAH, at first privately, at last estentatiously; and was put to death for the avowal. If so much be historical, we are on firm ground. There is then no room for transcendental philosophies and imaginative theories, we to what authority and honour Jesus was claiming. The Jews of that day familiarly understood that Messiah was to be a Prince from Heaven, who should rule and judge on earth. As to the great oddings of his character and power, manifestly store was no dispute. If the popular notions on this subject were wrong, the first business with tests much have been to set them right. But he never discourses agained them, nor shows along that he be thought to slaim supernatural digwity and longiship; nor could his riding trium phantly

on the ass, amid shouts of " Hosanna to the Son of David! " have been intended to discourage the belief that he was to exercise temporal as well as spiritual royalty. The learned and the vulgar were in full agreement that Messiah was to be a supreme Prince and Teacher to Israel, Judge and Lord of all nations: but the rulers regarded it asimpious, criminal, and treasonable to aspire to this dignity while unable to exhibit some mire-culous credentials. The fixed belief concerning Messial was guthered, not only from our canonical prophets but also from the book called. "The Wisdom of Solomon" (which was in the Greek Bible of Paul and other Hollenist Jews), and still more vividly from the book of Enoch, which Jude and Peter quote reverentially, and Jude ascribes to the prophet Enoch, the seventh from Adam. With the discovery of that beok early in this century a new era for the criticism of Christianity ought to have begun; for it is evidently the most direct fountain of the Messianic creed. The book of Mormon does not stand alone: as a manifest fiction which had power to generate a new religion the book of Enoch is a like marvellous exhibition of human credulity recent German critic has given the following suntmary of its principal contents:-"It not only comprizes the scattered allusions of the Old Testament in one grand picture of unspeakable bliss, unalloyed virtue, and unlimited knowledge: it represents the Messiah has both King and Judge of the world, who has the decision over everything on earth and in beaven. He is the Son of Man who possesses righteousness; since the God of all spirits has elected bim and since he has conquered all by right eousness in etermity. He is also the Son of God, the Elected one, the Prince of Rightcourness. He is gifted with that wisdom which knows all secret things. The Spirit in all its tulness is poured out upon him. His glory lasts to all eternity. He shares the throne of God's majesty: kings and princes will worship him, and will invoke his mercy." So much from the book of Enoch: which undoubtedly was widely believed among the contemporaries of it us. How much of the self-glorifying language put into the mouth of Josus was actually urtered by him at is impossible to know. There is always room for the opinion that only later credulity ascribed this and that to him .- that (for instance) he did not really speak the parable about the sheep and goats, representing himself as the Supreme Judge who awards heaven or hell to every human soul. But it remains, that this parable distinctly shows the nature of the dignity which Josus was supposed to claim in calling himself Son of Man; and, even if we arbitrarily pare away from his dis-courses this and other details in deference to Unitarian surmise, we still cannot get rid of what pervades the whole narrative, rhat Jesus from the beginning adopted a tone of superhuman anthority and obtrasion of his own personal greatness, with the title "Son of man," allusive both to Daniel and to the book of Enoch According to Daniel, one like unto a Son of Man will come in the. clouds of heaven to receive eternal dominion over all nations. It is impossible to doubt, that, in. the mind of those to whom Jesus spoke, the character of Messiah implied an overshadowing supremacy, a high leadership over Israel, and hereby-

^{*} I quote from a summary of the book of Emoch by the German theologian Kalisch, given in Bishop' Colenso's Appendix to his 4th volume on the Penta-

over the gentile, who were to come and sit at Israel's feat: a religious and, as it were, princely pro-craineach, which only one mortal bould, receipe who by it was raised immeasurably above all others. If he did not intend to claim this, it was obvious-ly his first duty to disclaim it, and to warn all ugainst false, dangerous, or foolish conceptions of Messian; to protest that Messiah was only a teacher, not a prince, not a divine lawgiver, not a supreme judge sitting on the thorne of God and disposing of men's enternal destinies. Nay, why claim the title Messiah at all, if it could only suggest falsehood? Since he sedulously fostered the belief that he was Messiah, without attempting to define the term. or guide the public mind, he could only be understood, and must have wished to be understood, to present hunself ashlessiah in the popular, notorious sense. If he was really this, honour him as such. If his claim was delusive, he cannot be held guiltless

Every high post has its own besettings in, which soust be conquered by him who is to carn any admiration. A finance minister, who pilfers the treasury, can never be honoured as a hero, whatever the merits of his public measures. A statesman or prince, entrusted with the supreme executive power, rains his claims to veneration if he use that power violently to overthrow the laws. Such as is the crime of a statesman who usurps a despotism, such is the guilt of a religious teacher who usurps lordship over the taught and aggrandizes himself. It is a bottomless gulf of demerit, swallowing up all possible merit, and making silence concerning him our kindest course, if only his panegyrists allow us to be silent. A teacher who exalts himself into our Lord and Saviour and Judge, leaves to his liearers no reasonable choice between two extremes of conduct. Whose is not with him is against him. For we must either submit frankly to his claims, and acknowledge ourselves little children -abhor the idea of criticizing him or has precepts, and in short become morally aunihilated in his presence -or, on the apposite, we extend help seeing him to

have fallen into something worse than ignominy.

I digress to remark, that a teacher supposed by us to be the infallable arbiter of our eternity would, detain our minds for ever in a puerile state if he taught dogmatically, not to say imperiously. ha simed to elicit our own powers of judgment, and not to crush us into submissive imbecility, the method which Secrates carried to an extreme appears alone suited to the object; namely, to refrain trom expressing his own decisions, but lay before, the hearers the material of thought half-prepared; and claim of them to ecombine it into some conclusion themselves. In fact, this is fundamentally the to receive which the Supremely Wise, who inhabits one minite world, trains our minds and souls. His greatures does not oppress our faculties, because it is ever silent from without. Displaying before us abundantly the materials of judgments he blinits our powers; never commanding us to begans little children, but always inviting our minds to grow, up into manhood. But, if there, ware also an opmatte side of teaching healthful to up if it were well to start from dogmes guaranteed to us from heaven, which it is implety, to cause with medie matter of first necessity would be, that the utfree from all onigma, all extravagance of hyperbule, all parable, dark allusion, and hard sectorion, all apparent sulf-contrariety, and moreover that we should have no uncertainty when principle transfer's precise words, no mere manifeld remains and inconsistent duplicates, but a reliable genuine.

copy of every using me and the character to be an criticism. To sum up. I will say Nothing and be less suited to minister the facility will will be powers of the human coul, then to be subject to a superhamm dictation of truth, and nothing could be more unlike a dissertant and nothing than the incoherent; hyperbolic, engaging the consistent fragment of discourses, given to un unauthoritatively as teachings of Jesus.

Hut I return to my main subject. I have shown

what conclusions seem inevitable, as soon as cense to believe that Junus is the colertial Prince Messiah of the book of Euoch, popularly expected in his day. To lay stress on his possession of this or that gentle and beautiful virtue is quite away. from the purpose. Let it be allowed that Luke he rightly added this and that soft touch to the picture in Matthew and Mark. Let it be granted that the nobler as well as the baser side of the Jerusalem. church came direct from Jesus himself. any of the actual virtues of European Christians hage, been kindled from tires which really burnt in Jesus. it appears to me impossible to know. The heart of Paul gushed with the tenderest and warmest love. and he believed Christ to be its source. But the Christ whom he loved to glorify was not the Christ of our books, which did not yet exist; nor a Christ reported to bim by the Apostles, to whom he studiously refused to listen; but the Christ whom he made out in the Mossianio Psalms, in parts of Isaiah, in the apocryphal book called Wisdom, and perhaps also in the book of Enoch. With such sources of meditation and information. open, the personal and bodily existence of Jeans. was thought superfluous by a number of Christians considerable enough to carn denunciations in the epistles of John. A great and good man, Theudore Parker, tells me that it would take a Jesus to invent a Jesus I reply, that, though to invent a Jesus was undoubtedly difficult, to colour a Jesus was very easy. The colouring drawn from a suffering Messiah was superimposed on Jesus by the perpetual meditation of the churches, which, after he had disappeared, sought the Scriptures diligently, NOT to discover whether Jesus was Mossiah, which was already an axiom, But to discover what, and what sort of a person, Messiah was According an the inquirem studied more in one or in another, books, the conception of Messiah came out different; and here we have an obvious explanation of the varieties. of portzait in different gospels. The first disciplen who thus by prophetical* studies supplemented the dry outlines which alone could be communicated be the actual hearers of Jesus, would naturally affine. to him many traits not strictly human, nor laudy able except on the theory of his superburant character. Nevertholess, in a church exalted has moral enthusia-m and self-sagnifies in which the highest spirits were truly devoted to practical holiness, in is to be expected that whatever in most beautiful and tender, pure and good, in the traits of obstracton which is I mish on classification were believed to belong to Messiah, would eagerly appropriated to Jesus, as they endend were by Paul. Some of these would be likely. tinge often-repeated narratives; no, that all lough

To my personal buowledge, he is the man matic practice of Pauline Christian, in its present of Pauline Christian, in its papers of the State of the

রাজ-তরজিনী।

২০০ সংখ্যা পত্তিকার ১০৯ পৃষ্ঠার পর। এই প্রস্তাবের আরু রেডা ইকা উক্ত কই-য়াছে যে রাজভর্কিনীর রুভান্ত সম্পূর্ণৰূপে থক্ত ও অকাম্পনিক, ডাহাতে কাশ্মীরের প্রাচীন অবস্থা ও ইভিরুত্ত মণা বিভ্তি প্রক টিভ হইরাছে, সুভরাং ভাহা জানিতে পা-রিলে ভারতবর্ষের অপরাপর প্রাদশেরও অবস্থার আভাস গ্রাপ্ত হওয়া যাইতে পারে। কারণ যদিও কাশ্মীর দেশ ভারতবর্ষের এক কোণে অপ্প তান ব্যাপিয়া আছে, তথাপি তাহার প্রচলিত আচার ব্যবহার ও ধর্ম হিন্দুধর্মানুষ্য্যী এবং তাহার রাজগণও হিন্তু ছিলেন, অতএব তাহার অবস্থা যে অপর পির দেশের অবস্থা ইইতে ভিন্ন ইই- त्व अमळ त्थांव करा ना। अहे (हकू हें छि-হানে কাশ্মীরের যে একার অবস্থা আমরা मिश्रिक পाई छोग व्यतकाश्यम छात्र जनवीय हिन्छू तालरकत जामर्भ वन्त्री।

এই सुध्यन्ति। क्रिवेच ट्रिवेच क्रेट

विन्यू ताक्य विषया आमते। कि कि छेशरमन

প্রাপ্ত হইতে পারি, তাহারই আলোচনা

করা যাইতেছে।

শথমতঃ ইহা দৃষ্ট হইতেছে যে সমুদায় ভারতবর্ষ ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র দেশে বিভক্ত
ছিল। এক এক দেশ এক এক নরপতির শাসনাধীন ছিল এবং এই সকল
নরপতি আপনাদের বল বিক্রম অন্তসারে কথন স্থাধীন কথন বা অপর রাজার
অধীন হইয়া থাকিতেন, কিন্তু সকলেই
স্থ স্থ রাজা মধ্যে একাধিপত্য করিতেন।
দিছিজয়ের ইছা ইইদিগের মধ্যে অভান্ত
শবল ছিল; যাহাতে আপনার নামও কীর্ত্তি
ভারতবিধ্যাত হয় এবং অপরাপর নরপতি
করপ্রদ হইয়া পদানত থাকে এইরপ আকাজা তাঁহাদিপের মধ্যে অভিশ্নী প্রবল

ছিল। কিন্তু বিজয়ী হইয়া অপর রাজার রাজত্ব অধিকার করিয়া লওয়ার এথা ছিল না, ভূপতিগণ প্রায় আপন আপন রাজ্যের দীমা বিস্তার করিতে ইচ্ছা করিতেন না। व्रांका मटका मञ्जूनोत्र निव्रम ७ वावन्द्रा श्राहीन শাসে ও চির প্রচলিত প্রথারই অনুষায়ী ছিল; তাহার পরিবর্তন ছিল না ও তাহা নরপতিগণ নিভান্ত চুশ্চরিত না হটলে প্রায় লক্ষন করি-তেন না, কিন্তু ভাহা লজ্মন করিলে এজা-দিনের তল্লিবারণের কোন প্রতীকার ছিল না। নগর স্থাপনিও দেবমন্দির প্রতিষ্ঠা করা এবং ত্রাহ্মণনিগকে ভূমি দান করা এই দকল রাজাদিগের অভি গিয় কার্যা ছিল এবং শাব্রজ্ঞ ও বছদশী প ওতগণকে প্রতি পালন করাও ভাঁহারা একটি কর্ত্তবা বলিয়া জানিতেন। কিন্তু রাজ্যের কোন মুভন ব্যবস্থা করা অর্থবা ভাহার উন্নতির জন। কোন বিশেষ চিন্তা ও উপায় অবলম্বন কর! তদ্বিষয়ে হিন্তু নরপতিগণ বিশেষ নিপুণ हित्यम मा। ज्यानात्र हे ट्रांशस्थामङ ছিলেন এবং সকলেই বছসংখ্যক পুৰাঞ্চনা রাখিতেন। প্রজাগণ নিতান্ত পীড়িত না হইলে প্রায় স্ব ম অবস্থায় সম্বট্ট থাকিত. এবং রাজার নিটুর ও গ্রাটে শানন হেতু প্রজ্পণ কর্তি। কান বিদ্যোগ বটনা হওয়। क्ति कृषे इर्ड।

..... 246 -

देभगा ।

right.

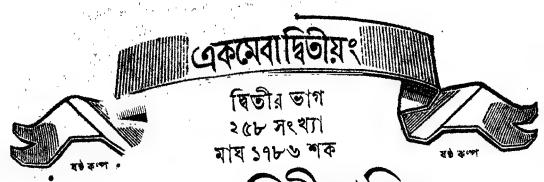
টানই গ্রন্থক সধব। মনুষাকৃতই ইউক, শ্বে সকল বিপ্রন্ প্রতিকার করিবার উপায় অথবা শক্তি নাই ভাষাতে অন্তির না ইইয়া ভাষা ধারণ করিয়া পাকাই যপার্থ দৈর্ঘা। পৃথিবীতে এমন একটী স্থানও নাই, যেথানে চিরন্ধীবন নির্বিদ্ধে ও নি-রাপদে অবস্থান করা বায়। ভূমি যভ সারধান হও না কেন, কথন এমন মনে করিও না যে,

कान कारल कान विशेष शिष्ठि इहेरव मा। দিশ্ব ভোগাকে এগন শক্তি দিয়াছেন যে ভূমি (ठचें) कतिरम प्रदास विशेष अखिक्य कतिरख পার। কিন্তু এমন সকল ঘটনাও আছে, বে ভুমি স্মুদায় শক্তি একত করিলেও তাহার প্রতিকার काँहरू পाहित्व ना। श्रीधवीटक कक अगाभा রোগ, কড নিদারণ শোক, কত রাক্ষস ভুল্য মনুষ্য বাস করিভেছে; কথন ভে মাকে কাহার হস্তে পড়িতে হটবে, এখন ভূমি ভালার কিছুই জানি-কেট না ৷ অজ্ঞার বৈধ্যা গুণ অভ্যাস করিছে বড়-খীল হও,যদি কোন অপ্রিভিবিধের বিপাদে পভিভ হও, গৈৰ্মাই ভোমার বৰ্ষা-সরুপ হইয়া ভোমাকে भोख-हिल द्राविद्य । भक्ष्य-युक्भ भवुद्यप्रव खरे युक्-বগাছ নম্পন আভিজানে প্রোগ-পৌক-বিপাতি-ন-माकीन् श्रीपनीटम जामाद्राग्गातक मरम्भाम कदि-ছাছেন যে, আমহা ভাঁহার উপর নিভার ও খৈনি-তণ অভ্যাস করিয়া আন্তাকে অটল করিতে পা-বিচ: আজা অটল না হইলে অনুষ্ম উন্নজির পথে অন্বসর হইকে পারিবে না। বাঁলারা দাঘ কাল পিতা যাত। প্রভৃতি অন্যের উপর নিভর করিয়া মিশিচ্ছ হ'ইয়া লালিত পালিত হটয়াছেন, ভাঁছাদিগের স্থাধীনভাব ও কর্মানকভা প্রায়ই शास्त्र मा ; खाँछ मामाना कार्या-मा करे छिल-বিভ ভইলেই কীহারা হত বৃদ্ধি হতাশ ভানি-ভাস্ত বিষয় হইয়। উঠেন। আনে ভালুৰ বিপাদ উপস্থিত হইলে জায়ে ও বিযাদে চির কালের জন্য অকর্মণা অপরা মৃত্যু-প্রাদে প্রতিত হটয়া शास्त्रमः। काम त्यांक आर्थ-त्यांदक वा शुक्क व्यादक উন্নত্ত ইয়া লিলকেন। কিন্তু ঘাঁহার। জম্প নয়স অংশনি নানা অবস্থায় পভিড ইইয়া স্বযুদ্ধি-জাভাবে বিপদ হটকে উন্তাৰ্ হইয়াছেন, অথব। টেখন্য পুর্বক ভংসমুদায় সম্ভ করিয়াছেন: ভাঁহারা मर्खादशका कार्यक्रम ७ ठकुत रहेग्रा भनाशास्त मर्गात निकार अधानकीतम भावि काश कतिया-ছেন । 'অনেক বিচক্ষণ পিজা মা**ভা সন্তামনিগতে** कुठ्डत प्राधीनद्राष्ट्र ७ कार्यरकम कत्रिवाह निमिक सामाविध व्यवसाध मिटकल कविया बादकम ध्वर আপনারা অলকা-ক্রপে ভাঁহাদের ভদ্মারখান ক-(वस । त्रथम क्यांन एक एवं प्रदेश हैंग,

তথন ভাহারদিগকে উদ্ধার করিবার নিমিত আপ नात्रा जांशारमञ्ज अरुकाती हत। अरे प्रकीश्व एमः থিয়া পর্ম-পিতা প্রমেশ্বের মঙ্গল অভিপ্রায় অবণারণ কর। সেই পরম পিতা ভীহার প্রত্যেক স্থানকে অটল স্থাধীনভায় উপীপিত ও চির-শান্তিতে নিময় করিবার নিমিত নামা-বটনা-भर कुल এই পৃথিৱীতে সংস্থাপন করিয়াছেন এবং जनका-क्राम क्रिक्रिक्त । जामना প্রতি-বিধেয়, অপ্রতি-বিধেয় ও অসহ এই ত্রিবিধ বিপাদে পরিবৃত হইয়া আছি। কথন কোন বিপদের সহিত সাক্ষাৎ করিছে হইবে, আমরা তা-हांद्र किछू है जानि नां। किन्तु श्रथम श्रकांद्र विश्रम উপস্তি হইলে আগাদিগকে বয়ং, ভাহার প্রতি-বিধান করিতে হইলে: দিটোয বিপদে ধৈর্বের প্রয়োজন : জভীয় বিপদ আগিলে ঈশ্বর শ্বয়ং আ-থানের আত্মাকে গ্রহণ করিয়া উদ্ধার করেন।

নিধ্য-গুলে আম্য়া যে কেবল বিপদ্ সহ্ করিছে লাবি, এমন নুহে: তদ্যায়া উপস্থিত বিপদ্ হইছে পরিরাণ পাইবার নিমিত মুক্তন ভূতুন উপায়প্ত উদ্যাবন করিছে সমর্থ হই। নিপদ্ পাড়িলে যদি আম্রা এক নারে অন্ধর্য হই, তাহা হইলে বিপদ্ প্রতীকারের প্রকৃত উপায় সংস্থেও তাহা উদ্যাবন প্র অবলগন করিছে আমারদের সাম্পাহ্য না। যে সকল বিপদ্ বাস্তবিক প্রতি-বিপেয়, বৈধ্যার অভাবে তাহাও অপ্রতি বিপেয় হইয়া উটে: তথ্ন অন্থিক ভ্রমনিত ক্রেশ ভোগ করিছে হয়।

বিপাদের অপ্রতিবিধেয়তা ততই হ্রাস হইতে পাকে। যে সকল কানা প্রেপাদে নিভান্ত চুক্ষর বলিয়া বোপ হয়, ধীরতা সহকারে ভাষার অন্ধূঠান করিতে করিছে ক্রমে ভাষাও সহক ইইয়া পাছে। এবং অধীর লোকের নিকট বৈ সকল বিপদ্ নিভান্ত অপ্রতিবিধেয় বলিয়া প্রতীতি হয়, গৈর্নালালী পুরুষ্ধিকার নিকটে ভাষার প্রশ্নতীতি হয়, গৈর্নালালী পুরুষ্ধিকার নিকটে ভাষার প্রশ্নতীবিধার হয় ত অন্ধ্রালাল-লাধ্য হইয়া উঠে। অভ্যাব বাহাতে ধৈর্যা-ভাশ ক্রমে ক্রমে ক্রমে হর্মিত হয় বিশ্বান করা সকলের প্রাক্রমে ।



তত্ত্ববোধিনীপ্রতিকা

রশ্ববাএকমিনমপ্রশাসীয়ান্য কিঞ্চনাসীজনিদং সর্ব্যসূত্রত। তদেব নিত্যং জ্ঞানমনজং শিবং স্থজজিরবয়বদেক মেণাদিতীয়ং সর্ব্ববাপি সর্কানিমন্ত্ সর্বাভায়সর্কবিৎসর্কানিমন্ত্র ক্ষেণ্ গ্রহণতি । একস্য উল্লৈয়ে পার্ বিকলৈহিকক শুক্তরতি । তামন্ প্রীতিক্তস্য প্রিয়কার্যসোধনক তদুপাসনমেব ।

বিজ্ঞাপন

কলিকাত। বান্সমাজ।

আগানা ১১ নাঘ সোন বার সন্ধ্যা ৭ ঘন্টার সনরে পঞ্জতিংশ সায়ৎসরিক ব্রাহ্মসনাজ হইবেক। ব্রাহ্মগণ প্রধান আচার্য্য শ্রীযুক্ত দেবেজনাথ ঠাকুর মহাশয়ের ভবনে আগনন করিয়া ব্রহ্মোপা-সনা করিবেন।

শ্রী দিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর সম্পাদক।

কলিকাতা বান্ধসমাজ।
ভাচাৰ্য্যের উপদেশ।
৭ ফান্তন ১৭৮৪ শক।
কলবাৰ।

ব্রাজ্বর্যা প্রহণ করিবার সময় আমরা প্রতিজ্ঞা করিয়াছি বে, "রোগ বা বিপদ ভারা সক্ষম বা হইলে ক্ষড়ি দিবস জন্ধা ও

প্রতি পূর্বক পরব্রংক্ষ আত্মা সমাধান ক-রিব।'' প্রত্যহ নিজ্জনি ঈশ্বরের উপাদনা করা মনু্যা মাতেরই কর্ত্রা। উপাদনাতেই आंगारनत महञ्ज, आंगारनत मनुवाद : हेहा হইতেই আ্মাদের জ্ঞান, পবিত্রতা, বল ও উৎসাহ। ইচাই ধর্মের জীবন; আত্মাতে যাহ। কিছু ধর্মের ভাব আছে, তাহা কে**বল** উপাদনাকে অবলয়ন করিয়া জীবিত থাকে। উপাদনা স্বর্গের দ্বার-স্বরূপ; ব্রহ্মকে লাভ করিবার, ত্রন্ধনিকেতনে প্রবেশ করিবার, এক মাত্র উপাধ। আমর চলু কর্ণানি ই-শ্ৰির স্বারা যে কাপ বাহা বিষ্যের সহিত व्यामांतरमंत्र मधन्त्र निवन्त कति, छेशामना खादा मिरे क्ल य शैक्षिय महीन् लगादर्वत गहिज নিত্য কালের যোগ স্থাপন করি। উন্নতির প্রধান কারণ উপাসনা; ইহা হ-ইতে বঞ্চিত হটলে কোন প্রকারেট আমরা সংসারের পাপ-তাপ ক্ইতে মুক্ত হইয়া ঈশ্বরের পথে চলিতে পারি না। প্রতিদিন নিয়মিত-কপে পরব্রমে আত্মা সমাধান করিয়া তাঁহার উপাসনা করা ক-র্ত্তবা। যদিও ইংগ আমাদের প্রাত্যহিক कार्या, ज्यांत्रि इंश कठिन वांत्रांत्र मत्मर

নাই। উপাদনার স্থান জিহ্বাতে নয় চ-क्रू छ नग, इंहा भारीतिक कार्या छ नग्न। क्वन কভকগুলি শব্দ উচ্চার্থ করিলে উপাসনা হয় না; দকলে মিলিড হইয়া সমস্বরে মধুর দামগানেও দামাজিক উপাদনা হয় না। এ সকল অবলয়ন ইহার উপায় মাত্র। প্রকৃত উপাদন। অন্তরে, আত্মার সহিত পরমান্তার দন্মিলনের নাম উপাসনা। যে-थान मनुरवात हक्कु कर्न व्यवन कर्तरङ পাবে না, দেখানেই উপ্দন ; ইহার ভাব মনুখা দেখিতে পায় না, ইাহার স্তুতি প্রা-র্থনা মনুষ। শুনিতে পার না , কেবল সেই गर्कगांको मक्तान्यांची शुक्रवर रेशकानिएउ পারেন, যিনি ইকার এক মাত্র ফল-দাভা, যাঁহার চক্ষু সর্বতা। অভ এব হাহাতে আ मारमह उभामना (मो। थक छ विकल न। करेशः আত্মবিক ও ফল-দায়ক হয়, তাহার জনা চেফা কর' তর্গা, নতুবা কেবল কভক-গুলি নিদিক্ট শক্ষ উচ্চারণ করিলে কপট ভাবে ঈশ্বরের পূজা কবা হয়। সাবধান। হে ব্রাহ্মগণ! যেন তোমাদের প্রাভ্যক্তিক উপাদনা আত্ম-খুনা হৃদয়-খুনা কাৰ্য্য হইয়া না পড়ে। বাহাতে আত্মতে ঈশ্বরকে দেখিয়া হৃদয়ের সহিত ভাঁচার পূজা করিছে পার, তাহাই ভোমাদের নিতা কর্ম। थः क्रुंच छेशांगर। इंट्रेट्ड कि मा, कल चारां ভাষার পরিচয় পাওয়া যায়। প্রতাহ নিয়-মিত ৰূপে এলোপাসনাতে নিযুক্ত হউ-তেছি, অথচ প.প হইতে নিষ্তি পাই-তেছি না, পুর্বের নায় রাশি রাশি পাপ অশ্বরে দঞ্চিত রহিয়াছে, আশ্ব-প্রদাদ অনু-ভব করিতে পারিতেছি না, নিরুষ্ট প্রারুত্তি সকল অপরাজিত বিক্রমে হৃণয়কে শাসন করিতেছে এবং সমুদা**র জীবনকে মোহ**-সৃষ্ণলে বন্ধ করিয়া রাখিয়াছে;, **ইহাকে** क्यंन अक्ष छेशांगमां बना यात्र महा एक

উপাসনাতে আত্মার উন্নতি হর না, তাহা
প্রকৃত উপাসনা নয়। যে সাধু ঈশরের
যথার্থ উপাসক হন, তাঁহার অন্তরে বাহিরে,
তাঁহার সমুদায় জীবনে উন্নতি একাশ পাচবে। মঙ্গল-স্বরূপ পরমেশর আমানিগতে
তাঁহার উপাসক করিয়া পরম সৌভাগাবান
করিয়াছেন; সাবধান। যেনুকেই এই মইং
অধিকার লাভ করিয়া ইহাকে বিকৃত না
করেন। প্রভাহ নির্দিত্ব পদ্ধতি অনুসারে
উপাসনা করিলে ব্রাহ্মবর্শের প্রতিজ্ঞা পালন হয় না; প্রকৃত আশুরিক উপাসনাই
নিতায় আবশ্যক।

উপাসনা করিবার পূর্কে অননামনা इडेया महा-चक्रण श्रद्धान्यद्व आहाः ममाधान করিবেক। সংসারের পাপ ভাপ প্রশাভন হইতে দূরে গিয়া পরিশুদ্ধ মহাম পরমেশ্ব-রের সলিধানে উপস্থিত হইযাছি, ইং। স্মরণ রাখিবে। বেখানে বাছ আকর্ষণে মন আ-কৃষ্ট হয়, ছেথানে অপবিত্র কামনা মনে উদয় হয়, দেখানে উপাদনা করা বিধেয় নর; যেতেতু বিক্ষিপ্ত চিত্ত হইলে ওঁহির দৰ্শন পাভয়া যায় না। দৰ্ব্ধ প্ৰথমে ভাঁহাকে প্রত্যক্ষ দেখা যায় এ প্রকার চেফা করিবে, প্রীতি নয়নে তাঁহার প্রীতি ভাব দর্শন ক-রিবে, বিশুদ্ধ হৃদয়ে তাঁহার পবিত নিদ্ধণক স্বৰপের প্রতি নির্বাক্ষণ কারবে। তাঁহাকে না দেখিলে তাঁহার পুজাতে প্রবৃত্ত হওয়া সম্ভাবিত নহে। কৃতজ্ঞতা-উপদার কাহার নিকটে অৰ্পণ করিবে? আত্মার অভাৰ মে'চন করিবার জন্য কাহার নিকটে **আর্থনা** করিবে ? যাঁহার পুলা করিতে মানস ক-রিয়াছ, ভাঁহার দর্শন না পাইলে কেবল শূন্য হৃদয় হইতে কভকগুলি বাকা নিঃহত स्हेश आकारण विश्वीत स्हेटवा : **अअ**अव ব্রফোপাসনার পারতে করু বর্ণন করে 啊本!

লান্ত নমাহিত ইইয়া একাঞ চিক্তে পাঁৱ-ভ্ৰম্বের স্বৰূপ চিন্তা করিবৈক, যিনি গর্ম-वाशी नक्षां हर्यामी, विनि " विश्व कर्ण যিনি প্রকাশবান, যিনি ভ্যোত্তের ভ্যোত্ত, कक्त कक्तु, मरनत मन, প्राराज श्रीप इंदेश আমাদের মধ্যে গুড়ুকোত রহিয়াছেন, যিনি मकुत मक्ति भूग मक्ति, यौशांदक व्यवसम করিয়া আমরা জীবিত রবিয়াছি, বিনি সাধকের সলিধানে স্বরং উপস্থিত হইরা হৃদয়ের পূজা-উপহার এহণ করেন; তিনি আমাদের সন্মুতের, তিনি আমাদের অন্তরে রিরাজ করিতেছেন। ব্রহ্মনিষ্ঠ ইইয়া এই প্রকারে তাঁহার খ্যান করিতে করিতে জাঁহার আবিৰ্ডাৰ হইল, হৃদয়াকাশে বেই সত্য-স্বর্যোর উদর হইল, এবং বিমল বিশুদ্ধ জ্যোতিঃ বিকীর্ণ হইল। সংসারের অন্ধকার তিরোহিত হইল,অসাধু কামনা,বিষয় যন্ত্রণা, লোক ভয়, ছুর্বলন্ডা, নিক্লন্ট ভাব-দকল অন্তরিত হইল; সেই নিস্কান্ধ পবিত্র পুরু-বের দর্শন মাত্র আন্ধা ও ভব্তি, জাহার মঙ্গল-মূর্ত্তি দেখিকা মাত্র প্রীতেও ক্লত-**অভা আপনা হইতেই উভ**ুদিত হ ইল; স্থতি, ধন্যবাদ, প্রার্থনা, জ্রোতের ন্যায় षथि इंड (तर्भ धर्माईक इंड्रेंट मानिने, ক্ষরের মহিমা-কানে আত্মা পূর্ণ ইইল এবং ध्यमानत्मत्र छेदम छेदमातिङ इहेटङ हा-भिन। यथन अहे बटन जम छान, उमा-ধানি, ত্রন্ধ দর্শন সহকারে ত্রহন্দাপাসনা হয়, তথনই আমরা এই পৃথিবীতে থাকিয়াও বর্গের পবিত্রতা ও আনন্দ অমুক্তব করি। CF জাক্ষণণ। তেকিয়া বিশু**ন্ধ উপাননা**কে अवनयन करा, अवनाउरे रोशंत्र कन शक्तिम नाच कतिरव। विकिश-हिस्के, अभैविज मत्य दाँशांत मधिशांत डिमनीड स्टेंड मा क्नमानत्व जनदावप्रदाक जानीत क्रविहा लैंगित श्वाटन सहय स्टेरवा वर्षे सम्बद्धाः

कैश्वित जिलामना कतित्व, धर धकारत छै। शत्र जेलामना कतित्व।

হে পরমান্তম! আমরা ভোমারই উপাঃ
সক্, যাহাতে প্রতি দিবস নিজেনে প্রজার
সহিত ভোমার পূজা করিছে পারি, যাহাতে
ভোমার পবিত্র সহবাদে ধাকিরা দিন দিন
উমত হইতে পারি, এ প্রকার ক্রপা বিতর্
কর। সংগার কোলাইলে যেন ভোনাকে
বিশ্ত না হই; হোমার প্রগাদে প্রতি দিন
ভোমার উপানন। করিবার মহৎ অধিকার
প্রাপ্ত হইয়াছি, ইহাতে যেন আমরা কবন
অবহেলা না করি। পর্মেশ। কি প্রকারে
ভোমার উপাসনা করিব, তুমি ভাহা আমার
দিগকে শিক্ষা দেও; আমাদের হন্ত ধারণ
করিয়া ভোমার প্রতি আমারদিগকে উমত
কর।

ওঁ একমেবা শ্বিতীয়ং

জীবনের প্রকৃত ব্যবহার।

হে মানবগণ! বিনীত ভাবে দেই বিশ্ব-নিরস্তার পথসকল অনুসন্ধান কর, এবং কউস্টে খদি এক বার ভাঁচার নিদিফ পথ অৱেষণ করিষা আপ্ত কও, তাহা হইলে আর দে পথের বাহিরে গমন করিও না। ষধন ভোমরা এক বার তাঁহার পথ জানিলে, আণ পর্যান্ত পণ করিয়াও দেই পথের প-থিক ছইবে। পৃথিবার প্রত্যেক বস্তু তাঁ-হার জ্ঞান ও নহিমার পরিচয় দিভেচ্ছে এবং চতুর্দিকেই তাঁহার অভিপ্রেক কার্যা-দকল জানিবার উপায় রভিযাছে; চেকা क्यू कश्रे हे विकल इड्टिय मा। यिशास्म চন্দ্র স্বর্থা বায়ু প্রভৃতির গমনাগমন আছে ace यंशास मर्कावग्रयंतिमाचे दुक्ति मंख्य मन्नास कीर व्याष्ट, मिरे शामिर नेष-রের আজা এবং নিয়ম জাত্মলারূপে ঞ

কাশমান রাহ্য়াছে। তিনি শক্তিতে অ-নন্ত, জ্ঞানেতে অনন্ত:—তিনি অনন্ত শক্তি প্রভাবে এই অনন্ত ব্রহ্মাণ্ড রচনা করিয়া পৃথিবীর সমস্ত বস্তুকে যথান্থানে রক্ষাকরি-তেছেন এবং অসীম আকাশ-দিংহাসন इरेटड अनम् उद्धान अजारव का ही की छै। वृत মুত্রা প্র্যান্ত ভাছার গোচরে বহিয়াছে। ছে মানবগণ! ভোমতা ইঁহারই রাজ্যে বাস ক্রিতেছ, ই হা কর্ত্তক স্ট হইয়াছ; সাবধান যেন ভাঁহার আজ্ঞাধীন ভূত্য হইয়া তাঁহারই আজ্ঞা লজন না করিতে হয়। তাঁহার বিশ্ব-নিঃহত গভীর নাদ তাবণ कत, अवन करिया जनस्यामी कार्या कव. মঙ্গলই দেখিতে পাইবে। আলা নতন মুতন বেশ ধারণ করিবে; হে নামবগণ! বিবেচনা করিয়া দেখ ভোমার দিগতে কি নিমিত্ত ঈশ্বর প্রেরণ করিয়াছেন। তোম'-ष्टिशत अञ्चत, मश्कान, **छेत्मना, क्रम**ङ। ও অপরাপর সম্বন্ধ পর্যাবেশ্বনা করিয়া দেখ। এখনি জানিতে পারিবে ভোমাদি-। ণের কর্ত্তরা কি. এবং ইমাও জ্ঞানিতে পারিবে ভোমাদিগকে কোন পথ দিয়া य। १८७ व्हेर्द।

যে প্রান্ত ভোদার ক্ষমতা, এবং যে
কার্য্যে প্রবৃত্ত হইতে যাইতেছ তাহাতে
ভোদার কি ৰূপ অভিক্রচি, ইহা বিলক্ষণ
কান্যে প্রীক্ষা করিয়ানা দেপ,সে প্রান্ত সেই
কান্যে হস্তক্ষেপ করিবে না; তাহা হইলে
ভোমার নিকট হইতে লজ্জা, অপমান ও
অনুহাপ দূরে অবস্থিতি করিবে। অবি-বেচক ব্যক্তিরাই ব্যর্থ বাক্য সকল উচ্চারণ
দ্বারা আপনাদিগের নির্বোধতা প্রকাশ
করে। যিনি কল চিন্তা না করিয়া কোন
কার্য্যে প্রস্তুত্তন, তিনি প্রান্তীরের অপর
প্রান্থ কি আছে না দেখিয়াই উল্লেজন করিতে গিয়া কুপে প্রতিত হন। অত্তবে বিবে- চনাকে সর্বাদা অন্তরে জাগারক রাখ, তিনি যালা উপদেশ দেন তালা করিতে সাধ্যামু-সারে চেক্টা কর, তালা ছইলে তিনি তো-মাদিগকে সভ্য এবং মুক্তির পথে লইয়া যাইবেন।

হে মনুষা! তুমি কে, যে আপনার ভ্রানের এবং বিদ্যা বুদ্ধির গর্ব্ব করিভেছ ? যদি জ্ঞানী হইতে চাও; ভাহা হইলে এথমে জান যে ডুমি সম্পূৰ্ণ ৰূপে অজ্ঞ; আর যদিও তোমাকে লোকে বাতুল বলিয়া না জানে ভাহা হইলে ভুমি আপনাকে জ্ঞানী জানিয়া জনসমাজে বাতুলতা প্রকাশ করিও নাঃ रयमन अভाव-स्नरदात मामाना প्रिष्ड्य-ও শোভার কারণ হয়, তেমনি জ্ঞান নম্তা মহকারে বিভাগ শোভা পায়। छानी वाङ्गित पूथ हरेट७ (र मकम দতা নিংস্ত হয় তাহার জ্যোতি অধিক উক্ষুল হছ্ছা প্রকাশ পায়। আর যদিও ঠা-হার নিকট কোন কোন সময়ে ভ্রম আসিয়া উপস্থিত হয়,তাহা হ্ইলে ওঁহোর নম্ প্রকৃতি তাঁহার ভ্রমকে আচ্ছাদন করিয়া ফেলে। তিনি কখন আপনার সুদ্ধিনে অভ্রান্ত ভা-विश काया करवन न।। यनि ७ कान समस्य এমত কোন বিষয় উপাস্থত হয়, যাহা তিনি বুঝিয়া উঠিতে পারেন না, তগন তিনি পাৰ্শন্থিত বন্ধুৰ সাংখ্যা প্ৰাৰ্থনায় কখনই লজ্জা বোধ বরেন না, সুতরাং তিনি কোন काटनरे शक्तिजीनत्वत्र नाम मुर्थका थ-কাশ করেন না। তিনি যদি শুনিতে পান যে তাঁহার কেহ প্রশংসা করিতেছে: তিনি সে দিকে কর্ণিতিও করেন না; এবং যদিও তাঁহার কর্ণকুহরে বৈবাৎ ভাঁহার প্রশংসা অবিফ হয়, তিনি তাহা বিশ্বাস করেন না; বরং তিনি আপনার দোষনমূহের প্রতি যেমন অবশুঠন কুপের नका दारभन। **অधिक मोन्नर्या मन्नामन कदत, देवरि अन**

ভীছার গুণসমূহ নমুডা ৰূপ অবস্তুতনে আ-চ্ছাদিত থাকাতে আরো শোভা পাইয়া থাকে ৷ কিন্তু এক্ষণে এক বার গর্বিতের আতি দৃষ্টিপাত কর, যিনি স্থাদর পরিচ্ছদ ধারণ করিয়া প্রকাশ্য পথে গমন করিভে-ह्न, এবং এই মানদে চতুর্দিকে দৃষ্টি নি-ক্ষেপ করিতেছেন, যে তাছাকে যেন সকলে দেখিতে পায়। তিনি মন্তক উন্নত করিয়া এৰপ ভাবে চলিভেচেন বোধ হয় যেন তিনি তাঁহার নিম-পদবীস্থ লোকদিগকে আচাই কবিতেছেন না; কিন্তু ভিনি বেমন তাঁহার নিম্কপদবীস্থ লোকদিনের প্রতি অবজ্ঞা প্রকাশ করেন, আবার তাঁহার উচ্চ পদত্ব লোকেরা তাঁহাকেও দেইৰূপ অবজ্ঞা করিতে পারেন ভংকালে ইছা অমুধারন করা ভাঁচার কর্ত্ব্য। তিনি কাচারে। বিচা-রকে বিচার জ্ঞান করেন না; আপনি যাহা নিদ্ধান্ত করেন ভাষাই অভান্ত, সুভরাং व्यवस्थात कार्या कार्या किम्बन ছইয়া উঠে। তিনি আপনার মনোমধো देश भर्द्य क्लोंड हहेटड शास्त्रम, এবং সর্কদা আপনার বিষয় লহয়। আন্দোলন করিয়াই প্রীতি লাভ করেন। তিনি যেমন আপনাব প্রশংসা আপনি গ্রাস করিতে চান ভেমনি আবার চাটুকারেরা ভাঁহাকে সম্পূর্ণ প্রাদ করিয়া বদিয়া থাকে।

रेहा लाके से स्वीक इंट्रेज्ट ये वर वात नमत्र गठ इंट्रेल बात से खानिट कर इंट्रेंट मी, धर ये नमत्र बानिट कर काशत के मान्य निर्मत के ते वा रेट्ड भारत मी, ''स्वाह बामाक कर्माणा मृज्ञीता बिशाका ' क्याना नावश्वाद बिशाद काले क्या काला मां बाब बर गठ कार्यत बना काला मां कार्या कर गठ कार्यत बना कार्या में कार्या कर्मान महत्व क्या वाश्वाद करिया क्यान

স্কবিষাতের গর্ডে ছিতি করিডেছে. কি আফুতিতে ভোমার সম্মুখে আসিয়া উপ-স্থিত হইবে, ভালার তুমি কিছুই স্থান মা। যাছা কিছু করিবে বলিয়া তির করিয়া রাখি-য়াছ, শীঘ্র তাহা নিষ্পন্ন করিয়া কেল, যদি আতংকাল মধ্যে কার্যা সমাধা করিতে পার তাহা হইলে আর সন্ধার প্রীকা করিও আলস্য দরিদ্রভা ও ক্লেশের পিডা ত্বৰূপ; এবং প্রিশ্রম তথ সক্ষ্কুড়া ও ধর্মের আকব ভূমি। পরিশ্রমীদিরের মি-কট হইতে অভার দরিদ্রতা দূরে পলায়ন কবিরাছে, এবং স্থ দৌভাগ্য ইহাদিগের मरकत नकी इहेशारह। दिनि व्यालगारक खरमञ्ज निकरि जामिए ना एम এवः ইহাকে শত্ৰ বলিয়া জানেন, তিনিই ধর্ম, ঐশ্বৰ্যা, বীৰ্যা, মান, সন্ত্ৰুম, মূল প্ৰকৃতি লাভ করেন। তাঁখাকেই বছজনাকীন রাজ-म जात मर्था मश्रासमाम इटेट ए भथा यात्र। তিনি যেমন অভূাবে গাতোথান করেন, আবার তেমনি বিলয়ে বিশ্রাম-শ্যায় গমন কবেন। তিনি নিয়মিত শবীর সঞ্জন षांता रामम गतीतरक मळ्डानर त्रकः। करतन, তেমনি আবার নিয়মিত বলে মনোর্ভি সমুদ্র চালনা ছ(রা মনকে স্থ রাখেন। কিন্তু, আনার দেখ, যাহারা অলম ভাহা-দিগের জীবন কেবল ভার স্বৰূপ। ভাহার অতি মুহূর্ত কেপণ যন্ত্রণ। স্বরূপ। তিনি কত প্রকার মনেতে উপস্থিত করেন, কিন্তু কোন বিষয়েই কুভকাষ্য হইতে পারেন না। তাঁখার সমস্ত জীবন কেবল ছায়ার ন্যায় চলিয়া যায়: পৃথিবীতে এমন কিছুই রাখিয়া যান না,যাহা দ্বারা তাঁহাকে মৃত্যুর পর স্মরণ করা ধাইতে পারে। তাঁহার শ্রীরের অঞ্ व्यठाक यथाविधि मभानम जाजाद कफ्-পার হইয়া যায়। ভাহার কর্ম করিতে বিল-कर्ग देखां चारह, किन्छ महीरदद जनामधा

নিবজন তিনি অপারক। তাঁছার মন চির অন্ধকারে মথ জাছে। তাঁহার চিন্তান্থান যথাক্ৰমে সঞ্চালিত না হওয়াতে এৰূপ এক প্রকার বিশৃত্বল হইনা রহিয়াছে, যে ধদিও किनि स्थारनाशास्त्र रस रेष्ठा करतन, किस मत्नत देख्या व्य जात्य किंडूरे केठिटङ পারেন म।। আলস্য থেমন তা-ছাকে সংসারের কার্য্য হইতে বহিষ্কৃত. করিয়া দিয়াছে, ভেমনি আবার ভাঁহার গৃহ হইতে শান্তিকেও বহিন্ধৃত করিয়ছে। ভাঁচার ভূতাবর্গ ভাঁচার বংশ থাকে না; ধাকিবেই বা কেন? ভাগদিগের প্রভু ষ্থন আপনার কর্ত্ত করিতে পারিলেন না তথন অপরের উপর কর্তৃত্ব করিতে পারি-বেন, কথনই সম্ভৱ হয় না। স্ত্রাং তাহারা অবাধ্যকা ও মমিতাচার ভালদি-পের প্রভুরই নিক্ট হইতে শিক্ষা পায। এ সমস্ত বিশৃষ্ধন, তিনি সকলি দেখিতে এবং শুনিতে পাইভেছেন, তিনি মনে মনে প্রতিজ্ঞা করেন এই বরে সকলি করিব; কিন্তু করিবেন কি, আলম্য আমিয়া ভাঁহাকে একে বারে আদ করিরা ফেলে। যে জী-ৰনে মসুব্য বাহা অংথনা করিবেন তাহাই প্ৰাণ্ড হইবেন, তিনি এই ৰূপে সেই ময়ুখা জীবনকে, ছুৰ্বহ ভার স্থৰূপ জ্ঞান করিয়া 'পরিশেষে শোকে মলিন, রোগে কাতর ও বিবাদে জজ্জ রীভুক্ত হইরা কালের করান-বদনে লঘুতন পিঞাকারে প্রবিষ্ট হন।

> থিয়োডোর পার্করের পত্র। ২০৭ বংখ্যক পত্রিকার ১৩১ পৃষ্ঠার পর।

অনন্তর সাধারণকে যাহা উপদেশ প্রদান করিতে হইবে,তভিষ্ট্য অভি অশাই শিকা লাভ করিয়াছি এই বলিয়া এবং বছকাল ধর্ম চিন্তা ও ধর্মালুকল্পান করিতে প্রক্রি

रेशद निमिक्त जनिका श्रृक्षक अर्थ विकास লয় পরিভাগে করিলান। আমি মর্কা এখনে যে সমস্ত উপদেল দিয়াছিলাস, ভদ্মিবরে আমাকে অব্যের সক্ষূর্ণ অমুকরণ করিতে হইয়াছিল। উপদেশ কালে দণিও ফুডৰ নুত্র ভাব সঙ্কলন করিয়া দিতাম কিন্ত পূর্বকেন আচার্যাদিগের চিরপরিচিত প্রণা-লীর হস্ত হইতে কিছুতেই পরিজাণ প্রাপ্ত হইতে পারি নাই। আমি যখন ধর্মোণ-দেশ প্রদান করিডাম, তৎকালে অভিশয় ভীত ও কম্পিত হইতাম। আমি তরুণ-বয়ক্ষ যুৱা; বদিও বৰ্মবিজ্ঞান অনুশীলন ও ধর্ম বিষয়ক বিস্তর চিন্তা করিরা ছিলাম, তথার বহু দিবস জনসমাজের স্থিত সমাক সংস্রাব রাথিয়া অভিজ্ঞতা লাভ করিতে পারি নাই; স্করাং ঘাঁহারা বয়দের আধিক্য নিবন্ধন বিজ্ঞ বলিয়া পরিগণিত হইয়াছেন. তাঁহারা আমার উপদেশ বাক্য ভাবণ করি-বেন এই ক্ষনা নাতিশয় বিস্মাপন হইভাম। **छे अटमम कादस बाहारक घमात्र वाका** নিঃস্ত না হয়, আমি ভবিষয়ে সজত সভৰ্ক থাকিতাম এবং ধর্মবিষয়ক যে সহল জ্ঞান বিদ্যমান বৃহিয়াছে ভাহাতে সকলকে উদ্বো-ধিত করিবার নিমিত স্বিশেষ চেকা করি-जाम, এবং मनुगा एप পরিমাণে आहर्षकर नियुद्यत व्यक्तीन, व्यक्ति मर्स्साट्य मस्त मनदक ভাহাই অভিবাক্ত করিতাম। এই ৰূপে কাষ্টেক মাস আনেকানেক ছালে ৰজ্জা এবং মন্ত্রের অন্তদ্ভিতে প্রবিষ্ট ইইডে हरेद এर क्ष प्यवधादन कवित्रां वाहाटक সমাক অভিজ্ঞতা লাভ করিয়াছি সেই ৰূপ धरकात छन्। जनात अधारमात्रां भेरे আমার যুক্তি-সঙ্গত ও মন্ত্রিসভ केशरमम माजीत मागरमक मृत्राम वर्षेट्य छेत्र क रहेश निष्यास्त्र नवारे जातिक क ALECA MITARIA

পদেশক আয়াকেউপদেশের সভাতা প্রকিপ্রালয়র্থ নবিশেষ সকল করিয়া দিয়াছিলেন, এই নিকিল্ল আলি উহার নিকট কুডক্রডা-পাল্শ সংঘত হুইয়া আছি। এক্ষণে আমানরও সম্পূর্ণ বিশাস হুইডেছে বে আর্থিও তাহার বাকা এতিপালনে পরাজ্ব হুইনাই। আনি ইংল্ডীয় ভাষার ব্যবহার-নির্দির এবং ভবিষয়ক স্থপীয় বস্তুভার

ভি তর্ক বিতর্ক অনুশালন করিয়া বাক্য বোকনার পরিপাটী ও পদ বাব-হারের হাতুরী অভ্যাস করিয়া ছিলাম। গ্রীক ও লাটিন ভাষার বক্তৃতা পর্যালো-চনা করত বাক্যের অলকার সম্পাদনেও সমর্থ হইলাম।

অনন্তর আমি ১৮৩৭ খুট্টাব্দে ইউ-নিটেরিয়ান সম্প্রদায়ের এবং বোফীনের সলিহিত পশ্চিম রক্ষবরি নামক ক্ষুদ্র এক ক্ষমপদের কংগ্রিদেশন নামক এক দা-মান্য সভার ধর্মযাজকত। পদে অভিবিক্ত হইলাম। তথাকার স্ত্রী ও পুরুষদিশের गाँइक कामांद्र विलक्षण (मोक्स) क्रिया-ছিল। তাঁহারিপের ষ্ঠিত দৌক্লা আমার ৰম্পূৰ্ণ প্ৰীতিজ্বক ও কলোপধায়ক হইয়া উঠে। जामि यथन धर्म विषयक हिस्रो कहिन তান, তথ্ৰ বিজ্ঞান বিশেষ আমার স্বাধী-নতা পরিহার করিতে স্মর্থ হইক লা এবং वांदा गिकांक कतिकास, कावाहे आसीनकात करिक छेभट्रमा निकास। आसी क्रिकाटत **८कड् कश्चन का शक्कि क्रिया पन कटान नाई**न भन्त-तिवार्शनदृष्ट्वत सङ्गानाद्वकरोः त्करण सन्त-विवसक भिक्रा असाम कहिएका । केंग्सना क ्रमक निक्रम स्थानस्थानंत्र वर्षाकृतात्र साम् साम-वच हरेत्वक केलितिहास क्यांत्र विनी क्रिक PARTY ALL MANY STRING STREET un germela fara oxilicatani a famili THE REPORT OF THE PARTY OF THE

क्षेत्र ७ असम् चित्र व्यविद्वादेश भनामक স্বাধীন ভাব উন্নত করিছে रेकेनिर वितित्रांत अधिवादम् শান্ধার স্বাধীনতা, চিন্তার স্বাধীনতা ও व अपूर्वात श्राधीनकाटक स्य गरिदगय गर्मामञ्ज করিতেন এবং ভাঁহাদিগকে যে পরীক্ষক ও পোপের পরতন্ত্রতায় নিপীড়িত হইতে হইত ना, उरकाटन हेहा के कूछ मण्युनाटसब অত্পা অফ্লাদের বিষয় নছে। ইউনিটেরিয়াম ধর্মোপাদেশক ও সভাদিগের মধ্যে বিস্তর মত-বৈষমালকিত হইত কিন্তু ধৰ্ম-বিজ্ঞা-নের পরিবর্তে ধর্মের একতা সম্পাদনে मकरलत्र रे पञ्च हिल। यथन क्यान दा-ক্তিকে ধর্মোপদেশক পদে অভিষিক্ত করঃ हरेक, विচারक मভा डाँहाव धर्मा-मश्कास বিশেষ অভিথায় কিছুমাত্র অমুসস্থান ক-तिष् ना : माध्यनातिक लाटकताई डैहित অভিথায় স্থাট অবগত হইয়া যদি তাঁহারে ধর্মোপদেশকের পদে শতিষ্ঠিত করা সক্ষত বোধ করিত, বিচারক সভার গোচর করিতেল। তাঁছাদিলের মধ্যে এ-रेक्श धर्मानीत्रहे गविदम्ब ममापत हिल। ইউনিটেরিয়ান সম্প্রদায় এক ঈশ্বের অ-ব্রিত্বেই সম্পূর্ণ বিশ্বাস করিয়। থাকে**ন** তাঁহারা থ্টিয়ানদিবের তিনীতিব মতে किছूट इरे च सूरमामन कटतम ना। शृथिशादनता কছেন, খৃষ্ট সংধারণের ঈশার; কিন্তু ইউ-নিটেরিয়নেরা এই বাকোর প্রতিবাদ করিয়া মামি যথন ধ্যোগদেশক প্ৰে অভিষিক্ত হই,তৎকালে বিচারক সভা আ-মাকে আমার ধর্মবিষয়ক অভিঞায় কিছুমাত্র किछोगा करतम बाई। व्यामान मञ्जानिदर्शत ग्रज-टेक्सचा चार्टक कि मा अवः कान् धर्माविकानः जात्रातः भवतः विक विवरण्ड वाका व्यक्ति म केविता **दक्रव सामक्ष नीजि के सम्ब शहात्रगणी**

বিষয় সবিশেষ পরীক্ষা করিয়াছিলেন।
আমার ধর্মোপদেশক পদে অভিবিক্ত
ইইবার কালে এক মহাত্মা আমার মন্তর্কে
হস্ত প্রদান পূর্বেক প্রার্থনা করিলেন 'কাবা
বা দর্শন শাস্ত্রে অনুরাগ এবং কোন প্রকার
প্রীতিকর বিষয়ের অনুশীলন এই তরুণ
বরক্ষ বাজিকে প্রকৃত ধর্মের শিক্ষা লাভ
ও মানব জাতির মুক্তি সম্পাদনার্থ ধর্মের
উপদেশ প্রদান ইইতে যেন কদাচ বিরত
না করে। আমিও তথান্ত বলিয়া অন্তরের
সহিত ভাঁহার বাকে। অভিনন্দন করিলাস।

আমার ধর্মোপদেশকের পদ গ্রহণ ক-রিবার এক বা চুই বৎদর পরে সভ্য সংখ্যা আয় সত্তর জন হটয়ছিল। কএকটি বা– লকও ইহার অন্তর্গতি ছিল। আমি অন-তিকাল মধ্যে সভাব ফুদ্র ফুদ্র সভাদিগের দহিতও নস্ণ ৰূপ প্রিচিত হইলাম। তন্মধো দেখিলাম কৃতগুলি নিচান্ত আসভা এবং কভগুলি অভিশয় উদারস্ভাব ও যথার্থ ভার। আমি সাধারণের চরিত্র ও অক্রিক ভাব সমুদায় সমাক্ অবগত হট-য়াছিলাম। সভাদিগকে যে সমস্ত উপদেশ ध्यम्बि कतिए इहेक, ७९मभूमां तहना कित-বার নিমিত সম্বেক বত্ন ও পরিতান স্বীকার করিতাম। অদ্যাপি সেই সকল উপদেশ আমার চিত্ত ২ইতে তিরোহিত হয় নাই। উপদেশ রচনা ও উপদেশ প্রদানে ख्यामांत गमधिक डेशमाह ७ जास्मान इहेज। आमि प्रशः निकः वां ७ ७ वमात्क छेपानम প্ৰদান উভয় বিষয়েই **স্নপটু ছিলাম।** আপনার উন্নতি সাধন ও অনোর উন্নতি সম্পাদন করা আমার **'একমাত্র কার্য্য ছিল**। কোন সম্প্রদায় বা ইতিহাস বিশেষের শাসন গারা অতিহত না হইয়া আফুডিক নিয়ম मभूमारम् छेन्द्रमा अम्दिन अर्थ इंट्रेकाम । च मक गमर्थन ७ निमर्गन धानर्गन कवियात

मिमिखरे माञ्चनात्रमिष्ठ मेठ ७ रेखिसीएमत আল্লায় অবলম্বন করিতাম। 'ইভিছাস-ঘটিত বিষয়ের নিমিত্ত ঐতিহাসিক প্রশাণ উদ্বত করিতাম এবং ধর্মতত্ত্বের নিমিক্ত আন্ধার সহজ জ্ঞান ও ধর্ম-পরায়ণ ব্যক্তিদিনোর দুড় বিশাসই অমাণ বলিয়া অঞ্চীকার করিতাম। রুষকদিগের নিস্তব্য ও শাঁত অবস্থা স্কবি রচিত কাবোর নাায় পঞ্চীয়-মান হইত এবং উপদেশ প্রদান করিবরি দমর দমাজ গৃহৈর দলিহিত রুক্ষ দমূহ যেমন গ্ৰাক বিবর স্বারা লক্ষিত হয় দেই ৰূপ উহা আমার অস্তরে স্থেষ্ট অকিত হইত। সূচতুর মন্ত্রাদিলের সহিত সংস্রব রাখিয়া যালা পরিবর্দ্ধিত হইয়াছে मिरे वसुर्वि थे जांदर या विषया व्यक्ति জ্ঞতা লাভ করিয়াছি আমি ভাছারই উপ-দেশ প্রদান করিভাম এবং যাহাতে সকলে সময়ের প্রকৃত বাবহার এবং নিনীত সভ্য সকল কার্য্যে পরিণত করে তদ্বিবয়েও যত্ন-বান ছিলাম।

অনন্তর আমি পদার্থ বিদার আলোচনা এবং যাহাতে প্রকৃত জ্ঞানোপাজন হয় এই ৰূপ নাম। প্ৰকার শান্ত স্বতন্ত্ৰ অনুশী-লন করিবরে বিশুর অবকাশ প্রাপ্ত কইলাম। একদা ধর্মাবিদ্যালয়ের এক অধ্যাপক আ-মাকে কহিলেন "ভূমি একটি সামাম্য সভার धरमाश्रीतमक । धेक्षा महीर्ग छाटन व्यवहान কর। তোমার কর্ত্তব্য হইতেছে না। তুমি জাতি সাধারণ সকলকেই ধর্মোপদেশ অদান কর এবং বক্তৃতা দারা যে বিষয় সংসাধনে जनभर्ग इहेत्व त्रव्या कतिशा ७९ मण्यापंतनः যত্নবান হও।" আমি অবকাশ কীল কঠিন। পরিপ্রমের সহিত পুস্তক পাঠ করিয়া অভি-বাহিত করিভাম। স্বামি যে কেবল সভাসি रमार्ड मिनटमत मदेश में में बी श्रिक्म घका नाजादशक्ता कतिकाम कहि तरह ;

ঐ ৰূপ গাঢ়তর পরিশ্রম দার। প্রভূত আন-म् । अमू उद क्ति जान । अम इद्र अमि धर्म-বিজ্ঞানের স্থকটিন বিষয় নিৰূপণ করিতে खान, यज्ञ ७ व्याटमाटमत गहिष्ठ भूनताय मी-व्यामात व्यवस्य साधीन किंछ इहेलांग। ভাব সংস্থাপন ও অধ্যয়ন উভয় বিষয়েই একাস্ত 'অনুকৃत स्टेश উঠিत। धटर्माश्टम-শল্পের পদ গ্রহণ পূর্বেক ধর্ম বিজ্ঞান অনু-"শাঁলন আরম্ভ করিলে একটি স্থনহৎ পরিবর্ত লক্ষিত হইতে লাগিল, কিন্তু উচা এই ৰূপ নিস্তদ্ধ ভাবে প্রবর্ত্তিত হইল যে উহা কোন্ স্থান হইতে প্ৰেডিত ও কোন্স্নে প্যা-বলিত চইবে, তংকালে কেছ কিছুই নিৰূপণ ক্রিতে সমর্থ হন নাই। ফল্ড এই পরি-বর্তের সময়টি আমেরিকার ধর্ম সংক্রান্ত ইতিহাসের অভাস্ত কলোপধায়ক হইয়-हिन, गत्मह नारे।

ইজিপ্টীর মত।

ইজিপটীবাদণের পূৰারত্ত এৰপ কণ্পিত উপাधारिक পরিপূর্ব, যে কেনে বিজ্ঞাতম পণ্ডিতও ভাষা ফইতে কে:ম বাস্তবিক রু- : ভাশ্ত নিঃসংশ্বেয় নিরূপণ করিছে পারেন क्टिंद्र क्टू क्टून, इंजिल्ही द्युता পরলোকগত প্রধান প্রধান বীর, কবি, শি-প্ৰস্তুত্ত প্ৰাৰ্থ বিদ্যাবিৎ পণ্ডিত্দিগকেই দেৰতা বলিয়া উপাসনা করিত। ধৃতিয়ান যাভকগণ তর্ক ছারা অনায়াদে পরাজয় করিবার স্থবিধা হইত বলিয়া এই পক্ষই আন্ত করিয়াছিলেন। অীস্দেশীয় উপুरागतमिक श्रष्टकारतता रेजिकीयमिशतक পশু পকীর উপাদক বলিয়া নামা প্রকার উপহাস করিয়া গিলাছেন, কিন্তু গ্রীস্ व्यटनत विव त्रवीत काछ मकन है जिल्ही स भूबाइक स्टेटकरे त्य नर्छ क स्रेडा किन हेश

छै। हात्रा कानिट्डन मा। (कह (कह बहनन, ইজিপ্টীয়েরা সূর্যা চন্দ্র নক্ষত্র অভূতি ক্যো-ভিক্ষদিগকেই ঈশ্বর জ্ঞানে উপাদন' করিত। मकन क्रांकित भूखं भूझरवताहे अध्य पूर्वा প্রভৃতি কড় পদার্থের উপাদনা করি হ, এই নিমিত্ত কোন সম্প্রদায়ই তাহা লইয়। ইঞ্চি-कीयमिशदक छेशहास करत्रन नाहे। हेकि-প্টীয় যাজকগণের লিখিড যে সকল এন্থ প্রাপ্ত হওয়া যায়, তন্দার। অনেকে স্থির করি-য়াছেন,ইন্দ্রুলীয়নিগের চক্ত সূর্য্য প্রভৃতিকে উপাদনা করিবার নিগুত অর্থ ।ছল। দে याना बडेक हेकिन्हें रियती हस सूर्या अञ्चि জড়,পশু পঞ্জী প্রভৃতি জন্তু,ও পরলোকগত প্রধান প্রধান মনুয্যাদিগকেও দেবতা ভারেন উপাসনা করিত, তাহার মন্দেহ নাই। তা-হারা পূকাতম রাজাদিগকে দেবভার পুত্র বলিয়া বিস্থান করিত,এই ভনা অনেক রাজা ভাহাদের দেবভার মধ্যে পরিগাণ্ড আছেন। रेकिन्छे ५५८म रेकिन्छीय । प्रवदामित्वत्र किन भूक्र रवत नौना आश्व इ ७ शा यात्र। अथम দেবভাগুলি আদে পুরুষ বলিয়া পরিপণিত আছেন; এই শ্রেণীতে দেব ও দেবীকে आर्रेक्न किर्नन। धरे आर्रे हरेरड বিভীয় পুৰুষে আর বারটা দেবতা ভং<mark>পন্ন</mark> হইরাছলেন। এই বিঠায় পুরুষ হইতে থার কতক্যালি দেবভা উংপন্হন। धांगक उमहिम प्रव ७ धारेमिम् प्रवी এই তুর্তীয় সন্ত⁴নের জেনীতে পরিগণিত हित्तन। देश घाता म्लास হইতে ড যে, ওাদারিম ও আইদিদের পু-र्स इंबिली परन विश्मिकि प्रवता हि-কিন্তু আদি দেবতাদিনের মধ্যে মেণ্ডিম বা পানি নামক দেব ও বুটে বা मार्कामा नामक मिरी अदर विशेष मर्खेटत মবে৷ হকু, লিস দেব এই ভিন নাম ব্যাভ-রেকে বিংশতি দেবতার মধ্যে আর ,কোর নাম প্রাপ্ত হওয়া যায় না। এবং উাহাদিগের বিশেষ কোন প্রতিমূর্ত্তিও নাই। এই
দেবতাদিশের মধ্যে যে জন্তু যে দেবতার
প্রিয়, প্রায়ই তাঁহাকে দেই জন্তর আকৃতিতে
প্রা করা হইত। এক্ষণে যত দূর প্রাপ্ত
হওয়া যায়, ইজিপ্টীয়দিগের দেবতা ও ধর্ম
বিষয়ক মত প্রকটন করা যাইতেছে।

আমন। গ্রীস দেশীয় ইতিহাস লে-খক হিরেভিটেম বলেন, ইজিপ্টীয়দি-গের অনেন ও গ্রীক দিগের জোভ একই দে-বভা ছিলেন। আকিকার অন্তর্মন্তী থিবস্ প্রদেশে ভায়ক্সলিস্নানক নগরে আমন দেবের মন্দির এভিটিত ছিল। সেই স্থানে ভাঁহার উপাসনা হইত। ইখিওপিয়া এ-মেশে অভি বংসর একটি মহোহসব হইত। দেই দময়ে আমন দেবের প্রতিমা নীল নদীর ভীর দিলা তথায় লইলা যাওলা হইত, এবং ইথিওপিয় লেকেবা অত্যন্ত আড়য়রের সহৈত প্রত্যালামন পুরুক ভিরোকে এইণ করিত। মহে। ংশব দেখ হইলে পুনর্বার মেই প্রতিমা স্বস্থান সংস্থাপত চইত। ইন্দিপ্ট দেশীয়দিলের এই ৰূপ বিশ্বাস किश (व. व्यागन मिव अ अविक मधुना है-क्टिराद व्यटणाइत, किन्छ मञ्ज পाठे ও यांच যত প্রভৃতি প্রকিয়া বারা বশীভূত হইলে ইন্দিয়গোচর কোন মূর্ত্তি পরিথাই করিয়া ভক্তমণের নান পথে আবিভূতি হন। ই জঙ্টীয় দৰ্শনকারের যে পাঁটেকৈ ছুত वित्रिष् निर्फाण कविद्वार आमन उत्प्रदेश ११४१ में है हा पात है और करह भटनर कीरन भारत इहें हैं।

হকুলিস। ইজিপ্টীয়দিশের মতে ইনি নীল নদীর পুল্ল, ইনি হিন্দু দেবগণের নায় সূর্যামণ্ডলে অবস্থান পূর্বাক সূর্যের নহিত পৃথিবী পার্বেইন করেন। ভারতী বর্ষায়েরা ঘেনন সূর্য্য নপ্তানগ্রাক্তিনায়ন য়ণকে কিছুল চতুৰুল অভূতি নানাবিধ আকারে পূজা করিয়া থাকেন, ইজিন্টীরেরা मिहे क्षे कि हो हो के नी मा किए को ब्राधिना করিত। ইজিক্টার্দিগের এই রূপ বিশ্বাস हिल त्य, जल ममुनाइ भनात्थेत जाहि कातन: জল শুক্ত হইয়া গেলে মুক্তিকা উৎপদ্ধ হয়। **এই कल ७ मृखिका इहेट** निर्देश्व मान्न मूथ ७ मटर्भंद नाम नहीत अक्षिक हुए-পল হইয়াছিল। এই জন্তুর মধ্য স্থানের-মাম হকুলিস ও কাল। হকুলিস্হইতে একটি প্রকাও ভিন্ন ইংগত হয়। হকুনিস্ এ ভিন্নকে উপযুক্ত সময়ে দিনা বিভক্ত ক-রেন। ভাষার উৰ্দ্ধ ভাগ স্বৰ্গ ও অধ্যে ভাগ ज्यखन रहेन " व्यवस्त ह्कृ निम् ११ ভূতকে যথাবং বিভাগ করিয়া রক্ষা করিচেড লাগিলেন ৷ আমন ধেমন জীবদিগের নি-য়ন্তা, হকু বিলম্সেই ৰূপ জড় জগতের নি য়ন্তা ছিলেন।

নেণ্ডিন্। ইজিপ্টীর্দিণের যে আটটি আ,দি দেবতা ছিলেন, ইনি ওঁটোদেরই অ-ন,তম। ছাগের আক্তির নাার ইহাঁর প্রতিমূর্ত্তি। যে নগরে ইহাঁর মন্দির সংস্থাপিত ছিল, সে নগরের নামও মেণ্ডিদ

তিনি চিতা করিয়া আগনীর চ্টাতে বিনিধ আলা সৃষ্টি
করিবার ইন্ডায় প্রথমে জল সৃষ্টি করিবেল প্রশানিক হাতে বীল নিজেপ করিবেল। সেই বীল অবর্ণনিক প্র প্রেয়ার ন্যায় প্রভাগশস্থ অত ব্রীয়া উঠিল। জ্বা বাম ব্রুলা সেই অতে সম্বন্দর বাস করিয়া অন্তংই জালিনার বাম প্রভাবে তারা বিধা বিভক্ত করিবেল্য, প্রান্তি সেই বৃষ্ট প্রত বারা ব্যুক্তের প্রভাগশীক ব্যুক্তির বিশ্ব প্রশানিক প্রান্তির

এই মতের সহিত মনুর লতের অংবেক্তংশে সাদশ্য পাচিধ, যথা

সোভিধ্যাথ শরীরাং বাৎ সিদ্ কৃ বিবিধাঃ প্রাক্তাঃ ।
অপ্তব দসজাদৌ 'গাল্ল বীজ্যবাদ্ জ্ব । ৮ ।
তদশুমজ্বকৈ দাং সংস্রাংশু দমপ্রাক্ত ।
তাল্লম্ ক্রজে ব্যং ব্রকা দর্প্রকাকশিতামহঃ । ম ।
তাল্লম্ ক্রজে ব্যং ব্রকা দর্পরেলাকশিতামহঃ । ম ।
তাল্লম্ ক্রজে ব্যং ব্রকা দর্পরেলাকশিতামহঃ । ম ।
তাল্লম্ ক্রজে ব্যং ব্রকা দর্পরেলাকশিতামহঃ । ম ।
তাল্লম্বিকা দ্বানাক্র ক্রজিবিধা ।
মধ্যে ব্যাম দিশকাকীবিধাংস্কাক শাশ্বং । ১৬ ।

পাঞ্চিমিন। নিন্ধুখোটকের আরুতিতে
পাঞ্চিমিন নগরে ইহার পূজা করা হইত।
অন্যেক অনুমান করেন, নিন্ধুখোটক এই
ক্রেইডার বাহন। ইজিপ্ট দেশীরেরা ইহাকে প্র লয়কারী দেবতার অবতার বলিয়া
বিশ্বান করিত।

ভবানীপুর ওন্ধ-বিদ্যালয়।

প্রধান আচ্বায়ের উপদেশ।

চতুথ সংখ্যা।

১০শাবন ১৭৮০ নকঃ

আনের৷ অপার গড়ার ক্রান-সাগ্র হইটে যে সভাকে লাভ করিবার জন্য এখানে যত্ন করিছেছি, দেই সভাবে ভাবিতে গেলে ভাষ্কত হটভে হব। त्महे मेळा चरान व्यामात्मत स्मारत यह व्यानात्क অকাশনা করিবে আমবা কথনট ভাঁহাকে পা-ইতে পারি ন।। জিনি পরিষিত বিষয় নজেন কে আমরা কেবল আপনা। বুদ্ধি-সলে ভাঁহাকে সুবিতে পারিব। তিনি মহান্, অন'দানস্ত; তীহার সাহায্য ব্যভাত উহিলের লভে করা ধার না। অভএব নভ হইয়া ভাঁহার নিকটে আপনাকে বদর্পণ করিতেছি, ডিনি আমার জ্ঞানকে উজ্জ্ব : করিয়া ভাঁহার সভা প্রের্ণ করুন৷ সেই সভা चिंछ हु विविद्या स्थामत। छ। हात्र छेशार्क्टन निवेख পাকিতে পারি না। তীহাকে না জানিলে নয়, छै। हो स्क ना शाहरण है नह ; त्य हैं गर्छ। द्वें मछा दक चंद्रमञ्जान कविया कानिटल्डे इहेटर। जन्म-फ्रान यपुं-तांधा विविधा सामद्रा सञ्हीन हहेएल शांति ना, किन्द्रं चाद्रा वज-महकार्द्र जाहारक कानिए हरेटव। व विकारक नाम महिता व्याव, भाग, व्याम इटेटच উद्धीर्थ २७मा वार्षः प्रशास-ममुख् लाहि इतिहा कर्ष नार्थ उन्हों हे अमा प्रश्न स्थान नव-नाथा बनिया कि अवट्टमो कहिन्छ है कार्यहा मण्ड केत्रिया केश्वत कार्यभाष्टि माध्यता क्रितानक, आवा-करनेत्र कान-नाकरम चनीम अंकृष्ट नाम विकास

করিয়া ক্রমে ভাষাতে পুষ্ট ও বাজিত করিবেন।
আমরা কুল ছইয়া মহানের দাস হইয়াছি, অপপ
হইয়া ভূমার উপাসক ছইয়াছি, নত হইয়াই
ভাষায় জান-অর্জনে চেটা করিভেছি।

ধ্বদ্-সাহিতার মন্ত্র-সকল বহিও কেবল করি সূর্বা মিত্র বরুণ পরিমিত্ত দেবভার স্তুতিতে পরি-भून, खवालि मत्या मत्या खाहारङ्ख ध्वनस्त्रः আভাদ ক্টিভ হইয়াছে। " বো কাগার ভাষ্টঃ কাময়ত্তে যো জাগায় ভমু দামানি বতি যো জাগায় ভমরং সোম আছ।" (কংগুদ-সংহিতা) বিনি জাগিয়া আছেন, ঋষ-সকল তাঁহাকে কামনা করি-ভেচে: যিনি জাগিয়া আছেন, সাম-স্কল ভাঁছা-কেই প্রাপ্ত হটতেছে; যিনি ক্র'গিয়া আছেন, এই লোম-যাগ ভাঁহাকে কহিভেছে। বেদ-মঞ্জে এই নাত্ৰ আছে ; কিন্তু যিনি জাগিয়া আছেন, ডিনি যে কে, ভাগার নিকপণ কোপায় ? মস্কুৎ ক্ষিরা এক এক বার প্রাপ্ত বিভে বা জের নারে জিকান। ক্রিয় ছিলেন ''কবিম দেবায় হবিধা বিদেম।'' (ঋণেদ-সংহিতা) কোন্দেৰত'কে আমর হিব দান করি? কিড় উংগারা এই মাত্র উত্তর পাই-ग्रां हिल्लाम त्य ये अपक इति सम करि, लिनिहे সকল দেবভা। "এমট ছেব সংস্থা দেবাঃ" (বাজ-नत्त्रय खाञ्चल १ डे ७९९ मि.क. त्रक्षमधिमाञ्चवत्था-দিৰাঃ সমুপৰে বিক্লান্। একং সহি**প্ৰেক্**ৰা বদল্ভি অগ্নিং যন ব'ত রক্ষান্মাছঃ।" (মন্ত্র-বর্ণ) कैं(होटक हेस्स, भिष्ठ, शांध्र कर्न्या वत्तर, जिनि মুন্দর পক্ষ-যুক্ত চেবা পক্ষা, বিল্লেরা এক সংক্রে বছ অকার বলেন, উছিতে ভার, হন, মাভরিধা कांद्रया बरलम्। धार्वान त्यम-भारत्वे गारा अनेन-*থের অনন্ত ভাৰ প্রাহ*ন পারিকে পাবে নাই, এক এক বার ভাষ্ট্র ছটাছে জ্লিয়া টিটেন। বেদের সংবিভিশ্যে ঈশ্বরেন্ত নম্ভ তা্য মেন্ প্রাভিঃক¦লের ঞ্কাৰে নাম প্ৰকাশল হইমছিল। কভ কলে জক্লান্ত খাবিদণের নিকটে যেই **অন্ত** পুক্ষ প্রজন পর্যান্তে পারেন। কড়কার আন্ত্র লাঁহার এমন ধদ অসীয় **আকাশে সমু**ত্র ভী**বস্থ** বাল্-রাশি সদৃশ অস্থ্য নক্ষ্ম থা নেবল পার-মিস্ত দেবভাকেট মানিডে পাবেন**ং তাঁহারা** দেখিতে পাইলেন যে একই দেবতা সূৰ্ব্য চন্দ্ৰ व्यक्तित्व, मावाशृथिवाखडीटक, वाम कविरक्रफम ; ভাঁহারই নিঃধানে বিশ্ব সংসাধ নিঃধ্সিত হাই-CECS। उँ श्रदी स्ट्रॉन-श्रे भेटमंद्र मः म्र मटम्रहे-অনপ্ত আকাশে অনস্ত দেবের হস্ত অধ্যেতে উদ্লেখ্যে ध्यमाद्रिक मिथिदलन। वास् वियस्त्रे श्राम व्याक्रिक ভেদ করিয়াও সেই জনত্তের জ্যোজিঃ প্রকাশিস্ত हरेग ! जैहिदा बरे न मन कफ बच्चेंद्र महला, वाहि-त्वत्र वरे व्यंगातिष जीकाम मर्गाल, जीवह सुत्रक्रक

দেখিতে পাইলেন। ভখনো তাঁহারা সীয় উব্দুল ভোষ্ঠ কোৰ আত্মার মধ্যে পর্মাত্মাকে দেখিতে शान नाहे, खबाता **डीहारमंत्र तमना हहे** एड "এक-মেবাশ্বিতীরং" এই মহা বাক্য বিনির্গত হয় নাই। हे सिया प्रभारक वादा विवयं हहे एक श्राप्ति इस क বিয়া একমেবাদ্বিভীয়ং সভা পুরুষকে স্বীয় আত্মাতে दिन्थवाद खेलदिनम खेलियदिन छ आख इखगा यात्र । পেবাঞ্চি ধানি বাতৃণং স্বয়ন্ত্ৰশাৎ পরাঙ্পশাতি नाखद्राञ्चन । कन्छिक्कीदः १ छ। शास्त्रानि रेमकनाइ छ ह-কুর্মুজ হ্মিছ্ন্"। (কঠোপনিষ্ৎ) বাহরিভ্রিয়াদি~ ণকে ঈশ্বর অপা বলই দিয়াছেন,এই হেডু ভাহাব। বছিরিষ্যাই দেখিতে পায়, অন্তরাত্মাকে দেখিতে शाम मा। এक कहे। एक या छक् व्यक्त कराय मिट्य, ভাষারও বল অপা, বে হেড়ু দে অন্তর্গাকে দে-খিতে পায় না। কোন কোন ধীর আর্ড চকু ষ্ট্যা, বলিধিনয় ষ্টতে ইব্রিয়দিগকে প্রতিনির্ভ করিয়া, এবা অমৃতত্তকে ইচ্ছা কবিয়া,দকল আয়িবে অন্তরাত্মা বে অধিভীয় প্রভাগাত্ম। উহেতে দে-থেন। ঘাঁহোর বাহাবিষ্য হইছে ই জায়দিগকে প্রতি-নিত্বত করিয়া আমাকে দেখিতে অভাস करत न नाष्ट्रे, डींग्डाइ: बर्यन व्य निताकात शहरम-ধ্বদে দি প্রকারে ভাবিক। তাঁগদের প্রতি তো নিবাকরে ফাবিবার উপদেশ নগ ; উচ্চার। সাঁয় আংল্লাকে ভারুন, জানিবেন থে সে নিরাকার। আনোরে অব্যব নাই, নে নিজে নির্দয়ৰ চইয়া স্বয়ব সমুদয় বস্থ প্রকাশ করিভেছে। পর্মত, প্রতি স্থান আকাশতে আত্রয় করিয়া আচে, ভিল তিল সম'ন আকাশকৈ অবলধন করিয়া আছে। হদি সেই ভিলকে দশ ভাগ কর, সেই দশম ভাগেরও আধার তত টুকু আকাশ চাই। কিন্দু আয়ার সহিত কিছু মাত্র আকাশের সম্বন্ধ নাই: সে অগুনহে, সে এক নহে সে দিখিনিহে ৷ এই বলিয়া আলা। কি বস্তু নয় ? আলো জড় বিবয় চটতে মহত্ত বস: আত্মা চেতন বস্তু, ভাইবে সংস্থাব এই জড শ্বীর সচেডন হইয়াছে। যখন শরীরের অন্তরে শরীর হটতে ভিন্ন করিয়া আত্মা-কে ভাবেতে পারিনে, তথনট নিরাকার ভাবিতে ला ब्राव । विष्ठां, ब्रान्स्यित भावा वाश्रित निवासीत দ বিজে লেলে শুনা দেখিৰে। যাহারা বাহিরের বিষয়েতেই আসন্ত পাকে, ভাহারা আকাশব্ভিত वश्चरक हे बञ्ज व लगा यादन: व वश्च काकारण नाहे, ভাহাকে গ'রও শরিকে পারে না । বদি নিরবয়ব স্ইল, ভাষাবদের নিকটে তবেই ভাষা অবস্থ रुदेल । गांडा . मद्र मरकांष्ट्र खट्डाब्टन, खा**रांद्र! खट्ड**-इन क्रिंड शहर है; **जन्दक** है। दिश्य क्रहा कड़ी কিন্তু ব্ছার চেডন আছে, দেই চেডনকৈ জানিতে भारत । एख छ ति, वस्तर मात्रभ वस् । यात्रम्म हात्रा

मनदक मनन क्या बाह्य खान जाता खानदक जाना वात, जाना बाहाई जायादन जनूकर कहा राज् ষে, হস্ত দ্বঁরো আহোকে স্পর্শ করিতে চায়; বে চকু ধারা আত্মাকে দেখিতে যায়; জালা হইতে আর নির্বোধ কে আছে ? क्षक बाह्र कान्नुद्ध श्रीय আত্মাকে দেখ, দেখিবে যে দে বিজ্ঞান্যয়। ভাছার আকার নাই, ভাহার অবয়ৰ নাই, ভাহার রূপ নাই; ভবে আছে কি ? ভার জ্ঞান আছে, ভার প্রীতি আছে, তার ধর্মা আছে। এই আতাত্ত্বে আরোহণ করিয়া আরো ভাহার অন্তরে প্রবিষ্ট २७, तिहे निर्माण निदाकांद्र **कान-स्वाकि ने**प्ल-ষরপ অন্ত ব্রহ্মকে দেখিতে পাইবে এবং আ-ি শ্চরো উৎফাল হইয়া-প্রেমাশ্রেম বিশক্তন করিবে। স্বীয় আত্মাই পর্যাত্মাকে দর্শন করিবার সোপান-ভূমি। এই আয়াই ব্ৰহ্মপুর, এই আয়াই **ব্ৰহ্মধান।**

কঠোপনিষদেব আখায়িকাতে আছে যে বাল্য**ি** কালে শ্রন্ধারিট নচিকেতার আগ্ন-জিক্সামা উপ-ন্থিত হইথাছিল। মৃত্যুর পরে কি হয়, জিনি ভারা স্বয়ং মৃত্যুকেই জিল্ভাস। কবিবার অবসর পাইয়াছি-লেন। শ্লাভার।ন_্নচিকেদা পিতার সভা-পালনের करना जिन बाकि जनाशांत गम- जनता किलान। দেই ভিন রাত্রি পারে যম প্রবাস হউতে গুড়ে আসিয়া দেখিলেন যে নম্যা অভিণি তিন বাতি তাঁহার ভবনে উপবাদী রুগিয়াছেন। ভিনি আপনার এই দোষ অপন্যনের নিঃমন্তে তাঁলকে তাঁর তুটি-সাধন ভিন্টি বর দিবার প্রাথনা করিলেন। নটি কেতা প্রথম বব এই চাহিলেন যে এই ভয়ঙ্কর যম-ভবনে আসাতে আনের পিত' যে শোকাবিউ ও ব্যাকুলিত ভইয়াছেন, ভাঁচার সেই শোক ও বাকুণভার উপখন চটক--ভিনি খান্ত ও প্রসন্ধ ম্না ছউন। তিনি জিডীয় বরে বর্গ সাধন যাগ-যক্ত-অনুষ্ঠানের প্রকরণ জানি বার অভিলাষ করি-লেন। ভৃতীয় বরে ভি:ন পার্থনা করিলেন "বেয়ং গ্ৰেতে বিচিকিৎস। মনুযো অন্তীতোকে নায়মন্তীতি টিচকে। এছবিদ্যাসমুশিতি প্রাহণ বর্ণাদেববর-खु खीराः।" "(श्रद्ध यजूरमा या हेग्रर विवि**करमा**" । মনুষা এ লোক হইতে মৃত চইয়া অবস্ত হইলে वि बहे मर मात्र हता। कि मर मात्र ? ना, " प्रास्त्री-ভোকে নায়মস্তীভি চৈকে" কেহ বলেগ আয়া थारकमः रकर बटनम थारकम् मा । "এজিছিদ্যামনু-শিউস্থায়াহং '' আমি ভোষা কর্ত্ত্ব অমুশিউ হইয়া ইহার সিদ্ধান্ত জানিজে চাই। " বরুণামুদ্ধ-वज्ञ कीयः " बद्धत मटेशा आमात्र कहे कुकीय वज्ञ । ষম বালকের মুখে এগড কটিন প্রশ্ন শুনিয়া চনৎকৃত रहेलन। এ जिल्लामा क्ल पूत्र होहात स्मार्वहा, छ। व, उँ। हो इ जा का का का का निर्देश में पूर्व रेका ७ जपकात सरेगारह कि ता, देश लाजिक

क्षिक्षेत्र निर्मिष्ठं सम छीष्टाटक विशिष्टम । ध दन्देव-त्रवालि विविधितिकर भूता नांच सुनिएक्रवर । ইহাজে দেবভারাও পূর্বে সংখ্য করিয়াছিলেন, हेहां युविध्छम्न सन्न। ^{१६}व्यनार वतः निध्नटणा इनीचे" ए निरुक्षकः! जुनि अना वद श्रार्थना करा। এ বরের জন্য আরু অংশকে অধিক উপরোধ कदिल मा। महित्कला विवादनम। एवजातील ুইছাভে সংশয়যুক ভিলেন এবং ভূমিও বলিভেছ ইহা সুবিজের নয়; ভোমার নায় এই সংশমের দিবার-কর্তা এমন আচাগাই বা কোবায় পাইব, অধাত্ম-বিদ্যার সমান আর বিদ্যাই বা কি আছে; অভএব আমাকে এই বর দিভেই হইবে। যদ 🏌 নৰ্কার বলিলেন, " শভাগুনঃ পুছপৌতান্ র্ণীছ " শভাবুকিশিট পুত্র-পৌত্র-সকল প্রার্থনা কর। ৰহুন্পশূন্ হস্তিহির্থামখান্ " বহু পশু, হস্টী, ভির্ণা, অখ সকল অর্থনা কর। "ভূমেম হদায়ভন্ৎ ৰুণীয়া 'নহদায়তন ভূনির প্রাথী হও। "ব্ৰক্ জীৰ শরদে৷ বাৰদিজ্পি যন্ত বংদৰ পৃথিবীতে জীবিত থাকিতে ইচ্ছা কর,তত কাল জীবিত থাক। আমা ধনের পদে থাকিতে ভোষার মৃত্যু হইবে না। হে নচিকেডঃ। মরণের পর আগ্রার যে কি হয়, এ প্রেম ভ্যাপ করা নচিকেছা এ সকল প্রলো-ভন-বাজে মুখ্য না হইয়া অকুরা মহাক্রদেব নাায় লির হইয়া উত্তর করিলেন, "ন বিভেন ভর্গনীয়ে। মনুষ্টাং হস্তীহিকা অস প্রভৃতি বিভ ছার মনুবা ত্লালয় না; প্রভুতি বছ বিস্তালগভ লয়, ভভই বালসা সুদ্ধি হয়। অভএর এ সকল আমি চাইনা। বখন তেখেরে সহিত আখার বন্ধৃত। হইয়াছে, তথন কোন্ল জাব ভূমি আর আমাকে মারিতে পারিবে; অর চির্ণা অশ্ব হস্তি-সকল তো ভোমার অনু গ্রহে পাইব ; কিন্তু এ সকল আ-, দার আংথনার বিবয় নহে। সূত্যুর পরে নলুবোর জাত্মা থাকে কি না, ইহাই আমি ভোমার নিকট हरेटल निकिष्ठ हरेएड छारे। अञ्चय रहरमा আনাকে এই ভৃতীয় বর প্রদান কর, ও ভোমার कलीकात शालम कता। धाई धाकादत महित्क छ। ৰমকৈ ধরিয়া মদিলেন, জাত্ম-বিদ্যা বলিতেই स्टेटव । खर्थन येम कील स्टेश् विविद्यान । "स्छ।-**छत्रनाटक रहर रक्टन्डमनाटक रहर । छैटको** ट्लो न विकानीटलानाप्र रहि म रनाटल।" रहा याम इसने कतिवाद निविद्ध मदन कदत, अवर इस वास्क्रि ৰদি আপনাকে হত বলিয়া মনে করে ভবে ভাষারা छेक्द्रारे जाञाटक जारम नाः ना वरे जाजा स्नन भएत, मा धारे आला। इंड इस । निकासमू द्वमन व्यव्यक्ष्माया रचमनि उक्त- "म स्माटक स्मामादन भंबीदर्श भंदींत नचे इंहरन आ सा नचे इसे ना। क्रवन्तीकारक व देशाव क्षक्षित कारक । स्टम्मन

ছिन्हिं लेखाँनि रेमनः त्रष्टि शायकः। न रेहनर ক্লেদ্যন্ত্যাপোন শোষণতি মাক্লতঃ।" ইছাকে অব্ৰ क्तिम क्रिटिंड शास्त्र ना, देशस्क व्यक्ति मध्य क-রিতে পারে না, ইছাকে জল নটিত করিতে পারে না, এবং ইছাকে ৰায়ুও শুক্ত করিতে পালে ना। এই आया अध्यम, अमारा, अद्भगा, অশোষ্য: শরীরের বিনাশে ইহার বিনাশ হয় ন।। নিঃশাস বাযু যখন বাহিরের অনিল হইর। যায়, এই শারীর ধবন ভক্ষের সহিত ভক্ষাস্ক হয়, তথ্ন আগ্না 'যগাকর্ম ঘণাঞ্জং'' পর-लारकत मन्न कान पर्य नहेता वह स्थिती हहेए প্রস্থান করে; ইগরে উপরে মৃত্রুর অধিকার নাই। এই অকটো গড়ীর দার নিদ্ধান্ত পূব্ব কালের উপ-নিষ্দ্ইইডে প্রাপ্ত হওব। হাব। দেশ, ৫ শিক্ষান্ত কেমন সভা৷ বধন নত্নভুভি, রানায়ণ মহাভান सङ्भुदान, तिष्ट्रहे छिल मा: उथन अहे छेशसियम् ছিল। বলি বলা যায় যে উপনিষদ ডিন সকল বংসরের পুর্মে প্রকাশিত হটয়াফিল, ভাষাতেও পুরিক শাস্ত্রত পরিতেরা কোন সাপতি আ-নিতে পারেন ন।। এত পুরাতন কালে আত্ম-বিধয়ক এমন সার সিদ্ধান্ত এই মুবিস্তীণ ভারত বর্ষে প্রচলিত ছিল। ইংকে কি আশ্চর্যা হইতে হয় ন৷; ইহাতে কি আমারদের মুখ উচ্ছুল হয় না ? এমত পুরাজন কালে জ্ঞান-ধর্মের এমন মহং কীৰ্ত্তি আৰু কোণাও নাই।

উপনিয়দে যেমন শ্বীর হইতে পূপক্করিয়া আঝার-দরূপ জানান হইয়াছে, এনন আর বেদেব कान अथरण नाहै। किन्तु आंग्रहिश कहे ति शहु-लाक्तित कच्छित, ७ वर्ग लाक्ति गाधन, त्रामञ्ज व्यथम हरेएड माजिलाएडिंग व्यास रक्षा याता रवम-विश्विष याच यटकत ७ हेणे। शृह्यत अवः मन-नुष्ठीन ७ भूग करार्गत् कल य वर्ग ज्यां क्यांखि, ইহাতে হতন পুরাজন সকল ক্ষরিদিশেরই বিশ্বাস ছিল। বেদেব খবিরা পর লোকের প্রতি কোন সংশয় আনেন নাই। তীহার। হৃদয়ের সহজ ধর্ম-ভাবে প্রভাগ করিভেন যে ইহ লোকে পুণ্যাসুষ্ঠা-নের ফল পর লেকে প্রাপ্ত হইবেই চইবে। **উপ**-নিষ্দের সময়ে জ্ঞানের অংলোচনা আরম্ভ ইয়া এই শাকাবিক আত্ম-প্রশাবের উপর সংশন্ন উপ-ন্তিত হইল। ভথন উপনিবদের ঋষিরা সহ*ভা* ক্রানের আবোকে নিঃসংখ্য হইরা এই আছা-প্রভারকে আরো ছচ্তর করিলেন। " পুলোন পুণাং লোকং নয়তি পাপেন পাপুং।" (প্রয়ো-পনিযদ্) পুণা ছারা পুণা লোকে গভি হয়, পাপ ষারা পাপ লোকে 1

বৰ্ণন অনাঝা হইতে আগ্লাচক, দেহ হইতে দেহীকে, পূৰ্ণক করিলা জানা ব্য়ে; তৰ্ন আগ্ৰ

কি জানা যায় ? ডখন আর এই জানা যায়, বে भंदीरद्वत विनारण आधात विनाण रम ना; य रर्ड উত্য পুথক বল্ল। আরু কি জানা যায়? না, ख्या हत्स शह नक्त अधूमग्र वाहा वसु इहेटल जाया। উৎকৃষ্ট; य हिंचु आञ्चात जाताहै मगूमग्र वाहा स्न १९ প্রকাশ পায়। আর কি জানা যায়? না, আন্ধা অমৃতের নিকেতন, অমৃত পুরুষ ঈশ্বের আবাদ স্থান; জাবামার অন্তরেই পর্মান। রহিয়াচেন, ভাহা হইতে কীবাড়া। অভি অপ্যাদ্ধেও নাই; লে হেডু উচ্হারদের মধে*।* আকা**মেরও ব**ারপান নাই৷ আবে কি জানা যায় ? না, আআ সিমরকে অবল্মন ক্রিয়াই স্থিতি ক্রিভেছে। ''এবহি দ্রেউ। ম্পুক' গ্রাভারস্যিত। মস্তা বোদ্ধা কর্তাবিজ্ঞানামা পুরুষঃ। সপাধে আকরে আছোন সম্পিটিও ।'' (প্রশোপনিষদ্) এই বিজ্ঞানার। পুরুষ একা স্পৃতি। প্রান্ডারগ্যিতা মন্তা বোদ্ধা ও কর্ত্তা, টান অক্ষয় প্রমাত্মান্ত্র ক্রিটিভ হইবা আছেন। আটা। ফুটা, চকু দেখেনা; আলু **চকুর ছারা** দশন করে। আখাই তোভা, আমাই প্রায়া, আখাই ' द्राग्व (डोक्टा) योश्वाव हे में कि भग पाबाद है শক্তি বৃদ্ধি, আখাই মনোবৃদ্ধি দ্বাধা বিষয়ের ঋা-বলাচন। করে। এই পরিমিত বিজ্ঞানীয়া কোথায প্রভিত্তি আছে? "সপবে অকরে আয়নি म° त्थ्र'क शुंदु खु ্নট অক্ষয় প্রমুখ্যে সং-लिशिय कारका रम्थ, अथारन अरकरारत छहे আখাৰ কথ। এক নিশ্বাসে বলা ইইগাড়ে। যে সভেরে জনে। এড় শক্তি অংশেরিভ ২ণিয়চেছ ভাহে, এক কথায় ব্লাগাছে ৷ এমত পদ্ধীর সভাকে সংক্রিপ্ত কাব্য, ভালে র মধ্যে আন। উপনিন্দেই ्माश्यक भारे। कहे त्यांटक चामाब रिटनेयल কনা শ্ৰুম আছে। আ,আকে কৰ্ত্তা বহিল। না কানলে মহাত্রমে পাকিড ভইমে হয়। চল্ল স্বৰ্য্য ন্দেব ন্যায় খ্ৰিলে, ১, পশু পক্ষী, লোভে ভয়ে স্বাধ স্বীয় প্রাব্ধ রুবে বৰে চলিডেচে। মনুষাই কেবস े। '० कर् १-रक्ष कंशरम। পर्माश्रेरभ हेक्र्रक निरम्भ कात्रम। উम्रष्ट कहेर्डिट, कथेरन्। अधर्मा ান , বিষা বিশহে প্রতিক্তেনে আত্মার কর্মী र कार्य कार्य कहेता कर्या पर्य इहेमार्छ। মান্দ্রত্যাপক্ষ পক্ষীর নায় প্রকৃতির নিয়মে रक र नाई: तम भटाईत नियदम बनीशान करे-१८४, व्याप इष्टेश छेदकुके प्रतिशत साहैनात अभिनात भाहेगाइ, धवः मुक्तित मार्भात मिम নি শালের হণ ক রাজ্যন্ত। প্রক্রান্তকে, পারুদ্ভিকে, পণানলে 'ম'জিজন করিতে পারে বলিয়াই জাবাত্মা पुरुष मातक लेक वर्षमाएक। शासिक विश्वार्थ ही-ীন প্রবেষর আত্মা সাক্ষাৎ পরমাঝার একটি কুন্ত প্রতিকৃতি।

যাহারা অনত ঈশবে মগ্ল ছইয়া আপনার কর্ত্তক জে ভাহার সহিত আপনাকে হারাইয়া क्तानन, ভाँशक्ति कर्डवा धर्मीत्क खूनिया निया व-निष्ड थारकन, " किनिष्टन कमा कामाग्र मंद्रीत्रमू-मर्ब्यद्वर।" (ब्रह्माञ्जभारकाशनियम) कि हैका করিয়া আরু কাহার নিমিত্তে শরীরকে দক্ষ করি। তাঁহারা দংসারের কুশলের জন্য পরিপ্রম ক্রিডে চাহেন না। ভাঁহার। কর্ত্তব্য কর্মের অমুষ্ঠানে বিরক্ত থাকেন, ভাঁহারা ঈশ্বরের প্রিয় কার্বা দাধনে উৎপাহी इस स।। उँ। हाहादान स्वीवन सीवर्ष सुक ভকর নায়ে কোন ফল প্রদান করে না। ভাঁছারী ইহা অবগত নহেন্**ৰে ঈশ্র আপনার অনস্ক** মঙল ভাব আমারদিগকে যে দেখিতে দেন সে ইহারই জন্যে যে আমবা ভাঁহার দেই পবিত্র নঙ্গল ভারতে আদেশ করি, ও নংসাবের শভ কার্ন্যে ভাঙার অনুক্রণ কবি ৷ যদি উত্ত সুন্দ্র মঙ্গল ভাব দেখিয়াও আনারদের কার্যো ভাচার অলুকবণ না করিলান, ভবে ভাষা দে:খবার ফল কি ? ব্ৰাহ্মপৰ্যা বলেন, আহাবে পৰ্যা-ছাব্ৰ কদ্ধ করিলে কথনো ভাষাৰ উথলি হলবৈ না, "মত্যান প্ৰয়দ্দ-ভবাং ধর্মান প্রমদি এবংং কুশলার প্রমাদ চবাং।" সভা হইতে বিজিল লইবেক না, পদা হংগে বিজিল্ল हरेरवक मा, ७ छ एम्ब्री वर्गेटर विक्रिश वरेरवक मा। ফান-আলোকে আয়াকে উদ্ধান করিয়া সেই मला-चक्कपटक जनस-उक्तपटक (मथ, औष्डि-खाद ভাহাকে আন্ত করিয়া দেই মন্ত্রল সকপকে পুকা कद खबर अर्थ्य वाल जाजारक बलीग्रान् कहिया स्मार् ধার্মাবছ পাবত ধরপকে অনুকরণ কর প্রতিক্ষণেই ব্রহ্মনেক পুরস্কার হইবে। ব্রহ্মণর্মোর এই आरमने । - p 78h, 1 a

DEFENCE OF BRAHMOISM, AND THE BRAHMO SONIAL

CENTIFICAL - You are aware that a warm confroversy has been raging for some years past between some Christian Missionaries, and the leaders of the Calcutta Brains Sanaj about the truth of Brahmoism. The battle is growing thicker day by day, and, it common incrour speak anglit, mightier combatants than those that have already appeared on the field, are garding their loins for the fight. evelently think he Brah coism to be no ordinary toe. The horson regressing darker and darker and greater falunations and thunderings are expected to take place but without however, it may be safely guessed, the useful complement of showers refreshing to those she that after truth.

According to one view of the controversy, Gentlemen it cannot but greeve us, Brahmos, believers in outhobs religion, as we are, to mark the bitterness of feeling that has been created by to between the Christian and the Brahmo, who both believe that the essence of religion is love "love to God Being a lecture delivered at the Midnapore Brahme

明二 "以門門其器具相關門、司

and love to man," and who are sons of the common Father with whom "verily there is no regard of persons, but in every nation he that worketh righteousness and feareth him is accepted" But in another view we cannot but be glad at the present discussion, for it is certain that our religion will come out brighter and stronger from the fiery ordeal, convincing men of its internal strength, and leading them to a cleur recognition of "the light that lighteth every man that cometh into the world." but which is obstructed to our view by the mist of prejudice and passion.

It is my intention to offer, this evening, with reference to this controversy, some remarks on Inthiten, and the guiding principles of the Brahmo Smaj, in vindication of our religion and its proncipal followers, avoiding as much as possible the

edium thrologicum.

It shall be my endeavour in this locture to keep always prominently in my view the principle, that among all religious denominations, the meck followers of the catholic religion, for Binhmoism is essentially the catholic religion, should exhibit in their own persons conspicuous examples of no-ligious toleration and love, never indulging in sarcasm metead of argument, and in vitaperation in-stend of fair reasonage, in ver sacrificing condor tor the sales of mere liveliness. My remarks will not a lave relative of a single Christian Missionary bot to the arguments, advanced by Christian Missionsaries in general in this country against Brahmo sig-

The Christian Missionaries who attack the Brahano Sound, say that Infuntion is resufficient to tre as a clear idea of god. I would account these reverend problem in to consider that resolution always presupposes a being that reveals the good rise it that being, his midlibility and holious, or else what he says (muot be b hered in N m the infallibility and the perfect betties, of God necessarily highly his other perfections. A revelation is not at all possible unless a Perfect Bong ; ехњія

Now if we are able to knew so much clearly and distinctly I say, without a volution what i the necessity of it? Cannot all the other fort, of religion, the most important for our salvation be deduced from the above? Has God male a natural provision for the gratification of every one of our natural wants and not for that of the great. est necessity of human nature, thirst after religion.

knowledge?

Is not belief in God himself, our Creator, Comforter, and Rodeomer, whose sweetness should perfume our whole life, and the beauty of warest holiness should ever be present before the eve of the mind, as light that clasps heaven and earth in its lovely embrace is before that of the body - 1 ask, is not a belief in Ifim only quite sufficient for salvation without a belief in a Mediator i Is the assistance of a third party required for a son to go to his father? Is every man who loves to with all his heart and strength and who loves his neighbour as himself, but who, from conscientions scruples, cannot believe in Christianity to be reasted in eternal hell fire? If that be not the case why then insist so much on the acceptance of a book revelation as necessary for salvation? Granted that a book revelation exists, what is its test? It cannot be any other thing than Intuition. Its tost can neither be the miracles, which the apostles of Christ themselves said every false prophet coming in the name of Christ could work, ner prophecies conched in the most enignatical language, and

difficulty of

admitting of a thousand different interpretations, but the heart of man on whose fleshly tablets God has written the only true revelation. if a voice from the heavens cry out: "Oh man! lie! steal! bear false-witness! for lying, stealing, and bearing false-witness we the true road to salvation", could we believe in such a voice? Certainly not. Why could we not believe in it? Because its utterances would not agree with those of our own hearts.

It is plain therefore that "Intuition is our revelation and likewise the evidence of that revelation". The Brahmos cannot believe in any other revolation than what is contained in "The elder Scripture writ with God's own hand Scripture authentic uncorrupt by man"

Christian Missionnes assert that it is evident that Intaution does not give us a clear idea of Old because digrading notions of him are found to prevail among the nations of the earth. It cannot but be admitted that such degrating notions exist among mandinal, but what is the cause? The intuitin about God is that there is a Perfort Mind in whom we entirely depend but then different nations have get differed their of purfeetion. Rude nation believe true of a noise to conset in power only. As they are not etruck by the sight of call about that of good they consuler if a greater manifestation of power to an evil than good. Hence some nations believe the Dorty to be of an evil nature, as did the ancient dews, who thought God to be a pealons and revenuental god. Rude nations consider such inless as and storn ray cruel, as quester than those who are nonso but as their ideas of perfective improve with then palgment that below the greature to to me

The law of mogres, oppose to religion as to orner thangs. Is not priver so to be perceived in the source writings of the thou tians don't was it not a great true from from the Flohim of Mosos to fee that is the New I stament . " A damge place me, the denish religion from he a to love. home power to a roum, figurities perties, about to the min's of flot, come the nation of a endrydeal from the weed to mother from the contation ci the sins of the lather up of the checken, to terry soul shall be a its non-dapping from the art the colonials and the colonials and the colonials.

small you

except finals cand on that it was (), Olive, who has reveal 1 cornel uctions of religion to manhant and rat they did not possess them been he con a mer. You this is a statement

march tothe all history

I would be samend, Gentlemen to your attention pure if the 'Intellectual Sestem of the Universal' la of 10 Calworth, whose liberal Christianity do receive gonflewen in question would do well to mulito. This book contains intimerable proof of the existence of correct norms of the gotto of prevaling among the accreat Greeks and

The Apostles and the Fathers of the corty Christun Church w ro more liberal in their acknowledgement of the ments of the so-called heathens in this respect than our present Christians. Every one who has read the New Testament must recoiled the oft-quoted celebrated saying of St. Paul "The wrath of God is revealed from beaven against all negodiness and merghteousness of men whe hold the truth in narighteousness; because tha

the things of him from the creation of the world are clumby seen, being understood by the things that are made, even his eternal power and godherd, so that they are without excuse; because that when they knew God they glorified him not as God neither were thankful; *but became vain in their imagination and their foolish hearts were darkened."

Now from the expressions "God hath showed it unt them", "clearly seen", and especially "they me without even-e", it is plan that the apostle behaved that the light of nature was quite sufficient to give man a correct knowledge of God Instead of thinking with our modern Christians that the bothers did not possess correct knowledge of tood, the said apostle did not think it beneath hum to horrow a line from the Greek poet Aratus " in him we live and move and have our being and another from the Dramatist Menander, " evil communications corrupt good manners One of the Fithers of the early church cailed Scerate: St Apertacs on account of his noble life and still nobler death. Another was so struck with the beautiful religions and moral sayings tound in Greek authors that he said that a man might judge either the ones of Christians were philosophers or the old purto, others me Christians

Turning from the one branch of the Aryan manufestation of the religious sentiment the Rell eme to the other the Indian, (there have been bat two great manifestations of the religious sentiated in the world, that is the Arvar and the Shenath .) I would recommend to the religious inquirer the perusit of the compilation named Brilino Dharnar published by the Calentia Sapia, many years ago. It outside religious sayings selected areas the Ship co so and credy simple with so replete with or one to and beauty as to justify the assertion of Worker Schlogel. It cannot be desired that the each Indians possessed knowledge of the true field All then writings are replete with scatiments and uspessions mode clear, severals grand, as deeply emerged and reverentially expressed as 19 any human language in which men have spoken of their The Brahmo Dharioa also contains beautiful moral precepts rivaling in excellence any found in the Scriptures of other nations

Our reverend friends lay great stress on the point the it was the Bible that brought life and immor tality to light. If that he the case. Why is the Logistic a future existence, and the distribution of the rewards and purishments so prevalent among mered to non-Christian mations? Why are there such be nitrful descriptions of the destination of the annan out found in their religious Scriptures? This hads us to believe that the immortality of the beman soul is as much an intuitive belief as or a revictions of the distinctness of the principle outling to which we call "I", from the body and or man asurable superiority to the latter. This bull to future existence afterwards gains ample construction from the moral attributes of God which require a just distribution of rewards and prinstance is not witnessed in this life. Now believthe in in intuitive truth is one thing, and giving and monstration of it to others, another. People may often fail in the latter, the they cannot ignore the belief, as was the case with the Grecian philose va . Plato.

horsel demonostrations of the immortality of the soul over in modern times are more satisfactary than those given in uncient times because the Source of theology improves with time just as other sciences, while the primary intuitions upon

which the science of theology is based are the same in all ages and countries, Some of our reverend friends account for the

Some of our reverend friends account for the noble and beautiful sentiments met with in the so-called heathen writers about God, immortality of the soul and the moral defies of man by the theory that they are derived from a primeral revelation. Now this theory rests only on the authority of the Bible. As the Lectures of our reverend friends against Brahmoism are intended to edify the educated natives, most of whom do not believe in any revelation at all to hazard an assertion on the authority of the Bible is as abissive as for an orthodex Hindon to attempt to convince a Chastian of the correctness of historimans by enting in corroboration of them the Ethagavat Poosana, or Chontamya.

Our Christian friends maintain that the Gospel has revealed the time plan of redemption for our surs. It will be going beyond my limits it I discuss the question how far the opinions entertained by modern Christians on the subject agree with the Christiant'v of Christion even apostoloal Christrainty, but suffice it to say that two e cateriained or if by those whom our chirteen friends call heathers, (I beg to be pardoned as them for stating the simple truth) are superior to their The idea entertained of God by our Christian friend is that of an oriental despot who while positiving a criminal, looks more to his outraged horem than to the good of the state or the amendnest of that erinnel. The opinica that God ramshes exactly in the same way as a human goveraor dies who is not satisfied with only the repentimes of a cranmal or that punishment in the sense in which it is taken by mea is no much necessary in the divine school of government as in the binner is arthropomorebitic. Art not the panes of removes afficient punishment for our sins? If remove do not take place in the heart of a baidened sinner in this world, is it improbable that it may be awakened as his mind in a future state when his religious and moral susceptibilities along with his other faculties would be more improved than now? Will not then his own heart hea holl to him realizing the following description of Satan by the great author of Paradise Lost

* For within him but He brings and round about form, nor from hell One step, no more than from himself, can ity By change of place?"

Our reverend friend, if they impartially consider the subject will had it more consonant to the infinite goodness of God to believe that he punishes the somer is a father deep his child in order. to amend his conduct and not as a ecalous revengeful eastern (trant to vindicate his own outraged honor. Our reverend friends maintain that not a single religious or moral truth has been discovered since the tome of Christ. Why since the Christ? We may say since the creation of man, for religious and moral truths are as old as the human race, although their purification, which may be compared to that of a valuable metal from its state of rude ore and the discovery of the several modes of demonstrating them are more recent as they are the work of twee. If no new religious of moral truth has been discovered since the time of Christ, another sort of discovery has been made that is that of the erroneousness of some of the beliefs of Christ, such as those in the propriety of sections in the existence of domis, and the efficacy of exerrism and in the occurrence of the noivered discolution in his own generalism, Among those beliefs, I desire to dwell a little on the first of them, that is his belief in the propriety of leading an ascetical mode of life. Christ, though perhaps the greatest religious genius the world has ever seen, was still an accetic. like those commonly met with in Asiatic countries. His not recognizing his mother when others pointed her out to him and his enjoining his disciples not to care for temorrow's food or raimont; it short the gener I mode of life which he led, followed afterwards by his disciples proves that he was an ascetic. Now this asceticem has been relaxed in Protestant countries although it exists in its integrity in Homan Catholic countries which the in thus respect more christian than the former.

former.

Christian missionaries remark the diversity of opinions prevailing among the Prahmos. The same might be remarked of Christians by Brahmos. The Brahmos, however have this superiority over the followers of exclusive religious that although an individual may have difference of opinion with the Somaj on minor points, he is reckoned a Brahmo if he agrees the security is "Unity in essentials, variety in nonescentials and toleration in all" might be predicated with greater correctness of the Brahmos.

than of Christians

After attempting to refute the arguments generally advanced by Christian massionary against Brahmosian, I now proceed to vindicate the Samaj from the charge of vicellation which our reverend friends have brought against it. They say that the Samaj has passed through three different stages of religious opinion, namely those of Vedantism Rationalism, and Interionalism. This statement is not correct.

It must be frankly admitted that minor changes have taken place in the religious opinious of the Samaj but not in essential. A belief independently of an external revelation in the One True God, One only without a Second' the creator and the preserver of all, in the immortainty of the soul and the existence of the noral law, in the distribution of inture rewards and punishments and in the paramount necessity of worshipping God with love and learning a pure and blaineless life has been the distinguishing characteristic of the Somaj from the time of Ram Mohun Roy to the present. It has never believed in a written revelation except so far as it is consonant to reason.

Ram Mohun Roy cited the authority of the Vedas while writing against popular Hinduism, that of the Bible while disproving the doctrine of the Trinity and that of the Koran while attacking the absurdate: of Mahommedanism as in the Persian work "Towfatal Mohaedin" but ne was neither a Rindu nor a Mahommedan nor a Christian in his religious apiutons. His biographer in the "Calcutta Roview" says on the authority of his immediate disciples that before he departed to Europe he told them that after his death the Hindoos will contend that he was a Vedantist, the Christians that he was a Unitarian Christian and the Mahommedans that he was a Mahommedan but he really belonged to no existing religious denomination in othe world. The Cathelicity of Ram Mohan Roy wore a triple aspect; that of Vedantism towards the Hindoos, that of Unitarianism towards Trivitarian Christians and a still pures form towards the Mahommedans in whose case he had not to contest with the doctrines of Multiplicity or Trinity. In the case of the Hindons and Trinitarian Christians he thought it more proper to attempt to remove first from their minds the belief in many gods or three gods by attacking it with their own weapons than to preach pure theirn to them.

The essential catholicity of the religious opinions of Ram Mohun Roy plainly manifested itself in a theoretical form in the Towfatal Mohaedin" which by-the-bye was his earliest work and a very small pamphlet published by him in English, hearing the remarkable title of "Universal Religion" and in a practical form in the primitive constitution of the Calcutta Somaj In the Trust Deed of the Somaj building it is stated that it is to be used as a place of public meeting of all sorts and descriptions of people without distruction for the worship of the Author of the Universe but not "under or by any other name peculiarly applied to any particular being or beings by any men or set of men what-ever". The sermon to be presched and the hymns to be sung therein " should have a tendency to the strengthening the bond of union between men of all religious persuacions or creeds" It is said that, in accordance to this principle, in the very infancy of the Sansaj Eurasian boys used to sing Psalins of David in English and Hindu musicians religious songs composed by Ram Mohun Roy and his friends in Bengah

But Ram Mohan Roy was soon after obliged to give a more Hindu aspect to the Somaj for the propagation of the doctrine of the unity of Gal among his countrymen and that to such a degree that the Vedes which were now pronounced by inner to be the chief guide of his followers in matters of religion were read in an adjoining room accessible only to Brahamas before public worship was held in the Samaj Hall and gifts were distributed to them on two or three successive Samaj anniversaries

It is however plan that Ram Mohun Roy did not consider the Vedus to be inspired compositions because while he acknowledged the Vodos to be inspired he in the same breath admitted the Christian Scriptures also to be inspired. His idea of inspiration was not that of a mic lealous process confined to any single ag or nation but a gift coextensive with the human tace. In the sense in which he acknowledged the Vedas and Ciristian Scriptures to be prepared, he adented even e rtam portions of the Pooraus and the tant as to be inspired. In his preface to his Bengali translation of the Ishopanishud, he says "Are not the Poorans and the Tintias She trus? They at. Shastras because they also proclain the units of God" his opinion then, those portions only of the Poorans and the Tantras p -seemed Sansorn authority which proclaimed the unity of God It is still more carrous to relate that he held the works of the celebrated Persian part Jelalorddeen Roomee, called by way of emisencoths Moulana, to be inspired in the same some as the Vedanta His higrapher in the Calcutta Review says that he once expressed his intention to retire in his old ago from worldly life and devote him elf to the study of the Vedanta and Mesusyn the great work of the said Moulana It is evident therefore that Ram Mohun Roy's idea of inspiration was that of a process of spiritual illumnation and cestasy thered by all the members of the human race in more or less degree.

The intelligent portion of the immediate disciples of Ram Mohun Roy did not mistake the sense in which he called the Vedas a revelation. They partook of his eclectic spirit, quoted with almost as much enthusiasm a precept from the Tantras as one from the Vedas—a robase from a Scofee poet on the agreement between all religions as a stoke from the Bhagavat Gueta, and spoke with rapture (I state from personal observation) of the religion of themselves and their great teacher as being that

of the wise of all ages too countries, as being in fact the universal religion

After the death of Ram Mohun Roy, the catholic character of the Somaj was not destroyed. Even while its leaders admitted the Vedas to be a revelation, they did so solely on account of the "reasonall bress and cogency of their doctrines" as compared with the other Shasters of the Hindus and the religious Scriptures of other nations. They rejected the idea of a revolation supported by external condence. "The only ground," they said, " on which the truth of any system of behelf can be maintained is that founded on the nature of the doctrines incidented by it " "If the doctrine of theology and the principles of morality thegat in the sacred volumes referred to appear to be consonant to the dictates of sound reason as t visitom -- if these teners and people cury the managed hibse character of truth in them - the man who has recoved them e of continues to place his crust in them will have o casen to fear the vilue aims sammes of un-godlines in respect to his i lighth? (Vide Vedan-tic Doctimes Violacuted) The letter of Balan Debuglio Auth Time published in the Englishman in October 1816 species of his religion as one who a principle are extend to by the dietates of that of nature and of bunnan trees in and homen hear, and by the tree of the misest of all ages and countries." The Previoud M. Mullens, in his Essay on Vedantien Bedinnen and Crost amy says "Though the Briham's claim the Veles as a revelation of divine to the they look place ity upon the works of Vater eas non reasons reacher. From nature to Vitariol in a und because the Vita-(as they resort eagree only nature therefore they regard open, as a spared. He quites in support of the chove assert a the t dlowing passage from the · Vedicity (Doct in .- Visite) " Far knowled re die die nei'r somes or orspitation deals with ctored teat's what require no other proof than what the whole creation and the rund of man by perverted by tallier a coassiones all not in about lineon If a there me evident that the leading of the Samaj at the considered the Vodas to be r vented solely a count of the reasonableness and canney of the continues. Their error lay in beloving that above or they contained was reasonable and cogent. As soon as they perceived then mistake affer a wider study of the Vedas, they shook it off BY OF P. Now why did they do so so easly? The resears that a higher standard of belief had alwave predominated in their minds as shown by the all tenstracts from their publications over that of winds a revelation, that is the standard of reason and and an arrangement they could not continue protosso but the a revelation which was found to eaters comme

it soon still holds that only those doctrines and a son of a common hook that are reasonable in a son worth a its helief as revealed by God so a transmission all truth. The present member of the untain of all truth. The present member of the untained all truth. The present member of the district of the district of the conformity of a district of the district of the groundwork, and reading the same that the superstantine of religion. As all the same to be said on intuitive belief and as the Sunative never demand the importance of reasoning to the determination of religion, truth, its recognition of multiple cannot be reckoned as an organicating of principle but as eather a development of the principle of the pri

Yea see then, Gentlemen that a belief in the rest truths of religion independently of an external

revelation and on the principle that the reasonableness of seedoctrine is the only test of its truth has been the chief characteristic of the religious opinions of the Samaj from the time of Ram Mohun Roy to the present. There . also another feature of the Samay which it has not rest from its first establishment to the present time. I mean its Hindoo aspect as far as such aspect can be maintained in conformity with the principles of true religion. The service of the Samaj contains extracts from the Sha-tras, books held in veneration by the people of India trois ancient times In discussion with orthodox Hindoos, Slokus are cited from them by the Brahmos in corrobonation of their opinions. This practice has been adopted by some Christian misstonaries also, giving a greater right to the Brahmos to its observance. The Brahmo Dharma Grantha or the manual of Brahmic faith consists of selections from the Shastras. The same process of selection and retormation but not of extripation is nowadays long also applied by the Brahmos to the ritual and custom of Bengal Wnatever in them. is not opposed to the true religion and to right reason is being kept and whatever is so is being rejected. The Brainnor cannot be binned for displaying a certain degree of conservation in the work of reformation. For in fance what would an English Theist has adone in a similar case? Would be have at once rejected the whole Bulle and the whole of the old cerema all and entoms. Certainly not "The natural result of the right of private judgment a principle of rucen a plicable to all religious to purify and to sportualize, by which the dew ap, plying it to his Bulb, the Hindoo to his Shastarthe third to his Piaco, the modern European of the New Testment the Millionanicdan to the Korao and so to, the mankind neight gradually become were unted in a incitively celectre feeling of piety and revience, to qually illowing variety of customs, and ensenting out of former creeds to Stelect the weeds and kep the flowers" Although Brahmore, is the purest form of Hinduisin and althothe burry has a Hindu aspect which it would be a

more indubted than to any other of those religious. The essential features of the Samaj have remained unaltered from the time of Ram Mohun Roy to the present but it has not however remained still since his death without making progress. The catholic religrou m essentially of an expansive character. One of its leading doctrines is that religion like other things is subject to the law of progress and that the religious ideas of man develop, expand and purify themselves with time. The Sams, therefore profeslied its character had it remained stereotyped on the Vedantic plate of Ram Mohan Roy and not made any progress since his time when its religious opimons admitted of progress The progress which the Samaj has made since the time of that reformer has been both of a negative and positive character. The negative progress lies in its abandoning its behef that whatever is contained in the Vedas, is reaer and fuller recognition than before of intuition as the foundation of natural religion. I use the expression "clearer and failer reorgantion, than before"! because such recognition is not of a very recent date us has been asserted to be. The Brahmo Diarma published about footsets.

summed step to destroy, its members, as becomes the

followers of universal religion, are not backward to

acknowledge then obligations to other religious than

Hinduism, especially Christianity to which they are

has the expression antwer myn wige taken from the Mandockya Oopanishad of the Athana Veda, meaning that the proof of the existence of God is intuition only If any one to a over the file of the Tattwabedhicoe Patrika for Sakabda 1776, he will find an article headed the two forest in which it is distinctly stated that our belief in the fundamental truths of religion is of an intuitive character. In some other articles published about that period, intuition was stated to be the primary basis of re-

The progress of Brahmotsm will ever keep pace with the ige. The latter can never outgrow our When I was secure springs up, the memrelición not of A Same, denot require to take the infinite pain which the follows of other religions take and that a man with the creed the profess Proceed that instead of there being a natural was the twee religion on the one hand and in and second on the other, the latter exercises . . I thy milia accompon the former in refining and what if With regard to the relation between science and religion, the Samai echoes the following sentiment of an English writer . True seinnee and true religion are twin-sisters and the separation of either from the other source to prove the death of both. Someo pro pers exactly in proportion as it is religious and religion flourishes in exact proportion to the scientific lepth and firmness of its bis . With regard to the relation between philosophy and religion, the members of the Samay ra. "The mangaration of relectic philosophy is about a fact in the plut was head world and seisee to uspue us with the home that side by side with either philosophy will reign out hite intigion that natural introduced and natural psychology will triniophantly use in harmone from the emiliets of contending sects." In conclouity with such views, the Samaj has always gladly admitted secentiale and philosophical articles into the columns of the Tattwabadhinee Pattrika. In short the opinions of the Samajon this point can be thus summed up that there is no disagreement between Common Sonse and Philosophy, between Reason And Revelation, between Theology and Science but that each her its own prescribed functions which must be preceted by those of the other in the building up of the grand edition of Theism.

Brahmo brothren who are present in this Hall, I have a word to tell you before I conclude. I on troversy with the followers of other religious we cannot avoid both for purposes of self-vindication as of conversion but let us set an example to them in what spirit religious controversy is to be conducted Appealing to those sentiments which every religion has in common with Brahmoism for Brahmoism is the universal religion, we should try to wear the followers of other religious from their errors and prejudices in the spirit of charity and love, for we are children of the one common father. Let us recollect the remarkable words of the great founder of our religion "strengthening the bonds of union between men of all religious per masion and orceds." Let us not lose our temper at the time of discussion. Let us not indulge in sarcasm instead of fair argumentation for sareasm but ill befits the most momentous of all subjects, religion. Let us not sacrifice candour at the alter of liveliness. Let us not for the sake of appearing amount loss sight of the duby of behaving fishly towards the followers of other religious for

they are men and as men they are our brothren.
I see come of us are very fond of religious controversy but let us not give way to an over-fundness a religious being. Let us pay more attention to our own religious and moral improvement and that of our country than to how we will best acquit ourselves in religious controversy. Let us always cherish in our minds a lively consciousness of the Divine presence Let us in all our actions keep Him before our minds' eye as "an abiding presence not to be put by." While we are engaged in the duties of a worldly life, let us remember were in the presence of a Task-master whom we cannot deceive though we can deseive our earthly task-When we indulge in harmless pleasures and amasements, let us think of Him as a father who is observing the mirth of his children wa are holding a great religious festival let us consider Him as at once its spectator and object. When we hold a meeting for any other purpose conperted wish religion than we day, let us consider Him as its gir at president. When we worship Him in the Sama, He'll be us adore Him as the living delay of the temple. Let us in all our thoughts words and deed keep Him before us

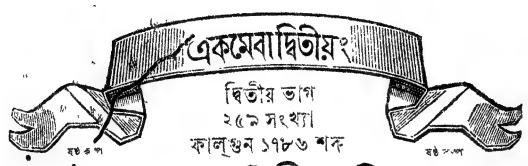
Let us be pure and body in our lives. show to the dolater that me religion is a directed religion, a relation only to a talked or and not acted up to. To take in decimen nees for our religion. and thereby show our country men that we love it with all our minds, all our heart, and all our strength, then will they think that Brahmo'sm is something and that it is not to be made light of Let us think more of our country's than of our own interests. Let us direct our chief attention to the education and social in provenient. I our women for it one half of our population by positioners how can the other), ill prosper that un has always up and denier for our count ye mand the or transition and the duties

of those and he at such a period are not light. I set that our Fuller our Savier' our Les-Jenoul article of this awight critical time. To The velock up me size eour for we are walk. Also as arrist the light of the counterance for that sloves an only countrytion and the darkness of dangers of our sit stion From The alme come strongth on lost a ditass Porsake us not but infess per oc, lamb, and fortified one one sort so that we may stand as withnesses of Thy gher to penerations to come

পুস্তৃক বিক্ৰব।

	49449 1111	-			
					युना
ব্ৰ:হ্মপথ্যেৰ হ	ন্তু ঠ ⁺ন-পদ	ভ			No.
बद्धिक्षिः (६)	हे हर्षे प्र टेर्क	র প্রবণ	·æ)	• •	10
শিশুপালন	भ जान		* *	4.	į o
À	২য় ভাগ	• •	• •	••	100
	্ গ্রাহকদির			নগৰ	মূপা
ৰাজীত পুস্তুৰ	প্রেরিভ হা	हिंद न	11 .		
		-			

ক্লিকাতা ব্রাক্ষ্যমাজের ১৭৮৩ শকের প্রৌন্ধ মান্দের আয় বায় বিবরণ।	" शीकावत रटक्गाणाधात
८अम्ब मा८नद्र आव वात्र विवस्ता	" পার্বভীচরণ ইংলাপাধ্যায় >
আয়	-
क्रव्याधिनो शिक्का ३१५/०	2840
বছাৰেয় ১৪৮।১৫	द्वान्त्रस्य आठांत्र क्रम्भाम ।
भूश्यक विकास (३६०	জীবুক্ত প্রশন্তকুমার শেন শুপ্ত ১০,
क्षंक्रमञ्जू ३५००	গ রাজারাম মুখোপাখ্যার ১
पुरुष्ठिम हैंग्रे विकास २। ०/১०	। गननाय मध्यमगान भाव
可服事 そ そ !! シンム	" (भाभागास्य मित्र)
92814/20	5/9/10
ব্যস্ত	-51-10·
য়াসিক বেছন , ৮৭॥০	वाग्र ।
श्रीयुक्त विकारकृष्य भाषामी श्राहत्व ४१	শ্রীযুক্ত বিজয়কৃষ্ণ গোখামীর ঢাকা গমনের
প্রিকা যুক্তান্থন ৩০	পাবেশয় ১০
बर्खानय	शान्की खाडा 10
श्खक द्वमांकव १३	विस मत्रकारवत शिक्षा भारत याहेवात वाग १५०
সর্কারের ক্ষিম্ন ১১ ৯৮১০	wijek regulak-self-filijiter
办理 賽更 4. B	20170
が極声 、	া জাগ্ন
graphyta.com vor remaining on P	1
	बाष्ट्र ५०१५०
3997/26	साम्र २०१२०
 A service part despete de botes despete despete de la la	হিছ
244!!/2c 26/8/8/2c	A CONTRACTOR AND A CONT
and the contract of a second of an experience of the contract	হিত ২৭৮/১০ শ্রী প্রতাপচন্দ্র মঞ্মদার।
আয়	হিত ২৭৮/১০ শ্রী প্রতাপচন্দ্র মঞ্মদার। কলিকাতা ব্রাহ্মন্মাজের দান সংগ্রাহক
আয়	বিত ২৭৮/১০ শ্রী প্রতাপচন্দ্র মঞ্মদার। কলিকাতা ব্রাহ্মন্মাজের দান সংগ্রাহক। নিঘ্লী প্র।
আয়	হিত ২৭৮/১০ শ্রী প্রভাপচন্দ্র মঞ্মদার। কলিকাতা ব্রাহ্মসমাজের দান সংগ্রাহক নিঘ্লী প্র।
আয়	হিত ২৭৮/১০ শ্রী প্রতাপচন্দ্র মঞ্মদার। কলিকাতা ব্রাক্ষমনাজের দান সংগ্রাহক নিঘ্লী পুত্র। পুষ্ঠা ভ্রাচার্যোর উপদেশ ১৪৯
ভাগ	হিত ২৭৮/১০ ত্রী প্রভাপতন্দ্র মঞ্মদার। কলিকাতা ব্রাহ্মসমাজের দান সংগ্রাহ্ম নিঘ্ণী পুতা। পুতা। স্থাচার্যোর উপদেশ ১৪৯ কীবনের প্রকৃত ব্যবহার ১৫১
আয় ৩৯৮/১৫ পুর্বহার খিড ৫১০/১০ ৪৪৫৮/৫ বাহ্য ৩৭৭৮/১৫ ভিচ্ন ৬৮/১০ ভি বিজেন্দ্রবাধ ঠাকুর।	হিত ২৭৮/১০ শ্রী প্রতাপচন্দ্র মঞ্মদার। কাললাতা ব্রাহ্মসমাজের দান নংগ্রাহক নিঘ্ণী পাতা। প্রাচার্টোর উপদেশ ১৪৯ লীবনের প্রকৃত বাবহার ১৫১ বিয়োজার পার্করের পত্র ১৫৪
ভাষ ত ১৮/১৫ পূর্বকার খিড ৪৪৫৮/৫ বাহ্য ৩৭৭৮/১৫ ভিন্ত ভিন্তেজনাথ চাকুর। সম্পাদক।	বিভ
আয় এ৯৮/১৫ পুর্বার খিড এ১৮/১৫ ৪৪৫৮/৫ বার এ৭৭৮/১৫ ভিন্ত ভিন্তির বার বিজ্ঞানার ঠাকুর।	হিত
ভাষ ত ১৮/১৫ পূর্বকার খিড ৪৪৫৮/৫ বাহ্য ৩৭৭৮/১৫ ভিন্ত ভিন্তেজনাথ চাকুর। সম্পাদক।	বিভ
আয় ৩৯৮/১৫ পুর্বেছার খিড ৫১৮/১৫ ৪৪৫৮/৫ ১০০ ১০০ ১৯ বিজ্ঞেন্ত্রনাথ চাবুর। সম্পাদক।	হিত
আয় . ত ১৮৮/১৫ পূর্বকার খিত . ৫১৮/১৫ বাহ্য . ৫১৮/১৫ বিহ্ তি কিলেন্দ্র বিশ্বক নার । বিশ্বকিন্তার থাতি জাত সাস্থ্যবিধ নার ।	বিভ ২৭৮/১০ শ্রী প্রভাগতন্দ্র মঞ্মদার। কালনাতা ব্রাহ্মসমাজের দান সংগ্রাহক নিঘ্ ন্ট প্রে। পূতা ভালাগেরের উপদেশ১৪৯ লীবনের প্রকৃত ব্যবহার১৫১ লিয়োডোর পার্করের পত্র১৫৪ ইন্ধিপ্রীয় মত১৫৭ তবানী পুর ব্রহ্মবিদ্যালয়ের উপদেশ ২৫১ ইংরাজি১৬২ আয় ব্যবের বিবর্গ১৬৮
আয় ৩৯৮৮/১৫ পুর্বেরার হৈছ ৫১৮৮/১৫ রায় ৩৭৭৮/১৫ রায় ৩৭৭৮/১৫ জী বিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর। সম্পাদক। বাস্থিত বিহারীলাল ভটাচার্যা ৫	বিভ
আয় . ৩৯৪৮/৫ পুর্বহার ছিছ . ৫১৮/১০ ৪৪৫৭/৫ বার . ৩৭৭৮/১৫ বিরু : ৬৮৮/১০ জী বিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর। সম্পাদক। বাংগদিনার থাড়ি জাও নাস্থ্যবিধ নান। শীযুক্ত বিহারীলাল ভটাচার্য্য . ৫ রাম্থ্যেক্তন্দ্র দে . ৪	বিভ
আয় ৩৯৮% ১৫ পুর্বাহার হিছে ৫১০% ২০ ৪৪৫৭/৫ বায় ৩৭৭৮/১৫ বিয় ৩৮৮/২০ আ বিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর। সম্পাদক। বাক্ষিণের থাডি ভাত নাৰ্থসন্ধি দান। শীযুক্ত বিহারীলাল ভাটাচার্যা ৫ রাম্মেন্ডন দে ৪ শেশুলেন্ডল চটোপোধায় ২৭০	ত্রিত
আয় ৩৯৮৮/১৫ পুর্বহার ছিছ ৫১৮৮/১৫ বার ৩৭৭৮/১৫ বির্বাল ডিডাও নাৰ্থসন্ধিক নান । শীযুক্ত বিহারীলাল ডিটাচার্যা ৫ রাখনেংগুল দে ৪ প্রেডাল্ডল চাইলোগায় ২৭০ গ্রিমান্তন চাউলোগায় ২৭০	বিভ
আয় ৩৯৮৮/১৫ পুর্বহার ছিছ ৫১৮৮/১৫ ৪৪৫৭/৫ বার ৩৭৭৮/১৫ বার ৩৭৭৮/১৫ আ বিজেলেনাথ ঠাকুর। সম্পাদক। বাক্ষিণের থাডি জাও নাছ্যারিক দান। শ্রীযুক্ত বিহারীলাল ভটাচার্যা ৫ রাগ্যোভন দে ৪ শ্রেডাণতন্দ্র চটোপাধ্যায় ২৭০ গ্রাহারিলা চটোপাধ্যায় ২	বিভ ২৭৮/১০ শ্রী প্রভাপতন্দ্র মঞ্মদার। কাললাতা ব্রাক্ষন্মাজের দান নংগ্রাহ্ন নিঘ্ণী পাত্র। পাতি পাত্র। কালনার পাত্র ব্রাহার কালনার পাত্র। কালনার বিবরণ তত্ত্বোধিনী পাত্রকার মূল্য নিক্রপণ। অগ্রিন মূল্য (কলিকাভার জন্য) . ০৩০ নালিক মূল্য ৷০০০
আয় ৩৯৮% ১৫ প্রথকার খিল ৫১৮% ১৫ ৪৪৫৭/৫ বাল ৩৭৭৮/১৫ বিল ৩৮% ০ জী বিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর। সম্পাদক। বাক্ষিনের গঠি ছাও নাখুংসরিক নান! শীযুক্ত বিহারীলাল ভটাচার্যা ৫ রাগ্যন্থেকন দে ৪ শার্থিভাল চাটাপোধ্যায় ২৭০ শার্থিভাল সর্বাধিকারী ২ শার্থান লাল পাল ২	ত্রিত
আয় ৩৯৮% ১৫ পুর্বহার ছিছ ৫১% ১০ ৪৪৫৭/৫ বাঘ ৩৭৭॥/১৫ বিঘ ৩৮৮/১০ আ বিজেলেনাথ ঠাকুর। সম্পাদক। বাক্ষিণের থাডি ছাও নাখ্যারিক নান! শীযুক্ত বিহারীলাল ভটাচার্যা ৫ রাগ্যোতন দে ৪ শতাপতন চটোপাধ্যায় ২৭০ গতাপতন চটোপাধ্যায় ২৭০ গতাপাতন স্কাধিকারী ২ শান্তান পাল ২ শান্তান পাল ২	বিভ ২৭৮/১০ শ্রী প্রভাপতন্দ্র মঞ্মদার। কাললাতা ব্রাক্ষন্মাজের দান নংগ্রাহ্ন নিঘ্ণী পাত্র। পাতি পাত্র। কালনার পাত্র ব্রাহার কালনার পাত্র। কালনার বিবরণ তত্ত্বোধিনী পাত্রকার মূল্য নিক্রপণ। অগ্রিন মূল্য (কলিকাভার জন্য) . ০৩০ নালিক মূল্য ৷০০০



তত্তারোধিনীপ্রতিকা

রক্ষাত্রমান্ত্রমানী স্থান্ত কিক্সবাসী কলি দেশ সর্ক্ষসক্ষ। তা দ্বানি বাং প্রান্ত্র দিনে স্টেগ্রিন গ্রান্ত ১০ কিউছিং স্থার্কাপি স্থানিনজ্য দ্বাশিলস্থানিত নকাছিন দ্বাল্লস্থানিকানি লিকেন্দ্র সিংগ্রেনি । তার্কার বিধানি তার্কার বিধানি । তার্কার । তার্কার বিধানি । তার্কার । তার্কার বিধানি । তার বিধানি । তার্কার বিধানি । তার বিধান

পঞ্চতিংশ সামৎসরিক ব্রাফা-মনাজ।

१५ माच १९०५ नक ।

जेखद धमारिक अ मारियन मरकार्मित অভি নমারোহ পুর্মক স্থান নগে নজন হইস। গিয়াছে। এ वरमदा प्यान्तित्वा व्यास अपे প্রধান আচার্যা মহাশ্যের মহোৎমবের কেন্দ্র হইরাভিল। মানধিক সহত্র লোক সমাগত গ্রাগ্র লেন; অন্যান্য বৎসর স্থান্যভাবে অনিক: তেও অনেকে পরাধার হইয়া বহিগত इरेटबन, এ वर्मत अर्हे त्र्मांत्रका स्कटन সমাঙ্গ ভঙ্গ পর্যান্ত সকলেই স্তব্যিত হইয়া নিবিংল ভক্তিভরে মনের সাধে উপাদনা করিয়া ছিলেন। উৎসব ভূমির অন্তর বাহির নবপলব ও স্বৃদ্শ্য কুস্কুম মালায় স্বশোভিত হইয়াছিল। সন্ধা ৭ ঘটিকার সময়েতত্তিক আলোক মালায় স্মাজিত इहेल, উৎসব ভূমি মনোছর বেশ ধারণ করিল, এবং আচার্যোরা বেদীতে ত্রপবে-गम कतिता भन्न प्रकृषिक भित्रक इहेग, ७ " थाकि थामात्रमत मरहादेतर " अहे छ

নাধ্যর উল্লাসকর ব্রহ্মস্থীত সংক্ষাত্র তেকোপ্রামন আবিত্র মইল ব্রহ সহগ্র শেষ হুইবা মান ব্রহন, ক্ষার অব্ধ লেপে সমাজের মধ্যে ব্রহন, ক্ষার অক্তর প্রাক্তর শ্রীযুক্ত ক্ষার্থ ব্রহ্মান্ত ব্রহ্মান স্থাবিষ্

"নতেল কি আক্তম ন ব্যান যে বহ জির হৃদ্যে মতেলে প্রতিটা গ্রামিন এই मर्छ। द्यारक धार्मिका छ । एव श्रारतीत । , ३ গৌরবারিত হন, যে দেনে। সংগ্রার । । मण्डालिङ क्या (म (भग एक) रल्हा का नाव अभीत चौरूक उ भाइत निकटन स्थ। য়ত্য কাৰ্ত্যা নিজস্বান নতে, অগ্য শ্ৰাত্ত मकर नवले आहराता । गाना घरधा नाम নতে, সমাটেরও অনুগত নহে। ইহার निकटडे अध्य-थामाम अर्गा कुछीत छे उम्रहे सभार । भगवाम ७ निर्वन मन्द्रवर्धे अना ইল্র জেড়ি নিরপেল ভাবে প্রদারিত র্হিরতে : ইম লোক-মিশেছে প্রথবা मस्क्षपाय-विद्यारत पार्थयो काञ्चितिरमास विक्ती करण गारे। वेदा मार्थ वस गरह. क्रिल अवक्रमार्, मकन प्रतम ७ मकन সময়ে ইহার আধিপত্য। সভা মহৎ ও

जेमार । इंका आंवांत्र जीवस ७ वनीयांन् । ইহার আধার নিজীব জ্ঞানও নহে, জরল ভাবও নহে: জীবনই ইহার আবাদ ভূমি, জীবনেতেই ইহার ্যথার্থ প্রকাশ। নমুদায় জীবন স্বর্গীৎ বলে সংসারকে পরাস্ত করিয়া, পাপ, তাপ ও মৃহ্যুকে পদানত ব-রিয়া, ঈশ্বরাভিদ্রথে উন্নত হয়; তথনই স-ভেবে প্রকৃত মহিম: প্রতীয়দান ২য়। বাস্ত-ঠিব সভাই আমাদিগের জীবন, এবং যে পরিমাণে আমরা সতা হইতে বিভিন্ন হই, নেই পরিমাণে আমরা জীবন-বিহীন ও জড় ভারাপন ইই। সত্তার ৫ রূপ জীবন্ত বল যে ইবার ক-৭মাত্র কিরবে অমা-মিশার অভেদ তমেজান ছিল ভিনাহয়, ইঞ্ব गः म्पान महिक भण्छ। भक् दर्भ मक्षिण तुरू-বায়তন ব্লি-রাশি চর এইফ মায়: নিরাশ মুমূৰ্বাতি নৰ জীৱন ও নৰ উদাম প্ৰাপ্ত ৮য় : আতি ৡয়বল জীয়ে ব্যক্তি মহা বিরেব नामि वीमावान हर. धनः अधि मामाना कुछ टांडि ५ ममुद्दि १, जिंड क्षदार्भ मध्य म- শুরু রে কেন সনকো বনীকুছ কারয়। ভাগার (मर एका श्राम्बान वका मश्मादय कविया লন। সত্তার বলের নিকটে জ্ঞান-বল ধন-বল দেহ্-বর মক্রম পরাভূত হয়--কেবল পরা-ভুত হয় এফত নছে, কিন্তু আবার অসুগত नारमत ग्रीय विश्वत भारतियाँ करता। वह প্রমাণ বালা ইভা সিশ্বস্ত করা যাইতে পারে যে যালারা ভ্যন্তা বিকট মূর্ত্তি ধারণ পূর্বাক বন্ধার চর ও থড়্খ-হস্ত ইইয়াসত্য-পরায়ণ যাক্তিৰ অনিষ্ঠ মাধনে প্ৰবৃত্ত হয়, ভাহানাই আব্র লম্ভিনিল্লে সেই ব্যক্তির দেবা করে ে অনুস্ত্রি হইয়া ভাছ'র **আদেশানুসারে** ২৫ া মহিম। কীর্ত্তন করিতে থাকে। কি অভিযা সত্যের মহিমা।

कनकः मका है खांकार्या। এই कनाहे खाका-অধিকার। ইং ধর্মো সকল্ মনুবোর যেমন ভারতবৈধ্যু, তেমনি ইংলতেরও ধর্ম; इंग (यमन शृक्तकीर नव, जिमान वर्जमान मभटख़त्र धर्मा। देश (यमो्र स्थमन×्री नाना-বিদ্যা-বিশারদ পণ্ডিতদিগেরী, তেমনি সরল-চিত্ত রুষকদিবেরও ধর্ম। অন্যান্য ধর্মের न्याय हेरा क्रांकि-दक्ष वः मख्यमाय्य-वक्ष नदह। ইহাতে জাভির গৌরব নাই, দেশের গৌরব নাই। সকল মনুধাই স্বভাবতং ব্ৰাহ্ম। যিনি যে পরিমাণে স্বঃভাবিক নিশ্মল জ্ঞানের অনু-সর্ব করেন, তিনি সেই পরিমাণে ব্রাহ্ম। ম-নুষ্যাত্মরে দহিত ব্রাশ্বধর্ম দনব্যাপী; আত্মার স্থাৰ্থমই ব্ৰাহ্মধৰ্ম। দেশ ক'ল ও অবস্থা নি-বিশেষে দকলেরই ইচাতে অধিকার। জগৎ जागांतरमत (मद-सम्मित, প्रत्मश्व यामा-দের উপাশা দেবতা, স্বাভাবিক জ্ঞান আম:-দের ধর্মশান্ত,উপাদনা আমাদের মোক্ষ পথ, খাল্পজ গ্ৰামানের প্রাক্তিত, মাধু কাফি দার ব্রাহ্মণর্মে সাম্প্রদায়িক লক্ষণ কিছ নাঁই, ইফাতে বিরোধের কারণ নাই। ইহা সাধারণ সম্পাত্ত। স্ক্তরাং ব্রা**ক্ষ্যমান্ত** স্ ম্পাযিক সমাজ নচে; থাঁচারা এক মাত্র অ-দ্বিতীয় গরবক্ষের উপাসক হইয়া **ভাঁহাকে** প্রীতি ও তাহার প্রিয়কার্য্য সাধন করিতে हेक्प करतम, कैशिक्टिशत है अहे गमांक।

পঞ্জিংশ বর্ষ পূর্কে এই ১১ মাঘ দিবনে অসাধারণ-ধীশক্তি-সম্পন্ন, অভ্যুন্তভপ্রশন্ত-হৃদয়-বিশিউ মহাক্সা রামমোহন
রায় এই ব্রাক্ষসমাজের স্থ্রপাত করেন।
সেই দিবসে প্রাভি-বিস্ফারিত ক্ষদয়ে তিনি
সকল দেশীয় সকল জাতীয় লোকদিগকে
এক সাধারণ উপাসনা-গৃহে সভ্য-স্থরপ
অভিতীয় ঈশ্বরের উপাসনার জনা আহ্বান
ক্রিলেন; এবং ব্রক্ষোপাসনা-রূপ অমূল্য

ধনে সকলেরই বে অধিকার আছে এ গুল প্রতিষ্ঠা ছারা জগতে এই স্থান্যাচার ঘোষণা করিলেন। সেই দিন অবৃধি কত শত লোকে এই বান্সমাজের পুশীতল আগ্রয় লাভ कतिशा खाक्रवर्गीत गाशाया मरणात ध-भारम, क्रवस्त अभन्ड कविसारहम, मनरक উন্নত ক্রিয়াছেন এবং আত্মাকে পবিত করিয়াছেন। দেখ কেমন আশ্চর্য-ৰূপে অংশে অংশে ত্রাহ্মসমাজের বিস্তৃতির সঙ্গে मटक माखित ताका, थीजित ताका, धर्मातिर হ্ইতেছে! কত শত লোক সাম্প্রদায়িক ° দকল প্ৰকাব শৃষ্থল ছেদন পূৰ্বক অশস্ত হৃদয়ে মচ্যের সাধারণ ভূমিতে মকলের স্হিত উচ্চতম বিমল্ডম সমূলে আবিদ্ধ इहेट उट्डन; विदय, ख्या, विवाम, विभाशाम इटेंट युक्त इटेश नित्र शिक यदन गक्ल লাভি ও ধর্ম-সম্প্রদায় হইতে ধর্মভত্ত সঙ্ক-লন কবিতেছেন, সকলের সহিত মিলিত হুহয়া বিবিধ হিচকৰ কাহা সাধন ক্রিভেচ্ছেন, এবং উন্নত প্রীতি-যোগে দকলকে জ্রাহ। বলিয়া আলিক্ষন করিতেছেন। দেখা জগৎ যে পরিবারের গৃহ, ঈশ্বর যে পরিবারের পিতা মাতা, দেই পরিবার ক্রনে চতুর্দিকে याश्व इटेटज्रहः वहे मत्नाइत मृणा मः শ্বৰ্ণনৈ কাহার চিত্তনা মহেলালে অদ্য উ॰कुल रहेरण्ड, जांक्यर्कात महिमात्र-পति-চর পাইরা কাহার শরীর না রোমাঞ্চিত क्ष्रेटलट्ड २

ব্রাজ্বপর্যের উদার ভাব দেখিরা অদ্য ক্ষেম মন প্রশৃত্ত হইতেছে, তেমনি ইহার মাশ্চর্যা স্থগাঁর পরাক্রম দেখিরা আমারণের আন্ধা উৎসাহে প্রজ্ব লিভ হইতেছে। এই পঞ্চতিংশ বৎসর মধ্যে ইহার আ্যা এ দে-শক্তে কেমন উজ্জ্ব ক্রিয়াছে; কভ কত পর্বভাকার বিদ্ধ বিপত্তি, কভ ভয়কর ক্-সংস্থার ঐ প্রিতি ভন্নীত্ত হইয়াছে।

শত गरुख बर्स एर मकल कुमः स्वात अस्मरण বন্ধমূল হইয়াছিল, তাহা ব্রাহ্মধর্মের বলে मभूटन फेश्नां हिंड कहेट बट्ड, मभून स्र स्रिक-বর্ষে যে দকল ভ্রমের আয়তন ভাহাও ক্রমে চূর্ণ ইইতেছে। এই ভারতভুমি পৌতালিক তার ছুর্গ স্বৰূপ, ইহা কঠিন অভেদ্য কুদংকার প্রস্তরে নির্দ্ধিত,অগণ্য পরাক্রমশালী বিরোধী বিপক্ষের সভ্য-পরায়ণ ব্যক্তিক্সপ্রাণ পর্যাস্ত বিনাশে প্রতিজ্ঞান্ত হইয়। নিদ্ধাশিত খড়্গ ধারণ পূথাক অংশীর ন্যায় নিয়ত ঐ তুর্গকে রক্ষা করিতেতে; মেই ছর্গের মধ্যে রোক্ষ ধর্মের জরপতার। উত্তীবমান, এবং দেই বিরোধী দলের কভ কভ গোক এক্ষণে সভা ধন্মের পদাবলু ি ১ত হইতেছে। এপু র। ক্ষের মত্যের প্রভাবে আপনানিগতে ৬ পরিবার এবং অন্তেশকে ভয়ন্তর ফুল আং इंडेटर अमुङ कतिया श्रीमन्त्र मदम रूपश्रीर করত সমুদয় ভার জভুমিকে নিনাদিও 🖙 তেছেন। সক্ত জিলান্ ঈশ্র পাঁহা দের সহায়, এবং জাৰত জ্বত্ত সভা যাহাটে रुट्य, खेशिरामत निकाते एव विक्रीय कीर्र অম নিচয় আপনা হইতে বিনাশ খাপ্ত হইবে, ইলাকে আর আশ্চম কি : রক্ষা বলের মন্মুথে কি পার্থিব কেনে বল জি-তিতে পাট। সংখ্যা ক্রেন ক্রেমন পথ পরি-ষ্ঠ হইমাচে। পবিবার মধ্যে পিজা মাতা, পুত্র করা, ভাষ্ঠ ভারনী সভাবে মিলিছ হইয়া নিসিতো অচিতীয় ঈশ্বনের উপ্যাসমা করিজেনের চাল্রা গাড়ীর জাবে জ্ঞানের সহিত রাল্যাশনের আলিজন করিতেছেন, युष्टकता विकास अभी छ एस्या विकास मछ। मकल अलुप्टीटम पति । च कविद्र उद्यान, एका-मल-ऋषत महिनाहा निश्वक धौठि-शूरका ব্রহ্ম পূক। ক্রিকেছেন। এ মহ্ৎ জন্ত কেবল মতোরই বলে, এমন রম্পীয় শোষা কেবল जाक्रभरक्षेत्रहे मिर्मा।

आक्रान । अभाक्षत डिल्मटर अनिष তে, উপাদ ভাব ও তুক্তার বল সমাক্ বাংগ का ए शतन कह अतर निश्च । ८२४ फेन्निक ্ত লোচনা করিয়া ঈশ্বরকে ধনাবাদ কর ू- 'न्युताभी पूर्णत कवा छ।न विक कश ०८६ क मरस्यमस्यत उथार्थ छ। पर्या। রত বর্ণ ক্রমের প্রসালে নারভত্মির দক্ষিণ ল প্ৰিক্স ফ্লেব্ৰান তাৰিকাশ্ব প্ৰচায়িক চট-२०० वर्ग प्रांकारक नाडलेन छएमधि . र तः भगरेकः - नेशाः तालामभाक्ष **म**िवास्य द्विश्वीराजन। वस्रद्रमान्तराथ नाना विद्या প্রচায়ক, দক্ষের পারিক্সকে ত্রাক্ষধর্কের উ উন্নতি হল্মাটে : ব্রেথ্যুম্ব পেটা চ্পারিট प्राप्ति कारण पाला कर करा कलिक के र १८% इ.५१६ । सून्य मा १०४१५ मा अस सम् 化三元二十二分字句 性痛的 人,心里喝点一点 衛行 राम नेवपार रहेन। सर १३(१) नर्षमा, अस्ति। লগৰ বিভেগ কৰে। ভাত কান্তিৰে সাম্ভ কান্ত त ७३ है। भारत्कों छात्राक्षी হটরে 🖟 ্রুরের প্রাক্তিরে আর এটি 🖎 ब्राह्मक के तम करेंद्राहरू । ब्राह्म ५ हा । গ**ন্ধা**ৰলকীয়া ভালিটিং চি আহি অংশক্ষাক্ত হ গ্রুবাল ও এক। প্রকাশ বরিছেছেন। ্ত্র ব্রাক্তির অধ্যা জীকি, নাড্যান্ত্রাগ ्रिमप भागान अस्तरत मञ्जी इर्झाट्डन এবং পাঁহার ক্ষেব্যে, বিশ্বাস করেন না প্রতিতি কিপুলে বেক্সিট্রবিনের অহ**জু দে**-.श्री तन, प्रतास्थ लगरनं **न निष्टित्।** গে চন্দ্র আছে লিডেগ যন্ত্র ও প্রার্থার . इ.र. १४५ १ हेरू कर वर्षा। **अहांद**बत ८० । १० १० तन १ १३८७८ छ। समुनग्न টেল এই ত্রাক্তপত প্রতিবা**ও হইবার প্রক** েলে। তেওঁ । তেওঁ। তে ত্রহা-পরায়ণ भारता । ८११ राजाजधार्यात् वीक महेश। এন নেকাৰ উধাৰ। ভাৰত-ভূমি**তে ৱৈপিৰ**

কর। গে অমুলাধন লাভ করিয়াছ, তা-্তে কেবল আপনাদিগের অভাব মোচন করিয়া শ্যাতে বয়ান থাকিও না, কেবল শাপনাদিগের আত্মন্তক চরিতার্থ করিয়া ফল্ডে থাকিও না। দেশক ভাতা ভগিনী দিলের আহার রোদন-ধনিতে বেধি হইতেছে মেন গগন বিদীর্ণ ছ**ইতেতে** , দিংবা যেন চতুর্দ্দির হই তে ব্রাহ্মসমাজের আশার প্রার্থনা করিতেছেন, ইহার উদার অদাব্রতে অংশী < नेदांत क्रमा উटेक श्वदः निर्मा : कतिरहर हमः ज्यामतः कि ध नगरत भय' भूगा-अनरम छ পেনা ফরিব ৷ না গাবেত ভাবে আর নাণিগের তাপ্ত মুখ এদশন পুরুষ ধর্ম निषाञ्च आक्रिनिशस्य धनोरत क्रिनेन भगाम दिनींच छोत्र आरोग कातरचीर क्षण रहा, हारी छोड़। य हारियों स्थिती ।পগকে আপ্রাম্পর ক্রমা চাতুরিকক ধারিত इ.स. मर. भ ४। ता या विक व्याद्वाहरू शांतरु ८ यत्र, भाष्य वाहि जाता ।अधान कप्पाक 制度制 经决工

তে পরমাধান । কুমি আমার্নের পির ও প্রাভু , থাকাতে দুছারত , ইয়া ছির দিন ভোষার পান সেরা ব বিতে গাছি, তা কৈবি একাপ্রতা ও ধ্যারল বিধান কলা আমার দের বন নাপাতে, আমার্নের শরীর মন, আমানের মান মহালা, সকলই ভোমাকে অর্পন করিজেছি, ভূমি আমার্নির্গকে স-স্পূর্ণকগো ভোমার মঞ্জা কার্মো নিয়োগ কর, যেন ভোমার আজা পালন করিয়া, ভৌমার বিত্রনান কীর্ভন করিয়া এই স্কুদ্ধ জীবনকে নার্থক করিছে পারি।

'ই একমেবা**দ্বিতীয**ং

অনন্ধর প্রীযুক্ত অযোধানাথ পাকড়াশী মহাশ্র ত্রেউংক্সরে এই উদ্যোধন স্থারা সকলের মনকে জাগ্রহ ক্রিলেন বি

এই সম্বংসর মার করুণা অবলক্ষ্ম ক-রিয়া অবাকার উৎসব-ক্ষেত্রে সকলে সন্মি-লিত হইলাম, সম্বংগর ঘার অভয়-ক্রোড়ে অবস্থা করির৷ রোগ-শোক ভয় বিপত্তি হততে উত্তীর্ণ হইবাছি, খাঁচার প্রেমালিকন আমারদের জনা নিরন্তর প্রসারিত আছে. য়ুনি মধ্যে মধ্যে আমাদের আত্মাতে আবি-ভূতি ফটগ্না আমাদিগকে পাপ তাপ হইতে নিস্তার কবিয়াছেন, অদ্য সমস্ত দিন ঘঁছোর পবিত্র সন্মিকর্ষ অনুভব করিয়াছি, এখনই वीहात (अपनृतं हक्कू आमारित्त स्ना अकः . শৃত দেখিতেছি; তাঁহাকে জ্ঞান-নেত্রে প্রতাক্ষ কর, ভাঁছার নিকটে জন্য ছার উ-প্যাটন কর, তাঁহাকে রুভজ্ঞতা উপহরে দাও, তাঁহার চরণে প্রীতিপুষ্প বিকীণ কর, ভাগার নিকটে শুভ বৃদ্ধি ও ধর্ম বল প্রা-থনা করু উচ্চার উপাদনা করিয়া এই কুদ্র ভীবন চরিতার্থ কর।

অন্তর আদি অত্যে ব্রহ্ম-সঞ্চীত সত কৃত স্বাধাবাত ব্রক্ষোপাসনা পরিসমাপ তইলে. পূজনীয় শ্রীযুক্ত আনন্দচন্দ্র বেদ্ধি-বালীশ মহাশয় উৎসাহস্কশরে ব্রহ্মিধন্মের অধ্য প্রতের চতুর্দ্ধশ অধ্যায়ের এই তিন্দী ক্রচিত তাৎপর্যোর সহিত ব্যাধ্যা করিলেন—

বোবৈ ভূমা ভং মুখং নাপ্পে মুখমজি।
ভূমৈৰ মুখং ভূমা ত্বেৰ বিজিজাসিভবাই। ১।
ঘিনি ভূমা, যিনি সহান্, তিনি মুখস্বান্ধ, ক্ষুদ্ৰ পদাৰ্থে মুখ নাই। ভূমা ঈশ্বরই মুখ স্বাপ: অতএব ভাঁছাকেই জানিতে
ইচ্ছা ক্রিবেক।

मसूरवात मन পतिमिछ क्र्य भगार्थ कथनरे स्थी रहेटक भारत ना। तनहे छू-मार्टे जो मातरमत स्थ, कम्भ विवदत स्थ नारे। विवत-स्रथ कामातरमत काका छ्छ रस ना। विवत-स्थ मनगरे कथ-स्मृत, ककीय क्रय-कथना वा सर्वत कर्यूक्त,

কথনো বা শতিকুল; কথনো বা দেব। কথনো আলা। সেই ভূমা ঈশরই অ! মারদের ভৃপ্তির স্থল, আমারদের পবিত্র শান্তি-নিকেজন। অভূত্ব ভাঁচাকেট অ-প্রেবণ করিবেক, ভাঁহাকেট জানিতে উদ্ভা করিবেক॥ ১॥

সভগতঃ কন্মিন্ প্রতিষ্ঠিতইতি বে মহিনি। 🖰

শিষা জিজাস। করিলেন, কে ভগবন্। তিনি কোধায় প্রতিষ্ঠিত আছেন। আচার্য্য উত্তর করিলেন, তিনি আপনার মহিমাতেই প্রতিষ্ঠিত আছেন॥ > ॥

প্রমেশ্বর নিরালয়, স্বত্ত ও মুক্ত স্ব-ভাব। অনা দক্ত বস্তু যেমন উলেকে অবলম্ব কবিষা স্থিতি করিতেছে, দাঁচাবই উপর নিছর করিছেছে, তিনি ওজারেক। ছাকেও অবলম্বন করিয়া স্থিতি করেন ন।। এই বিশ্ব-ৰূপ শৃত্থল ভাঁচাতে আৰ্ম্ম থ'-কিয়া লয়নান রহিয়াছে, হিনি এক মাত্র শঙ্কু-ছৰূপ হুইয়া সমূদ্য ধারণ কবিয়া আন-ছেন, কিন্তু তিনি কিছুতেই আবদ্ধ নহেন, हैं। इंदिक (कड थावन कविशा देख नाहै। দেই নিরবলয় পূর্ণ একা পরীধ নাইনাতেই অবস্থিত কবিতেছেন, আপনাতে অং^ নিই নিভা রহিয়াছেন: তাঁলবি কেই জনকও নাই এবং ভাঁছার কেছ আত্ময়ও নাছ ।। ১॥ महत्रस्थार भनेनदिनीए मण्कार मधुत्राह भन्भिकाः, नाडापुराच्याः अभारमा गुज्ञ अरामा मध-न्या मडे यः। १।

তিনি অধ্যেতে, তিনি উর্কেতে; তিনি পশ্চাতে, তিনি সম্মুখে, তিনি দক্ষিণে তিনি উত্তরে। তিনি ভূত ভবিষাতের নিয়ক। তিনি অদাও আছেন, পরেও থাকিবেন। ৩॥

কি উদ্ধে, কি অধোতে, কি পশ্চাতে; কি শশ্বুথে; কি দক্ষিণে, কি উত্তরে; আ-মারদিগের চতুর্দিকে সকল স্থানেই তিনি দ্যালান রহিয়াছেন। আমর। যদি প্রতশিথরে আরেছেল করি, সেথানেও তিনি
হিনাল্যান, যদি গভীর সমুদ্র-গতে প্রবেশ
শরি, সেথানেও তিনি বর্তমান। দিবাকরের
মান্তে কালের কিরণে যেমন তিনি স্থান
লগ্যাকেন, তজুণ তামণী বিভাবরীর
অপ্রেম তিনেও জাইল্যানি রহিয়াতেন।
সকল জানেত তাঁহার রাজা, সকল আনেই
জাহার দ্বি। যেমন তিনি সক্র-দেশ ব্যাপী,
তেমনি তিনে স্ক্র-কালে কিন্সান। তিনি
যেমন ইহ কানের নিয়প্র, তমনি প্র কান্
প্রেও নিয়্যা: তান অদাও আছেন, প্রেও
থাকিবেন। গ্র

ওঁ শান্তি শান্তিঃ কান্তিঃ ইরিং ওঁ পরে শীন্তুকে বেচারাম চট্টোগানার মহা-শরমার গড়াব স্থারে এই মহোধনবের পরিত্র বংসাহ বাকা ভাষা সকলকে ফিদ্দ করিলেন

ল, ৬ হাছে । এক দল দেবস, আজ বলভূৰি ন্যায়ণাৰ ভারণভূমের একনাৰ सदम्ब निमा स्थानक (त्रश्रामः क्षा करेडक--हुकु। भुद्य इन्हेटक दिशुस्त्र क्लेटल (भूमर स्मार 'ऋषी अव (कड़ र (एवं क्यतनोड़ +रेश) शारक সেই ৰূপ এই মান্যৰ একাদশ দিবস্থী यान्यासुवाधी जयप-(अभी दाकि माउबके অবন পথে চির মুদ্রিত থাক। নিতামূই কর্ত্তবাং কেন না এই দিনে এই অসহায় ্তন তে বজ ভূমিৰ শুকুত প্ৰোণ সঞ্চাৰ হয়---এনেকের মকল ভূথ মৌভাগ্যের স্থান্ত ংল্ কল্লেন্ডেন্ডেন্ড্র সঞ্জ করীতি কল্টার धर (क स्काधिशङ। क्तिएक्डिल, **धरे मिन** ২৯ ছে এনন একটা কাহোর অনুঠান হইতে অবিত্রহল, মহার কাম। ক্রম ক্রমে এ । मार्थात अकृत अन्तर्ग विमृति इंदे (अटह, ए⁴5'ৰ ক্ষান্ত প্ৰেছর---প্ৰতি আত্মার र्र । अवद्याद्य इहेता आयात्रित्रत क्षा जुन्ति विभव्न मुश अनुक स्ट्रेटक है।

চির ছংবিনী বঙ্গ মাতার স্বাধীনভাকণ অমূল্য হার পরিধানের সময় লক্ষ্য করি-বারও কাল উপস্থিত হইয়াছে। বখন ত্রাহ্মধর্ম এ দেশের সকল বাধা বিশ্ব স্পতি-ক্ৰম কৰিয়া সম্যক্ৰপে উদিত হয়েন নাই, তখন যে কখনও বঙ্গভূমির ছঃখের নিশা व्यवमान हरेत हैं। जीवश दित कहा ক্রিন হইও। এখন তো আমারী গণনার কাল প্রাপ্ত ফইয়াছি—এখন তো উন্নতির দোপান লাভ করিয়াছি। এখন আমরা दय शनकांत महत्र महत्र शनका कहि, त्य एम्स्य क्टमूत औड़िक इडेन.—**ज्**मस कि. প্রিয়াণে গাপ মলিনতা হউতে বিমুক্ত হইল.— অ'খা কত দূর উন্নত হইল। কে.ন ন্দ শয় নহালা কর্ত্ত আমারদিলের কোন ना स्थान এको अचंद निवाक्त अवेटन. ইহি.র নিকটে বাত ক্রডজ্ঞ হই, বিনয় বচনে উন্থেদে কন্ত সাধুনাদ প্রদান করি,কিন্ত যিনি ধর্মের খবর্তি মকণ মঞ্চলের একমাত্র ष्यास्त्रका, भारा रहेएड (मर्याय बाखीय अधि গুল-প্রতি পরিবার-প্রতি পাঝার গালী-রতম অভাব বিদুরিত হইমাছে, সেই ত্রিছু-বনের রাজার নিকট ক্রভজতা এফাশ করা कि यञ्ज ७ व्यासाम माया २ छै। हादक व्यादन করিতে কি আজ উলোপনের প্রয়োজন ১ অাজ নাথের একাদশ দিবস আজ ব্রাক্ষ-সমজি দংভাপনের প্রথম দিন। ইছা উচ্চারণ কবিবা মাত্রই শরীর লোমাঞ্চিত হইয়া উঠে, নদন যুদলে প্রেমাজনতে পরিপূর্ণ হয়, ক্র্দেব অভান্তর হইতে যুগপুৎ প্রীতি অকা ও রুভজ্ঞার ভাব ঈশবের প্রতি উष्ट्रिक ३ हेश कर्ण निरद्वाध कविश्व किर्ला ঢারিদিকে ঈশ্বরের মহিমা জাজজুলামীন সন্দর্শন করিয়া, এই শোক্ষা সৌন্দর্যোর অভ্যন্তরে, এই সাধকদলের মুখ্য **ওলে জা**-হার সভা জ্যোতি বিকীর্ণ দেখিয়া বিশাররবে 🤟

হালর প্লাবিত হইতেছে। অনত্তের নহিনা ব্যক্ত করিতে গিরা রসনা অসাড় হইয়া বাইতেছে— জাঁহার গুরু ভার ধারণ করিতে গিরা শুদর অবসম হইয়া পাড়তেছে।

স্কার্থ-সব্দের প্রশাস্থার। গৃহপ্তির এই मभूमाय चार्याह ।--- मभूनाय चार द्वा रन्तन ঈশ্বের*ই ভু*না। তিন ঈশ্র হুইকে আ-धनाव मञ्जल, धतिवादनत मञ्जल, मञ्चलात বস্ত্মির মঙ্গল লাভ করিয়া আনন্দে উর-ক্রিত হইয়া চারিদিকে এই দকল মঞ্চলাচরণ করিতেছেন। আজ তিভুবনের রাজার প্রধূলি ভাঁচার আশ্রমে পতিও চইবে, আব্দ সেই ভুবনেশ্বরের পূক। জীহার গৃচে স্থাপন হইবে, এই জন্য তো দুপরিবারে হাৰয়-থাল প্ৰীভি-কুস্তমে পূৰ্ণ কবিয়া ভাঁছার ধারে উপন্থিত হইয়াছেন—ভাঁহার উৎসব আনন্দ জনিত পবিত্রতর স্থথের ভাগী করিবার জন্য আমারদিগকেও আছ্বান করিরাছেন, আমরা তাঁহার নিমন্ত্রণে — ঈশ্ব-রের সম্বেহ আহ্বানে নানা হান হইছে অক্টিত প্রীতিকুম্ম লইয়া এগানে উপ্-टिंग रहेत्राहि, रमहे रमव रमरवत शुक्रांत উপচার লইয়া সকলো একত্রিত হইয়াছি।

আইস সকলে মিলে ঈশ্বের পূজা করিয়। কুতার্থ হই, ক্লায়ের পরিশুদ্ধ কুডজুতা উপহার তাঁহাকে দিরা জীবন স্বার্থক করি। আপনার উন্নতি, দেশের উন্নতি, প্রাণসম ব্যাক্ষর্শের উন্নতির জনা সকলে মিলে তাঁহার মহদ্যশ যোষণা করি।

হে অখিল-মাতা বিশ্ব-বিধাতা প্রমে শ্র! আমরা ভোমার পূজার জনা এখানে উপস্থিত হুইয়াছি, ভোমাকে লইয়াই আমা-तिभिदशे दे हैरमे व अनम युश्च देशो लोशा मक-লউ | আমবা ভৌমার চিবা্শ্রিত চিরান্স্গত দান—অফাবদেৰ প্ৰতি তোমার ১৬ করুণ ' আমারদিগকে নিতে, ক নিরাজার এক। মু গ্ মহার দেখিরা ভোষার **রালাধনে**র শীতল ছারায় আনয়ন ক্ষিয়াছ,ডুনি আমারালগবে নিৰ্বন লৈৱৰ্য দেখিয়া কপা কাৰ্যা দেব ছুব্ ভ ত্রাক্ষধর্মোর অবিকারী করিয়াছ। তু স দীসহীন মলিন বঞ্জেশের অভন্তর হইতে অমূচ-খান फेबाक कारधा (मधा हेटाटक क्षीतन त्यीतदन প্ৰকৃথিত ক্রিতেড। ধনা ধনা নথে। ধনা ভোমার করণে। ভোমার প্রসাদ গও। তুর্ব ल अ तल को च करत. चौक अभार गी करेगा छ गर।

তে তুর্বালের বৃহত্য গাত ইতিনৰ গাত প্রমেশ্র। তাম এই গৃহ্ আমির মঞ্জা কর। তুম ইং ল লভ্যা মন্তিগণকে তোমার জন্ম করে। করি লগে নতে, সাব প্রিটিড পারতালতে টারতে করে। সংসারের পর্বত সমান তব্সের মধ্যে তোমার অভয পদ তালার করিছা ধর্ম মারের গণ করভ ধ্যেন ইনি নির্বিমে শাভি উপাকুলে উপনীত কইয়া স্বীম নির্বাসনিকে তনের সধ্যে তোমার এই সিংহাদন প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন, তেমনি ঘেন চির কলে অবাধে এখানে তোমার পূজা সম্পন্ন হয়। তোমার প্রিত্ত নাম ধ্যেন এখানে বাহ্রে স্থাক্ষের মুক্তিত রহিয়াছে, তেমনি ধ্যেন ই হার স্থান প্রজ্ঞার ক্রেন স্ব

কলের হৃদয় পটে তোমার পবিত্র ধর্মের মহাল ভাব সকল চির মুদ্রিত থাকে।

যাঁগার গৃহে আজ সমুদাব বঙ্গভূমির

— ভারত ভূমির শাস্তি স্বস্তারন হইতেছে,

গাধার ভাহ্বানে আমরা সকলে এখানে

উপস্থিত হইয়া ভোমাকে লাভ করিতেছি

ভাগর মঙ্গল প্রাথনা না করিয়া কি ক্র্নয়

প্রির হইতে পারে ?

ে জন্ধ । তামার নাম দকতে ঘোষিত ১টক, তোমার মহিনা মহীয়ান্ হউক, তো-মার ধর্মা সমুদাব পুরেবী মধ ব্যাপ্ত হটক, এই আমার্লিলের আন্তরিক প্রার্থন।

लं जकरमवर्षक शीरार

অনন্তর এয়ুক্ত অধোগ্যানাথ পাকড়ানী মহাশ্যু সকলের জন্য পথ। এই হিতকর অন্তর্ভনী উপদেশ এদান কবিলেন—

বাহিতে বাজাবগণের আলন্দকর সমাগম, অন্তরে দেই চির জীবন-সংগার মধুময় আবি ভাব, অদাকার এক মংলা-সংবর মধুরতা ও আ্মানের জীবনের চরিভার্যতা সম্পাদন করিল। যে প্রকার প্রত। শা করিছা এই মহোৎসবের প্রত্তীকা করিতে ছিলাম, তাহা পরিপূর্ণ হইল। স্লিক্ষমূর্ত্তি স্কলাণের শ্রীতি বিকশিত মুখমগুল দর্শন করিবার সঙ্গে সজে ্মই চির-সুক্লেন আভিডাব অনুভূত হটল। অ∤য়। তেজধী হইল, মন বিনীত হইল, লণয় কোমল হইল, জ্ঞান পরিভৃপ্ত হইল, ্রীতি চরিতার্থ চটল, ইচ্চা পবিত্র হইল, প্রাণ শীতণ ¢ইল। কি শুভ ক্ষণে ব্রাক্ষর্ম পাবিভূতি ইইয়াছিল! কি আশ্চর্যা <u>গ</u>তিতে ইং৷ প্রদারিত হইতেছে ৷ কি মধুর ভীবে ক্র সমাজের শুভ সাধন করিতেছে! ভবি-ষতে কি মনোহর দুশ্য প্রদর্শন করিবে !

বধন বিজানের তীক্ষতর আলোক প্রতি আত্মার স্বাধীনতা, আবিষ্কৃত করিল, মনুষোর অন্তান্ত বিলুপ্ত করিল, সমুদায়

धर्मगाट्य सम अमान अनर्भन कतिए ना-গিল, দেই উপযুক্ত সময়ে আত্মধর্ম আৰি-ভুতি হইয়া দেই প্রকাগালার দহিত প্রতি আত্মার সাক্ষাৎ যোগ প্রকাশিত করিল; স্বাধীনতার মধুর ভাব, কর্তব্যের সরল পাথ, প্রীতির প্রকৃষ্ট রীতি শিক্ষা দিতে লাগিল। এক দিকে চির-সেবিত অজুকারে এক্সচ-বন্ধন-বশত বিদার বিগকে, বিজ্ঞানের বিপক্ষে, স্বাধীনভার বিপক্ষে, সভ্যের ভি-পকে কোলাহল; অন্য দিকে অস্ত্রকার লহতে সহস। আলোকে গমন করিয়া লুসনবিধ অন্বতা, এক দিকে ক্ষড়ের ন্যায়— यराख्त नाच कर्ज्ञ हीन श्रेश व्यालमाटक ঈশ্বরের প্রতি নিউর ভাবিয়া কাপুরুষতা, यना फिटक केन्नेत हहेट विक्रिय हहेगा আপনাতে ৭তম ভাবিয়া পৌরুত্যর পরি-বর্ত্তের স্বেহ্ন তার্পতা; এক দিকে অক্তরি অভীত স্বতন্ত্র পুরুষকে আপনার দমান নীচ ভূমিতে প্রকৃতির শৃত্থলার মথে। অনিবার নিমিত প্রয়াম, অন্য দিকে এক তিকেই প্রকৃতির অণীত গুণে অলগ্ত করিবার জন্য আগ্রহ: এক দিকে ঈশ্বরের কর্মাক্ষেত্র হইতে পলায়ন করিয়া ঈশ্বরের পরিবর্তে শুনোর উপর প্রীভি বস্থানের टिकी, जना नित्क क्रेश्रद्धत कार्या श्रद्धा হইতে গিয়া ঈশ্বরকেই বিশ্বৃত হওয়া; <u>बाक्यर्क्स , वहे छेख्य (भरकत मधा ऋत्य</u> দণ্ডায়মান হটয়া নিতা**ত অসকত পরস্পার** বিরুদ্ধ এই উভয় পক্ষের দামঞ্চা বিধান করিবার নিমি**ত্ত অবতীর্ণ হইল।**

স্থানিতা অপহরণ করিয়াকোন আত্মার অবমাননা করা ব্রাত্মধর্মের উচ্ছেশ্য নয়; কিন্তু সকল আত্মাকেই বথার্থ স্থানীসভার উত্থাপিত করা ইহার অভিসন্ধি। জ্ঞানের আলোক নির্বাণ করিয়া অন্ধকার উৎপ্রম করা ব্রাত্মধর্মের উত্থেশ্য নয়, কিন্তু আন্দের যথাৰ্থ পতি নিৰূপণ করাই ইহার অভিসাল। अकरी मश्कोर्ग मन्ध्रमात्र निर्माण कविशा शृथि-ৰীর সমস্ত সমাজ হইতে তালকে বিভিন করা ব্রাক্ষধর্মের উদ্দেশ্য নয়, কিন্তু সকল সমা**জে**র পরস্পর বিসয়াদিতা উৎসল করিয়া ' मकलरक এक और जिन्ह्र व रक्षन शृक्षक (मञ् সাধারণ শান্তি-নিকেডনে এবেশিও করাই **ব্রাক্ষধর্শের** অভিস্ক্রি। কোন সভাের বিন্দুমাত্রও বিলুপ্ত করা ব্রাহ্মধর্মোর উদ্দেশ্য নয়, কিন্তু সকল স্থানেব সকল সভা সংগ্ৰহ করিরা দেই মতা স্বরূপের মহিমাকে মহী-্যান্করাই বোক্ষধর্মের অভিদক্ষি। অজ্ঞা-নের জাতি, ভূর্বলের অভি, পাপীর অভি খুণা প্রদর্শন ক্রিয়া আপনার অনুদরিতা প্রদর্শন কর। ব্রাহ্মধর্ণোর উচ্চেশ্য নয়, কিন্ত সকলের আত্মাকে সংশোধন করিয়া ঈশ্ব-বেব জন্য প্রস্তুত কবাই ব্রাক্ষরেম্বর অভি माञ्च। এই मक्त संफट्य डेएकमा मश्मा ধনের নিমিত্ত আধাবধ্যের আবিভাব।

আমর: ত্রাহ্মবর্মের একান্ত পক্ষ পাড়ী। ব্রাহ্মণর্ম আমাদিগকে যে আনন্দ—যে উৎ-मव आनिया (मय, ७: हा आगारिन ह ऋनयरक সম্পূৰ্ণৰূপে আকৰ্মণ করে। ব্ৰ ক্ষধন্ম व्यामामिशदक एवं छे भट्रम्म एम ग्र. व्यामादम्ब **জান,ভাব,ইচ্ছা একত হ**ইয়া ভাষা **অস্পা**কার **করে। ধেখানে ব্রাহ্ম**নর্মের আলোচন। হয়, মহত্র কর্ম পরিত্যাগ করিয়াও দেখানে ষাইবার নিমিত্ত হলের ব্যাকুল হয়। ত্রাকা ধর্মের এতি ঘাঁষার বিন্তুমাত্রও স্নেহদৃষ্টি দেখিতে পাই, মনের সহিত তাঁহাকে আ-লিক্সন করিতে ঘাই। অধিক কি, স্বদেশের কোন র্ম্ভান্ত শুনিলে চির প্রবাসীর ক্ষারের ष्णांव देव व्यक्तंत इत, जाक्तरदर्यत नारमास्त्रथ শুনিলে আমাদের মন সেই ৰূপ ছইয়া ष्यानत्म नृष्य कतिए श्रांटक।

टकन खाकारम भागानिश्वरक क बाकात

করিল ? কেন আমরা ব্রাক্ষধর্মের এমন পক্ষপাতী ছইলাম ? কেন ব্রাক্ষধর্ম আমা-দিগকে চির কালের জনা আকর্ষণ করিয়া রাখিল ?

· এই अना रा—खान्नशर्य वागामिशतक সেই আবিমি থান ব্ৰহ্মনিকেতনে লইয়া যায়, रमञ् व्यागिषिक वञ्चटक <mark>चार्यात्मत ऋमस्</mark>त्र আনিয়া আনাদের তাপিত প্রাণ শীতল ক রিয়া দেয়, যথনি চাই তথনি দেই স্বর্ধ সন্তাপ হারিণী মুর্তি আম:দের সম্প্র **আনি**রা দেয়: পাপে প্রিত হঠনে নেট প্রিত পাবনকে শ্বরণ করিয়া দেয় , সকল কার্য্যে দেই মক্ষণ হস্ত প্রদর্শন কবিষ। উ। হার প্রতি স্বামানের জীতিকে ভিত্তিত ক্রিয়া দেয়, শোক ছাত্রে আকুল চইলে দেই অেম চকুর সক্ষাতে লইয়া সাভ্না প্রদান कदा, अनः अमृत्य श्राम् मराव व्यापन हारे. পা আমি।কে অশাস করিবার উচ্চ্যার ক বিলে দেই শক্তি স্বৰূপের পাণ গান কবিদ্য শা, স্থ শিক্ষা দেয়। মঞ্জুমি সদশ দংমার ক্ষেত্রে যে এক নাত্র চায়, অ সালের বিশ্রাম ন্তান, বোদ্ধান্দ্য সভি সহকে অতি নিকটে তাহ আনাদিগকৈ আনমুগ দেয়। আমাৰ-দের চরম স্থান প্রনায়া নিজ্ব মিল্ডা এ-रहम, किया जिल्हा नहीं कि गांधी, अ अनमीत নাগ্র কোমল, ব্রাভাধতের ই এই মধুমর ভাব। ভিনি কেবল অপুণ মন্গানিগের দেবি দর্শন कविवाद ।बामाइटे विश्वडण्डक् मट्टम, किस्रु ভক্ত জনের বাঞ্চা কম্পতরু: ব্রাহ্মণর্মেরই এই আশাকর উপদেশ। তিনি উদাদীন ও মূক সাক্ষী নহেন, কিন্তু আমাদের চির-জাবন-সহায় ও চিরন্তন উপদেফী; ব্রাক্ষধ-শেরই এই নিগৃত মত। তিনি কেবল পা-পের দগুদাতা নহেন, কিন্তু পাপী সনের পরিক্রাতা, প্রাহ্মধর্মেরই এই শীতলকর সা স্তনা। বে তাঁহার একান্ত সাক্ষাকারী, ভিনি কেবল যে ভাষ্টকেই পরিত্রণ করি-त्वन अपन नत्इ, हित कीवन य उँ। शत वि-কদ্ধানরণ করিয়াছে, তিনি তাহাকেও পরি-নান করিবেন; জালনবের্মরই এই অসাধারণ স্বর্গ থানে আবেশ করিবার নদারতা। নমিত্ত মৃত্যুর থালিক্ষন অপেমা করিছে **হত্বে না, স্বাধীন ভাবে একটি** কর্তবেঃর অনুষ্ঠান কর, নিজ হৃদ্বের মধ্যেই সেই प्रग (मश्वि. ७ भारे (व : वाकास मांवरे करे प्रभा ऐश्राम्म। जाशनात छेपत कर्ड्ड कत् च्युनीम इष्टेटवः जिचाटव ध्यम वस्त्रम कत्, পরিত্র হুহবে; ইচ্ছাকে মাধুকর, কর বেরে প্রাবরন ছইবে; ব্রাহ্মবন্মেরই এই তৃত্তিকৰ আনুদ্ৰা। ঈশ্বের মঙ্গল-স্ব্ৰূপে নির্ভর কর, আপেনার পৌরুষ অবলয়ন করু পাপের উপর জন লাভ কর, অকুতো চরে চলিয়া যাও, বোদা/মোবই এই তেজকা ব্কা। ত্রাক্সধক্ষেরই এই সকল মহত্তম উপ্দেশ। এই জনা ত্রাকাধর্কের এর গোৰন ও এত আকৰ্ষণ।

এই সর্বাঞ্জনস্কার ব্রাহ্মধর্মাই অদ্যক্রে উৎসৰ ভূমি নিলাণ করিল, উৎসবস্থার উদযা-টিত কারল, সকলকে আহ্বান পূর্ব্বক এ থানে দমবেত কাবল, স্বর্গের আনন্দ পুথি-दीटक व्यवधीर्ग कतिल, व्यामारभत मुक्तिक **हल् अकृतिक कतिया मरनाव्य मुना अपर्नन** করিল। অভএব আজি ব্রাহ্মধর্মেরই জয় ঘোষণা কর, ব্রাহ্মধর্মের গুণগরিমা গান বা: আর মটোৎসবের আনন্দ, যত পার, উপভোগ কৰ। কেবল ব্রা**ন্সদের জ**ন্য নয়, কেবল ব্জের জনা নয়, কেবল ভারতের क्रमा नय, मञ्चाय भृत्यवीत स्ननारे वरे उद-দব দার উদাটিত আছে। मकदलब मन দমভাবে আকর্ষণ করিছে পারে, এমন नाहा (गोन्मया এ डिएमर्व किष्ट्र नाहे; उदर क्यांनकांव करे मांमाना वास मोर्छव

यि कान मीन ही तात नशन मन आकृषे करत. क्क़क, किन्छ हेशत य श्वान हहेटक श्वाकर्षण শাস্তি বিনিগতি চইতেছে, ভাছা ভোমা-দের দকল ইজিতের অগোচর। ঘাঁচারা धन हान, त्रञ्जाकी भृषिवीत्क धनन करून, মান সভান চান, রাজ প্রাসাদে গমন কর্ম, কেবল প্রায় ড সকলকে চারভার্থ করিছে চান, স্বেক্তাচারের সহস্র দ্বার **উদ্যাটিত** আছে, তথায় প্রস্তান কর্মন , প্রভুত্ব চান, लाभनात मान मागीव निकटिं अवश्रास कः কুন, যদি ধ্যাবল চান, প্রেমবল চান, আরাম চান, শালে চাল, জম্বাংকে চাল, এই উ--मदनद अ गानाही इते । अभारत भरतद जञ्चत्त्रात नाके, सञ्चटनत जजुदरांथ नाके, শ্রুরের অস্বেধি নাই, পদের অনুরোধ नारं, धर्यादन नेश्दतंत्र अनुदर्याथ, ध्यादमत অনুযোগ, ধর্মেন অনুরোধ, কর্তবার अनुरमाध ! मध्यादव याका लहेगा (आक्रेड् ক্ৰিড়াের বিচার হব্ এখানে ভাই৷ নাই এখানে যিনি ঈশ্বরের যত নিকটবভাঁ তিনি তত শ্রেষ্ঠ। এখানে সকলই বিণরীত; যিনি এখানে আপনার শ্রেষ্টর্ব কিছুই চান না, ভিনিই এখানকার স্বাপেকা; শ্রেষ্ঠ। যিনি এখানকার কোন কাম্যের প্রভুত্ব ক-विष्ठ চান ना , जि.नहे भक्त कार्याव अजु। ফিনি যশের িন্তুমাত্রও চান না, তিনিই এখানকার প্রধান যশস্বী। যিনি এখানে মান সম্ভন চান না, এখানে তাঁরই মান দ-अम यावत । विभि याशमात मर्यत्र शहि-ভাগে করিরাছেন, তিনি এখানকার সক্রা-ণেকা ধনবান্। যিনি আপনার अन्ता কিছুই রাথেন না, এখানকার সমস্ত**ই ওঁ**রে काना शादक। अधिक कि, मश्मादत दवन রাজি, এখানে তথন দিবা, দংলারে যথন দিন, এখানে তথ্ন রাজি, সংসারে বিনি নিরস্তর জাগিয়া আছেন, এখানে তিনি

ঘোর নিজায় অভিচুত; সংঘারে যিনি নিজিত, এখানে তিনি জাগ্ৰহ। অংনাদেব **উৎদবের এই অবস্থা, এট প্রতি, এট ভাব, अहे एको** ; हेव्हा हग, छेश्मद क्लाउन श्व-বেশ কর: আনাদিগকে আপাবিত কর, আপনারাও আপাাবিত হও। शांकित। नर्भन कंतरन डेगत चानेश्र नाहे. অন্তঃ নাঠ, চয় ত সকল গ বিশৃত্বলা— সক-लप्टें बाहालका (मिथितका) अस खात था-বেশ কৰ ইছাৰ অৰ্থ বুঝিতে পারিবে। " खन्दि। कमनमध्यामी सामाद किस्न-নাগাং , ভনিদং সংবনস্তচ্ছ। গ শপুৰ্বে কে-ৰল এক প্ৰব্ৰুক্ষ মাত্ৰ ভিলেনে, আনা আৰি িছু ছিল ন ; তিনি এই সনুদার স্টি कतिदलन।' बहे हेक् बहे कहा व बाला রের ভিভিড়াম। 'তদেব নিজাং জনে मन्यः कि ४९ अ छक्तः चित्रवेशवरमक्रमवाधिः कीयः गर्वकारीय मध्य स्वयः मञ्जासाम् मध्य-रिष मर्त्तना क्रियमभन भू (२ अ वियमि छ।" শ্তিনি জান স্বশ্ধ, অনক স্কুপ, মঙ্গল श्वता. निष्ठा, निष्णु, नश्वल, मर्खा।। भौ, স্কাশ্রন, নির্ব্যুব, নির্ক্তার, একমাত্র, অদ্বিতীয়, দকাণ জিলান্, সংগ্র পরিপূর্ণ ; কাহারও সহিত ভাঁচার উপনা হয় ন।।" हेशव कीवन। " এकमा इटेमाटवाशामनथा পারত্রিকনৈ হিকঞ্চ শুভন্তবভি " " একমাত্র ভাঁহার উপাদনা দারা ঐচিক ও পারত্রিক ম कत इया" कहें हैं है है है कि मा। "डिवान् की डि **ভ**দা প্রিয় কার্য[়] সাধনক্ষ ভতুপাসনমের ।" " তাঁহাকে প্রতি এর। এবং ঠাহার শিয় কার্যা দাধন করাই তাঁহার উপাশনা।" **बहेडि या**मात्रापत छेशमव।

ব্রাদ্যগণ! প্রস্তার আস্পাদ্, শ্রেমের আস্পান্, স্লেছের আস্পাদ্ প্রাতৃগণ। স্থান্তি বেন ভোমাদিগকে বহু দিনের পর দেখি-জেছি: কুশন থিজাদা করি, উত্তর সাঞ্চ।

षोगाएत (महे कक्षण:- भूगं भिष्ठा, स्त्रह-भूगं মাতার সংবাদ কি ১ এই এক বংসর ভিনি कि ভোমাদের ऋषश-मन्दित विश्राक्रमान चार्डिम २ मल्भू खात एक मृत डेहिंछ, स्मर् পরিমানে এই এক বংগর কি উছার সেবা কবিতে পারিয়াছ ? তাঁহার প্রদন্ধত। কত টুক্ উপাক্ষনি করিয়াছ ? তিনি মথন যাহা বালয়াছেন, প্রীতির সহিত ভাষা 🖍 পালন ক্রিতে পারিয়াছ / এগানে কিছ विপश्चि बारमण, उभुमानि - A (35 इरेग्नाटफ ? अवादन 🥊 লিধিত ব্ৰতেব ড 🎺 भरम भरम भङ्गः ३ ५। मारे ? अशहम म्या १८५८ १०१क, १४ ধুর্ব প্রভারক অনেক, ক্রপা পাত্র সংগ্রুত দ্যাব ও ব্যাঘাত হয় নাই? এখানে ১০০ ব ज्ञारी हहेगान यर्थके मञ्चलम्, धर গুণ ত ৰাদ্ধিত হইয়াছে ১ এখানে সংকৰ্মে: থা,ভবস্থাক আনেক, তোমগ্র ত নিরুৎসার হও নাই > এখানে ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র বিষয় এলখা मक (उद्देशत श्रुष्थं म स्वित्ती, उद्देश के वि-ছেন ভাৰ উপজিও হয় লাই ? এখানে সকলে দমান পুৰা উপাজ্জন কবিডে পারে না, তজ্জনাটোলালের উদারভাগ জন্যাঘাত रश मारी १ (यथाहम क्षेत्रात्व कास :शावनः কৰা উচিত, সেখানে ত আপনার জন ঘো-यवा कतिएक या १ वाके। तथ दा अभूद्रत মহিমাকে মহীয়ান করা উ.চত, দেখানে আপেনবে মহিমাকে ড ক্ষাত করিতে যাও নাই > ব্রাফাগণ আমরা কি জ্ঞান ধর্মো এত দূর উন্নত ক্ইরাছি, আমাদের আর खाविटा इटेटव कां ? देहा कथन है सा। चांगता (मरे गर्वनाकोत नगरक (य कड <mark>অপরাধ করিয়ালি, ভাঁহার আ</mark>জ্ঞাকারী দাস হুইয়া কড বার যে তাঁহার আক্রা লভ্যন ক-রিরাহি তা**হার সংখ্যা নাই। অতএ**ব আজি

দকে ে মিলিয়া তাঁছার নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করিব। এই দমৎসর কাল তিনি যে অন্ত-পম করুণার সহিত আমাদিগকে প্রতিপালন করিয়াছেন, রোগ শোক, ভয় বিপত্তি, পাপ ভাপ হইতে যে রক্ষা করিয়াছেন, সহত্তে কত বিশুদ্ধ স্থা—আনন্দ আমাদেব জনা প্রেরণ করিয়াছেন, ডজ্জনা তাঁছাকে আজি কৃতজ্ঞতা উপহার প্রদান করিব। ভবিষাতে ভাঁহার আজে: লাজন করিয়া ভয়ানক পাপে পতিত হইতে না হয়, এবং যাহাতে ভাঁহার কর্মো অনাঘালে সম্পন্ন করিতে পারি, তহিনিত্ত ভাঁহার নিকট শুভ বুদ্ধি ও ধর্মা নল প্রার্থনা কবিব।

ছে নিশ্বপি হা হাবিল মাতা প্রনেশ্বর ।
ত্যেন্ত্রই শক্ষপ প্রশিত উপ্তেচার করিছে
করিছে আন্নান নির্বিশ্ব মন্ত্রের অভিবাহিত করিলাম। তোমারই স্তাকোনল অঙ্কে অধি
নাত ইইয়া এক ব্রুমনের পথ অভিক্রম করিশাম। এই বহুমন মনো কছ স্থানাল তুমি স্লেকের সহিত প্রদান করিয়াছ, ভাষার সংখ্যা করিছে পারি না।
আমানের কংশোবনের নিনিত্তে তুমি যে
নকল শোক, তুল্ল বিপদ্পোরণ করিষাভিলে
ভাষাতে ভোমারই মন্ত্রল ভাব সন্তুদ্ধ করিধাছি, এক্ষণে কোটি কোটি নমন্তার পুক্রক
ভোমার চরণে ক্রজ্লা উপ্ছার দিছেছি,
তুমি গ্রহণ করিয়া আমাদিগকে ক্রতার্থ কর।

হে মজল দাতা মুক্তি দাতা প্রমেশ্বর!
তুমি সকলের অন্তর্যানী ও সকল হৃদ্যের
অধীশ্বর! আমাদের পাপ পুণা, ধর্মাধর্ম,
উন্নতি অবনতি সকলি কামিতেছ। তোমাকে আর কি বলিব: আমাদের আল্লাকে
গ্রহণ কর. এবং এই মলিন আল্লা দারা শাহাতে ভোমার কার্যা দিল্ল হয়,ভোমার মঙ্গল
ইক্ষা সম্পন হয়, ভাহাই কর। হও পুরকার ভোমারই হত্তে।

হে মজলপ্রতা পারমেশর। তোমার
মঙ্গল রাজা বিস্তার কর, তোমার প্রেম শিক্ষা
দাও, আমাদিগকে তোমার ইক্ষার অনুগত
কর। পৃথিবীর সর্বত্র তোমার জয় ঘোষণা
ঘোষিও হউক, তোমার নাম কীর্ত্তিত হউক,
নর নারী সকলে মিলিয়া তেমোর মঙ্গল ভাব
বিস্তার করিতে থ কুক।

e একনেবাদিতীয়ং' · •

অনস্বর ব্রহ্ম-স্পাত হইয়া সমাজ ভঞ্চ হইল এবং সক্ষেত্র মুখে সন্তুষ্টি ও প্রি-ত্রতার চিক্ত লাক্ষত হইতে লাগিল।

ইজিপ্টীয় নত।

১৫৮ দ খ্যক পত্রিকার ১৫৭ প্রত'র পর।

আনুবেদ্ ইজিপট বেশের মধো অংগু
বিগ অভান্ত বিথাতে দেবকা, ছালেন। দ্যুদার ইজিপটাযেবা বিশেষত সাইনাপেশি দে দেবীরেরা ইছিংকে অভিশ্য ভিন্তি কবিত। কুরুরের ন্যায় ইভারে অভিশ্য ভিন্তি কবিত। কুরুরের ন্যায় ইভারে অভিশ্য ভিন্তি কবিত। কুরুরের ন্যায় ইভার মন্তক ছিল। কুরুরই ইছার বাহন। তনি ওাদাবস্দেবের বিশো-ষ্ট অভিদ্য দেবার সহচর ছিলেন। ইনি দেবভাদিগের সমুদার কার্যেক আরম্ভক ও দূতের ন্যায় ছিলেন। এবং তনি মৃত লোক দিগকে যথোপযুক্ত স্থানে লইয়া ঘাইতেন।

থং। বিশ্বকশ্বাদেনত দেশীর শিশ্প করাদগেব দেবতা, থংও অনেক অংশে ইজিন্টীয়/দগের দেই ৰূপ দেবতা ছিলেন। আক ও ল্যাটিন অস্থকারের। ইহাকে মাকরি দেব বলিয়া গিরাছেন। ইনি ইজিন্টীয়দিগকে সমুদ্য় নিয়ম এবং অক্ষর বিনাম, জোতিষ, জ্যামিতি, আয়ুক্ষেদ ও অন্যান্য বিদায়ে শিক্ষা প্রদান করিয়াছিলেন। আইবিশ্ নামক পক্ষী ইহাঁর বাছন ছিল এবং ইহাঁর এই ৰূপ ইক্ষা যে সমুদ্ধ যোৱা আইবিশ্ পক্ষীয় ন্যায় প্রতিমূর্তিতে

আমার পূজা করে। টাইফন শ্যথন দেবতাগণকে আক্রমণ করিয়াছিলেন, তথন ইনি আইবিদ্ পক্ষীর ৰূপ ধারণ ক্রিয়া পলায়ন করেন।

अमितिम्। जि॰म् पित्म माग धति दल তিন শত বাটি দিনে বংশর হয়, ইছাতে দৌর বুংসরের আর পাঁচ দিন **অ**বশিষ্ট थादक। तियां द्विती अने शाँव निद्य सूर्या, হকুলেম ও শনি (স্বাটারণ) হইতে यथां करम जिन्ही भूल ७ छाँह कना। व्यमव कृद्रन । सूर्य। इन्टेंग्ड अमितिम् अ आकृ-यातिम् এই छुट भूछ, सनिष्टेट ब्यारेनिम कना अनुश्रक्त लिम् इहेट छ। इकन भूछ ও (- প্থিম্ কন। উৎপন হ ইয়াছিল। অত্যে পুত্র ভিনটি, পরে কন | ছটি, ক্ষম গ্রহণ করে। দেব ও দেবীতে এই পাঁচটি ভিন্ন ভিন্ন পিডা ফটতে এক মাতা ফ্ট গভেঁ জন্ম धारुष करतम, सु इत् ० हेराइन्द्र श्वाम्श्राह म- । হোদর ও সহোদর: সময় আচে। কিছ কেবল এই সম্বল্ধ চির কাস বর্তনাম চিল না৷ ওদিবিষ্নিজ সহোদরা আইদিষ্ দেবীকে ও টাইফন নিজ ভগিনী নেপ্থিস मिवीटक विवाह करतमा है कि भी जिल्हा এই পাঁচটির বিশেষত তিনটি দেবের পুঞাই अधिकछत्र अधानक इहेश। इल। वेहाँ (पद मर्था चांक्रयातिरमत चिथिक त्रुखांच आश्र इउरा यात्र ना। चारना क वसूमान करतन, ইজিপ্টায়েরা সূর্যাকে ওসিরিস ও চক্রকে আইনিস্ বলিয়া পূজা করিও। छेड्टा स्या ७ हटला व्यक्तिको एवका ছिলেন।

ওিদরিদের জ্পের সময়ে এই দৈব বাণী
হইয়াছিল বে, সমুদায় পৃথিবীর রাজা জ্প
প্রহণ করিলেন। ইনি সমুদায় পৃথিবীর রাজা

হুইয়াছিলেন। ইান সহস্ত গৈচন, তেজোময় ও মঙ্গলদাতা ছিলেন বলিয়া ইহাঁর
অন্দিল এই নান হুইয়াছিল। ইনি ষে
সমুয়ে টাইফনের রাজ্যে গমন করিয়াছিলেন, সই সময়ে তাঁহাকে স্যারাপিস নামে
আব্রান করা হুইত। যেনন প্রাক্রিক
দেবতা অন্মনের সহিত আহি নানের এবং
ভিন্ত দেবতা ইলের মাহত আহি নানের এবং
ভিন্ত দেবতা ইলের মাহত ব্যাস্থারে বৈর
ভাব হুইয়াছিল, সেই ৰূপ ওসিবিনের স্
হিত টাইফনের নির্ভর বিবাদ বিসম্প

একদা ও মারিম দেব, দেবগণ মমভিব ং হারে পৃথিবী পরিভ্রমণে নির্গাচ হইয়ালি লেন৷ মেই সময়ে ভিনি পুথিৱীস্থ লোক-मिश्रक में छ। विषय । क्रांचकर्मा भिका প্রদান কবিলেন ', ওসিবিস্ পৃথিবা পরি सम् कहिया अहमहा करता श्रा होहे ফন একটি ভোচের দাবো ভারাকে সিন্দ্র কের মধ্যে পুরিষণ রুক্ত করিয়া মেলিলেন এবং লৌহদীনকে এ দিন্দুক বন্ধ করিয়া नीत नगोटड निरमान वर्शितन । निम्बक ए गिएक अगिद्र शाल नभीत के शिक्षे व अभिक মুখ দিয়া সাগবে পিয়া নিপ্তিত হইল। र्रोजकी द्वार अरे निमान है। कि मुर्चत নামেট্রেথ ক বলে অতার শক্ষিত হইত। এই সমধ্যে ওসিারদের আট্যাবংশতি ব**ৎসর** वयन् करेगाङ्ग। कामम (भटमत कन्म् ख मार्छिम् कार्रिका अथटम ले मिन्धुक (मिश्राट প্রতিয়াছিল। ওমিরিম দেবের পরা আ-इतिम् (पर्वी এই छ्टं हिनांत मध्याप खनिया-মাত্র মস্তকের এক গুচ্ছ কেশ কাটিয়া কে-

পাতঞ্জল দশনে অশবীবী ঈশবতে নির্মান-কাম
বলিখা গাকে ভাষার অর্থ এই —নিরাভার ঈশব কুস্কার
ও কৃষক প্রভৃতির শরীর ধারণ করিয়া ঘট নির্মাণ ও কৃষি
প্রভৃতিব নৃষ্টান্ত প্রশন করিয়া ছিলেন। এই মতের সহিত্ত
আংশিক লাদৃশ্য দেখিতে পাওয়া বায়।

[•] ইনি কোন কোন বিষয়ে যম ও কোন কোন বিষয়ে অস্ত্রের ন্যায় ছিলেন।

লিলেন এবং শেকস্তুচক পরিচ্ছদ পরিধান -করিলেন ৷ অনভার অভিমাত ৰাক্স হ- 🃜 रप्ता इंडञ्जल स्मार निम्कृत व्यवस्थान कविट्ड লাগিলেন, গ্ৰেষালকৈ পেৰেন, ভালাকেই 🕆 ঐ সিন্দু কের সংবাদ জিজাগো করেন। এমন মন্ত্ৰে কৃষ্ঠ ও ব বলিক ভী**ংতি ব**াখল ব ८२. मिन्यु ० बीन मनीर है। विके भूश । प्रश মনুক্তে প্তিও হুইয়াছে ৷ অন্তৰ্য আই- : लिन है के दानी भागा अप्याक इवेटलन एए, < मही मिण्युक माप्ता श्विष इनेटल काहारा । জুফান বিপরিত হয়, ভ্রেচেড নেই মিন্দুক मद्राप्तत भीतः जी वः भेवृम् गामकः मर्ग चेल-স্থিতি হ।। তথাৰ মহনত্বলৈ ভাগ ও ও-লয়েষ এক টাল ছিল। বিশ্বকৃতি ভাষার । फेश्टर (द्यान में १० ध्रा इस सम्रज (मह जून গুলি প্রস্থার মণ্ডে রখনা একটি এক। ও इस ह ए। ५०) । मिन्दु हिंदि अहे खन ए নক্ষেত্ৰ চলাৱে ৯ ব্ৰু ২ইব প্ৰত্যক্ষ । ভৰ্ম কার ১০০% এলন। তুর্নমতির রুম্ম ভাব । व्यक्षित्र भारत्व भारत्य व्य बुक्की उन्त প্রকে প্রতনের একটি স্বস্তু নির্মাণ কর नार्ट्स । प्राथिति । १ ती देवनवादी हो । াহন সংবাদ ভাষাবাদ হটার। বাইবাদ ৮৮: ৭ গ্ৰান বিহেলন এলে একা কনী একটি নি-কারের পারের উপর্বদান করিবা রেপেন ক-রিচে নাণলেন। এই সময়ে বাঙ্গভবনেব कारक छाल मानी भाग शहन छेशाइड १४। জ্তোরা আইনিস্ দেবীর **সন্নিইট হইলে** ক্রিরে গাল ক্টতে স্তুম্ আশ্রে**ম্যা সৌরভ** শ্হণ ৰ হৰণত লাগিল, লাদীরা **এট সংবাদ** वाक्रमं इंगीरक श्रमांच करत . রাজমহিষী करे मध्दान अपने के चार विकास विकास विकास की कार की की क নিদ দেনীকে স্বভব**নে আন্তান করিয়া** আগ্রনার শিশু পুত্রের ধার্ট্রী করিয়া রাধেক্ষ । খাগ্নিম দেবী সেই শিশুটীকে স্তনা না দিয়া অস্কুলি পাৰ করাইয়া রা**থিতেন। এবং**

প্রতি রাজিতে, ভালাকে অমর করিবার মি-মিত অ:গ্ল মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া স্বয়ং সেই স্তম্ভটির চতুর্দিকে বিলাপ করিয়া বেড়াই-তেন। কোন কারণে রাজমহিলীর অভঃ-করণে সন্দেহ উপাস্তত হওয়াতে তিনি এ-कना जाविति शाकिया आहे निम् (पदीत এই দকন ব্যাপার প্রভাক্ষ কণিলেন এবং পুত্রটিকে অগ্নর মধ্যে নিক্ষপ্ত দেখিয়া ভাষ সীংকার করিতে লাগিলেন। ও : ঠ। হাংকুমাৰ অনর র লাভে **বঞ্চিত** करण। उथन व्यार्थितम् (सरी निकाम्। इ भावां, कदिया (मध्ये ख ग्री खार्थना क विद्रासन । ध्यमस्य (गई उम्र ७% कित्य लगाया (गई শিন্তুকটি দর্শন করিবা এখন উ**ট্চ:খ্রে** রে।দন কবিচে লাগিলেন যে ভাষা শ্রেষ করিলা দেই শেশুটি আন্ত্রাপ করিল: তগন ডিনি রাজার জোঠ পুর ও গোল দি-म्बूक गर्मा ७८) (शहर वहेता के किन्छे (प्रमा-निमुद्य शयम कहिदलम । व्याङ्गक'तल शास मधा मी अम् नामक नेनीए कुकान छेपां इक হুট্যা জাহার প্রনের ব্যাঘাত করে, ডা হাতে তিনি জ্বাহুইয়া নদীকে শৃষ্ক কৰিয়া मित्रिम । व्यवस्थ अक चवरणात् भएषा ध বিট হইয়া সেউ সিন্দু চ উদ্যাটন পুরাঞ্চ ওমিরম দ্বেব মৃত দেও লচর। রোক্র করেতে গাগলেন। তাঁখার সম্ভিব্যাখারী রাজপুত্র রোদনের কারণ অনুসন্ধান করিছে ভাষার দালিকিছ কলবা মাত্র দেবী ভাষার প্রতি কঠোর কট।ক্ষপাত করিলেন, রাজ-পুত্টি অমনি প্রাণ্ড্যাগ করিল। **অনন্ত**য় আইনিদ দেবী স্বামীর মৃত দেহ সজে । हेशा हेकिकी स्वरम आश्रेयन **क्रिंटन**नै।

দিন পরে তিনি শ্বামীর মৃত দেহকে অতি গুগু স্থানে লুকারিত রাধিয়া বৃটস্নগরে নিজ পুজ হোরদ (আপেট্টা) দেবকে দেখিতে গেলেন। এ দিকে ইাইকন শুক

পক্ষের রাত্রিতে ইউস্কেড অন্মেষণ করিলে করিতে ওসিরিস্ দেবের মৃত দেহ বাহির করিয়া ফেলিলেন, এবং তাহা চতুর্দিশ ভাগে ছেদন করিয়া দেশের চতুর্দিকে विकिश्व कविशा पिटलन। आहेशिम् (पर्वो এই সংবাদ শ্ৰেশ্য এক খানি ফুদ নৌক। স্থাবোহণ পূর্ব্যক দেশের চত্র্নিকে অস্থেয়ণ कतिएक किंग्रिक एर माम भाष्ठ व्याप्त वही লেন। এল গওনীৰ নদীৰ ফলে নিক্ষিপ্ত হইম্ভিল: লিপেডেটেস, ফেগ্রেস্ও জ-क्निकिश्निम अने जिविध छ। जीत मण्डमा शहरी उक्का कतिल (कहना अडे कना के किली राया। अर्थे किन श्रीकांत महरमान দ্রপদ অভিশাদ সুধী করিত। আইসিদ্ मिती कांत्र कि करवन श्रीमीत य कान **क**रक मारव विद्याल रहेलां जिल्ला रकत्रम सामक **জন্ম** পেট অঞ্জারা ভালাপূর্ণকরিলেন। এছ দিনেৰ প্ৰ- ও'নবিণ্-দ্ৰ মৃত্যু ভবন **১ই**তে প্রত্যাকৃত্র হইণা নিজ পুজ ছোবদের निक्षे छिपश्चि इट्रेडिन, हारम १७ পুর্বের পিছার ভিত্ত-বিবোলী টাণ্টামনকে যুক্ষে পৰাস্ত ও কৃত্তা করিয়ালিকেন। কিন্তু আইামগ্দেরী ভাছাকে মুক্ত কৰিবা দেন। **ং**লার দ**্দেই কোধে জননীর মস্তকের মুক্**ট কাড়বা লন। ভাহাতে ধৎ রুধমস্ততের नात्र এकि मुक्ठे आनिश आहिमिम्दर অশান করেন। অনন্তর আইসিদের গর্ভে ওসিরিসের একটি ক্লশাঙ্গ পুত্র উৎপন্ন হন. ভাঁহার নাম হার্পে:কেটিন্।

ক্রীলোকের রচিত প্রার্থনা।

বেথানে কোম মন্ত্রোর বাঞ্তা নাই. কোন প্রচারকের যত্ন নাই, কেবল ঈশ্বরের হস্ত নিজ্ত ভাবে কার্যা করিতেছে, আমা-দের বৌশ্বধর্ম সেখানে কি মধুর বেশ ধারণ করিয়াছে, পাঠ দার্গ অবগত হইয়া ঈশ্ব রকে ধনাবাদ করেন। কলেক তা নিবাদী কোন পরিবার হইতে একটি রচনা প্রাপ্ত ইইয়াছি। তাহাতে নিপুণ লেখকের নাম কোন আড়গ্রে বা অলক্ষার নাই, কিন্তু কেবল পরিত্র জদযের সরল ভাবে ভাষা আরক্ষ্ত হইয়া আছে। যদিও ভাষার কোন কোন স্থানে রচনাগত কিছু কিছু দোষ লাগ্রত হব, কিন্তু আমরা ভাষার কোন পরিবর্গ না করিয়া অবিকল নিম্নে প্রকাশ করিভেছি।

শ্ৰেণ্টনা ;

क रानमा सम् । कामान निकेष व्याप छहे কোইনা কৰিছেছি, যেন সংসাক্ষ ম্যাহ মুক্ষ হুইয়। জোয়াকে না ভূলিন' পাকি ও যুহ'লে হডানেতি পাৰত চুবেল্ব অধিকানী নাইলা নিক্ষ, মুখ १७ १ केविड्ड निर्देश करें। करें। यस संकीत नकरन লেও হ(স্থা ১ছামার উপাসনা ক্রিছে করি। হে গ'বেশৰণ কোমার সক্ষাধে কড় ভগরাপ ক রিখানি ভাষাবন্দ কাংকে জক্ষণ, এই নিমিটেড ক্ষা প্রথমা করিছেছি, আমারাদগ্রে প্রাপ ছ-ইতে মুদ্ধ কর, এবং সংকর্ম্মে নিম্নজ্য কর। ভূমিই रक्त कराहरार संकर एउ.स. क जुलिय, आधारा द्यांक्य यांचित क.नहफ, छ। च नव्र' (क प्रकाश) छ ুক্তা, ধাশা হটকে আমধা একি মন পুণ সম্পাদ भगुषाय आश्र रण्या क्रीतन याद निकार विद्वाहिक, কিন্ধ টাতে হৈ সংগ্ৰেছা প্ৰতিয়াছি, আভাৱৰ আমার-দেৰ সকলেও কিচিত যে পশুৰুৎ মুদ্ধ লা হইয়া ভোষাৰ আবাসনায নিস্তুত পাকি। হে ককণা भग आमात अहे सुन क्षार्थमा धरण कता।

তে গারনেখন পার কর এই সংসার পারাবার।
চালিয়া দার্যার প্রতি, হর মম এ ছুর্গতি,
আমি অভি মূচনতি, নাহিক পর্যোতে মভি,
কি হইবে পরে গভি, ভাবি ভাই নিরস্তর।
কুপা চুন্টে কুপাসিমু, পার কর ভবসিমু,
এ অধীন জনের বন্ধু, ভূমি বিনা নাহি ভার।

মূহন পুস্তক

় - ভাত্তিত কথা। লাভি-রম পুর্ন চন্দ্রাস্থা। ঞী নরদা আসান বার প্রকীত।

২ । ক্রীজ ভিত্ত বিদ্যাল্যাদের ঔচি গোনীচিড্য বিচার বিষ্যুক প্রাক্তার । শেল জাটা দেশছিলৈ যিলী সভাবে পঠিত । শ্বী সংক্রোপ ধেল বিবচিত।

হা দুব বালি পুন্তক চাবা কটাত প্রকাশিত কট্যাকে ।
ক্রিক্স সর্দাপ্রস দ্বাঘ নহাম্য আশ্লেম নাম্র ক্লাই ক্রিপ্র লগানে জ্ব করিবাছেল। প্রেকাল ক্রিপ্র চার্চ হাত হাত হাত হাত হাত হাত প্রাক্র হিল্পের ক্রিপ্রাক্র ক্রিলেজ পরিব ল প্রক্রীর প্রক্র ক্রিপ্রাক্র ক্রিপ্র ক

দিতা পুষর শধর জীগুরু সর্বলাল সেন মহাক্র भीड (डिब्र निका) लिए। य नियर। य छाखान लिकिगोफिन भागान के किया । भी किया कि कि शर रहन में मुख्याल को दाल অলব লক্ষাৰ ক্ষাৰ্থ আন্তৰ্ম কালিবাম না যে আলোকি ভাৰ লাশৰ। বাস্বাহী হ'ছ। বিবাদি। নিক্ষাৰ আনশ্ৰেণ। কার্ছী টোল বার্থ र मिशा ५ मा इस्स ५ के माकि प्यानम 雙介一內計至,對多 为表的"答。 西路"《 南 建图"门"(号 棒" Latina रिक्क १८ किछि अधारित क्रियान व करे किस श्रामाल श्रामन क निष्ठार क्रमानि व 20 3 8 W 4 चिल्कमध्राम के व नहां ने किया है। देश देश है FT 日本 古者 1116 - 出门下 福門市林,在 面面上迎去 写-कर १ (च अभ्राप्त १०१म की प्रश्ति खाँ का प्राप्त दिलकान अ-दक्तर अहित। अवहान अन्तरा है। राईक व्यक्ति स्वत्तर ्रिक् डे॰वाड्र ७ **७**वास केडे ক্রারেটেট শাস্ত্র আর্থিন ওর'লাল জাভিত সালিক ধেলালা যে প্রিছন্ধ ও উ-কৃষ্ট এতে ভারা হিচ্ত ন ল কার্ডার উটালিকাল নামক প্রতি পার্ক 祝年書 6年27年 ক্রীলিফা কেবল বাচ্য ৬ চম্বর ७ / राम'न प्रसासरक, या कि इक, उद्यवस्तीय के उद्यान अध भीत डेफीलन व वर्गनी हर छ। झारन कशन है १ कुड अवदर्शिया गाउँगा अपास मा । इक्सान ऋतिसका, व कि सब क्य- 'ली १७%। ५६० ज्ञान व्यक्ति मान्य ।

প্রতির প্রতিষ্ঠিত করিবা দুই
স্কাণ প্রকাশিত করণ চৈ, ইহার উল্লেশ্য ও জ্বাবাধিনী
প্রিকার উল্লেশ্য গ্রামান এই জন্য এ প্রিকার খানির
কারি আনতা ড.চেডারে দুউপাত করি। এ প্রিকার সইত আনতিব্যাল গ্রামান করি হৈ
বিষয়ে অধিন কিন্তুর্ব উপ্রাঠা কর্মা চর্ম্বাহী হউক।
কর্মানিক ক্লার্শর উপ্রাঠা ক্রামা চর্ম্বাহী হউক।

গ। এগি ডিন্ট পীয়ান (কিবসার উপায়। এই পুস্তক ।
গানি ঐপে বি লাগ্য লিখি ১ । ডাঙ্কারের। ইহার দেশি
ন্থ বিচার এ বন। জানর। এই প্র্যান্ত বলিতে পাবি ।
ইহার (১নি দিল সাই উপায় আকাশ কর। যেনন আবিশাক,
ইক ব কারণ আবিশার কর। তাহা অপেকা অধিকঙর ;
আবশাক।

বিজ্ঞাপন

শ্রীযুক্ত প্রভাপচন্দ্র মন্ত্রমণার কলিকাতা ব্রাহ্মমানের দানসংগ্রাহক পদ পরিভাগ করিয়াছেন, অতএব দাত রা প্রভিক্তাত সা-সংস্থিক দান, শুভ কর্ম্মের দান ও দক্ষিণা প্রভৃতি সমুদান দান কলিকাতা ব্রাহ্মস্থা-ক্ষেব সম্পাদ চ শ্রীযুক্ত দ্বিভেন্দ্রনার্থ ঠাকুরের নিকট প্রেরণ করিবেন। দাতাদিনের অধি কাশ্যের অভিমতে এই দানের টাকা ব্রাহ্ম-বন্ম প্রচাবের কার্য্যে নিয়োজিত ইইবে।

> শ্রী দেবেন্দ্র থ ঠাকুর : কলিকাডা রাজসমক্ষের টু শ্র

ট্টীলিবের অনুমতান্সারে প্রীযুক্ত অব্যোধানাথ প্রেড়ালী মহাশ্য তত্ত্বের ধিনী কৃত্রিকার সম্পাদক হুইলেন, এবং শ্রীযুক্ত আনন্দ্রন্দ্র বেদান্তবালীশ মহাশ্য কালকাতা ব্যক্ষামাজের সহকারী সম্পাদক হুইলেন।

शिष्टकसमाथ प्रेक्त .
 विकाश विकासमाद्य मण्णापन :

অনুষ্ঠান পদ্ধতিঃ।

জাতকর্মনামকরণোপনয়নদীকা বিবাহাস্টেট্টশ্রেজিতি-সপ্তবিধসংস্কারাজ্যিক। 1

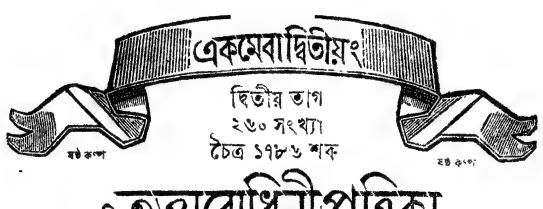
এই পুস্তক প্রস্তুত হারাছে,মুলা । আটি
আনা। যে ৰূপে ত্রাক্ষাদিগের সূহধর্ম সকল
অনুষ্ঠিত হণ, ইহাতে ভাহার আদর্শ বির্ত্ত
আছে: ঘাঁহারা এই পুস্তক প্রার্থনা করেন,
কলিকাস। ত্রাক্ষামাজে মূলা প্রেরণ করিবেন।
শ্রী আননদচন্দ্র বেদান্তবালীশ।

व्यापन वाक्ष्मारका महस्त्री मन्नाहरू।

নিঘ তি পত।

প্রতী
প্রতি প সাদ্ধ্যরিক ব্রাহ্মসমার . ১৬৯
ইতিপ্রিটি মত . ১৮০
ব্রীলোকের রচিত প্রার্থনা . ১৮৩
এই ভত্তবেধিনী পত্রিকা কলিকাতা ব্রাহ্মসমার্ক চইতে
প্রতি মানে প্রকাশিত হয়। ও স্থান্ত্রন মন্দর্মধারি সম্ব

১৯২১ কলিগভাস্ক ১৯৬৫ :



রক্ষরাত্রকমিন্নপ্রকাসীয়ান্তে বিভ্নানীত্রদিল স্ক্রমসূত্রে তদের নিডার জ্ঞান্ত্র দিসর স্তত্ত্বীর্বব্যবংশক स्मवानिकीयर **मर्कावग्राणि मर्कानिग्रञ्ज मर्काल्यसमर्काविकमर्कालिकमक्**तृतम्म्युर्वसम्बद्धियानि । अक्रमा ७ टेमाटरा, शासनार शिक्ष ত্রিকনৈত্রিক হাভন্তবৃতি। ভামিন্ জ্ঞীতিসার জিগ্রেছিলাগ্রক ওনুপাসনামর

নেদিনীপুরে গোপগিরিতে বসন্ত कारल उरकाशामन।

ध्यमः धामात्रमिदशतः थामकीतः উৎमद्यतः দিবস উপস্থিত। অদ্য আমারদিগকে তিন अकात तो क्या कई श्रांत जांकर्षण कति-ग्राटह; दगरखत मोम्म्या, नथा ভাবের भोक्त्यां अवश्चेत्रदात भोक्यां। यमञ কালে জগতে নব জীবন ও নব বদের আরি-জাব হয়; বন ও উপ্রন সকল নব প্লব ও মুকুলকুলে পরিশোভিত হইয়া চিত্ত হরণ করে; পক্ষিগণ ভূতন ক্ষুর্ত্তি প্রাপ্তি পূর্বরক অবরুদ্ধ কণ্ঠ দকল পরিমুক্ত করিয়া দঞ্চীত-स्था वर्षण करत ; अशुर्व मनत ममीत्व मनत मम् थवाहिष इरेश भंतीत मस्या जान्त्या स्टर्धत मधात करता। किन्द वमरस्त्र (मो-सर्थ। अप्रका नथा खाद्यत त्रोसर्थ। कि (अर्थ) यथन ऋगन्न ऋगन्नरक आकर्षन करत्. यथन এक महल महा-निष्ठं जेखेद-भद्राप्त मन काना महल महा-निर्क मेश्वत-श्रदाह्म म-ৰের সৌন্দর্যের মোহিত হইয়া প্রণর-পাদে व क र्य, म जांद्य मोम्स्ट्यात निक्रे वन-তের দৌন্দর্যা কোথায়? কিন্তু যিনি বসতের

मोन्मस्यात कृष्टि कर्डा अन्यशा जात्वत (भी ন্দর্গোর জনয়িতা, ভাঁছার দৌন্দর্ফোর বি দীম। আছে ১ তিনি দৌনদর্যোর প্রস্তবণ ভাহা হইতে সকল স্বোতি, নকল শোভা अक्न कोन्स्या विनि॰एक इक्टिक्टा रिन्नि श्रद्धात पाक्त, फिलि दमीन्स्ट्यान मा भत्र । क्रेश्वटटन अञ्चलभा छापके छ। हाइ मी-न्या। भ ओन्मर्यात महिन्न हरण्य म-म्कर्त नारे, स्म कोम्मरमान महिल भनात नभक्त बाहे। टम (मानन्य, टा वाक्ति (बटाकाव করিতেছে, ভাষার আর চক্ষ কিরাইবার সাধ্য १६८७८६ मा। पात्रूल अन्तर्भष्टक जियन् অংছেন,কিন্তু প্রামানের বাংকুলভাকোধার ১ প্রেমী যে চলা যে প্রেমাম্পদ ভাষার প্রতি প্রীতি দুটি না করিলেন স যে বাল্টি ঈশ্বরের সৌন্দয়। নিরাক্ষণ করিবার নিমিত্ত ব্যাকুল হয় ও তাঁহার নিকট প্রার্থনা করে, তিনি ভাহার সমাপে আঅস্কৃপ একশিক্ররেন। प्रश्वत य का करक श्रीत भोम्मर्यात श्रद्धक উপায়ক দেখেন, তিনি তাহার মনক কুর ম-শ্ববে আপনার নৌক্ষী ক্রমশঃ অধিকতর প্রকাশিত করিছে খাকেন। এ অবস্থাতে माधक " উৎमदार উৎमदः याचि एजीर

স্বৰ্গণ স্থাৎ স্থাং "ভিংদৰ হইতে উৎদৰে,
স্থা হইতে স্থা, স্থা হইতে স্থাধ উপনীত হযেন। এই কাপে তাঁহার পৰিত্র
টোবন বিগত হইয়া যখন তাঁহার বাৰ্দ্ধনা
উপান্ত হয়, তখন কি তাঁহার আনন্দের
শাস হয়। কখনই নয়। বরং জাহা আনন্দের
শাস হয়। কখনই নয়। বরং জাহা আন্তর্গাতির
কালীন স্থায়ে জ্যোতির ন্যায় আবো গাঢ়
ওপরিপকু হয়। বাহে বার্দ্ধান্তের কিন্দু কিন্তু
আন্তরে চির-যৌবস ও চির-বসন্ত। এই
বাহ্য বসন্ত সেই আধাান্তিক বসন্তকে স্মরণ
করিয়া দিতেছে। যিনি বসন্তের সৌন্দ্র্যো,
সথা ভাবের সৌন্দ্রেয়া ও স্থায় কোন্দ্র্যো,
নির্দ্ধিক করিতেছেন, আইস অদ্যা আনরা
নির্দ্ধিক করিতেছেন, আইস অদ্যা আনরা
নির্দ্ধিক করিতেছেন, আইস অদ্যা আনরা
নির্দ্ধিক জীবনকে সার্থক করি।

७ এক मिवाहि हो ५१

জীবনের প্রকৃত ব্যবহার।

৫৮ সংখ্যক পত্তিকার ১৫৮ পৃষ্ঠ র পরঃ

क्रिशीयां।--यि जु.रे शीहदायि ३-ইতে ইচ্ছা কর এবং যদি ভোগার কর্ণকুছর প্রশংসা-ধ্রি ভৃপ্তিকর বেধি করে, ভাষ। হইলে জড়তা পরিত্যাগ পূর্বেক কোন মহৎ বস্তুর প্রতি লক্ষ্য হির রাখ। যথন কোন মহৎ কাষ্য সম্পন্ন করিতে প্রবৃত্ত হইবে. ভর্থন সর্বাদা মনে করিবে যে, কোন কায্যই একে বারে নিস্পন্ন করা যাইতে পারে ন।। ए वर्षे-दुक लक्ष कक्ष व्यक्तिक इर्श अनीम ক্রিতেছে, ইল এক কালে কণামাত্র বীজে নিহিত ছিল। যথন যে কার্য্যে অরুত্ত হইবে, মনোমধ্যে প্রতিজ্ঞা করিবে, যাহাতে ভোগাকে কোন প্রতিবাসীর অমঙ্গল চিন্তা করিছা উল্লিডর পথে গমন করিতে না হয়। কোন প্রতিবাসীর উল্লেখ্য সহিত তুলনা করিয়া আপনার উন্নতির পরিমাণ করিতে ঘাইও না . প্রতি দিন িশ উন্নতির সহিতই

নিজ উন্নভির তুলনা করিবে। অথতিহত অধ্যবসায় অবলয়ন করিয়া অহর আপ-নাকে অতিক্রম করিতে যাওয়াই যথার্থ किशीयांत्र लक्ष्य। व्यत्मात्र अन्न लाएड ঈর্ষান্থিত হইয়া জিগীবা রুক্তি চরিতার্থ করিতে ব্যাকুল হইও না। তুমি এই রূপ প্রতিজ্ঞা করিবে, বৈ আদ্য মন বেকৃপ অএবর্ত্তী হইয়াছে, কল্য আফি যত্ন সংকারে দৃঢ়ত্রত হইয়া আরও অত্যে গমন করিব। এই ৰূপ প্ৰতিজ্ঞা প্ৰতিপালন করিতে পারিলেই অচিরাৎ মহান্লক্ষ্যে উপস্থিত হইতে পারিবে; এবং তোমার জিগীযা বৃত্তিও যৎপরোনান্তি চরিতার্থ হইবে। এই ৰূপ জিগীয়ু ব্যক্তিই অনস্ত উন্নতিকে লক্ষ্য করিয়া ভ্রেষ্ঠ হইতে ভ্রেষ্ঠতর লোকে গমন कटरन ।

नमनावनात्रीटक अनात्र खात्र। नीव-श्रम-বীস্থ করি**তে চেফী না করিয়া স্বয়ং** দুট ব্রত ও কমিন পরিশ্রম দ্বারা অধিকওর শ্রেষ্ঠার লাভ করিতে যত্রবান্ হইবে : তাহা হহলেই যশের সহিত সফলতা লাভ করিবে। জীগীয়ু বুদ্ধিমান্ বাজি খাদুশ মহৎ কার্য্যের প্রতি লক্ষ্য রাথেন, ভাদুৰ मनत्क महर कहिता चक्रांचा माध्रत एरश्व হন। তিনি পৃথিবীয়া সকল বিশ্ব বিপত্তিকে व्यवस्था कतिशे देवर्या ७ माहम क्रम भक ঘর সহকারে উচ্চতম লক্ষ্য **স্থানে উড়ী**র-মান হন। তিনি সর্বে কণ সাধু লোকদিগের দৃষ্টান্ত অধুরে জাগৰক রাখেন, এবং সেই সকল দুষ্টান্ত আপনার কার্য্যে পরিণত করিতে সর্ব্ব প্রকারে যত্ন পান। ভিনি উচ্চ কার্যো লক্ষ্য রাখিয়া শরীর মন সকলি, সেই कार्र्यात जना छेश्मर्भ करतन अवश्रान

কর্ত্ক সেই কার্যা স্থসম্পদ্ধ না হর, নে পর্যান্ত কথনই বিশ্রাম করেন না; কিন্ত যখন তিনি আপনার উদ্দেশ্য সিম্ম করেন,

ভখন তাঁহার অন্তঃকরণে কি এক অনি-संग्नीय आनत्मत उदम उदमातिक इ-ইতে থাকে, তাহা অন্য লোকের স্বপ্নেরও ষ্মগোচর। কেবলই যে তিনি আনন্দ উপভোগ করেন এমত নহে কিন্তু তাঁহার অত্তে পৃথিবী চিরকাল তাঁচার নাম পৃষ্ঠ-स्तरम , थावन कतिया थाकित्व। পরবশদিগের সমস্তই বিপরীত। তাহাদি-গের অস্তঃকরণ গরলে পরিপূর্ণ। তাহারা যাহা কিছু ক্রিতে যায়, তাহাতে তত দিন আপনাদিগকে উন্নত বোধ করিতে পারে না, যত দিন আশীবিষের ন্যায় অন্তর্গরল বাহির করিয়া প্রতিবাসীদিগকে বিবণ ও অকর্মণ্য করিতে না পারে। मर्ट्यक्वर विषाटक পরিপূর্ণ দেখা যায়; বিশেষতঃ যথন ভাহার কর্ণ কুহরে ভাহার প্রতিবাদীর উন্নতির সংবাদ প্রবিষ্ট হয়, তখন তাহার মন্তকে যেন বজুাঘাত পড়ে এবং পাছে প্রতিবাসীরা তাহা অপেক্ষা অধিক উন্নতি লাভ করে এই আশকায় ভাগার অন্তর্ণাহ উপস্থিত হয়। খুণা তা-হার অন্তঃকরণে সর্বাক্ষণ রাজত্ব করি-তেছে, এক মুহূর্ত কাল যে তিনি মনের আরামে কাল যাপন করিবেন, ভাহার কিছু মাত্র সম্ভাবনা নাই। পরোপকার কাছাকে वरल, बलिंड लोक मूट्थ धवर दावहाद জানিতে পারে, তথাপি তাহাকে তাহার অমুষ্ঠানে কথন দেখা যায় না। স্থতরাং ' আত্মবৎ মন্যতে জগৎ " আপনার ন্যায় সকলকে দেখিয়া এমন স্থন্দর সংসার তাঁহার পকে বিষবৎ হইয়া উঠে। তিনি যদি উহ্নির সমব্যবসায়ীকে তাহা অপেকা অধিক উন্নত দেবেখন; তাহা হইলে ভাঁহার সমব্যবদায়ী বে যে কার্য্য করিয়া উন্নতি লাভ করিরাছেন,সেই দেই কার্য্যের দোবামু-সন্ধানে রভ হইয়া কি উপায়ে তাঁহার আর

উন্নতি না হয়, স্বতঃপরতঃ তাহার চেতা পান। কিন্তু দেখ এতাদৃশ অন্যায়াচারী অহিতকারীর মঙ্গল কখনই সন্তবে না; সে যাদৃশ লোক সকলের উন্নতির কণ্টক স্বরূপ, তাদৃশ আপনি আপনার উন্নতির কণ্টক স্বরূপ। অবশেষে, সে এতাদৃশ স্বাধীন মন্ত্র্যা হইয়া তন্ত্রকীটের ন্যায় আপনার ঈর্যাজালে আপনিই বত্রবন্ধ হইয়া পড়েন, প্রতিবাদীর মঙ্গল ঘটনা কালসপা হইয়া সময়ে সময়ে তাঁহকে তত্ই দংশন করিতে থাকে, সে মূর্য আরে এক পদও পালায়ন করিতে পারে না।

স্থবুদ্ধি।-সর্ব্ব কণ স্থবুদ্ধিকে ভোমা **पिट्शत अम्बःकत्रा ज्ञान पिट्र, प्रश्न एक** বারো স্ববৃদ্ধির কথা অবহেলা না কর। স্থ বৃদ্ধি ধর্মোর প্রবর্ত্তক এবং ইহাকে অবলয়ন করিয়াই শাণিত ক্ষুরধারের ন্যায় ধর্ম পধ मिशा ठनिशा योथशा योश । किस्तादक गर्य-ক্ষণ বলে রাখিবে,নজুবা ইহা ভোমাদিগের এতাদৃশ উপকারী বস্তু হইরাও উদ্বেগেব কারণ হইবে। কাণ, খণ্ণ ও কুক্তকে দেখিয়া কথন উপহাস কবিবে না। যাঁচারা লোক দিগের কিঞ্চিত্মাত্র তুর্বলতা দেখিয়া উ-প্রথম করিয়া থাকেন, ভাঁহারা নিশ্চয়ই উপহাস।স্পদ হন। অধিক বাক্য বারের সময় ক্ষেপ্ৰ করা নীচ অন্তঃকরণের কার্যা, ঘাঁছাবা অধিক বাকা বাষ করিতে প্রিয়, তাঁহারা সভাব অতান্ত অহিতকারী। তাঁহার বাকা শুনিতে শুনিতে কর্ণ ক্লান্ত হইয়া পড়ে এবং অপরাপর বক্তাগণের বাকা, যাহা অবণ করা অতি আবশাক, তাহা তাঁহারি বাক্য জালে জড়িত কইয়া বক্তার অন্তরেই নিহ্তি থাকে। আপনার গুণের কদাচই গরিমা করিবে না; যে হেতু স্বীয় গুণ প্রকাশের নকে নঙ্গে সাধুদিগের তাচ্চল্য উপস্থিত रस। कारां क पूक्त कान कतित मा,

রেণ ইহাতে অনেক আপদ্উপন্থিত হই-বল সম্ভাবনা। অধিক কৌডুকে বন্ধু-বিচ্ছেদ ছইবার যথেক সভাবনা, ঘাঁছারা জিহ্বাকে শাসনে না রাখিতে পারের, টাহার্য সময়ে সময়ে বিলক্ষণ ক্লেশ পাইয়া থাকেন। ছোমার যে ৰূপ অবস্থা, তুমি भिष्टे बेश कीवरनत छेशरयांशी खेवा मक्स নঞ্য করিবে। **অ**ধিক আয়াদ পাইয়া অকি-ক্ষিৎকা দস্ত্র সঞ্য় আবিশাক নচে, যে চেডু व ऋरथेत छेटल्टम जूबि मिहे जवा मध्य কারতেছ, তোমার সংগর করিবার ভুণপের নহিত ভোমার ভবিষাং স্থাধের ভুলনা করিলে সুখের অংশ অতি অস্পই থাকিবে। ধাহা দক্ষয় করিলে তুকাবিস্থায় স্থাখের কারণ **ब्हेरव, विर्वणना भूक्वक छ**ालात मल्लस করিবে। দেখ ধেন কোনার আন্মাদ २० ४क वास-माथा न। ६४, छ। ह। इङ्केटल **शट**त পশাস্তাপ আদিয়া উপন্থিত হইবে। ত্যে-ম: দীভাগ্য যেন তোমার বিচক্ষ, ১, চক এবং পরিমিতাচারকে মন্ট না করিয়া ফেলে। যিনি অধিক আভ্রমর ভাল বাদেন, উৎ্থাকে পরে আবশাক মত দ্রামা পাইয়া খেদ ক রিতে হয়। অনাকে বিপাদে পড়িতে দেখিয়া আপনি সভর্ক হইবে , এই স্থানেই লোকের বিপদ্ভোমার সম্প্তির কারণ **হইবে।** শব্দরের দোষ কেবিয়া আপন দোষ সংশো-ধন করিবে। যদন্ধি নাকোন ব্যক্তিকে উত্যৰণে পরীকা করা হয়,ভদবধি ভাছাকে বিশাস করিবে না; এই জন্য যে তুমি সহল লোককে কোন কারণ বাতীত অবি-খাল করিবে, ভাহাল নহে, বে হেছু এতা-मृत्कारमा कनगांचा **अकाम भारा।** প্রথন কোন উপাবে কোন ব্যক্তির **অন্তর** ৰ: হু বিশেষ **ৰূপে জ্ঞাত চইরা তাঁহাকে সৎ** বলিয়া বিবেচনা হয়, ভাহা ২ই ল সেই াজিকে তোমার পত্তর ধ্ইলে দ্বীরুত

করিও না; এতাদৃশ বাক্তি অস্কুলা নিধি প্ৰৰূপবলিলেও অত্যুক্তি হয় না। भरमत मरक मृदक याँश्वित्रक श्राश्च হওয়া যায়, তাঁহাদিগের কুপা **প্রার্থনীয়** কথনই হইবে না; ভাঁছারা ভোমার কাঁদ স্বৰণ নিশ্য জানিবে। যাহা কল্য আৰ খ্যক হইবে, তাহা খাদ্যই সমস্ত ব্যবহাস করা কোন মতে বিধের নয়; আর যে বস্তু क्तरन विशटमत कात्। विश्वता (वांध शहेरव, তাহা কথনই দঞ্য করিবে না। নির্ফোধেরা गक्त गग्रस कि अध् करत ना এवः ञ्जूषित्रां भकन गमरत्र मकन विषर्ध कत লাভ করিতে পারেন না, তক্ষনা যে নি-र्व्यारपदा हिन कान ऋटश काडोहेटर जनः স্থবোশেরা ছণ্টথ কাল যাপন করিবেন,ইছা কোন কালে মনে স্থান দেওয়া উচিত নছে।

ভিভিন্দ।।--বিশ্বপতি মনুদাবৰ্গকে এই ৰ**েপ পৃথি**বীত করিয়া**ছেন যে তাঁহাদিগকে** বিপদ্, দুঘটনা, অভাব, ক্লেশ এবং ক্ষতি गश् क्षिट्ड इहेट्यरे इहेट्या उड्डना, ह নসুষ্যগণ। ভোমরা পুর্বেষ্টি দৃতভা, ধৈর্যা এবং তিতিকা শিক্ষা কন, যাহাতে ডো-मोनिरात जीवरनत व्यवभाषाती व्यापन् **रहेटक अनाशादम छक्कात भारेदव। डेक्** যেমন বালুকাষয় প্রান্তরে পতিত হইয়া ক্ষুধা ভূষণ এবং প্রচও স্থর্যাকিরণ অনা-য়ানে নহ করে, ভাদৃশ ভিডিকু ব্যক্তি অবলীলায় দংগারের সমস্ত বিশ্ব বিপত্তি অবিচলিত চিত্তে সহা করেন। করণ মনুষ্যগণ স্থা তুঃখে হর্ম বা কাভরতা व्यकां करतम ना। **डाँहात्र मिरणत सहद** অভঃকরণ জঃখের কথাখাতে সম্বস্ত হইরী চিরদেবিত ধর্ম পথের বহিভুতি হয় না। তিতকুর হুখ ছুঃখ যদি দৌভাগ্য ছুভার্গ্যের উপর নির্জর ধাকিত, তাহা হইলে তিনি ছ্ঃখের সময় কাতর হইডেন, এবং সুখের

সময় আহ্লাদে হতচেতন হইতেন: किन्छ তাঁহার মন তিতিকারপ রজ্জু দারা ধর্ম-ৰূপ পৰ্ব্বত মধ্যে ধৈৰ্ঘ্য ৰূপ কীলকে আৰদ্ধ রহিয়াছে, স্কুতরাং বায়ু-শ্বরূপ সংগারেব দামানা স্থা তৃংখে ইহা বিচলিত হইবার বিষয় কি। যথার্থ তিতিফু ব্যক্তি কেবল সাধ্য ও দুঢ়ভার উপর নিজর করিরা খনা-মানে বিপত্তি-দাগর পান হইয়া যান। তিনি वीरतत नाम त्रांशरमंत्र मन्यू शीन इन, स्र छ्वार বিপদ ভাঁহাকে পরান্ত করিতে পারে না। गश्कारन निश्रम-गमूक क्ष्युक्तिक इकेटक छैं।-হার মনকে আক্রমণ করিয়। বিধাদ-সমুক্তে নিপাতিত কবিতে যায়, ভখন ভাঁহার গৈয়। র্হাচাকে অক্য কবচে আরুছ করিয়া রাথে। কিন্ধু ক্ষীৰ্মনা ভাঁত ব্যক্তির প্রতি লক। ক্র, তিনি চিরক।র শজার দান হটয়া কাল যাপান কবিতেছেন, ভিনি পরিদ্রভার ভিনে কম্পানান হইবা নীচ কল্যে প্রবৃত্ত হই-८ ७ एक म. जबर मारुग ও बोर्गा मी थ। कांग्र অপমান সহ্য করিতে গিয়া নানা আপদে পতিত হইতেছেন। তাঁহাব মন সামান। তৃণ অপেকাভ লগু, তিনি বিপদ নমনে ष्यकृत इःशंगभूटक भक्ष इंट्रेंट वाटकन, ६८-দুফের সময় হতচেতনপ্রা হন এবং নৈব⊹ শেরে সময়ে তাঁহার আত্মা একে বারে অভিত্ত ও নিরুপায় হইয়া পড়ে।

-

থিয়োডোর পার্করের পত্র।

২৫৮ সংখ্যক পত্রিকাব ১৫৭ পৃষ্ঠার পর।
ইউনিটেরিয়ানের। কুসংক্ষার-মূলক ত্রিনীতুর মত সম্পূর্ণ অস্বীকার করিয়া খাকেন,
ভারিজন্ত গোঢাদিগের সহিত উহঁ।দের
ঘোরতর বিভগু উপস্থিত হইত। ঐ সমস্ত
গূঢ্যাদীরা মত-ভেদ নিবন্ধন নির্ক্তিতার
সহিত উহঁ।দিগের প্রতি অতি কদ্যা ব্যবহার করিতেন। কিন্তু পরিশেষে ইউনি-

টেরিযানেরা উহাদিগকে পরাস্ত করিয়া ত্রি-নীতির মতে অবিশ্বাস বন্ধমূল করিয়াছি-উঠার। মেদেচুদেটদিশেরও ধর্ম-বিষয়ুক বিশ্বর অসম্ভ নত গণ্ডন কবেন। অন্তর তাঁহারা ক্তকগুলি ভক্ষাগার নি-ৰ্মাণ ও বহুসংখাক পূৰ্ব হন বিদ্যালয় আ-পনাদিলের আধিকাবস্থুক্ত ক্রিয়া তৎ সমু-দায়ের বংগউ জীর্দ্ধি স্থিন করিলেন। এই সমস্ত কারণে আনমাবকারে ইতর সাধা-त्र मक्दन्ये छैं। भिनद्य यद्यके ममानत করিতে লাগিলে। যদিও ও হাদিলের মত মম্পূর্ণ স্বত্যা ভিগত ভাঁছারা অপেনা,দগকে স্তুত্র সম্প্রদান বলিয়া বিবেচনা জ,ব ভেন ना এवर गोधीनद्वात वर्षा-मध्यान अधिन हाव मन्ति कतिया भाडिमय भयुके केटे. इत । তৎকালে ইউনি ভাষালতেরা বিকাপ বিমল আবেশকে আপনানিগতেক উজ্জ্ব কারতে পারেম নাই, তথাত যাহা ধ্যাবিজ্ঞান মজত ইতিহামকে এক কালে দুনিত কর-তেতে,দেই খনত নাত্রপ প্রিশুক্ষ মতের বিরুদ্ধে গৌরব সহকারে গোরত্ব নিজ্ঞা ক্রিতেন। ভীগ্রা নম্পল্নিই অধিকার ष्यवाञ्च छ निमर्गत्व बर्न्ट्स सम्बद्ध নিয়ম গুলি পরিবত্তিত ক্রিনাছিলেন এবং क्रभनोश्वराय मार्गहर्नर था । भूगा क्रम ो। उतिसार १ तिएड इस-सींचि नान ध উশার মধা প্রধান দান, এই সভাটি নিস্কা ও শাস্ত ভাবে প্রচার করিতেন। খুটিয়ান সম্প্ৰয়ে মধে। কেবল উহ রৈছি অনন্ত নরকের মতে র মুক্তকণে প্রতিবাদ করিয়া খাকেন। কিন্তু যদিও তাঁছারা খিটীর ধ-र्क्स्ट थ ममल मातां प्रा व्यविश्वाम करतन, उथाठ कि इंडेनिजामिल्छे कि इंडेनिट्डे-রিয়ান উভয় সম্পুদারই বাইবলের অ-লৌকিকভা বিষয়ে সম্পূর্ণ বিশ্বাস করিয়া शादकन এবং কছেন यानि व्यक्तीकिक ও ্যত্রান্ত বাইবলে ত্রিনীতি ও অনন্ত নরকের বিষয় স্পটাক্ষরে নির্দেশ করিয়া থাকে, ভাষা ফটলে আমরা ইহাতে অবশাই আন্তা প্রদর্শন করিব সন্দেহনাই।

মাউরে গারিমন আপনার বন্ধুবর্গের স-হত আমেরিভাব পিউলিটান সম্প্রদায়দিগের দৈংকুই উৎকুই মতের এক:ত পক্ষপাতী হুৰুৱাছিলেন এবং খাঁহারা ধর্মের নিমিত প্রাণ বিসজ্ঞ করিকেও এপ্তত আছেন, ্ষ্ট সমস্ত কৃষ্ট ক্ষোবলয়া মহায়া ও হিক্ত-দিলের ভবিষাস্বক্তাব নামে সাতিশয় উৎ-দাহ ও যত্র সহকারে, দেই সকল মত প্রচার কারতে লাগিলেন। কিন্ত তিনি পিউ-রিটান সম্প্রদার, হিব্জাতীয় প্রিয়াল্ভা ও मन्त्र थ की यम अधिकारण रोम ७ व्यक्तित ব্যক্ষিকগণ মধ্যেক। এনেকাংশে আপনার यस्याप्त अनम्ब कतिः ग्रीति सम्ब । यदक्रिः ভিলি এ সমস্থ মত পালার কণিতে আরিট कर्रम् एथम् अधे कण् वाप्पन्न श्रमः हरेशा-চিলেন লে নেফিনের রাজপুরুবেরা বিস্তর অন্ত্ৰসন্থান কণিবার প্র দেখিবেন একটি बर्टे क्रिया महाग्रहा

বরিতেছে। তদ্দানে উই দিনের মনে
গবিষ্য ক্ষিত ভয়ের আর্কিছুনার আশকা
বাহল না। ডালুর চানিছু সম্পূর্ণ ক্ষমতা,
ক্ষেত্রটো বজুতা ও সম্ধিক মনুষাত্বের
ক্ষিত হস্ত্রাবার প্রকৃত গৌরব এবং ধর্ম
শ্বিরি প্রকৃত জাবন স্বরূপ এই ছুইটি
বিশ্বব সকলকে উরোধিত করিয়া আপনার
বিশ্বর সকলকে উরোধিত করিয়া আপনার
বিশ্বর সকলকে উরোধিত করিছে সালে
কিন্তু হুইবেন। ঐ মহাল্লা কহিয়া থাকেন
শ্বীম ধর্ম প্রভাবে স্করাপানীর পান-দোম
বির্বিণ, নির্বানর অবহার উন্তি সম্পান্
দন ও অনভিজ্যের শিক্ষা সমাধা হয়,
ব্বং এই ধর্মই আনেরিকার ক্রীত দাস-

দিগের স্বাধীনতা এদানে প্রকৃত উদারতা थमर्भन करत । थे ऋविशांक महन्ना युवक-দিগের সহিত গাঢ়তর সংস্তাব রাখিয়া এবং উহাদিগের সহিত বিবিধ বিষয়ে তর্ক বিতক করিয়া বয়সের উন্নতি অনুসারে জ্ঞানেরও সমধিক এরিছি করিয়াছিলেন। ছোরেস-মান ও তাঁহার কএকটি সহযোগী সাধাস্ত্রের বিদ্যার উল্লভি সাধনের নিমিত্ত সাভিশয় যত্ন ও পরিশ্রম স্বীকার করেন। পিয়ারপণ্ট অষহায় হইয়াও স্থুৱা পান নিবারণ, ধর্ম যাজকের ন্যায়-পরতার দৃটি স্থাপন, ধর্মা বিষ্থক ভাস্কর অসম্পতি নিরাকরণ এবং সাধারণের জ্রীতিকর বা জ্ঞীতিকসই ह উক প্রকৃত নিষ্ঠ তার প্রতিবিধানার্থ ধর্ম-যাজকের অধিকার স্থাপন বিষয়ে সমধিক অ্রাস অবলয়ন করিয়াছিলেন। শেষে ইনাস নৈর উজ্জুল ধীশক্তি বেক্টিনে স্থকাশিত হুইরাছিল। উহা সুদতুর ব্যক্তি বর্গের মন আকর্ষণ করিণ: ভূতন প্থ ও ভূতন প্রত্যাশা প্রদর্শন করে। ফলভ আমেরিকায় এই ৰূপ বিশালাবহ বাাপার আবি কথন প্রত্যক্ষর মাই এবং এখনও *देश ज्ञा*श विद्यारतत विषय नरह।

ক্ষান্ত বিশ্বিদ পেকেন ও কুম মন্ত্রান জড় দেই পূর্বাপেকা সমধিক অভিনিবেশ সহকাবে পর্যালোচনা করিতে সাধারণকে প্রবর্তিত করিয়া প্রাচীন অপ্রাক্তবাদীদিণোর ক্ষমতা সক্ষু চিত্ত করিয়াছিলেন। ওয়াউভ্যার্থের বচনা প্রকৃতি-প্রিয় গুঢ়ানুসন্ধান-পর ব্যক্তিদিগের অভিশয় আদর্গীয় হইয়া
উঠে এবং উহা সাধারণকে প্রাক্তিক ধর্মো আক্রন্ট করে। কার্লেলির গ্রন্থ কেন্দ্রার মুক্তিত হইয়াকি মুবাকি রন্ধ সকলকের হিছ আকর্ষণ করিয়াছিল। কোন্ত্রির রচনা সকল আমেরিকায় পুন্মু জিত হইয়া সাধারণকৈ নিশৃত ভার অনুশক্ষান

ক্রিবার প্রচুর সাহায্য প্রদান ক্রিয়াছিল। ঐ সমস্ত রচনায় প্রাগাঢ় বৃদ্ধিজ্যোতি সর্বত विन्दोर्भ प्यादह। अं ब्रह्माधनि प्यत्नदक्त, বিশেষত দেবতায়বাদী ধর্মযাজকদিলের চিন্তা শক্তি একান্ত উত্তেজিত করে: যদিও ভংগ-মুদায়ে ইতিহাস ও পদার্থ বিদার অসঞ্জি ও বিশুদ্ধ প্রণানীর অসদ্ভাব প্রাছে এবং থদিও গর্বে, কুদংক্ষার, রুখা ভর্ক, বিশৃষ্থলতা ুও ভ্র'বির চিষ্ণ স্কুম্পান্ট নির্নাক্ষিত হয়, তথাচ ঐ সমস্প রচনা মিতান্ত পরাধীন চিত্তকে স্থা-ধীনভা প্রদানে সাহায়া করিয়া আমেরিকার 🖜 🛪 উপকার সাধন করিয়াছিল। .सर ८ स स स्वाली जन्म विद्रीहरू, शबीत ভাৰ পৰিপুণ ও সাধারণে জীতিখন, ডিমি হায় এও মধ্যে দেৱপ মাম্মত ব্যক্ত করি-যাছেন, ভাষাত প্ৰথম মধ্যাদি সন্মত। আ (भविकात शांतिक जन्छामरा उँ । त मविद्रम्य 'ब्यारलाहरू' क विया थारक माना एवं स्थादन मूल-ভাষার এন্ত নিভান্ত ডু:আধ হইছ, তথায় नकट्य डेबाब अनुवाम अनुभोधन कांब्रेट । 'यमाना तमार्थ हिमा खाउ। मानावर्गव ए কুমংক্ষার প্রাক্তভূতি হয়, কুলিনের প্রস্তু প্রা-াবিত মইয়া ভাষা এক লালে নিবাস করে।

ইজিপ্-টীয় নত।

২৫৯ লংখাত পত্রিবার ১৮৩ পৃষ্ঠার পর।

षाइमिम् (पर्वो। इक्किन्धीनिष्टिशत অধান প্রধান দেবতার রক্তান্ত সংক্ষেপে উ. লিখিত হইয়াছে; একণে তাল্দিগের ক-তকগুলি দেবীর রুজান্ত বর্ণিত হইভেছে। পুরক্তি অনেক এন্তকার ইঞ্চিপ্টীয়দিশের ভূরিভূরি দেবীর কথা উল্লেখ করিয়া গিয়া-ছেন, কিন্তু নিপুণ ৰূপে আলোচনা করিলে জানিতে পারা যায় যে, গেই সমস্ত দেবীব অধিকাংশই এক আইনিস্ দেৱীর মুর্ত্তি

एक माळ हिटलन। ज एक्टम एमन जक ছুৰ্গা কালী, জগন্ধাত্ৰী, চণ্ডা প্ৰভৃতি নানা ৰিধ আকৃতিকে পূজিত হুইয়া গাকেন, সেই ৰূপ ইজিণ্ট দেশে এক আইদিস্দেবী ভিন্ন ভিন্ন ক:যোর ভত্তাবশ বিকা ৰূপে ভিন্ন ভিন্ন মূর্ত্তিতে আরাধিত হুইতেন। ই হার কোন প্রতিমূত্তি **শৃঙ্গ**বিশিষ্টও দেখিতে পাও্যা যায়। পরস্পর অনুবাগার্থী নায়ক নাড়িকারা मिन्नि ल एउन शिंगछ निस्थि बार्श आहे-।मम् (भवीर व्यासम्बन्ध करिक। (संदेश) আইদিন্দেবীকে ধনো বলিলা গণন। করি তেন। আইনিল দ্বীর দশ প্রত্যান চিল, এই নিমিত্ত ভাগের আর একটি নাম भितियनिमम्। आहेमिन् भितीय अन्तानः রুক্তান্ত প্রদক্ষ ক্রমে গুমিরিন দেবের বিবর-मत्भा मधिद्यांग्य इवेदाद्या

िष्ठर किन्। अमितिरमङ देनरम काई-भिण (मनीट शहर विकेट मही प्रवीत अग्रहण) প্রাক্ত দেবা ভাষানার মৃতিত উত্তার অনেক িষ্ট্র থৌবাদ্ধ। আছে। ইনি ভাগনার নাাম অতাৰ পতিব্ৰভা বলিয়া প্ৰমিদ্ধি প্ৰাপ্ मा विदेशकिम नगरत है शह नक्षि मालना किन। रिअल्लिक्स भा कृति विर्माण विश्वा ें हात शुह्र। इंटेश हैं, प्रश्नी दम्दम याज বিভাল মাধিত, ভাইমমুদার সংগতি কৰিয়া বিউব উদ্ধলনে লোখিত কবিতে চই।

रेनिशिश: * क्निंद्र मानि जाक्रिक, इंटे शाद्ध कुरे तक वियुष्ड, मखांत्र शेवक बाता বাচিত, একটি প্রতিমুর্ত্তি ছিল; ডাহারট নাম ইলি স্বত্ত দেবতা নহেন, আই্সিম বা নিউবাউদের মূর্ত্তি ভেদ মাত। रय नित्न कि नीया जिथि পজিত, সেই निवम চ্হাব পুলা হইত।

নেশ্পিষ্: ওমিরিসের র্ভাত্তে উল্লি निष् क्रेबाट्ट य. इक्निलात जैनटम রিয়া দেবীর গর্ভে টাইফন পুত্র ও নেপ্থিস কনা জন্ম একণ করেন। এই নেপ্থিস্ দেবী
নিজ সহোদর টাইকন দেবেব পত্নী কইয়া
কিলেন। গ্রীস্দেশায়েরা এই দেবীকেই
মান্যেড়াউট্ বলিও। খেতবণা খেন্তব নাায়
ই হার ফুর্রি। ইনি রাতি ও অঙ্গানারের
আর্থনি দেবতা। হিন্দুদিনের অংশলান্থ নিল্ গ্রীক দিবেব বিন্দ্র ও ইজিন্টীয়দিরের
নিপ্রিষ্ণ ভ্রা কাপ চাবত কইয়াই মনুষ্দ্র

গমন কাৰ্যাছিলেন, সেই সময়ে লগতে নি হোলাকে কেনি স্থীপে রাখিয়া লীপতি ভাষাইয়া দেন এবা ধ্বাং টাইফনের হস্ত হটা এ পরিহাণ পাইবান নিমিপ্ত মাইবেল গ্নীর মূর্তি ধারণ কবিষা পলায়ন করেন।

ইজিপটীয় দেব দেবীর সহিত ভারত

থাঁব দেব দেবীর অভ্যন্ত সাদৃশ্য দেখিতে

থাবর। যায়। কেবল দেব দেবী বলিয়া
ন্য, অন্যান্য মত বিষয়েও বিলক্ষণ মৌ
শাদৃশ্য আছে। ইজিপ্টীয়দিগের অন্যান্য

প্রান্থ বিবৃত্ত হইবান স্থায়ে ভাষ্য ক্রমে

ক্রমে অভিব্যক্ত হইবে।

পৃথিবী ও মহুষা।

পুলিবীতে যে সমস্ম ঘটনা উপস্থিত হউত্তেত্ত, ভাহার কারণ নিকাপণ বাতিরেকে কেবল দেশ গ্রাম নগরাদির বিভাগ নির্দেশ এব- ভত্ততা আধিণবের স্বভাব ও চবিত্রাদিব বিষয় বণন কভিলে ভুগোল বুভান্ত শামের সাংগকতা সম্পাদন কর। হয় না। ইভিরুদ্ধ সংক্রান্ত নিজ্ঞান ব্যতিয়েকে যদি কেবল यहिमा छ। नत् छेत्स्य क्रा इस. छ। इट्टल क समान १९१६ ७ नीतम इन्हेमा बास, सिन् ৰাপ ভূগোল ৰুভান্ত বৰ্ণন কলিছে থিয়া যদি গঢ় কারণ সমস্থ উদ্মাবন না করিয়া কেবল দুস্ত বস্তুর স্কুপ মান নিদেশ করা यहि, डाइ। इडेटल फेश्ड मध्यतिवृत् कमाह প্রীতিকর হয় ল.। বস্তু মাত্রের বণুনা করা जुरभान इक्षांत्यत श्रद्धक फेरफ्मा नरह। পার্থিব গ্রার্থ সমুদায়ের পরস্পার বিভিন্নতা व्यन्तर्गन, कांगा कातरवत छेखादन, मरहरून उ আচেতন পদার্থ সমূহের পরস্পর সম্বন্ধ ও · কাৰ্যানিৰূপণ এবং মানব সমাজের কি ৰূপে ক্রমণ উল্লভি হইয়াছে, ইছা নির্দারণ করাই रेगंत्र मृथा উष्फ्रमा। এर ममल अत्रितः 🛊 উল্লেখ না করিয়া কেবল যদি বস্তু মাতের ُ বর্ণনা করা যায়, তাহা হইলে ভূগোল রক্তান্ত নিচান্ত অসার ও অকিঞ্ছিৎকর হইয়া উঠে। যে সমস্ত বিষয়ের জ্ঞানোপাঞ্জন করিলে

মন যথাৰ্থ পুটিও প্ৰকৃত উন্নতি লাভ ক-विटंड शादत, उৎमञ्जनात्यत जमस्राव इहेटल श्रमार्थ विषा। मङ्दाङ है नीतम एडेश श्रांदक। স্তরাং যাহাতে জড় ও চেতন প্দার্থ পরস্পর কি ক্রপ সম্বাহ্ম নিবন্ধ ক্ইয়া সেই কর্ণাময় বিশ্বস্রুষ্টার মঙ্গল অভিপ্রায় স্থ-দিন্ধ ক্য়াতৈছে, ইল অস্পান উপলব্ধি করা যায়; যে সন্ত করিলে পার্থের পদার্থ সমূ-লায় ক্রমণ উন্নতি না ও করিয়া বিশ্বপতির অনন্ধ ও সচিন্তা কৌশলেন প্রবিচয় প্রশান শ্রতের্জ্যের রালেই সমস্ত করেন উদাবন द्धा गाणः (१० । अङ । १३। छ । महत्या प ममन नियुद्धतः व्यवीन क्रियां अहे कड़ ज গৎকে নিরম্ব উদ্ধান্ত করিতেদেন,যাহাতে ख्दभभूमित्यत केल्यास्तिहा ४ श्राप्टन्तक है। व्यक्ति। य क्या यात्रः, भाषाद्र अहे समञ् অচিন্তুনার অভকলার আশ্চয়া লাপার মুস্পর্ট জনাত্ম করিয়া মেই নিশ্বপিতা ष्यितमा छ। ? अहि औष्टि ४ में कि उपनि পিত হয়; এই ভূগোল গুতান্তের তালাই উদ্দোষ্ঠ। "यागद्रो এই উদ্দেশ্য गिश्व कवि বার নিমিত্ত পৃথিবী ও মনুষ, সংক্রাস্থ রম্ভান্ত বণনে প্রবৃত্ত হইতেছি।

কোন কোন শবিচক্ষণ গদার্থ-বিদ্যাবি:
পণ্ডিতেরা কহিবা থাকেন যে,পান্ত পাফ্যানি
জীব জন্ত এবং তরু গুলাদি উদ্ভিদ্ পদার্থের
ন্যায় পাষাণ প্রভৃতি অচেতন পদার্থের
জীবন আছে। কিন্তু এই মত নিতান্ত
অলীক ও অমূলক। চেতন ও অচেতন
এই উত্তর্বিধ পদার্থ পরস্পার বিভিন্ন।
মানু ও রুক্ষা, রুক্ষ ও পশু পক্ষী এবং
পশু পক্ষী ও মনুষা যে পরস্পার কত
অন্তর তাহা অমুভবশীল ব্যক্তি মাত্রেই
সহক্ষে স্কুম্পন্ট হৃদয়ক্ষম করিতে পারেন।
আচেতন পদার্থকে মৃত ও সচেতন পদার্থকে
জীবিত বলিয়া নির্দেশ করা যায়; কারন

পশু পক্ষাদির নাায় পাষাণ শভ্তি অচেতন পদার্থে জীবনের কোন নিদর্শনই প্রাপ্ত হওয়া यात्र मा। उदय थे मकत अर् भगदिश কেবল জীবনের প্রতিভা মাত্র প্রতিভাঙ ङ्केश योदक। সলিলক্ষেতি ভরঙ্গ জাল বিস্তার পূর্বেক কেনায় আকুলিও চইম: वारवात भव गर्कारत धारल खरण धारा-হিত ১ইতেজে, সমীৰণ ভ্ৰম্পৰ **অপ্ৰতিহত** াতি ঘরলগন পূজ্ঞ গাদপদণ উন্মূলিত ও ভূতনে নিগাভিড করিভেচে ; অন্থরীকো াই নক্ষত্র প্রভৃতি ক্যোতির পদার্থ সকর গ্ৰহণ্য আন্তৰ্য শক্তি ছাবা জাৰুষ্ট কইয়া य के निकिष्ठ छ। हम कावण्डाम करिएकर ५ पूषक तिन्छुमाञ लोक पश्चिकके नवेदनध বেচলিত ও নিরম্বর উত্তরাভিযুখীত কনিন গাতে; সুইটি পদাথ উপযুদ্ধতি নাডাপিছু ग॰ है। वे संभागितात श्रमानु अदेशका आभा वरणात्र शतुरस्यवद्याः प्यांकर्षण कदर , मन स्व भारण अवयुधिक भनार्थ मञ्जूषारयन धन्। दश आचार क्रिटल छेश अस्तराभी हर्म। थे'दक . हमायम तिमा। धास्ट्र हेझ व अंदाक करेगात हा कह भगतर्थन करणक लग्भाद्ध मध्यन भण्ड विषयाद्वास ন্ত্ৰণ লাড়েছ এই মন্ত্ৰ লোক্ষা শুনিয়া অনেকে অনুনান ক'রা৷ থাকেন বে পশু शक (भत गांध स्कृतिमत कीतम आहरू, किन्दु केरो जीवन मदद, जीवरनंत धा-তিতা নাত্র। থামরা কএকটি প্লাগে এই অদুত কাষ্য দেখিয়া বিকায় দাগেরে নিমগ্ন হট্কেন্ত এই প্ৰকাণ্ড বন্ধাত মধ্যে যে এই ৰূপ অত্যাশ্চৰ্যা ও অচিন্তনীয় কভ শত ঘটন। উপস্থিত চইতেছে ভাহার इंग्रख नारे।

আমরা অচেতন পদার্থের নায় চেতন পদার্থেও এই ৰূপ কার্যা দেখিতে পাই কিন্তু এই ৰূপ ক্রিয়াকে ইহার জীবন বালয়া কথনট স্থাকার করা মাহতে পারে না।

াল স্থাকর প্রস্পার বিনিময়কে সামানা।

কার জীবন বলিয়া নির্দেশ করা যায়,

াহা হইলো পরস্পারের আকর্মণে স্মারিটা

জড়-দেহের উপর এই রূপ জীবন আরোপ

করা অসঙ্গল ও অযৌজিক নহে। কিস্তু

াই রূপ স্থাবন নিরুটা জীবন বলিয়ানি
ান্ড চইতে পারে।

নেই আরু তিক ও রামায়নিক জীবন সকল জড় দেহেই বিদ্যান রহিয় ছে, কিন্তু এই জপ আরু, তক ও রামায়নিক কায়ি কে চেতন পদার্থের জীবন বা জীবনের মূল কারণ বলিয়া কণ্ড প্রতিপাদন কবা যায়না। জীব যে জীবন উপতেলগ করিছেছে। ইহাতের অনাতর কা গা প্রাকৃতিক ও বান্যানিক জীবন রুখ্য ও পশু প্রফা মনুষা লগতে পার্থির মানুষা লগতে পার্থির মানুষা

উদত।

ভবানীপুর রেজ (বদ) (লয়। ধ্রান জ চালের উপদেশ। গ্রম সংখ্যা।

গ্রামে বাল্য বালা কর্মান অন্তরে প্রবেশ ক-'त बाष्ट्र, ... र्णादम, छि. अबीदत्त्व सामा १ ३ १४ व १ कर । , यटक शास्त्रवाहिक। स्थान মান পদের মরণের শ্রার দেখিছেছি, ভেস্নি ক্রেব্রের্ডের প্রতেশ কর আগ্রাংকও অনুভর করি-আখার এই ভা'ন' দেখাব্দের সমকে গকলৈ কবিত্ব কিমিন্ধ মুক্ত করিতেছে, र 🗠 १४८ जाडि १५ ७ छ। महनगनर**ाम धूर्यक** ' ५ क्षेत्राच हाता क्षेत्र किला एक **या**न া া নামবা নিশ্বন বাগে জানিয়াট, একণে ज होत क्षाप्ताच्या अध्यक्षि सहिंदा, सकटला**त अधिके** া নার্দার নম্না পুদ্রাক্ত গ্রেডাক করিতে まじゃり 智俊 पक्। bालदः वाख्य भगाउ ন' তেওঁ ডিভঃ। যদ্মি',স্থিতোন ছঃখেন গুরুণাপ্

বিচালাতে। '' যাঁহাকে লাভ করিয়া অপর বাভকে ভদপেকা অধিক বোধ হয় না এবং যাহাতে অবস্থান করিলেওক ছঃখেও বিচালিভ হয় না।

বেদের মন্ত্র ও ব্রাহ্মণ ভাগ সমাপ্ত হইলে পর উপনিষদ্ ব্রেক্ষের অনুসন্ধানে প্রবৃত হুইলেন। जमारिक ने ना धिन मकत इडेटल दूहर, मकत হটতে মহৎ, ঘাঁচা হটতে শেষ্ঠ আর কেহই ূটে; यिन मक्द-फर्न-वाभी, विनि मकल काट्ने विमामान। উপনিষণ্ইহার অনুসন্ধানে প্রাক্ত হইয়া জানি-লেন যে, ঋক ধকুঃ সংম বেদেব ইন্দ বায়ু ভাগ্নি প্রভৃতিয়ে সকল উপাস। দেবভা, ভাহারা কথনো अभ नटहा " (लाम: यमिनगूशामटका" (कलक-कारवार्थानरम) देवनिटकतः य अकल श्रदिविक দেবভার উপাদন। করে, ভাহার। কথনো ত্রন্ধ नार्वः । विद्यास्य असम् शुक्तस्य मात्रास् अवर्ड्ड कवा, ध म १४६म हेरु व। मक म नियक विभूक विक-যালে, ভিৰেই ব্ৰহ্ম। 'ভোধানায়ভো প্ৰতে ७'/६।(त्रांट सर्व ६) - डं'बाचा,व्यक्तिकक्त पूजा ४।४ ७ भक्षः। १ (रेकार्क्वीरम् भ स्टम्) इक.त ভাগ ৰ'বু গ্ৰমান ইইডেচে, ইইরে ভাষে পুরা উদ্যু হুইডেছে, ইছার ভয়ে আগ্নি ও ইন্দ্র ও মূট্টা স্থায় কৰ্মে ধাৰত হইতেছে। উপ-নিষ্দের ঝায়ব। ক্ষাল মঞ্জে আনোরাইণ করিষা এই ৮০१८म स । महनाम ८४, আ প্রার খ্রে ই ক্র প্রাক্ত देव। सक स्विकात । कराई भारतीयक, मक्टलई छ भ अक क कुष्ट । देशहा दगम नद्ध, देश्रा । प्राणनादक শাপ্ৰি এচাৰ কৰে নাই; ইনাব, সুমন্ত্ৰ নাতে, ইছারা আপন রাও আপেনরৈ নিবস্তা নচেঃ ইছারা य (२) क पुक कर मध्म (द्व तथ ५ इ इम्पाद्य, बीका , হইতে ধীষ দীয় শক্তি লাভ কৰিয়াছে, ঘাঁচার শ'সনে নিমত প্রবর্তিত গ'ং ছাতে, তিনিই ব্রস্কা, चितिहें काता, लेटा कहात (अर्थ अ श्रृक्तीय कांब्र (कश्री मार्ड्र) अब्रे लात **जनतकात जेश**मियदमञ्ज आथार्मिकार व कि ५ नत-करण व्यक्तिक त्रह-म[15] भारे साथ, विका खड़े। " उम्र इ द्वारत-टकाति दारण। अया रमवजामिशक क्या विशास করিলেন । ইন্স বায়ু প্রভৃতি **দেবভার। ঈশ্বরের** অরু হে ১৯/৯বের উপর জয় লাভ করিলেন। हें ज धन व्य, भूरविक्ति सूत्रकि वर्षण कविया व्यान দিলের ভিত সাধন করেন, রত্তাসুর ভাছা করিছে (मध न।। मकल (मवडांता अकळ इहेशा व्यक्तिक-कारी इक्षेप्रदेश खेलाद अव नाच क्रियान। उक् एँ। इति प्रशतक वह अग्र आप म क्रिक्सम, स्मरकांश ধীয় স্বীয় অভিযান-দোষে ভাষা জানিতে পারি-त्लन ना। छाँशांता भटन कत्रितनम, आयत्रहे व्यागांत्रामत वामकात्व वानूत्वत छेशत वान गांक

कतिलाय: जामातरमत्रे धरे खत्र, आमातरमत्रे এই মহিমা। '' আন্মাক্ষেরাধং বিজ্যোইন্মাক-মেরায়ং মহিমা।" ঈশ্বর ভাঁচারদের এই অভিমান ভাঁহার৷ অনিউকারী অমুবদিপের काबिद्यन । ন্যায় রূপা-অভিযান-দোবে হত না হন, এই জ্ঞান দিবার নিমিত্তে তিনি জাহারদের নিকটে হয়ং প্রকাশিত ইটলেন। ভাঁহারা জানিছেও পাবি-ब्ल्म ना (व, मीलायान शक्तिया शुरुष हैनि (क। ভাইারদের অপেক। অপিক শক্তি-সম্পন্ন পুরুষ যে কেছ আছেন, ভাষা ভাষার। জানিচেন ন।: আপনার্দিগকেই সভয় সমন্ত্রিয়া মান্কবি-তেন। এই অপ্রিচিদ প্রনীয়ের অবাক অপ-নিমিত তেজে ভ্রাহারা সকলেই হজপ্রভ হইয়া গে-বোন: ভারেবিদের জগ্য ও মন বিকল্ডিত ইইলাং ভাঁহার। আগ্রেকে বলিলেন, তে আগ্ন। তে জাও-तमः । जिम जाभावतम्य भरता जाली । एडजनी । ধাও ভূমি ইচাবি নি গট থিয়া ইচাকে অস্পত इन्हेश पार्केम के बिटका खांध है। कांत्र विकटि .भारतम्। त्रका स्थानाः ह जिन्हाम। कविरसम्,। ⁶ क्कांन ? जूभि तर २ अ अ भर्भ कविशा बनिटलस " অবিষ্ঠান্ত্ৰীতি ভাজাৰদা ৰাম্ভ্ৰমনীতি " মানি পরি, আন্দ্রানিবেদা। ব্রল উল্লেখ্য विभाधन । जिल्ला क्षिण क्षिण विभाग । कुकि स्व জাশ্বেনা আগ্ল, ভোলাতে চি শক্তি আছে? জিনি উন্তর কবিশ্রেন, দি অস্ট্রির সার্প্ত স্থেছত शिक्षपर शुरिवार्तिक। " उन्ने श्रीर्थवीटक द्यां कछ বস্থ আছে, তাৰ্চা সকলৰ আনি দল্প ক'বাত 🖖 ব। उक्त छैं। हारक अकि छ न निहत्तम छ सन्ति। ইহাকে দক্ষ কর। ভিনি মহাতেলে সাপনাব দকল ভেক ভাষতে নিযোগ করিলেন, তথাপি এই ত্ৰনীকে দক্ষ কবিতে পাবিলেন না। আপ্ৰনাক শক্তিহীন দেখিয়া লজ্জিক কইলা দেবতা দিশেব নিকট ফিরিয়া আসিথা বলিলেন— আম চিনিজে পারিলাম না, এই অচিন্তা-শক্তি পুজনীয় পুরুষ (क। ख्यन छै।शादा वासूक विज्ञातन, (इ ताहु। ষাও তুমি ইহাঁর নিকটে গিয়। ইইাকে অবগ্র জ্ইয়া আটস। ৰ'য়ু তাঁহাৰ নিকটে গেলেন। ত্রন্ধ তাঁহাকে জিল্পাসা করিবেন, তান কে? वासु पर्भ कतियां विभटनन, "वायुधा खर्मन्यों क শুতিরিশ্বাবাঅহ্মামীতি। '', আনি বারু, আমি মতিবিশ্ব। ত্রহা বলিলেন, তুলি বে মাত্রিশা ৰাঘু তোমাব কি শক্তি? তিনি উত্তর করি-त्मन, शृथिवीत्त्र बाहा किछू धात्म, आमि नकलह হরণ করিছে পারি। ত্রন্ধা দেখানে একটি তৃণ রাথিয়া বলিলেন, এখান হইতে ইহাকে গ্রহণ কর দেখি। তিনি ভাহাতে আপনার সমুদায় বেগ নিয়োগ করিলেন, তথাপি ভাহাকে একটুকুও

বিচালিত করিছে পারিলেন ন।। আপন্তেক শক্তিহীন দেখিয়া লক্ষিত হইয়। দেবকাদিগেব নিকটে ফিরিয়া আসিয়া বলিলেন- আহি চিনিঙ্কে পারিলাম না, এই অচিন্তা-শক্তি পুজনীয় পুরুষ কেণ পরে ভাঁহাবা ইজকে বলিলেন, কে মঘবন্ ৷ ভূমি আনাবনের সকলের রাজা, যাও ভূমি চঁহার নিকটে গিয়া ই'ছাকে অবগত হইয়া আইন। ইন্দুট্|ছার নিকটে আগসর হইলেন। ইন্দেশ বাজ-প্রদর অভীব গর্ম ও অভিন'ন দেখিয়া ব্রহ্ম খণা হটতে লিবোহিত হইলেন; বরং লিনি अना अना (मवर मियारक (मथा विश⁴ छिटनन, ইন্দ্ৰে এক বাব দেখাও দিলেন না ৷ নেই স্থানে ন্ত্ৰী কপিণী ব্ৰহ্ম-বিদ্যা আসিয়া আৰি হুলি চট্টবেন। इ.स. ८५३ 'धलक नवको जुक्त-'वनात्व 'कफास ক্ষিদেন যে সেই দাপামান প্রতীয়, বিনি এই নাত্ এখানে ডিলেন ভিনি কে ? ব্ৰহ্ম-বিৰা ব'লালন উচ্চিত ভেষ্মন। জান না, ইনি ব্ৰফ বিদ্যো জোমৰা ভাপনাৰ আপনাৰ মহিন বান कितार्क प्रत्न ; शांत अहे कायद क्रमा द्वात नाम व्यारका कवा। ब्रभारिमांत्र बङ फेलंटनटमं अस्ट्र প্রদান। ইউল। ভাদর্গি উল্লান্তক্ষ্যাল ল' ও ক্রিয়' অশ্ব সামৰ দেৰ্ভ। এই ভে দিল্ল ছই লেন্ ভাৰব বি অংগ্রারণ এড়েছি দেবজারাও ইন্দ্রেব নিকট হইতে প্রক্ষাল লাভ কণ্যা সার আহমকণ দেবজা হট, ছে " ৰাম কটালেন 🕴

 च के का गा। यका जाता ध के जिल्हाम ल 'इस व्हिट्डाफ् त्व. व्य श्वाम ध्यामन। व्यापन व्यापन প্ৰিনিচ ভাষ ব্যাসে না পাতি, যে প্ৰাথ জনক मात्त्र विषयः कार्याच ५७गा यास न्। क प्र तिश्व টাক দেৱভাৰা আ, প্ৰাৱলেৰ জ্ঞাৰ শান্তার সীমা ুরিছে না গার্থিয় জাপন্তি নিচেই সহতে স**ক** মান্দ্রমান বাব্যা সার্ভিনান কারেছেন। कुँ कर्टा क काम भारति प्रांत सार्कित भीमा वुल्यासमः धर्यन (५३) पुरक्ष य श्वम (भव ३) के ना क्रानिस्ड পা('ব্য' কি'হাব' ৮৫ জান বুলিচ্ছ হইল, **যথন** एकि छ्नाहर कीय न्दर्भ आनिहरू न। शांत्रिया উচিংবলের ধল শুঝ ছইল: ভথনি টোহার। বুরিজে পারিরেন যে আগরা ক্ষুদ্র, আমারদের ভান শক্তি প্ৰিমিক এবং সেই প্ৰিমিক জ্ঞান-শ্ভিক্ত আনবা আপনারা সৃষ্টি করি নাই; কিছুসেই मर्बय है। পूर्व भूकम इहेटल लाज कदिनां हि. याहात সমক্ষে আমারদের সকল ভার, সঙল শক্তি, স্তন্ত হইয়া গের। দম্ভ ও অভিযান ব্রন্ধাজানের প্রতি-वक्तर। आमि जनन दूनिएड शावि, धामि जव করিতে পারি, আমারই যশ সর্বত প্রকাশিত হউক: এই অভিযান ও নীচ কামনা ব্রহ্মকে বুঝিতে (मग्र ना। जालनात इस्रज्ञा (स्नि कानिशाट्डन, ভিনিট উচ্চার অনুধানী ও শরণাশন হইনা নবল দ্র উল্লেখ ইংয়াছেল।

অগ্রবায় ইজা প্রকৃতি থক্ষজ্য সাম বেদের (पवलात्। छेशसिंधरमत **छेशात्रा (पवला नरहन।** ভিপ্রিসনের প্রতিপাদ্য পর্ম দেরতা এক মাত্রপা-वृद्धका। উপ্দিশ্দের সংকল্প এই যে বিনি সকল ছইতে বড়, ভাঁইাকৈই অম্বেদ্ করিয়। স্নানিতে হইবেক, ভাঁছাকেই জীজি করিছে মইবেক, ভাঁহা-নেট পুজ। করিজে চইবেক। উচার। সকল হউডে रा प्रतिया आधारक जानितनन, अञ्चत बनितनन খবমারা ব্রন্ধ" (লাল : ছাপেনিষদ্) এই আত্মা अक्षा (१ ता देश क्षा कः प्रवंश नांद्रक्त सूर्यमित्रः) प्रेमर प्रचार स्वा दार तार क्विक्ताः। "(डी-ক্ষেপ্রে।)প্রিষদ্। বিনি নহান্ ভিনি সুখ-বরুপ क 🕆 अमार्थ सूर्य मार्च, महाम् अमार्थहे सूर्य-यक्षाः সাজনৰ উল্হাকেই জানিতে ইচ্ছা কৰিবেক। সেই ভূমা কোষায় ? ''সএব সঙ্গুত সউপস্থিটাৎ সপস্চাৎ সপুরস্তাব সদবিদ্যত সউত্তর্জা। "।ছান্দোগ্যো-পনিষ্দ) ভিনি অংশাড়ে, ভিনি উদ্ধেতে, তিনি পশ্চাতে, ভান সন্মুথে, কিন দক্ষিণে, তিনি भड़े कुशा ८क ! शहे फालाहि सह ভন্। - মণীরারাধান্তালাকোপরিটাদারা পশ্চা-দাফ। পুরস্থারা দক্ষিত্তথাতা উত্তরভঃ।" (Stewick)(अभियम) जागाहि अभारत, आंश्राहि উদ্ধেশে, 'সায়াই প'শচাচে, আহাই সম্মুখে, ध्यद्भारी भिष्यान, काषाठि देवाता. हेशास्त्र अहे लाचित्रत करेल या सिंग मध्ये मक्का भी एन। नेयंत्र, কিনি পুনানজেন, কি'ন জগতের আলা, সিনি भक्तालाल पूर्व ब्रहिद्रास्त्र । अथारन जिकामा अहे त्य ८भटे अभा कि भदीती का द्वा ! व्य व्याद्या गंदीव्य रक्ष था करे। को एए काटन व कि बि खर बीदा हुन वार्ट्सिश (अ) शकरत. यह आदि। कि स्मेरे जुमी ? াক ভ্যা? উপনেবদ্ধলেন বেনা, ভূমা অ'আ। কলাপি শরীর্থা আখা নতেন। ইনি শরীরী জাগ-ফিভ আছোৰ নাল বহিরিভিয় **ছারা বহিবি বয়** উপভোগ করেন না: ভ্যা আতার শরীরও নাই, ই ক্লিয়ত ন।ই। তেবে কি তিনি মনোময় **আ**তা? — এবানে এই বিজ্ঞানা উপস্থিত হই**তে পারে।** भेरीत निरुक्त एडेस्स, हेलिय-**वाद-नक्स कृद्ध** হইলে, যে অংলা ক**েলতে স্বীয় মহিনা অনুভ**ৰ तरत । य अन्तर्य काञ्चा विषय ७ हे लिएत नित्र-. म व्हेश कोय महिमाट**े हिन्म-ग्रक मृश्वि** কৰিয়া ভাষা উপভোগ করে; যে আছা যাহারদ-थिगाटि, मासाउ द्वाधिमाटि, जाहा दहरथा; बाहा श्वनियादक,याथ नाउ स्कृतिबादक, खादा खदन; बादा অর্ভব করিয়াটে, খা নাও অর্ভন করিয়াইছ,

ভাছা অভুতৰ করে; বে 'আ'ড়া।" নর্বং পাশ্যক্তি मर्काः भागांक " जाशीम मध बहेबा मर त्मरथः; टमंदे অপ্লাৰত মনোময় আলা কি ভূমা? না। বে আত্মা ব্যোতে কেবল মনো-স্থারা বিষয় উপজোগ करत, स्वर्धे वश्चकारमाञ्चाः आक्राध्यविक्रिक्क् আত্মাভ্নানছেন। যেন্ন ভূমাজাআর শ্রীর নাই, তেমনি উহোব মনও নাই। তিনি মনের ছার। সুখ ছঃখের অনুভব করেন না। ডিনি ছ-সাৰস্থ আজাব নাায় শোকও করেন না, ক্রমানও करतन मा। अञ्ज्य वर्षावय मरमागर आचा स्मा নহেন। এখানে তাৰ আবার এই প্রাশ্ন হইতে পারে বে, সুযুগ্র আমাকি ভ্নাণ বে আমাস্তু-क्य पूर्व रहेग्र। कान कामनां करत्र ना, कान যপ্লও দেখে না; শোকও করে না, ক্রন্সনও করে मा ; वहे सूत्रुश चांचा कि सिहे छुम ! ! वहे सूत्रुश আলাও ভূমানহেন, যে হেতু ভখন দে আছা '' अयगस्य को छि " (ছा फ्ला (जा) श्रीस्वर्) का नि এই বলিয়া আপেনাকেও জানে না। যদিও মুখু-প্রবিস্তাতে ভামার শোক নাই, ফফন নাই; ভগাপি ভাহার কোন ভোগা বস্তুত । ই । ''নাহ মত্র ভোগাং পশানি, " (ছালে:জেল্পান্যদ্) জ্ঞামি এথানে ভাহার কিছুই ভে:গা বস্তু দেখি না। এই মুযুপ্তাৰস্থাতে আন্মার না কিছু চোগং বস্তু আছে, না কোন ভোগ আছে, কে্বল এক মহাবিম্মতি ভাষাকে আছেন করিয়। রাখে। এই স্বৰুপ্ৰ অচেত্ৰন আছে। কথনই ভূনালা নহেন। ঘিলি ভূমামা, ভিনি অপরিল্পু চৈতন্য-বভাব। তাহার চেজনোর কখনো বোগ নাই, ভাহাস-দার প্রকাশিত হইয়ার হিষাছে। দংসারী আমাই भवेद्वित ज्ञानीन, विषयात ज्ञानीन, महमत ज्ञानीन : गरमाती व्याचायहे ब्लाधनवद्दा, खन्नावद्दा, सुयुखा-वर्षा। एगः या कान जनवात अधीन नटहनः ভিনি কখনে৷ জাগ্ৰৎ, কখনো নিডিভ, কখনো সুযুখ, এনত নহেন ; ডাহার জ্ঞান, তাঁহার ভাষ, সদাই দক্তি রচিয়াছে। "এর **মুপ্তেমু জাগতি** কাম। কামং পুক্ষো নির্দ্দিমাণঃ।" (ফঠোপনিষদ্) বৰন সকলে নিজা যায়, তথন এই পুরুষ জাগ্রৎ থাকিয়া সকলের কাম্য বস্তু বিধান করিতে খাকেন। অতএৰ মাণ্ডুক্যোপনিষ্ বলিভেছেন, ভিনি '' প্ৰপক্ষোপন্দৰ লাভং <mark>শিৰমটন্তং। '' ভি</mark>ক্তি সংসারের অভীত ; **শাস্ত, মঙ্গল, অন্তিভীয়** । ' স-আত্রা সবিজ্ঞেরঃ" তিনিই সেই আত্মা, ভিনিই ব্যবিষয় বোগা। কা গ্রথ-পদ্ধ-মুখুপ্রারম্ব এই সংসারী আত্মার প্রতি**ঠা সেই অন্তর্যানী অনু**ভ জন-বিহীন নহান্ আছো। এই পরীরী সংগারী व्याचात्र व्यवत्रक्षम व्यरमस्य (महे क्षेत्रीही क्षेत्रर-সালী মহানু আখা অবস্থিতি করিভেছেন। " বা

[लाबी अञ्चल मधाल मधानर वृक्तः পরিব বজাতে।" मृख्रकालनियम्) इट मुन्तत शकी जीवासा बांद्र श्रमामा, उष्टाउर এक उक्त वर नेतीत्रक অবলয়ন করিয়া রহিয়াছেন ; উচ্চারা সর্বদা একত मारकम् अवर् छक्षम् शतुम्भारत्त् मन्। "यत्राखर कांगहिं डाखरकार छो। वनानू श्रमाछि। महास् वि-ভ্যায়ন: যহা ধীয়েন শোচ্ডি।'' (কঠোপনি-ষদু) জীব ঘাঁছার ছার। বপ্লেব মধ্যে সুথ-ছঃখ ভেপ্তিকরে, এবং জাগরিত থাকিয়া বিষয়-সকল দর্শন করে, মেই সক্ষাপী মহান্ আহাকে বীচ অন্তরে জানিয়া ধীর বাজি আর শৌক করেন ম। "হর্থায়ে পরে কোষে বিরুদ্ধ ব্রহ্ম নিক্ষণং। ख्य खः ख्यां खियार क्यां खिखनानां विदर्शां दक्ः।" (মুণ্ডকোপনিষদ্) ব্ৰহ্মবিৎ বাভিরা আত্ম-রূপ াউজ্ব ও শ্রেষ্ঠ কোষ মধ্যে সেই নির্মাল, নিরব-য়ব, জ্যোতির জ্যোভি, শুদ্র পরনাত্মাকে উপলব্ধি

এখানে উপনিষদের সিদ্ধান্ত মনোবোগ পূর্বক প্রণিধান কর। মাও ক্যোপনিষ্দেব প্রথমে আছে '' পর্বংফেডদুক্ষ।'' সকলই এই একা। উপ-নিষদ এট কথাতে বেদের পুরাতন মত থওন করিভেচেন। অগ্রি একা নহেন, সুটাব্রকা নহেন, মিত্র ব্রহ্ম নহেন, বরুণ ব্রহ্ম নহেন: কিন্তু সকলই ব্রহ্ম। ভিনি আকাশের অভীত হইয়া সকল আকাশে ও বিশ সংসারে বাণ্ড রহিয়া-ছেন: ভিনি ভুক্ত ভবিষাৎ বস্তমান জিকালের অভীত হইয়া সঙল কালে ও সকল ঘটনাতে বিদা-" कुछ ९ छ ३६ छ विवासि छ यांन दरिशाद्या । नस्रामात्रवा यक्ताना विकासाको ७१ ७ मध्या-কারএব '' ড্ভ ভবিষাৎ বর্ত্ত্বান, সকলই ওঙ্কার ; বিনি এই জিকালের অভীত, ভিনিও ওকাব। 'এখানে অবশা ভোমরা জানিছে চাও, এই ও-কার কি? এই ওক্ষারের **অর্থ সৃষ্টি-ছিভি-**প্রালয়-কর্ত্তা, উপনিবদ্ 🕉 भंक स्वाता जन्मदक्ट बाक्त करतन । '' ওমিডিব্ৰহ্ম ' (ডৈজিরীয়োপনিষদ্) 🕉 ইহা জেকা। বেদের ঈশ্বর অগ্নি যায় ইন্দ্র প্রভৃতি व्यमन कृत, উপनियम्बद्ध क्रेश्व ७ छ। द्व-छाडि-শীলা পরবৃদ্ধা ভেষনি মহান্। উপনিবদের খ-বিরামধন এই ত্রন্ধকে অবেষণ করিয়া আপনার-रनेत जसदब रम्थिरणम, जयम बनिरमम '' अग्र-'শ্রোরকা" এই আভারকা। পরে ভাষারা 'ডীহাকে প্রতেদ করিয়া ব্লিলেন " লেয়েদাস্মা চতুল্পাং।^{১৯} নেই এই আঁকা চাদ্নি পালে বিজ্ঞ। এখন নিৰ্ণা করিতে ক্টবে বে ইছার কোন্পাদ रेगेरे जाचा, विनि विस्तातः, वीशस्य समूगकान क्षिम् कामा जागाहरमह निकास ब्राह्मकन। अध्य পাদ আন্তান আগ্ৰহৰণা, 'বে অবস্থাতে আত্বা Contract of a

ক্রিছিলিয়া ছারা বহিবিধর উপভোগ করে। বি-ভীন্ন পাদ আতার স্বপ্লাবস্থা, বে অবস্থাতে আত্মা ৰিবয়-সকল সৃষ্টি করিয়া ভাহা উপভোগ করে। ভ্তীয় পাদ আত্মার সুৰুপ্তাৰকা, ৰে অবভাতে আহা সুপ্ত হইয়া কোন কামনাও করে না, কোন শ্বপ্রথদধে না। এই ভিন পাদ আত্মার ভিন জবস্বা। हेशद्र कान् भाष जमा ? উडद-हेशद्र काटना পাদই ब्रक्त नरहन, देशंत क्लाल। खबचार (मह ৰিজেয় আখার অবভা নহে। উপনিষদ্ইহা मूष्णचे-काल वाक कदिएडाइन, "बाह्य श्रद्धः अ দেই বিজেয় আখ। শ্বপ্লাবন্ত আগ্লান্তেন, " ন ৰহিঃ প্ৰজং" তিনি জাগ্ৰদবস্থ মান্তাও নহেন, "ন প্রজ্ঞানঘনং" তিনি মুযুপ্তারত আল্লাও নহেন। ভবে সেই বিভেয় আত্মা 🏇 ' উপনিষদ ভাহা পরে বলিতেচ্ছেন 🕕 ''অভুন্টনবাৰহার্য্য গ্রাহ্মল-ক্ষণমচিস্তামৰাপদেশামেকাল্ল প্রশুষ্ঠাসারং প্রপঞ্চো-अभगर मोखः भिनमरेक्षः 5 हुर्यः जनारम् म আত্মা স্বিজ্যেঃ।" ভিনি চকুর অগেচের কর্ম্যে ন্দ্ৰিয়ের অগ্রাহ্য এবং অবাৰহাণ্য হয়েন। স্থিনি কোন লকণ দাবা গমা নহেন, তিনি কোন শদ দ্বারা বাপদেশা নহেন, ডিনি অচিস্তা। এক আয় প্রতায়ট তাঁহার অন্তিন্নের প্রতি প্রমাণ ইইবাছে। তিনি সনুদায সংসার ধর্মের অভীভ: তিনি শান্ত, মঙ্গল, অধিতীয়। ব্রহ্মজেরা তাঁ-হাকে আহোৰ চড়ুৰ্থ পাদ্বলিয়া পণনাকরেল ; ভিনিই আয়া, জিনিই বিস্ফেষ। ইহাতে দেখ, ''অয়মায়া ত্রন্ধা,'' এই অন্মে! ক্রন্মা, বলিয়া ঋষিয়া যাঁচাকে লক্ষ্য কবিষাছিলেন ভিনি কে, ভাইার সিদ্ধান্ত চটল। সংসারী আগারই ভিন পাদ— क्षा अपनवस् स्थावस्। अस्थातसः ; हेक व व ८ प्रय পাদ, ভাচাই দেই বিচেয় প্ৰ আ্যা, শাঁহাকে অ'মারদের অনুসন্ধান করিয়া জানিতে হইবেক ; মেই আত্মাই ব্ৰহ্ম। কাএংৰপ্ন-মুম্বাবসা-স্থিত সংসাধী আহা ত্রন্ধ নহেন; কিন্ত যিনি ত্রন্ধ, ডিনি সংগারের অভীত; শাস্ত, মঙ্গল, অন্ধিভীয়। এই দংগারী আন্মার প্রতিষ্ঠা ক্রন্ধা, এই আন্মাডেই আছেন, অভএৰ ব্ৰহ্ম ইহার চতুর্থ পাদ বলিয়া উক্ত হইয়াচেন। পুরাতন উপনিষদের এই সার সিল্ধান্ত। এই সিদ্ধান্তকে আমরা মনের সহিত क्ति अजीकात कति ! वेशात क्यु कि ? देशांक আমারদের দৃত বিশ্বাস কোণা হইতে উৎপন্ন হয় ? बहे भंतीती साधर व्यासाहे हकूत लाहत मरह ; ইহার সুধুপ্তাবস্থার বে অচেডন ভাব, জাহার তো आमता किहुई मश्दाम कानि ना: छटन अहे आ-ত্মার অস্করাত্মা ভূদা ঈশ্বরকে কি প্রকারে জানিতে भाति, **अवर अहे ज्ञानात छे**भरत कि व्यकादहरू বা বিঃশংশার হইয়া আয়েরিক বিখাস জাপন क 🏬 : পाहि १ 🛮 ইহাতে উপনিষদ্ বলিঙেছেন, आमाहरमध निर्मात कारन जिनि अकान भान, এবং আত্ম-প্রভায় ভাষতে বিশাস করে। " ন চকুষা গুছাছে নাপি বাচা নানোদেবিভাপসা ক্রাণা বাট জ্ঞানপ্রসাদেন বিশুদ্ধবন্তুত্তত্ত্ব তথ थमार्ड निक्रमर था।गगानः । '' (म्**अ**रकाशनियम्) তিনি চকুর এতা নহেন; বাকোরও প্রাহা নহেন, ভপদা বা যক্তাদিকৰ্মা ছাব, উ'হাকে প্ৰাপ্ত' হওয়া गारा मा , १५%-गड्ड वाकि धान-पुक्त ब्हेश निर्धन জ্ঞান ছারা নিরবয়ৰ ব্রহ্মকে উপলব্ধি করেন। ভাঁছাকে ইণ্ডিয় গ্ৰহণ কৰিছে পাৰে না, ভাঁছাকে ঘৰ মনৰ করিলে পাবে না, ভাঁহাকে বুদ্ধি আয়ন্ত কবিখা তর্ক দ্বাবা সিজ্ঞান্ত করিতে পারে না ; জ্বয় কেবল এক আ্মা-প্রভাষ স্বারা নিঃসংসায় হইয়া তাঁহাতে বিশ্বাস স্থাপন করে। ' একমে প্রাভায়-সারং।" একঃ রূপংকাবনং ব্রক্ষাস্থীতি আহানঃ প্রভায়ঃ সার্থ ক্রমাণ্য যদাাধিপ্রয়ে তথ একাল্ল প্র-জ্যসার^{ু শ} এম আত্ম-প্রতায়ই তাঁ*চ*াব অস্তিত্বের প্রতি প্রমাণ ইইয়াছে। বিনি এই সংসাধী আন-भीत का शमनदारक दिवस धवरणत करना के उन्हार-দকল নিয়াছেন, থিনি ইহাব স্বস্নাৰস্বতে ক্ৰীদাৰ নিমিক্ত মনের কম্পনা-শংক্ত দিয়াছেন, যি নি ইছাব দুঘুপ্তি কালে বিশ্বমি-সুখ দিয়, অহর্ছ ইহালে 5 उन वनाथान कविएडएडन , स्मेडे मखक मर्ख-শাক্তি অনন্ত পুৰুবেষ অস্থ্যের প্রান্ত কেরন এক মানি-প্রভাগ নিঃসংশাল প্রেম্প কটয়(ভে। ধথন ভাষি সাদি, তথন আমাৰ এটা পাত। নিযন্ত। এক আমেন : এই আমি-প্রভার। হিনি আনার আন্ত, প্ৰাণ্ড নিয়ন্ত। পুক্ষ ভিনি আমার মুক্ত্ নৰ: দাগ্ৰাধ ও প্ৰাস্থু এই স্বতঃসিদ্ধ আয়ো-প্ৰান্তায়। যিনি ভাৰৰে পুৰুৰ স্থা আগ্ৰহণ ও আৰু, ডিনি সংগেট গুছেদ্সৰ। আশ্রেষ ও এচছু:ভিনি শাৰ, মগল, অধিতীয়, এই আল্ল-প্ৰভাৱেৰ সহজ অকাটা দিদ্ধান্ত। এখন ব্ৰাহ্মপৰ্মা এই আত্ম-এতারের বিষয়ে কি বলেন, ভালা শুন। " দেই क न छ कान वक्त १ १ वरमच्त्र ह्यू व १४। हरू नरहन. উহকেইস্ত ছারা এজণ করা রাষ না, ভাঁছাকে মনেব ছারা কপ্শনা করা যায় না, ভাঁছাকে পরি-মিত বস্তুর নাায় বুদ্ধি ছাবা বিশেষ করিয়া বুঝা ^{৬'য} নাঃ কেবল নিৰ্মাল সহজ জ্ঞানে ভিনি ঞা-मानिक शरपन अतः अक काचा अखारम**त राम मिट** ^{ন্ত্রন-প্রে}চর সভা মুন্দর মঙ্গল পুরুষের **অন্তিত্র** 'স'নর\ বিশ¦ন করি। জা**ন যে অকৃত অঞ্চ অ**-न छ शुरुवत्क ध्राकामा करतः, आह्ना स्मद्दे भून् श्रुक्त-ষের সভিত্যে প্রভায় করে। জ্ঞানেতে সভা প্রকাশ भाग अवर स्मार्ड महामाज कामान প্রভার হয়। অতএর এই খডার-সিদ্ধ আ**স্ব**-ঞ্চ

ভারই উহার আভিখের আদিশা ছালবিদ্য এক. মাত্র হেতৃ। বধন আত্ম-প্রভায়-সিভ অনভ পুরুষ महज कारन क्षकाशिष इत, खबन बूचि छै। हात जन-तहनात कोणल (मधाडेग्रा डीश्र विकारनत পরিচয় দেয় এবং জগতের মঙ্গলোক্ষণা নির্ম मिथाहिया मिट नियम्बात ममन छात वास्न करते। যদিও পরিমিত বুদ্ধি অনস্ত পুরুষকে বুদ্ধিয়া শেষ করিতে পারে না, ভগাপি সে সহজ্ঞ জ্ঞানকে অভি-মাত্র পোষণ করে। অভএব ত্রকা জিজাযু, মুমুকু वाकि जगरकार्तात असर्वारशत आरक्षीवना बाह्रा বুদ্ধিকে মাজ্জিত করিতে কদাপি অবহেলা করি-दान न।। वृक्षि सूमाकि उ हहेता नहक छान अ অ'ব্য প্রতায়ের অধিকার ও উদ্দেশ্য আমরা বি-শেষ ৰূপে সুস্পন্ত বৃঝিতে পারি। " এই আত্ম-প্রভাগ অংমরেদের ব্রাক্ষাধর্মের সৃষ্টি নছে : ইহ। পুরাভন উপনিষদে **সুস্পান্ট** ব্যক্ত রহিষা**ডে। বাস্ত** বিব বুজি যথনট আপনাব পাতন ভূনির অভেষণ করে, ভথনি সে সহজ্ঞান ও আত্ম প্রভায়কে দেখিতে পায়।

এই আন্তা-প্রভাষ বিদ্ধা জ্ঞান-গোচর সভা সু দ্র মঙ্গ পুক্ষ জনাবিহীন মহান্ আছো। 'বৈপ-যুখ্যালা সমেভুকিবুভিরেষাং লোকানামসম্ভেদ্যি : যিনি আ'অ', জিনি লোক-ভঙ্গ নিবাৰণাৰ্থে সেত্ৰ-স্বরূপ হটয়: সমুদায় পার্ণ করিতেছেন। এই অ,ম-কপ সেতুর এপাবে নিন রাতি নিয়মভ হইতেছে: ও পারে দিনও নাই, রাজিও নাই পুরুত্তও নাই, চৃদ্ভুত্ত নাই; ইহা পুণা-জো:ততে সদাই পৰিত্ৰ বহিয়াড়ে: জীৰ ইছাৰ ও পাৰে উ-दीर्व इटेरल अकल भाभ इटेरल अन्तिवृद्ध इय ; এই নিষ্পাপ ব্রহ্ম লোক। এই সেতৃর পর-পারে छेडीर्ग कडेगा (र अस्त तम अनक्त इत : (र मरना-রের ভঃখ কেশে বিদ্ধ, দে অবিদ্ধ হয়; যে পাপে ও দে'ছে উপভাপী, সে অনুপতাপী হয়। এই সেজুকে উত্তীৰ্ ছইয়া রাজি, দিনের সমান আ त्नाक शावन करतः; अहे द्वन्त-लाकः; हेरात मिन বালোক কথন অস্ত হয় মা, ইহার প্রকাশও निसीन हर ना ; हैहा मनाहै अवाणित संस्तित्ह । ''বৈনা সেচুমহোরাছে ভর্তঃ। न क्रिया म মৃত্যুৰ্য শোৰেশন মুক্তং ব ছক্তং। সংবী পী-প্রানোংভোনিব ইছে। অপহতপাত্ম ভেবজন্ম-লোকঃ। ভন্মাদ্বাএতং বেডুং তীর্ব। স্করঃ কুর্ নক্ষোভৰতি বিজ্ঞা সম্বিক্ষ্যাভৰতি উপাৰ্জাপী-সমস্পতাপী ভৰভি। ভক্ষাছাএডং সেতৃং ভী-ৰ্বাপি নক্ষমহরেবাভিনিস্পদ্যকে। সকুৰিভাটে।-(इंटिकाटका। अभिवयः)--" (ग्रेव र अन्यादन ।

মেদিনীপুর উনবিংশ সায়ৎ-সরিক ব্রাহ্মসমাজ।

আৰু আমাদের উনবিংশ দাখংদরিক দমার ।
এই মেদিনীপুরছ ব্রাক্ষমাজের বযঃ কম ক্রেম
ক্রমে উনবিংশ বংদর অতিক্রম করিয়া অদাবিংশতিত্য বর্বে প্রবিন্ট হইল। এই উনবিংশতি
বর্ষে,বিশেষতঃ গত বংদরে এখানে আমাদের ব্রাক্ষ
ধর্মের কভ, দূর বল ও পুষ্টি দাধন হইয়াছে, আমরা
ধর্মের দিকে কভ টুকু অগ্রসর হইয়াছি, এ বিষয়ে
আক্র একবার আমাদের পর্যালোচন। করিয়া দেখা
কর্ত্রবা হইতেছে।

আমরা দেখিতে পাইতেছি, এখানে দিন দিন ব্রাক্ষণর্যোর উপ্লভি ও বিস্তার হইভেছে। প্রাপনে যথন এখানে, ব্ৰাহ্মদমাজ প্ৰতিষ্ঠিত হয় তথন ইছার ভাবে অভি সক্ষীণ ছিলা ভথন ইহার কোন ১৬ ব্র গৃহ ছিল না। প্রথমে ইহার প্রেভি-ঠান্ডো কোমগৰ নিবাসা শ্রীমুক্ত বাবু শিবচন্দ্র দেবের বাস ভবনে উপাসনাদি সমাজের কান্য নিকা্চ চইত। পাৰে একটী বাটী ভাডা করিয়া কিছু দিনের জনা ভাষাতে স্মাজের কার্যা নির্বাহিত হয় ৷ জান্ধ্ৰ স্মাজেৰ ব্ৰুম্নি সাচ্গি মহাশ-বের বাদা বারীজে কয়েক বংগর পরিয়া সভাব কার্যা সনাধ। হট্ছ। পুরের অভি অপে লোক গমালে উপ্রিভ হউভেন, তৎকালে ব্রাক্ষপার্যের প্রতি এখানকার অনেকেবই বিষম বি:ছব জন্মি-য়াছিল। সমাজের প্রথম অবসায় এখানে ব্রাক্ষ-नबादकत श्रांककृत्म अक्री धर्मा मछ। नामी मछ। কিন্দ্র চিরকাল সভের প্রকিষ্ঠিত চইয়াছিল. क्षय--- भरगात क्षत्रहे इहेशा शास्त्र। जाञ्चाभर्मा मगुनाय বিল্ল বিপত্তি, সমুদায় আতিবন্ধকতা, সমুদায় বি-**प्यवाहरण অভिज्ञम क**रिया अथारम भिन्न भिन्न रकी-যান ও পুট্ট-দেহ হইয়া উঠিতেছে। ব্ৰাহ্মপৰ্ম আপনার নিজের মাহাত্মোই আপনি বিক্তর ও সভেজ হইয়া উঠিতেছে। একণে এখানে বছ गरथाक ल्लाटक विरमयंज्य व एमरमंत्र फारमरक ত্রাক্ষধর্মের আগ্রন্থর গ্রহণ করিভেছেন। এখন द्धाक्षणमाक चात्र भन्न-धर वाणी नटहन। ভাষার এই স্বভ ঃ ছহ নির্দ্মিত হইয়াছে। বিশেষ আহ্লাদের বিবন্ন এই যে এই গৃহ নির্মাণ বিষয়ে क दमभीद्यता काश्रक शतिमादम माशासा कत्रियादहन ।

ন্দ্রায় তিন বৎসর হইল এখানে একটা ব্রহ্ম-বিদ্যালয় অভিতিত ইইয়াছে। ভাষাতে অনেকে ব্রাহ্মধর্মের উপদেশ পাইভেছেন। ভদ্মারা অ-নৈকে ব্রাহ্মধর্মের সম্পু ও ক্ষণ অবগভ্ত হইতে-ছেন ও ইহার উন্নত ভার বেশিয়া ইহাতে আক্রিট হইডেছেন এবং অনেকে রীভিমন্ত গ্রামাধর্মা গ্রহণ করিভেছেন, বস্তুতঃ এই মেদিনীপুরে প্রামাধর্মের দিন দিন উম্বাতির চিক্ট দেখা বাইডেছে। বিশে-ষতঃ গত বংগরে যে সুই প্রকার কার্নোর অনুষ্ঠান হইয়াছে, ভৃদ্বুরা ব্রামাধর্ম এখানে অনেক অঞ্জর হইয়াছে বলিতে হইবে। প্রথম কার্য্য ধর্মা প্রচার, দ্বিভীয় কার্য্য অনুষ্ঠান।

এই প্রদেশের সকল ছানে ত্রাক্ষধর্মের প্রচার করিবার নিমিত গত ফান্তন মাসে এখানে এক জন প্রচাবক নিযুক্ত কর। হইয়াছে। প্রচারক গ্রাদে গ্রাহ্মধর্মের প্রচাব করিভেছেন। যদিও অপদিন প্রচার কার্যা আরম্ভ হইয়াছে, তথাপি ইহার মধোই অনেক ফল দেখা যাই-ভেচে। প্তর্বে এই মেদিনীপুর প্রদেশের অন্তঃ পাতী পল্লী নাম বাদীবা ব্ৰাহ্মধৰ্ম্ম বলিয়া একটী যে গড়স্ত্র পর্মা আছে, ভাষা অবগত চিল নাং একণে প্রচ'র্ক হারা অনোক ভাছা অবগভ হই-ভেচে। অনোক একণে ব্রাক্ষপর্যা লইয়। ভূমুল আ-ন্দোলন কবিভেছে। কেচ কেছ ব্রাহাণ্যের আ-শ্রুষ গ্রহণ কবিত্তেছে। অনেক স্থলে আমাদের প্রচারক সমান্রে গুলীত হইতেছেন। ভান চইতে প্রচারকেব আহবান পত্র আসি-তেছে। প্রচারকের যত্ত্বে কলেশর ও গভবেডান্ত সমা-ত্বের পৃষ্টি সাধন হটযাছে এবং গঙ্গাদাসপুর ও ঘাটালে সমাজ স্থাপনের কম্পান। হইতেছে। ভানিল কোন কোন স্তানে কোন কোন সম্ভান ব্যক্তি, অ:बीध বজ্জন লইয। নিয়মিত কংগ উপা-সন। কবিতে অ'রয় করিয়াছেন। বিশেষ অহলা-দের বিষয় এই যে প্রচারক ও অপর এক মহাস্মাব হত্ত্বেক্ষক প্রভৃতি কভক গুলি সামানা লোকে ব্রাহ্মপ্রের আশ্রম গ্রহণ কবিয়াছে।

গত বংসব ংখানে কয়েকটী ব্রাক্ষধর্মানুমোদিত অনুঠান অবৃতিত হইয়ছে। গত বৈশাধ
মাসে আচার্গা মহাশয়ের জ্যান্তা কন্যার পরিণয়
কার্যা ব্রাক্ষণর্যের পদ্ধতি অনুসারে সম্পাদিত হয়।
এইটা এখানকার ব্রাক্ষদিগের প্রথম অনুষ্ঠান।
এই অনুষ্ঠানটী অত্যতা ব্রাক্ষদিগের এক প্রকার
পরীক্ষা তাল কইয়াছিল। তত্পলক্ষে এখানে
ব্রাক্ষদিগের মধ্যে মহা গোল্যোগ উপস্থিত হইরাচিল। অনেকেই সেই অনুষ্ঠানে বাগ দিয়া
চিলেন, কভক গুলি আবার ভাহাতে বোগ
দিতে বিমুথ ইইয়াছিলেন।

দ্বিতীয় অৰুঠানটী প্রাবণ নাদে সম্পন্ন হয়। ঐ
অনুঠান রাজা রাধাকান্ত দেব বাহাছরের পৌত্র
শ্রীঘুক্ত কুমার ব্রজেক্রানারামণ দেব বাহাছরের পুত্রের
আতক্র্যা। এই অনুঠানে অনেকে উপস্থিত ছিলেন।
ইহা আক্ষ্যাদের বিষয় বিলাভে হইবে যে প্রথম

আমুগ্রানে আগমন করিতে বাঁহাদিগকে: কুঠিও চুই হইয়াছিল, এই অনুগ্রানের সময় জাঁহাদের অনেকে যোগ দিয়াছিলেন। এই দিজীয় অস্থ্রান ছারা আমাদের মহোপকায় সাধিত হইবাছে। এই অনুগ্রানটী বঙ্গদেশে ব্রাহ্মধর্শের অনুগ্রান বিষয়ে মহৎ দুউাত্ত স্বরূপ।

তৃতীয় অমুষ্ঠান মেদিনীপুর নিবাদী শ্রীযুক্ত বাবু নীলকমল দের পুত্রের নাম করণ। উহা । আদ্বিন মাদে সম্পাদিত হয়। ভাহাতেও অনেকের সমাগম হইয়াছিল। এই কৃতীয় অমুষ্ঠানটী এ প্রদেশে বিশেষ ধর্মোণিতি সাধনেব চিক্ত বলিতে হইবে। ইহার পুর্কে যে স্থইটা অমুষ্ঠান হয় ভাহা ভিন্ন স্থান নিবাদীদেব প্রাবা অমুষ্ঠিত হয়; এটা এই স্থান নিবাদী দ্বারা অমুষ্ঠিত হইয়াছে।

গত বংসবে ব্রাহ্মপর্মের উপাত বিষয়ে যে সকল কাৰ্য্য অনুষ্ঠিত হইয়'ডে, তথ্যধ্যে একটা মতাত জীলিকর সংবাদ আছে। ভাষা এই, – व श्राम्यक अस्तरभाजी भर्मी आम वानी व्यक्तावान जाक श्रीयुक्त बांबू नवीनहत्त्व ज्ञांगी यशाया प्रशाह দিবদে র'ম প্রীতিকর কাষা করিয়াভিলেন। ভিনি আ দিন সমুদার প্রজা বর্গকে পুণাতের নিমন্ত্রণ कविद्यान । यथा नगरा नकता उपित्रक व्रवेत । জিনি উপস্থিত প্রজামগুলীর সমক্ষে পূর্মবং পৌ ভুলিক কার্যা না করিয়া ব্রক্ষোপাসনা কবিভে रिमश् (%) जन। छेलारना मगाख इहेटल जनमी-শ্বের নিকট প্রজাবর্গের মঙ্গল ক'মনা পূর্ণ একটী ल्यारीना कविया भूगाह कार्या सभाषा कविरक्तन । এট কয়েকটী অমুষ্ঠান দারা এখানে ব্রাহ্মণর্দের विद्यां केविक माधन ब्रोग्नाहरू निवास ब्रोहरत। क इक्छ नि डाक्स श्रुकार शंका धर्मा मगिक अन्-রক্ত হইয়া উঠিয়াছেন। একণে উহিদের প্রায় সমস্ত কাঠা ও বাবহার বু:কাধর্মের ভারা অনুশা-সিভ হইভেছে।

বছ দিন না আমরা প্রাহ্মপর্যাকে অনুষ্ঠানে পরিণত করিতে পারিব—বত দিন না আমাদের সমস্ত গৃহ কাব্যে প্রদান নাম ঘোষিত চইবে—তত দিনই আমাদের প্রাক্ষধর্যের প্রকৃত উন্ধতি ও পুটি কাপন ইইবে না—তত দিনই আমরা প্রাহ্ম নিবার বোগ্য ইইতে পারিব না। অনুষ্ঠান ধর্মের জীবন স্বরূপ। অনুষ্ঠান দারা পর্যভাব প্রকৃত রূপে প্রকাশিত হয়। ব্রাহ্মপর্য বিদ্ধান কেবল আমাদের মনে ও সমাজ গৃহেই বন্ধ পাকে, সংসার মধ্যে প্রাহিত না হয়; আমাদের পৃহ কার্যোর সময় ব্রাহ্মগর্ম নেতা মা হন; তাহা হইলে আমাদের কি ইইল? ভাইন্তে কার্যা পরিচয় দিতে পারিব ক্লিমান কিলা

রীত তাব দেখাই, ভাষা হইলে কি ক্ষাসর কিটাই ও তথ বলিয়া পরিচিত হইব না ? জনা নময়ে আনবা কপট বলিয়া পরিচিত হইবে লাগুলে হই, আর ইবরের প্রতি কর্ত্তরা সম্পাদন সময়ে কপট-তাচরণ করিয়া কি লক্ষিত হইব না ! ইখরের নিকট কপটতা ও তথভাচরণ করিলে আমাদের নিজার নাই। অতএব যদি আমরা ব্রাক্ষধর্শের উন্নতি নাধন করিতে ইচ্ছা করি, যদি আমরা পারলোকিক অনস্ত মুখের প্রত্যাপা করি, তাহা হইলে কপটতাচরণ পরিত্যাগ করা, আর্থাদের সর্বাত্রে কর্ত্তরা। ব্রাক্ষধর্মান্তে আমাদের সকল অনুষ্ঠান সকল ব্যবহার ব্রহ্মধর্মের অনুমোদিত করা কর্ত্তরা।

হে জগদীখর! আমরা ভোমার অভি কীণ
সন্তান, আমাদের এমন বল নাই যে আমরা নিজে
ভোমার দিকে আন্সর হই, ভোমার প্রদন্ত ব্রাহ্ম
বর্দ্মকে আলিঞ্জন করিতে সক্ষম হই, ভোমাকে
সাক্ষী রাখিয়া সাংসারিক সমস্ত কার্ঘোর অনুষ্ঠান
করিতে পারণ হই। ভূমি ককণা না করিলে,
ভূমি পর্দ্মবল প্রদান না করিলে, আমরা কথনই
ভোমার দিকে উন্নুখ হইতে সমর্থ হই না। হে
ধর্দাবহ পুরুষ। ভূমি আমাদের মনে একপ বল
দেও যেন আমরা সমস্ত জীবন ভোমাবি দিকে
অগ্রসর হই, আমাদের সকল কার্ঘায়ন ভোমাবি
অনুমোদিত হয়, আমাদের সকল অনুধান যেন
ভোমার ব্রাহ্মধর্শের অনুশানিত হয়।

ওঁ একদেবাছিভীয়ং

কলিকাত্য ব্রাহ্মনমাজের ১৮৮৬ শকের মাঘ ও ফাল্কুন মাসের আয় বায়

বিবরণ।

আগ্র

ভত্তবোধিনী পত্তিকা	**@/*
लका मान	209
धककानीन मान	, 2#o
পুস্তক বিক্রয় , ;	· >> (5@
डाक्माञ्च	25/1/0
सञ्जानम	うらいいがか
भूखक विकट्सन किमान	3c ie.
मिष्य मिष्य क्षिया मान	:36 . · ·
অনিরপিড	રામ્પર્ક,
গছিত	Release
The state of the s	

	1
ব্যয়	ধ ন্রগোপাল দিত্র ২
মাসিক বেজন ২২১৷৷০	" काश्चित्रस्य मिळा क •••• · · >
প্রিকা মুদ্রাজন ও কাগল কর ১০১/১০	" श्रीविन्महस्य वसू *** >
সরকার্দিগের কমিশন ১৭১৮	" অবিনাশচন্দ্র চটোপাধ্যায় ১
anglaping and the second secon	" जीनमणि भत >
100 100	" নহাভাপচন্দ্র চন্দ্র ১ ১
with the contract of the contr	" তৈলোক্যনাথ বসু >
704 8000	" भीजनम्म गूर्थानाथाय >
\$ 00 € 00 E	" व्यमथनाथ मित्र >
10, 44,	" উमानाथ छश्च ১
deligate control of the	^দ অনুর্চীদ মলিক · >
official and	ধ হলপর মলিক ১
क्षाक्रमा दक्षरण द्वा छ। छ दक्ष मान्त	্ বিশেশব ঘোষ ১
J 43 00 1000 01 1 1 0 1 1 1 1	" दर्भाभावहस्त बरमाभाषाचि >
The state of the s	" অভ্যাচরণ গুপ্ত : :
গছিক ২১/১০	व वनग्रांकी त्रम्
The state of the s	" গোপালচন্দ্র নিজ >
इ/ ॥ ०० ॥	" क्वाराहन पद >
स्थान १४००/१८	' নাগরলাল দত্ত
পূর্মকার শ্বিত ৬৮১/•	" গণেশচন্দ্ৰকিক ১
gygetten autovoro-ordentette	্রমদেরক দে
F8F1/>¢	ं इतिभाग शीमानी >
वात्र ७००॥ ८	' বিজয়গৌপাল মিত্র গণ
Windows and considerable stands	" इत्कानि त्याच ॥०
विक	
🗐 दिटकसार्थ शेवूत।	95
তলিকাতা ত্রাক্ষ্মান্তেব সম্পানক	। अनुकेरिनन स्रोतः।
_	শ্ৰীৰুক্ত অংবাধানি থ শক্তাশী . ২
	· ट्यमधकुमात्र (मृत्य)
ব্রাক্ষদিগের প্রতিক্ষাত সাত্বংসরিক দান।	 मामाध्यमक हट है। शोधां । ३४०
🏿 युक्त দেবেজনাথ ঠাকুর > > >	
्र काचीचंत्र मिळ €	e do
" हाससार्थ गृत्योशीगाव @	मानाशास्त्रमान २
" निवन्स नची «	Name of the Parket of the Park
' इतिदाहन नज्जी 8	+ co/0
" ब्रांकावाय मूटभांशायाय ७	
" बाधवष्टस बनाक र	(
" अनम्भूमात्र भाव १	পূর্বাকার স্থিত ২৭৬/১০
ে অলোখানাথ পাকড়াদী 🤏	>>> />•
. विक्वित्वनाथ ठीकूत र	
क माजासनाथ ठाकूत २	নায় সম্ভকার্যায়গোর কমিসন ২৬০
*	সম্বকারনিবেগর কমিশ্ন ২৬০
Security And A	वर्रुवान >>०।८>०
वीद्रकलनाथ ठोकून २ ४ त्याणिविक्रमाथ ठोकून २	
ध जात्रमाध्यजाम भव्याभाषाम १	🕮 ছিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর।
" शांकूबकुक निश्ह ?	ক্ষিকাণ্ডা আলসবাজের সম্পাদক।
नटरजनार तात२	
Andrea at a second	

ক্ৰিকাড	া বা	ন্ সম	(क	পুত্তক	नस्य
	-		न् भूख		•
चारगुम भर्शहरू	1 > थ	3	٠,		>
à	২ থ	3			5
অনুষ্ঠান পদ্ধ	ভ	• •		• •	്ഷ്
ব্রাকাধর্শ্যের ব্য	था।न	Ą.	•	قو پيونين	, fo
ये छ। न वं	ধান		st.		ય ૦
প্রান্তাহিক ব্র	কাপু:	मभ्।			Jo
ব্ৰহ্ম স্বোত					150
ব্রাহ্মগর্ম্মের স	જુઇ!ન				Jo
ব্রাহ্মধর্ম সন্মর	উ পা	গনা		* *	10
उभ উপাদন।	96	ভ	* 1	• •	10
उक्त मनीड	***				o ^j •
ঐ প্রথম খ	ঃ দ্বিভ	ोग ख	ៅ១ ១	6 56	10
के डेनार	ৰ্'ব স্থি	इंड		• •	9/0
ध्यायंना अवर	স্কীত				10
কলিকাতা ব্ৰাহ	शुरुष¦¢	করে ব	ভে,ড		10/0
ব্ৰাহ্ম স্মাজের	ৰক্ত ব	51		. 1	10/0
शंकनात्रांगन व	পুর বড	্জা			h s
সংশাস ৰাঞ্জ	া ভা	त्य म्		• •	10
ঐ ভাবসন্য	' শ[হভ	5			Ŋ -
বাঙ্গাল। প্রাক্ষণ	र्मा		140	4 1	10
के लाइ	ा येम⊹	Ŧ	· W_		20
ঐ দ্বিতীয়	4 9			y 10	00
ব্রাহ্মগর্যোর মত	ও বি	শাস	•		ij o
क्षेत्रद्वा भागमा					1.
ধৰ্ম চচ্চ 1					10
উদ্বোধনাঞ্জলি				* *	10
গুহ কর্মা					do
স্থোত্রমালা					10
ত্রসন্ধান্তে,ত					do
ম্ব ভিমালা					Ħ =
का म खडुविभा।					10
শিশু পালন	প্রথম্ভ	াগ	• •		50
এ ছিতীয়	ল াগ	. *		• •	10
সংগীত মুক্তাবৰ্গ	f				10
शर्मा भीका					10.
বস্তবিচার		• •			30
शानार्थ विमा।	. 1			• •	ło
मनुरमात गर्ब		• •			134
ভাত্তাব :.		٠.		• •	150
জয়নগর গি'রশি	शंद्र ह	ধরি ব	হ্যপ		jo ,
দীর শিরার অ	ভৰেক			• •	.50
বৈরাগ্য শত্ৰ					ه انها
চার সীমাৎসা	• •	• •	* *	4 4	10
वर्षिकिय		• ,1 • • ⁵ ,		,	lato
তগ্ৰীপুর ক্রম্য	বসাহ	CHM?	े शदम	Poplar S	

वर्गाना-धार्यम् जनकान	3,0
वे विजीय मरबा।	10
ব্ৰাহ্ম ব্যৰহার	10
ভুগোৎসৰ	10
সংস্ত পাঠোপকারক	2.
विन्ता जाका-धर्म	10
इতি সহিত কঠোপনিষৎ দেবনাগর অকরে	0

বিজ্ঞাপন

আখিন মাধের প্রবল কড়েতে কলিকাতা ব্রাহ্মনাজ গৃহ একপ ভগ্ন হইরাছে,
বে সংস্কার না করিলে আর ব্যবহারের
উপযোগী হইতে পারে না। এবার সংস্কার
করিতে ভানাধিক ২৫০০ টাকা লাগিবে।
অতএব বিজ্ঞাপন দিতেছি যে কলিকাতা
ব্রাহ্মনাজের প্র, ই খাঁহাদিগের স্নেহ্ আছে,
ও ইহাকে রক্ষা করা ঘাঁহারা কর্ত্রা বোধ
করেন; এই সময়ে তাঁহারা সাহ্যা করিবেন।

শ্রী বিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর। কলিকাল রাজসমাজের সম্পাদক।

ত চৈত্র মঙ্গলবার অপরাক্ত ৭ ঘন্টার
সময়ে বর্ষশেষ উপলক্ষে, এবং ১ বৈশার
বুববাব প্রাভঃকালে ৭ ঘন্টার সময়ে নববর্ষ
উপলক্ষে কলিকাতা রাজ্যমান্তে রজ্যোপাসনা কটবে। রাজ্যণ প্রাধান জাটার্যা
মহাশ্যের ভবনে উপস্থিত হইয়া উপাসনা
ক্রিবেন।

ত্রী বিজেমেনার ঠাকুর। কলিকাতা রাফ্যনমান্তের লম্পান্ত।

বাঁহাদিনের তত্ত্বোদিনী প্রকার অ্রিন মূল্য নিংশেষিত হইয়াছে, তাঁহার। আন্যামী বর্ষের জন্য অগ্রিম মূল্য অথান করিবেন অগ্রিম মূল্য অগ্রে প্রদান না করিলে ক্রা-জের ক্ষতি করা হয়।

की वानग्रहासद्वतास्त्रवासीयः) क्षित्रवांचे द्वाचनवादस्य स्वस्त्रवे स्वस्त्रक